

3152/49

राग - संग्रह

भाग 1-3

आम्नाय-ग्रन्थाच्छ्रवण,

सरस्वतीधर, करौली

वाराणसी-5

अः
आ-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, कसौती
वाराणसी-५

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग-संग्रह

अ ४२/४९
आम्नाय-ग्रन्थालय,

भाग ३ रा

परतनिधि, करौली

वाराणसी-५



लेखक

संगीत कलानिधि

मास्टर कृष्णराव

स्व. गायनाचार्य गुरुवर्य पं. भास्करबुवा बखले से

स. १९११ में संस्थापित संगीत-शिक्षा-संस्था

पुणें भारत गायन समाज

यह संस्था सरकार-मान्य है। जिसमें गायन तथा वादन की शास्त्रशुद्ध शिक्षा मिलती है।

उसी तरह, किसी भी संगीत-विद्यालयके विद्यार्थी तथा संगीत-प्रेमी सज्जन हमारे विद्यालयकी परीक्षा दे सकते हैं; जिस सुविधाका अवश्य उपयोग किया जाय।

विशेष जानकारी नीचे दिये हुये पतेसे प्राप्त होगी।

पत्ता:—पुणें भारत गायन समाज,

८६१ सदाशिव पेठ, पूना २

आम्नाय-ग्रन्थादय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥ आम्नाय-ग्रन्थालय,
नरतनिधि, करौली
राग-संग्रह
पारायली-5

खानदानी हिंदी चीजोंका स्वरबद्ध, तालबद्ध, बिलंपद और तानोंके सहित
स्वरलेखन

भाग ३ रा

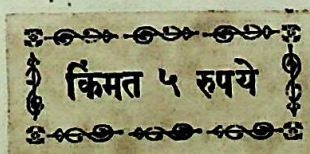
लेखक

संगीतकलानिधि

मास्टर कृष्णराव

इस पुस्तकके सब हक ग्रंथकारने अपने स्वाधीन रखे है.

१९५१



Available at—
RANCHANDRA SANGEETALAYA
Musical Book Sellers & Publishers
MUMBAI 11 OR-474-001-(INDIA)

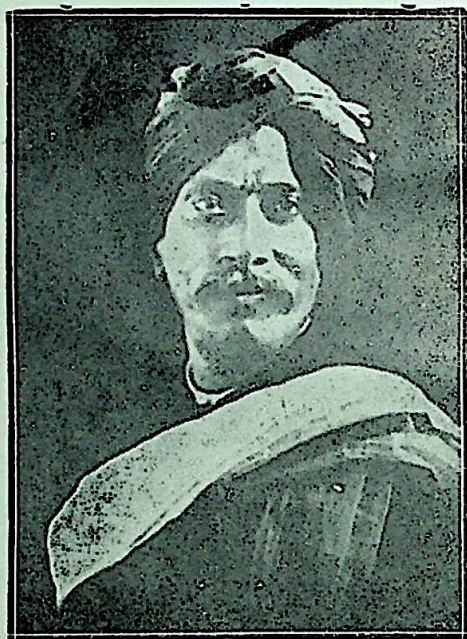
आम्नाय-ग्रन्थालय,
नरतनिधि, करौंदी
नारायणी-5

मुद्रक-स. रा. सरदेसाई, बी.ए., एल्.एल्.बी., नवीन समर्थ विद्यालयाचा
समर्थ भारत छापखाना, ४१ बुधवार, पुना २

प्रकाशक-मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर,
गणेश भुवन, टिळकवाडी, पुना २



स्व. गुरुवर्य गायनाचार्य
पं. भास्करबुवा वखले



गुरुपौर्णिमा अर्थात् व्यासपूजा

ता. १८/७/९१

इस शुभदिन पर प्रकाशित किया गया.

श्रीयुत ऑ. डॉ. मु. रा. ऊर्फ बाबासाहेब जयकर उपकुलगुरु पुणे विद्यापीठ यांचा

अभिप्राय

नामवंत घराण्याच्या गायकीच्या अलौकिक परंपरेतील श्रेष्ठ गायक कै. गायनाचार्य पं. भास्करबुवा बखले यांचे, संगीत कलानिधि श्री. कृष्णराव हे पट्टशिष्य असून, शास्त्रीय व ढंगदार गायक म्हणून त्यांची ख्याती आहे. त्यांनी बरीच वर्षे आपल्या गायनाचे स्थान कायम ठेविले आहे, हे त्यांना भूषणावह आहे. आपल्या घराण्याच्या गायकीची लेखनद्वारां कांही सेवा घडावी या उच्च हेतूने त्यांनी राग संग्रह भाग १ ला व २ रा लिहिला आहे. आज ते ३ रा भाग जनतेपुढे सादर करित आहेत.

या पुस्तकाचे वैशिष्ट्य म्हणजे ज्या क्रमाक्रमाने शिष्यांस गुरु शिकवितो तोच क्रम राग संग्रह करतांना योजिला आहे. त्याशिवाय खानदानी किंवा उस्तादी चिजांचा बराच संग्रह या भागांत सांपडतो.

रागांतील चीजेबरोबर रागाचा विस्तार, विलंबित व तानपलटे पद्धतशीर दिले आहेत, व मुळांतील चिजेची बांधणी लक्षांत घेऊन ती कशी गावी ती तज्ज्ञा स्पष्ट करण्याचा श्रीयुत कृष्णरावांचा प्रयत्न फार स्तुत्य आहे.

संगीताच्या साहित्यांत ह्या पुस्तकद्वारां श्रीयुत कृष्णरावांनी चांगली भर घातली आहे. नव्या व हौशी गायकांना हे पुस्तक मार्गदर्शक ठरेल अशी आशा वाटते. शिष्यांचे अध्ययन चाह्द असतां कलावंतांनी या पुस्तकांचा उपयोग केला तर खानदानी गाण्याची अभिरुचि जास्त वाढेल अशी आशा करण्यास हरकत नाही.

मु. रा. जयकर

माननीय पूज्य श्री. डॉ. मु. रा. जयकर, उपकुलगुरु, पुणे विद्यापीठ की

सम्मति

नामी घरानेकी गायकीकी अनोखी परंपराके श्रेष्ठ गायक स्व. गायनाचार्य पं. भास्करबुवा बखलेके, श्री. कृष्णरावजी (संगीतकलानिधि) अग्रगण्य शिष्य है। आप शास्त्रीय ढंगदार गायकके नाते सुप्रसिद्ध हैं। आपको इस बातका श्रेय है कि कभी वर्षोंसे गायनक्षेत्रमें अपना स्थान बनाय रखा है। अपने गायकी घरानेकी लेखनद्वाराभी सेवा करनेके महान् अुद्देशसे आपने राग-संग्रह भाग १ तथा २ प्रकाशित किया था, अब आप ३ भाग जनताके कर-कमलोंमें रख रहे हैं।

अस पुस्तककी विशेषता यह है, कि इसमें गायकी चीजोंका वही क्रम रखा है, जिस क्रमसे गुरुजी शिष्योंको पढाते हैं। तिसपर अुस्तादी तथा खानदानी चीजोंका पर्याप्त संग्रहभी इसमें है। रागदारीकी चीजोंके साथ साथ राग विस्तार, विलंबित तथा तान पलटेभी ढंगके साथ दिये गये हैं और मूलमें होनेवाली चीजकी बनावटको ध्यानमें रख कर अुसे कैसे गाना चाहिये यह स्पष्ट करनेका श्री. कृष्णरावजीका यत्न बहुत सराहनीय है।

श्री. कृष्णरावजीने संगीत साहित्यको भली माँति पुष्ट किया है।

आशा है, कि नये तथा रसिक गायकोंके लिये यह पुस्तक अच्छा पथप्रदर्शक होगा। हम मानते हैं, कि अपने शिष्योंको पढाते हुअे गान-विज्ञ, कला-विज्ञ यदि अस ग्रंथका अुपयोग करें, तो परंपरागत संगीतकी अभिरुची और बढेगी।

मु. रा. जयकर

प्रस्तावना

मेरे परमपूज्य गुरु गायनाचार्य स्व. पं. भास्करबुवा बखले की कृपासे 'राग-संग्रह' का तीसरा भाग जनता के चरणों में अर्पण करते हुअे अतीव हर्ष होता है। दूसरे भाग की अपेक्षा इस में रागों, चीजों को अधिक संख्यामें रखा है और उस हिसाबसे आलापों, तानों तथा पलटियों को रखा गया है। घराने की गायन पद्धति का ढौल, ढंग तथा बंधान को सुरक्षित रखने की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। किसी राग की बांधी हुआ चीज की अस्ताधी या अंतरा ठीक गुरुजी के कहने के अनुसार गाया जाय तो गुरु घराने के ढंग का पता चल जाता है, जिससे उसीके अनुसार चीजों का बंधान लिखने का यत्न किया गया है।

इस भाग में गुरु घराने की पुरानी अस्तादी चीजों को रखा गया है। जब तक बने, चीज अर्थ को ध्यान में रखकर ही लिखी गयी है। संगीतप्रेमी जनताको तथा संगीत विद्यालयोंमें और विश्वविद्यालयोंमें संगीत की अुच्च शिक्षा के लिये यह पुस्तक उपयुक्त होगी।

धन्यवाद

डॉ. श्री. बाबासाहब जयकर, उपकुलगुरु पुणे विद्यापीठने मेरे लिये समय निकालकर इस पुस्तकपर जो सम्मति दी उस के लिये मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। आप संगीत के अच्छे जानकार हैं। हमारे घरानेपर आपकी बड़ी कृपा है। आपका मैं अत्यंत आभारी हूँ।

श्री. ग. र. वैशंपायनजीने हिंदी भाषा की दृष्टिसे मेरी सहायता की है, और समर्थ भारत मुद्रणालयके स्वामी श्री. स. रा. सरदेसाजीजीने अन्य कामोंकी भीड होते हुअे भी, यह पुस्तक बनवा दी है। मैं दोनों सज्जनोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ।

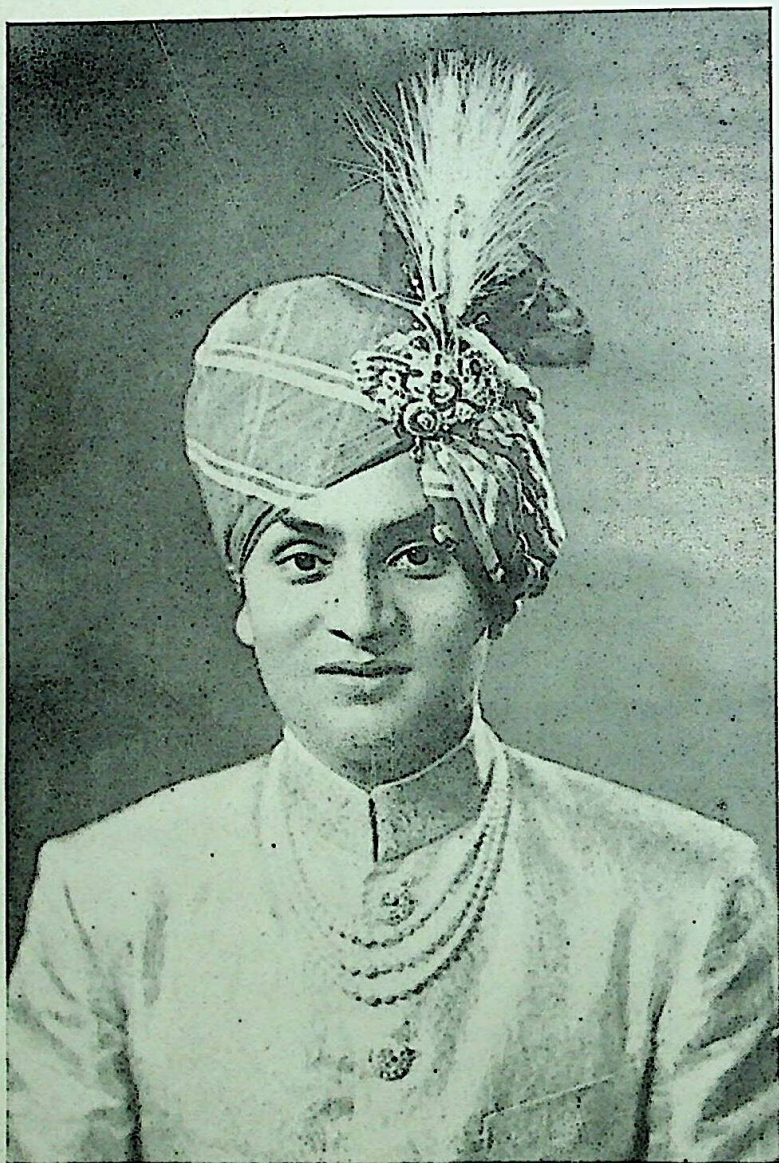
गान सेवक

मास्टर कृष्णराव

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग	पृष्ठ
१	कामोद	१
२	केदार	१२
३	हमीर	२४
४	शंकरा	३६
५	दरबारी कानडा	४७
६	अडाणा	६१
७	मल्हार	७०
८	जैजैवंती	८०
९	खंवावती	९१
१०	बहार	१०२
११	बसंत	११२
१२	पिछ	१२३
१३	सोहनी	१३३
१४	हिंडोल	१४१
१५	ललत	१५२
१६	तोडी	१६१
१७	आसावरी	१७६
१८	देशी	१८४
१९	मुख्तानी	१९५
२०	पूर्वी	२०७
२१	मारवा	२१८
२२	देस	२२८

श्रीमंत राजाबहादूर
शिवराम सावंत भोसले



आम्नाय-ग्रन्थालय,

भरतनिधि, करौली

वाराणसी-5



अर्पण-पत्रिका

हिज् हायनेस लेफ्टनंट कर्नल राजाबहादुर

शिवराम सावंत भोसले

राजा ऑफ् सावंतवाडी

इनके संगीतकलाभिज्ञता, निरभिमानता,

निर्व्यसनता, औदार्य इत्यादि गुणों-

पर लुब्ध होकर यह पुस्तक

अंतःकरणपूर्वक मैंने अर्पण

किया है.

संगीत कलाके विषयमें कुछ विचार और उसके नियम

(१) इस नानाविध कलाओंसे परिपूर्ण जगतमें संगीत गायनकलाको अग्रस्थान दिया जाता है. संगीतहीमें गायन वादन तथा नृत्यका समावेश होता है. किन्तु नृत्यसे गायनका दर्जा उच्च है. इसका कारण गायनमें उच्चार अर्थात् शब्दबोधकी विशेषता है. 'उत्तम गाना, मध्यम बजाना, कनिष्ठ नाचना और बिकट बताना' या 'गला तो बादशहा है' आदि पुरानी लोकोक्तियां गायन की श्रेष्ठताकाही समर्थन करती हैं.

(२) गायनमें निष्णात होनेकी अभिलाषा रखनेवाले सज्जनोंको चाहिये कि वे योगियोंकी भाँति कड़े नियमोंका पालन करें. जिनका निभाना कठिन नहीं ऐसे नियमोंपर चलकर अक्षय कीर्तिको प्राप्त करनेवाले अनेक महानुभाव इस भारतवर्षमें हो चुके हैं. जिनके गायन चातुरीकी प्रशंसा भारतमें हो गयी ऐसे महान् गायक स्व. खॉ. फैजमहंमद खॉ (बडोदे दरबार गवई), स्व. खॉ. नथ्यन खॉ (ग्हाँसूर दरबार गवई), स्व. खॉ. अल्लादिया खॉ (कोल्हापूर दरबार गवई) इन् महान् गुरुके पट्टशिष्य माननीय गुरुवर्य गायनाचार्य स्व. पं. भास्करबुवा बखले यह हमारी गायन परंपरा है.

(३) गायकोंके पालने योग्य कुछ नियम—

दुर्व्यसनो से दूर रहना गायकके लिये अवश्यक है. व्यसन नाना प्रकारके होते हैं, पान खानातक व्यसनमेंही दाखल है. इस लिये जिसके सेवनसे स्वास्थ्य नष्ट हो जानेकी आशंका है ऐसे मादक पदार्थोंका सेवन करना कदापि उचित नहीं. धूम्रपान हानिकर है. ब्रह्मचर्यका महत्त्व गायकके लिये विशेष है. गृहस्थाश्रमी गायक व्ययस्थित रहें तो ब्रह्मचारी जैसा तो नहीं, पर सुदृढ रह सकता है इसमें संदेह नहीं. गाना समाप्त होतेही जलपान करना बहुत बुरा है. पानीके स्थान पर दूध पीना चाहिये क्योंकि गानेके बाद दुग्धपान करना लाभदायक है.

(४) गाने और जागने का संबंध अटूट है. रातका दिन बनाना गाने या बजानेवालोंके बाँयें हाथका खेल है. प्रातःकालमें या दोपहरमेंभी कभी-कभी गानेका योग आता है. किन्तु रात्रीके शान्त निरामय समयमें गानेका जो आनंद आता है, अच्छे गायक और रसिक श्रोता की जो एकतानता होती है, गानेकी जो शान्ती रहती है. वह बात दिनमें कहां ? सचमुच रातकाही समय गायनके लिये अनुकूल होता है गानेके परिश्रमों के साथ साथ जागरण का भी सामना करना पड़ने के कारण निजी स्वास्थ्य की ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता श्रोतासे बढ़कर गायक को होती है किन्तु दुर्भाग्यवश अनेक गायक निजी स्वास्थ्य की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते. चाय जैसे हानिकार पेय को जागरणमें सहायक समझकर बड़ेही चावसे लेते हैं और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खो बैठते हैं. मैं गत २९ वर्षोंसे चाय, कॉफी, कोको न पीनेवाला गवैया हूँ. मैं नहीं मानता की गाने के लिये चाय अेक आवश्यक चीज है.

(५) गायक के लिये आवश्यक व्यायाम—गायनमें प्राणायाम अनायासही होता है. गानेसे फेफड़े मजबूत होते हैं, इसमें संदेह नहीं किन्तु शरीर के दूसरे स्नायुओंको व्यायाम नहीं मिल सकता क्योंकि बैठक के गानोंमें बैठके ही गाना पड़ता है. रंगमंचपर कभी खड़े रहकर गानेका योग आता है पर बहुत बार बैठक के ही गाने होते हैं अर्थात् शरीर निकोप रखनेके उद्देशसे प्रत्येक गायकने तैरना, पैदल चलना, दौड़ लगाना, नमस्कार आदि व्यायाम के साधनों में से जो उचित मालूम हो उस पद्धतीसे व्यायाम लेना चाहिये.

(६) गाने समय पद्मासन तथा वीरासन योग्य है. महफिल छोटी बड़ी जैसी हो उसी के अनुसार गायककोभी अपना आसन जमाना ठीक होगा.

(७) गायनको तंबूरेकी ही संगत होनी चाहिये. आज कल सुधारकी हवा चल रही है उसीके परिणाम स्वरूप तंबूरेके स्थान पर हार्मोनियम, ऑर्गन, दिलरुबा, फिडल आदिके संगतकी भरमार हो रही है किन्तु सबही संगतके लिये उपयुक्त सिद्ध नहीं होते. हार्मोनियम तथा—ऑर्गनका साधारण

रूपसे उपयोग होता है. ऑर्गनके स्वर मृदु होते हैं और उसमें मंद्रादि स्वरभी रहनेसे ऑर्गनकी संगत हार्मोनियमसे अच्छी होती है. संगतके लिये सारंगीकी बराबरी दिलरुबा, फिडल नहीं कर सकते. आरंभमें हार्मोनियमके संगतपर अभ्यास करनेवालोंको तंबूरेके संगतपर गानेमें कठनायी मालूम होगी. किन्तु आरम्भ तंबूरेके संगतसे किया जानेपर हार्मोनियम ऑर्गन या अन्य किसीभी वाद्यकी संगत होनेपर गायक उसीके अनुसार बेखटके गा सकता है इस लिये तंबूरेके संगत पर ही आरंभमें अभ्यास करना उचित है. जहाँ कभी विद्यार्थियों को अंक साथ सिखाना पड़ता हो वहाँ तंबूरेकी अपेक्षा हार्मोनियम का उपयोग अधिक होता है.

(८) गाना शुरू करनेसे पहले जिनके पास अध्ययन किया हो उन गुरुजीका या जिन्हें दिलसे माना हो उनका स्मरण अंतःकरणपूर्वक करना चाहिये.

(९) गाते समय मुद्रा प्रसन्न रखनी चाहिये. शब्दोच्चार सुस्पष्ट और परिणामकारक होने चाहिये. जिस रागमें गीत गाया जा रहा हो उस रागका शुद्ध स्वरूप कायम रखना आवश्यक है. गायनमें स्वरका प्राधान्य उसी प्रकार है जिस प्रकार शरीरमें आत्मका; अर्थात् गानेमें स्वरका महत्त्व बहुत है.

गीत भिन्न भिन्न प्रकारोंसे गाये जाते हैं, उनके नाम निम्न लिखित हैं.

(१०) आलाप—(बिलंपद) स्वरोंके क्रमके अनुसार धीरेसे गाते हुये उनका विस्तार करना.

(११) मींड—एक स्वरसे दूसरे स्वर की “ आस ” टूटने न देते हुये संधी जमाना. रबड तानने पर पतला होता हुआ लंबा हो जाता है पर दोनों सिरों का संबंध अटूट ही रहता है वही बात मींड में हुआ करती है.

(१२) मुरकी—यह तानका ही एक प्रकार है. इसमें दो से लेकर ३।४।५ स्वरोंको समाविष्ट करके उन्हें जल्द मरोड लेना. गाते समय मुरकी लेनेसे गायन का सौंदर्य बढ़ जाता है.

(१३) खटका—गायनमें सुरकीकी जितनी आवश्यकता है उतनी ही खटकेको भी है. एकसे बढ़कर और चार से कम स्वर पर आघात पहुंचाते हुये उसमें चमक पैदा करनेका नाम खटका है.

(१४) तान—सुरावट अर्थात् स्वरविस्तर दुगुन या चौगुनी में (जल्दी) करना और गिनी आवाजके ढंगसे पहिले सप्तकसे लेकर तीसरे सप्तक तक अन्य अक्षरोंका उच्चार किये बिनाही आकार या इकारको प्रयोगमें लाना, इसीका नाम तान है.

(१५) बोलतान—यह तान का दूसरा प्रकार है. आकारके साथ अक्षरोच्चार भी करना पडता है आकार तथा अक्षर दोनोंके गूँथनेको बोलनान कहते हैं.

(१६) गमक—गायनमें गमक अेक आवश्यक बात है । ‘ गमकका ’ गाना बहुत कम सुनने पाते हैं. जहाँ हमारे घरानेमें ‘ गमक ’ के गाने की अेक विशेषता है. हर सुरको उसके आसपासके सुरके आधारसे या उसी सुरकी पुनरावृत्ति कर, सीनेके बल, गाना पडता है, जिससे फेफडे मजबूत होते हैं और गलेको भी , अिस गमकके कारण, डौल आ जाता है तथा गानेमें भी रस आ जाता है ।

गायनमें उपयुक्तताके कारण जिन अंगोंका समावेश हुआ है उनका वर्णन करनेका मैंने यह प्रयत्न किया है; ऊपर बतलाये हुये प्रकार समझमें आकर उनका अभ्यास होनेपर गाईकीका परिचय हो जाना कठिन नहीं.

स्वरोंके सांकेतिक चिन्ह

- १ मंद्र सप्तककी निशानी—(-) जैसे नी ध प
- २ मध्य सप्तककी निशानी नहीं—जैसे ग, म, प
- ३ तार सप्तककी निशानी—(') जैसे सा रे ग
- ४ कोमल स्वरकी निशानी—(~) जैसे रे ग् म्
- ५ तीव्र स्वरकी निशानी नहीं—जैसे रे ग म

तालके चिन्ह

- ६ सम पहचाननेकी निशानी—(+)
- ७ काल पहचाननेकी निशानी—(०)
- ८ मात्राके अंक—जैसे १ २ ३ ४
- ९ एकसे अधिक मात्रा स्वर लम्बाना हो तो उसकी निशानी (S) जैसे गS मSS पSSS
- १० एक मात्रामें दो अथवा अधिक स्वर आ जाय तो उसकी निशानी (~) जैसे—गम गमप गमपध

सूचना—जहाँ बिलंपद तथा तान के उठाव प्रारंभसे हों वहाँ उसके पहले चीज की पंक्ति लिखी है. और जहाँ वह नहीं लिखी वहाँ वह पंक्ति गायी जाय.

कोमल स्वरोंके अक्षरोंके नीचे जहाँ (.) दीख पड़े वहाँ उसे हलन्त (~) जानना चाहिये । जैसे—ग् के स्थानपर ग् पढना चाहिये ।

तबलेके ठेके और उसके चिन्ह

ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१

ताल—तिलवाडा, मात्रा १६

धा तुक धीं धीं	धा धा तीं तीं	ता तुक धीं धीं	धा धा धीं धीं
+	३	०	१

ताल—अध्वा, मात्रा १६

ना धीं ऽधीं ना	ना धीं ऽधीं ना	ना तीं ऽतीं ना	ना धीं ऽधीं ना
+	३	०	१

ताल—झुमरा, मात्रा १४

धीं ऽधा त्रक	धीं धीं धागे त्रक	तीं ऽता त्रक	धीं धीं धागे त्रक
+	३	०	१

ताल—धमार, मात्रा १४

धा कि ट	कि ट धा ऽ	ता कि ट	कि ट ता ऽ
+	३	०	१

ताल—दीपचंदी, मात्रा १४

धा गीं ऽ	धा गे धीं ऽ	ता तीं ऽ	धा गे धीं ऽ
+	३	०	१

[१४]

ताल—एकताल, मात्रा १२

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
		(	)					(	)		
+		०		४		०		१		२	

ताल—चौताल, मात्रा १२

धा	धा	धी	ता	किट	धा	धी	ता	किट	कत	गदि	गन
				(	)			(	)	(	)
+		०		४		०		१		२	

ताल—झपताल, मात्रा १०

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३		०		१			

ताल—तेवरा, मात्रा ७

धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गन
			(	)	(	)
+			२		३	

ताल—रूपक, मात्रा ७

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२	

संगीतमें तालकी आवश्यकता

इसमें संदेह नहीं कि संगीतमें स्वरको प्राधान्य है। साथही साथ तालका अधिकार भी कम नहीं, यह बात होनहार गायकने ध्यानमें रखना आवश्यक है। बहुतसे लोग तो गाना सुनसुनकर गवय्ये बन बैठते हैं; और कुछ तो किसीके गानेका ढंग अपनानेमें या उसकी नकल डूबडू करनेमें सिद्धहस्त होते हैं, यह स्वाभाविक गुण ईश्वरी देन है। किन्तु ऐसे गायकोंमें तालके स्थानपर स्वरहीमें गानेवालोंकी संख्या बढी हुई होती है। ऐसे गायक असली गवय्ये नहीं कहला सकते। उन्हें असली गायक कहलाना हो तो तालका अभ्यास परिश्रमपूर्वक करके ताल तथा सुरकी सजावट सप्रमाण बांधनेका ज्ञान संयादन करना चाहिये स्वरसमूह स्वाभाविक है; उसी प्रकार ताल भी स्वाभाविक है किन्तु उसके पहचाननेका अभ्यास होना चाहिये; उपेक्षा करनेसे काम नहीं चल सकता।

(१) ताल— हिसाबसे गानेकी गिनती करना इसीका नाम ताल है।

(२) मात्रा— ठेकेके हिस्सेको सप्रमाण विभक्त करनेको मात्रा कहते हैं।

(३) किसीभी प्रकारका ठेका लगानेपर उसके बोल ज्ञात रहना आवश्यक है। स्वयं लगाया हुआ ठेका बजा सकते हों तो अत्युत्तम। मुखसे बोल, हाथसे ठेका अर्थात् ताली और उंगलीसे मात्रा ऐसा उपयोग करनेकी प्रथा है।

मेरे गुरुदेव श्री. भास्करबुवा बखले मुझसे कहा करते थे कि स्वर तथा ताल रगरगमें समा जाना चाहिये। इसका आशय अभ्यास बढाकर स्वर तथा तालका परिचय दृढ कर लेना चाहिये यही था, और इस हेतु, की पूर्तीकी इच्छासे उपरोक्त पद्धतिसे मुझे स्वयं अभ्यास करना पडा है। इससे मुझे जो लाभ या जिस आनंदकी प्राप्ति हुई वह लिख नहीं सकता। संगीतमें एकतानता होनेका एक मात्र साधन स्वर तथा तालका समन्वय है, इतना बतलाना पर्याप्त होगा। माता तथा पिता हमारे जनक हैं उसी प्रकार संगीतके जनक स्वर तथा ताल हैं।

अर्थात् स्वर तथा तालका संगीतसे समवाय संबंध है। इसके सिवा तालसे गानेमें एक प्रकारका वजन आनेसे संतुलन कायम रहता है यह तालकी विशेषता है।

आजकल ध्रुवपदी गानेके साथसाथ उसके जोड़के मृदंगी बाजके बोलभी लुप्तप्राय हो जा रहे हैं यह बड़ेही दुःखकी बात है। इस पद्धतिके गायकोंकी संख्या उंगलियों पर गिनने योग्य थोड़ी रह गयी है। ऐसे गायकोंसे निजी शिष्य-शाखा बढ़ाकर ध्रुवपदी गान तथा मृदंगी बाज कायम रखनेका यत्न करना यही सविनय निवेदन है। साथ ही साथ ख्यालके गानेवाले बढ़ रहे हैं इस पद्धतिके गवय्योंका भी कर्तव्य है कि वे निजी शिष्य संप्रदाय बढ़ानेकी चेष्टा करें। प्राचीन और शुद्ध संगीत पद्धतिकी शिक्षाका प्रबंध करना आचार्योंका प्रधान कर्तव्य है। उसी प्रकार सुगम और हितकर गानप्रणालीका अनुसंधान करना और उससे लाभ उठाना होनहार गायकोंका प्रधान कर्तव्य है।

आजकाल गायन का शौक भारतीय नवयुवकोंमें खूब बढ़ा हुआ दिखायी दे रहा है यह बड़ेही हर्ष की बात है। किन्तु खेद इस बात का है कि परिश्रमसे मुंह मोड़े हुअे होनेके कारण अच्छे गायकोंका गाना सुन सुन कर स्वयं गुनगुनाते हुअे जो आ गया उसी पर समाधान माननेवालों का बाहुल्य है, सुहेली आवाजमें रसीले, रंगीले गीत गानेपर उन्हें चाहनेवाले पैदा होही जाते हैं। उनके प्रबंधसे चार दो गानेके कार्यक्रम हुये, जल्दोंमें बाहवाका नारा बुलंद हुआ, थिएटर घोर करतल ध्वनीसे निनादित हुआ और आप प्रसिद्धी के पीछे सोटा दुपट्टा लेकर पड गये। झट रेडिओ, ग्रामोफोन आदि यांत्रिक चुंबकोंमें अपना मन आकर्षित हुआ और थोड़ेही दिनोमें नाम विख्यात हो गया।

ऐसी वायुकी अनुकूलता पर निर्भर रहनेवाली प्रसिद्धि हवाके बगोलेकी भौंति आकाशमंडलमें मंडराती हुअी दिखायी देते देर नहीं लगती। और प्रतिकूल अंशाके एकही थपेडमें नामशेष होतेभी देर नहीं लगती। होनहार गायक अपना नाम सुवर्णाक्षरोंसे कीर्ति—मंदिरमें लिखवानेकी महत्त्वाकांक्षा अवश्य रखे किन्तु स्वसंपादित स्वकष्टार्जित सत्यार्थके बल पर; दूसरोंकी कृपाके सहारे नहीं।

आभ्यास-ग्रन्थालय,

भारतनिधि, करौली

राग-कामोद

वाराणसी-5

इस रागमें रिषभ, गंधार, धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं. मध्यम, स्वर कोमल, और तीव्र भी लगता है. निषाद यह स्वर तीव्र लगता है. परंतु तान पलट्टेमें लेनेकी अधिक प्रथा है. गंधार, यह स्वर वक्र तरहसे लगता है. इसके गानेका समय रातका प्रथम प्रहर है. यह राग करुणरस प्रधान है.

आरोह—सा म् रे प प ध प सा

अवरोह—सा ध प ग म् प ग म् रे सा

मुख्य अंग—सा म् रे प ऽ म प ध प ग म् प ग म् रे सा

जाती—संपूर्ण

वादी—पंचम

संवादी—षड्ज

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना

+

३

०

१

सा सा म् रे प ऽ प प ग म् प प ग म् रे सा

प प सा सा रे रे सा सा ग म् ध प ग म् रे सा ॥

प ध प प सा सा सा सा सा ऽ ध प ग म् ध प

सा सा म् रे सा ऽ ध प ग म् प ग म् प ग म् रे सा ॥ १ ॥

राग-कामोद

ताल—एकताल (मध्यलय)

हूं तो जन मन छाड़ूंगी । प्रेम प्यारे के सौंग ॥ धृ० ॥ बेदना तोसे
येही जानत हूं । मोरे प्यारे की जिये इक रौंग ॥ १ ॥

[२]

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 हूँऽतो जनमन
 मूरेप पपधप

छाँऽ SSS डूँऽ गीऽ प्रेऽऽ म प्याऽरेऽ के सौँऽऽ गऽ
 पग गम्प मूरे साऽ मूसारे सा साऽधप सा मूसारे साऽ

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 वेऽद ना
 पधप सा

तोऽ से येही जाऽ नत हूँऽ S S मोरे प्याऽऽ रेऽ S
 सोऽरै सा साध साऽ सोऽरै साध प S धप गम्प मूरे सा
 कीऽ ऽजि थेऽ S इक रौँ गऽऽऽ S S S S S हूँऽतो जनमन
 पऽरै ऽसा साध पऽ मप ध पधपप पग गम्प मूरेसा मूरेप पपधप

आस्ताई का बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 हूँऽतो जनमन

छाँऽ SSS डूँऽ गीऽ प्रेऽऽ म प्याऽरीऽ के सौँऽऽ गऽ हूँऽतो जनमन

[३]

१ म् रे साऽ साऽ ध प सा रे साऽ रेसा हूंऽतो जनमन
 २ सा रे सारे साऽ धध पप सा रे म्सा रेसा हूंऽतो जनमन
 ३ सा प गऽ म्ऽ पग म्रे सा सा गम् गम्प हूंऽतो जनमन
 ४ सारे सा म्रे साऽ प गम् प सा म्रे पऽ हूंऽतो जनमन
 ५ म्म् रेरे साऽ पप म्म् रेरे सा प गम् पऽ हूंऽतो जनमन
 ६ छांऽ ऽऽऽ डूंऽ गीऽ सा रेसा सा म् रेरे पग म् रे
 सा ध पऽ साऽ म्रे प गम् धप गम् रेसा हूंऽतो जनमन
 ७ छांऽ ऽऽऽ डूंऽ गीऽ गम् ध प गम् ऽप म्ऽ रे सा
 पप गम् गम् धप सा धप ग म् ऽरे साऽ हूंऽतो जनमन
 ८ छांऽ ऽऽऽ डूंऽ गीऽ पम् रेसा ध प पप सासा रे सासा
 म्रे प मप धप गम् धप सा धप गम् रेसा प जनमन
 ९ छांऽऽ डूं गीऽऽ ऽऽ ऽ प्रेऽमऽ प्या रेऽ केऽ सौंऽ गऽ जनमन
 सामरे प पधप साऽ ध पऽम्रे सा म्रे पऽ गम् धप
 १० छांऽऽ डूं गीऽऽ ऽऽ प्रे मऽऽ प्या रेऽ केऽ सौंऽ हूंऽतो जनमन
 पधप सा सासाध धप प गम्प सा म्रे पऽ धप

अंतरेका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 १ तोऽ से म्ऽ रेऽ प धप सा ध पऽ साऽ बेऽद ना
 बेऽद ना

२ तोऽ से साऽ मरे प धप सा धप सासा साऽ बेऽद ना
 ३ तोऽ से साऽ धप गम् प गम् रेसा पधपप साऽ बेऽद ना
 ४ तोऽ से साऽ धप रे सा पध पप रेसा साऽ बेऽद ना
 तोऽ से येही जाऽ नत हूंऽ ऽ ऽ मोरे प्याऽऽ रेऽ ऽ
 ५ मरे पम धप साऽ रे सासा धप रेरे सासा धप बेऽद ना
 ६ तोऽ से धप साऽ धप रे सा रेसा धप गम् धप सा धप
 गम् पधप साऽ साऽरेसा म रे सा ध परे साऽ बेऽद ना
 ७ तोऽ से साऽ साध प धप सा रेसा मऽ म रे रेसा साध
 धप पग मरे साप पधऽप सा साधऽप मप पप रेसा बेऽद ना
 ८ तोऽ से येही जाऽऽ नत हूं ऽ मोरे प्याऽ रेऽ बेऽद ना
 सा रे सा मरे पमप पध प सा सा रे म रे साऽ
 ९ बेद ना तोऽ सेऽ येहीऽ जान तऽ हूं मोऽऽ रेऽ प्याऽ ऽऽऽ
 पध प साध पऽ पपधप पसा परे सा मसा रे साऽ पऽ धपप
 रे ऽ बेद नाऽऽ तोऽ सेऽऽ येही जा नत हूंऽ बेऽद ना
 सा ऽ म रे साधप मरे साधप मरे प सा रे साऽ
 १० तोऽ से मर्म रेरे सासा धध पप रेरे पप सासा मरे प
 मरे पधप पप धपप सा सा सा म रेसा मप गम् रेसा बेदना
 तोऽ से येही जाऽ नत हूंऽ ऽ ऽ मोरे प्याऽऽ रेऽ ऽ

राग—कामोद

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

कारे जाने ना दूंगी माई अपने बालम को । नैननमें कज राखूं । पलकन
मूंद मूंद ॥ धृ० ॥ बिजली चमके मेहा बरसे । “ मोमदसा ” पिया सदा
रंगीले । नैना बरसे बूंद बूंद ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३				०				१				+			
ऽ	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	ऽ	जा	ने	ना	दू	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	सा	ऽ	मू	प	ऽ	प	ध	प	मू	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	मा	ई	अ	प	ने	बा	ल	म	को	ऽ	नै	ऽ	न	न
ऽ	ऽ	ध	प	ग	मू	प	मू	रे	रे	सा	ऽ	सा	प	सा	सा
में	ऽ	क	ज	रा	ऽ	खू	ऽ	प	ल	क	न	मू	ऽ	द	मू
सा	ऽ	सा	सा	रे	ऽ	सा	ऽ	रे	रे	सा	सा	मू	ऽ	रे	मू
ऽ	द	का	ऽ	रे	ऽ	ऽ	जा	ने	ना	दू	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	रे	सा	ऽ	मू	प	ऽ	प	ध	प	मू	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३				०				१				+			
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बि	ज	ली	ऽ	च	म	के	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	सा	ऽ	सा	सा	सा	ऽ	सा	ऽ	सा	ऽ
ब	र	से	ऽ	मो	ऽ	म	द	सा	ऽ	पि	या	स	दा	ऽ	र
सा	रे	सा	ऽ	सा	ध	सा	सा	सा	ऽ	सा	सा	रे	सा	ऽ	सा

गी ऽ ले ऽ नै ऽ ना ऽ ब र से ऽ बूँ ऽ द बूँ
 घ ऽ प ऽ म् रे प ऽ प प ध प म् ऽ रे म्
 ऽ द का ऽ रेऽ ऽ जा ने ना दूँ ऽ गी ऽ ऽ
 १ ऽ रे सा ऽ म् रे प ऽ प ध प म् रे प ऽ ऽ

आस्ताईकी तानें

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
१ ऽ ऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
२ १ म् रेसा सा ऽ	म् रेसा सा जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
२ गम् पध गम् धध	प धध प जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
३ ऽ ऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
४ ३ म् रेसा सा ऽ	पपसासारेसामरे	प गम् प गम्	प म् रे सा
५ ऽ ऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
६ ४ सासा मरे पप गम्	पप म् रेसा सा	मप धध पप गम्	पप म् रेसा सा
७ ऽ ऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँ ऽ	गी ऽ ऽ
८ ५ ऽऽ ऽऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँऽ ऽऽ	५ऽ ऽऽ गीऽ ऽऽ
९ म् रेसा सा ऽ	म् रे प ऽ प	ध प गम् पध	गम् पप म् रेसा
१० ६ ऽ ऽ का ऽ	रेऽ ऽ जा	ने ना दूँऽ ऽऽ	गी ऽ ऽऽ
११ रे सा सा ऽ	म् रे प ऽ प	ध प पपसासा	सा प गम् पप
१२ ७ माऽ ई का रेऽ	ऽ जा ने ना	गम् पप गम् रेसा	गम् धप गम् प
१३ गम् प सा मरे	प प ध प		

८ सासामुरे प का रेऽ ऽ ऽ जा ने ना दूंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 सा मुरे प ऽ प ध प पध पप सासा धप गम् पप
 ९ गीऽ ऽऽ का ऽ रेऽ ऽ ऽ जा ने ना दूं ऽ गीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 म्मुरेसा सा ऽ मुरे प ऽ प ध प म्मुरे मुरे पम् धप सा
 माऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ईऽ ऽऽ ऽ जा ने ना दूं ऽ गी ऽ ऽ ऽ
 रैसा धप म्मुरे गा मुरे मुरे प
 १० म्मुरेसा धध पप सासा धप रैसासा पप धप गम् पप गम् पप म्मुरेसा
 म्मुरेसा का ऽ रेऽ ऽ ऽ जा ने ना दूं ऽ गी ऽ ऽ ऽ

अंतरेकी ताने

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
बि ज ली ऽ	च म के ऽ	मे ऽ हा ऽ	ब र से ऽ
१ बि ज ली ऽ	च म के ऽ	रैरैसासाधध पप	गम् पप म्मुरेसा
२ बि ज ली ऽ	च म के ऽ	पपसासापप सासा	मुरे पप म्मुरेसा
३ बि ज ली ऽ	च म के ऽ	म्मुरेसाधध पप	म्मुरेसा रैरे सासा
४ बि ज ली ऽ	च म के ऽ	पध पपसासा रै	म्मुरेसासा धप
गम् पप म्मुरेसा	म्मुरेसा पप गम्	धध पप पध पप	सासा धप गम् पप
बि ज ली ऽ	च म के ऽ	मे ऽ हा ऽ	ब र से ऽ
५ सासामुरे पप धप	पपसासा रैसा धप	पपसासा सा ऽ	पप सासा सा ऽ
६ रै सा धध प	गम् पप म्मुरेसा	रैरैसासा धध पप	गम् पप म्मुरेसा
७ गम् धध पप नीसा	रैरैसासाम्मुरेसा	सासा मप धध पप	गम् पप म्मुरेसा

८ बिऽ जऽ लीऽ ऽ चऽ मऽ केऽ ऽ ऽऽ ऽऽ मेऽ हा ब र सेऽ ऽऽ
 पध पप नीसाँ रै साँसा धप गम् प मम् रेसा मुरे प ध प नीसाँ रैसाँ
 ९ बिऽ ऽऽ जऽ लीऽ चऽ मऽ केऽ ऽ मेऽ हाऽ ऽ ऽऽ ऽ ब रऽ सेऽ
 गम् पप म्मरेसा पप म्मरेसा सा साँप धध प गम् प प म्मरेसा
 १० बि ज ली ऽ च म के ऽ सासासाम् रेरे मुरे प मुरे रेप पप
 धप साँ पप साँसाँ रै पप नीसाँ रै रैसाँ साँध धप पप गम् पप गम् रेसा

राग—कामोद

ताल—एकताल (मध्यलय)

बंगरी मोरी मुरक गई गई वे । लंगरिया नवा करत चरचा जठनी
 ननंद दुलहन लाभला ॥ धृ० ॥ एक डर है मोहे सास ननंदकी । दूजे डर है
 मोहे धरक गई छतिया ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
बं	ग	री	मो	री	मु	र	क	ग	ई	ग	ई
प	ध	प	साँ	म	प	ग	म्	रे	रे	नी	सा
वे	ऽ	ऽ	लं	ग	रि	या	ऽ	ऽ	न	वा	ऽ
रे	ऽ	ऽ	प	म	प	ग	ऽ	म्	रे	सा	ऽ
क	र	त	च	र	चा	ज	ठ	नीऽ	ऽ	ऽ	न
सा	प	प	सा	सा	सा	नी	सा	गरे	रे	ऽ	सा
नं	द	दु	छ	ह	न	लाऽ	ऽ	ऽ	भ	ला	ऽ
नी	सा	रे	ग	म्	प	गम्	प	म्	रे	सा	ऽ

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
ए	क	ड	र	है	ऽ	मो	हे	सा	ऽ	स	न
प	प	सा	सा	सा	ऽ	रै	सा	ध	नी	सा	रै
नं	द	क्रीऽ	ऽऽ	दू	ऽ	जे	ऽ	ड	र	है	ऽ
सा	सा	साध	पप	सा	ऽ	रै	ऽ	प	प	म्	ऽ
मो	हे	ध	र	क	ग	ईऽ	ऽऽ	छ	ति	या	ऽ
रै	सा	प	नी	सा	रै	सा	रै	प	प	म्	रै

राग-कामोद

तराना, ताल-एकताल जलद लय

अततन देरेना दीतना तोरेदानी । नादिर दिर तुंदिर दिर दी तन देरेना
तान देरेना ॥ धृ० ॥ दिर दिर तन दिर दिर तन तुंदिर दिर तननन । देर्ना
देर्ना तन नादेरे तननन देरेना ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
अ	त	त	न	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	दी	ऽ	त
प	ध	म	प	ग	म्	रे	सा	ऽ	म्	रे	रे
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ता	रे	दा	ऽ	नी	ऽ
प	ऽ	ऽ	ऽ	गम्	प	ग	म्	रे	ऽ	सा	ऽ
ना	दिर	दिर	तुं	दिर	दिर	दीऽ	ऽ	त	न	दे	रे
सा	म्	रे	प	प	प	नीसा	रै	सा	धं	प	प

ना	S	S	ता	S	न	दे	रे	ना	S	S	S
सा	S	S	ग	म्	प	म्	रे	सा	S	S	S

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
दिर	दिर	त	न	दिर	दिर	त	न	तुं	दिर	दिर	त
प	प	सा	सा	सा	सा	सा	सा	ध	नी	सा	रै
न	न	न	न	दे	S	नी	देS	S	नी	त	न
सा	सा	ध	प	सा	S	सा	धप	प	प	प	प
ना	दे	रे	त	न	न	न	न	दे	रे	ना	S
ग	म्	प	म्	रे	रे	सा	सा	ग	म्	रे	सा

राग-कामोद

ताल-झंपा और झपताल (मध्यलय)

गोपाल गिरधर गोपी पत घन श्याम सुंदर । और मुरली अघर धरे
॥ धृ० ॥ बीमलार्जुन को तार्यो । सकटा सुरको मार्यो । बुडतात गज राख्यो ।
सुदामाको चुरा फाक्यो । ऐसो भक्तनका भुको । एकनाम सो रोको । वै जुज-
जमको टोक्यो ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	S	धा	गे	कि	ट	कड	धा	की	ट	पखवाज
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	तबला
+		३			०		१			
गो	S	पा	S	ल	गिS	र	ध	SS	र	
ध	S	प	S	प	गम्	प	म्	मुरे	सा	

गो	ऽ	पी	ऽ	प	त	ऽ	घ	ऽ	न
सा	ऽ	म्	रे	रे	प	ऽ	प	ऽ	प
श्या	ऽ	म	ऽ	सुं	द	र	औ	ऽ	र
प	ऽ	प	ऽ	प	ध	ध	प	ऽ	प
मु	र	ली	ऽ	अ	घऽ	र	घ	ऽ	रे
प	प	ग	म्	प	मूरे	रे	सा	ऽ	सा

अंतरा

धा	ऽ	धां	गे	कि	ट	कड	धा	की	ट	पखवाज
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	तबला
+		३		०			१			
बी	म	ला	ऽ	जुं	न	को	ता	ऽ	यों	
प	प	सां	ऽ	सां	सां	सां	सां	ऽ	सां	
स	क	टा	ऽ	सु	र	को	मा	ऽ	यों	
सां	ध	सां	ऽ	रै	सां	सां	ध	ऽ	प	
बु	ड	ता	ऽ	त	ग	ज	रा	ऽ	ख्यो	
रै	रै	सां	ऽ	सां	ध	ध	प	ऽ	प	
सु	दा	मा	ऽ	को	चुऽ	रा	फा	ऽऽ	क्यो	
ग	म्	ध	ऽ	प	गम्	प	म्	मूरे	सा	
ऐ	ऽ	सो	भ	ऽ	क्त	न	को	मु	को	
सा	ऽ	म्	रे	ऽ	प	प	प	प	प	
ए	क	ना	ऽ	म	सो	ऽ	रो	ऽ	को	
प	प	प	ऽ	सां	सां	ध	ध	ऽ	प	

वै ऽ जु ज जऽ म कोऽऽ टो ऽऽ क्यो
 रे ऽ सा सा गम् प गम्प म् मुरे सा

राग—केदार

इस रागमें रिषभ, धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं. मध्यम कोमल और तीव्र लगता है. निषाद तीव्र और कोमल दोनों लगते हैं. कोमल निषाद अवरोह में वक्र तरहसे लेते हैं. गंधार वर्ज नहीं है कम लगता है. यह राग रातके प्रथम ग्रहरमें गाया जाता है. भक्तिस प्रधान यह राग है.

आरोह—सा म् प ध नी सा । सा म् म् प ध प सा	जाती—ओडव-संपूर्ण
अवरोह—सा नी ध प म प ध प म् मुरे सा	वादी—मध्यम
मुख्य अंग—सा सा म् म् प प ध प म् ऽ ऽ मुरे सा	संवादी—षड्ज

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 सा ऽ म् म् प ऽ ध प म् ऽ ऽ म् रे ऽ सा ऽ
 म् म् रे सा रे ऽ सा ऽ म् म् प प ध प म् ऽ
 सा ऽ ध प म प ध प म् ऽ ऽ म् रे ऽ सा ऽ ॥
 प प सा सा सा ऽ ध प ध प म् ऽ म् प सा ऽ
 नी सा म् ऽ रे सा सा ऽ ध प म प ध नि ध प
 म प ध प. म् ऽ म् प म् ऽ ऽ रे सा रे सा ॥१॥

राग—केदार

ताल—एकताल (मध्यलय)

सीखे हो छलबल नट नागर । एहो नट नागर ॥ धृ० ॥ मुरली अधर-
धर अदक विराजत । मोर मुकुट बुध सागर ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+	०			४	०		१			२	
										सीऽ	खे
										मृग	प
हो	ऽ	ऽऽ	छऽलऽ	बऽ	ल	ऽ	नऽटऽ	नाऽ	गर	एऽऽऽ	हो
ध	प	ऽऽ	पधपऽ	मृग	प	ऽ	पधपऽ	मूऽ	रेसा	सारेसासा	मृ
न	ऽऽ	टऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽऽ	गऽ	रऽऽऽ	ऽऽ	सीऽ	खे
मृ	मृग	पऽ	ऽऽ	प	ध	धन्नि	धप	पधपप	मूऽ	मृग	प
हो	ऽ	ऽऽ	छऽलऽ	बऽ	ल	ऽ	नऽटऽ	नाऽ	गर		
ध	प	ऽऽ	पधपऽ	मृग	प	ऽ	पधपऽ	मूऽ	रेसा		

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+	०			४	०		१			२	
										मुरलीऽ	अधर
										पपसाऽ	ससासासा
ध	र	अद	कऽ	बिऽऽऽ	रा	ऽऽ	जऽ	तऽऽऽ	ऽऽ	मोऽ	र
रे	सा	साध	साऽ	धनीसा	रे	सा	धन्नि	धप	पधपप	मूऽ	मृग
											प

[१४]

मुकु ऽट बुध ऽऽऽऽ सा ऽऽ ग र ऽऽऽऽ ऽऽ सीऽ खे
 पध ऽप पसा सासा रेऽ सा धनि ध प पधपप मूऽ मृग प

आस्ताईका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

१ हो ऽ ऽऽ छऽलऽ बऽ ल सारे सासा मृम् रेसा सीऽ खे
 २ हो ऽ ऽऽ छऽलऽ बऽ ल पप मृम् रेऽ सासा सीऽ खे
 ३ हो ऽ ऽऽ छऽलऽ बऽ ल प म् रेसा मृम् पप ध
 ध पप पऽ धपम् म् प सा रे सारे साऽ सीऽ खे
 ४ हो ऽ धप मृम् रे ऽ सासा म् सासा पऽ सीऽ खे
 ५ हो ऽ साप मूऽ पऽधप म् साप म् सासा रेसा सीऽ खे
 ६ हो ऽ ऽऽ छऽलऽ बऽ ल प म् मृम् पप धप धप
 म् ऽ पप साऽ ध प प धप मृरे साऽ सीऽ खे
 ७ हो ऽ पधपप सासा धध पप धप धप धपम् मृपम् सीऽ खे
 ८ हो पसा नीध पप पध मृम् सासा पप सासामृम् मृमरेसा सीऽ खे
 ९ हो ऽ छल बल नट नाऽ गऽऽऽ रऽ एहोनट नाऽगर सीऽ खे
 मृरे सासा मृप धप पधपम् पम् सासामृम् पऽमृम्
 १० हो ऽऽ छऽ लऽ बऽ लऽ न ट नाग रऽऽ सीऽ खे
 म् पप मृप पध धनि धप प सा पध धपम्

अंतरेका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना

+

०

४

०

१

२

मुरलीऽअधर

१ ध र म्प साऽ धप पप म् प सासा म्प मुरलीऽअधर
 २ ध र सानी धप धप म् रैसा धप सासा म्प मुरलीऽअधर
 ३ ध र सा रैसासा पध म्प सा पप सा रैसा रैसा मुरलीऽअधर
 ४ ध र रै रैसासा धप म्प धन् धप म्पप म्प रैसा मुरलीऽअधर
 ५ ध र रै रै सासा धध पप म्प रैसा म्प सा रै मुरलीऽअधर
 ६ ध र म्ऽ पऽ सा रै सा म् रैसा साऽ मुरलीऽअधर
 ७ ध र अद कऽ म्प सा म्प रैसा धध पऽ धप म्
 पप म् पऽ साऽ पसा रै सा सा म् रैसा ऽऽ मुरलीऽअधर
 ८ धऽ ऽर अद कऽ बिऽऽ रा ज त ऽऽ ऽऽ मुरलीऽअधर
 पसा रैसा पध पऽ सासासा रै सा म् सा रै साऽ
 ९ मुर लीअ धर धर अद कबि राऽ जत मुर लीऽ मुरलीऽअधर
 पध पसा परै सासा म्प रैसा म्प रैसा सा रै साऽ
 १० धऽऽऽ रऽऽऽ अद कबि राऽ जत ऽ मुर लीअ धर धर ऽऽ
 रै रैसासा म्प रैसा म्प पसा सा म् म्प म् सा रै साध धप पम् रैसा
 मुर लीऽअ धर धऽ रऽ अ ध रऽ धर मुरलीऽअधर
 पप सा ऽसा सासा सा म् रैसा सा म् रैऽ सासा

[१६]

राग—केदार

ताल—एकताल (मध्यलय)

चतुर सुगर बैया पकरत । हो बलमा वेतो नवेलि नार कहां जाने हित
की सार गोयार ॥ धृ० ॥ महा जान अत प्रवीन सब बिध जानत हो बलमा ।
वेतो अपने घरकी लाड लडोनी लाड लिको लीजो मनाय । कर प्यारे सरस
गरवा लगाये ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
च	तु	र	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	ऽ	प	क
सा	सा	सा	प	प	प	मप	धप	म्	ऽ	रे	सा
र	ऽ	त	ऽ	हो	ऽ	ब	ल	मा	ऽ	वे	तो
रे	ऽ	सा	ऽ	प	ऽ	ध	प	म्	ऽ	प	प
न	वे	लि	ना	ऽ	र	क	हा	ऽ	जाऽ	ऽ	ने
ध	नि	ध	प	ऽ	प	ग	ग	ऽ	गम्	ध	प
हि	त	कि	सा	ऽ	र	गोऽ	ऽऽ	ऽ	या	ऽ	र
ग	म्	रे	सा	ऽ	सा	म्प	धप	ऽ	म्	ऽ	म्

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
च	तु	र	सु	ग	र	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न
						प	प	ऽ	सा	ऽ	सा

अ	त	प्र	वी	ऽ	न	स	ब	बि	ध	जा	ऽ
सा	सा	रे	सा	ऽ	सा	ध	नी	सा	रे	सा	ऽ
न	त	हो	ऽ	ब	ल	मा	ऽ	बो	तो	अ	प
ध	प	म्	ऽ	म्	ग	प	ऽ	प	प	ध	नि
ने	घ	र	की	ला	ऽ	लऽ	डो	ऽ	नी	ला	ड
घ	प	प	प	प	ऽ	धप	प	ऽ	म्	म्	ग
ली	को	लि	जो	म	ना	ऽ	य	क	र	प्याऽ	ऽ
प	प	म्	म्	रे	सा	ऽ	सा	प	प	धनी	ऽ
रे	स	र	स	ग	र	बा	ऽ	लऽ	गा	ऽ	ये
नी	रे	सा	नी	ध	प	प	ऽ	धप	म्	ऽ	म्
च	तु	र	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	ऽ	प	क
सा	सा	सा	प	प	प	मप	धप	म्	ऽ	रे	सा

आस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
१ च	तु	र	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	पप	म्म्	रेसा
२ च	तु	र	सु	ग	र	सासा	म्म्	पप	धप	म्म्	रेसा
३ च	तु	र	सु	ग	र	म्म्	पप	सासा	धप	म्म्	रेसा
४ च	तु	र	सासा	म्म्	पप	धप	म्म्	म्म्	पप	सासा	रेसा
५ च	तु	र	पप	सासा	रेरे	सासा	सासा	म्म्	पप	म्म्	धप
धप	धप	म्म्	पऽ	म्ग	रेसा	धप	म्	धप	म्ग	रेसा	सा

रा.सं.(३)१

६	च	तु	र	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	ऽ	सासा	मम्	
	पध	पप	सासा	धप	म्	प	सा	धप	मम्	पप	मग्	रेसा	
७	रैरै	सासा	धप	मम्	पप	सासा	धप	मम्	पप	धप	मम्	म्	
८	च	तु	र	ऽ	सारे	सासा	पध	पप	सा	रै	सासा	पध	पप
	पध	पप	म्	सु	ग	र	बैऽ	ऽऽ	या	ऽ	प	क	
९	र	ऽ	त	ऽ	सारे	सासा	मम्	सारे	सासा	मम्	पप	सारे	
	सासा	मम्	पप	धप	सारे	सासा	मम्	पप	धप	सासा	धप	म्	
१०	चऽ	तुऽ	रऽ	ऽऽ	सुऽ	गऽ	र	ऽ	बैऽ	ऽऽ	याऽ	ऽऽ	
	पप	धप	मम्	ऽऽ	मम्	पप	म्	ऽ	मम्	पप	मग्	रेसा	
११	चऽ	तुऽ	रऽ	सुऽ	गऽ	रऽ	बैऽ	याऽ	ऽऽ	पक	रऽ	तऽ	
	पप	सासा	रैरै	सासा	धप	मम्	पप	मम्	रेसा	सासा	मम्	पप	

अंतरेकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना	
+		०		४		०		१		२		
						म	हा	ऽ	जा	ऽ	न	
१	अ	त	प्र	बी	ऽ	न	सासा	धप	मप	धप	मम्	रेसा
	सासा	साम्	सासा	मम्	सासा	पप	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न
२	अ	त	प्र	बी	ऽ	न	पप	नीसा	रैरै	सासा	म्	रेसा
	धप	म्	रेसा	पऽ	मम्	रेसा	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न
३	अ	त	प्र	बी	ऽ	न	सारे	सासा	मम्	पप	धप	सासा

४	धध	पप	मम्	रेरे	सासा	पम्	म्	ऽ	धप	मम्	रेरे	सा		
	सा	रे	सा	नी	धप	मम्	रेरे	सा	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न
५	म्	रे	सा	धप	मम्	रेसा	साम्	ऽम्	पध	ऽप	सा	रे	ऽसा	
	पध	ऽप	मप	ऽम्	सारे	ऽसा	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		
६	सासा	मम्	सासा	रेरे	पप	सासा	पप	रेरे	मम्	पप	म्	प		
	धप	सा	पध	ऽप	मम्	रेसा	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		
७	अ	तऽ	ऽऽ	प्र	वीऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽ	मऽ	हाऽ	जाऽ	नऽ		
	सा	मम्	रेसा	सा	धप	मप	धप	मम्	मम्	पऽ	मग	रेसा		
	ऽ	अऽ	तऽ	प्रऽ	वी	न	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		
	सा	मग	पऽ	धप	सा	सा								
८	अऽ	ऽऽ	तऽ	ऽऽ	प्रऽ	ऽऽ	वी	ऽऽ	न	ऽ	ऽ	ऽऽ		
	सासा	सासा	नीनी	नीनी	धध	पप	प	धप	म्	ऽ	प	मग		
	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		
	रेसा	सा	मप	धप	मग	रेसा								
९	पप	मम्	रेरे	साऽ	सासा	धप	मप	धप	मम्	रेरे	सा	ऽ		
	रेरे	रेसा	सासा	नीनी	नीध	धध	पप	पम्	मम्	रेरे	सा	सासा		
	अ	त	प्र	वी	ऽ	न	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		
१०	सा	म्	पऽ	मग	रेसा	नीध	मप	धप	मम्	रेसा	सा	ऽ		
	सासा	मम्	पप	धप	सा	नी	म	हा	ऽ	जा	ऽ	न		

राग—केदार

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

राम नाम की ओट बड़ी है । शरन गये प्रभू का ड देत नहीं । करत
कृपा की ओट बड़ी है ॥ धृ० ॥ राम समामें हरिजन बैठे । कोई बडा कोई
छोट बड़ी है ॥ १ ॥ तुलसीदास पार चुके परसो । मिटत लोह के कोट
बडे है ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	की	ऽ	ओ	ऽ	ट	ब	डी	ऽ	है	ऽ
मू	ऽ	रे	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	मू	ऽ	मू	ग	प	ऽ	पध	पप
श	रे	न	ग	ये	ऽ	ऽ	प्र	मु	का	ऽ	ड	दे	ऽ	त	ऽ
प	प	सा	सा	नी	सा	रे	सा	सा	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	धप	मू
क	र	त	कृ	पा	ऽ	की	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ट	ब	डी	ऽ	है
मू	मू	मू	मू	प	ऽ	सा	सा	रे	सा	नी	ध	प	मू	ऽ	पध
रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	की	ऽ	ओ	ऽ	ट	ब	डी	ऽ	है	ऽ
मू	ऽ	रे	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	मू	ऽ	मू	ग	प	ऽ	पध	पप

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
रा	ऽ	म	स	भा	ऽ	में	ऽ	ह	रि	ज	न	बै	ऽ	ठे	ऽ
मू	ऽ	प	प	सा	ऽ	सा	ऽ	सा	सा	रे	सा	धप	प	मू	ऽ

ऽ को इ ब डा ऽ को इ छो ऽ ट ब डी ऽ है ऽ ऽ ऽ
 ऽ म् म् म् प ऽ साँ रेँ साँ नी ध प म् ऽ पध पप
 रा ऽ म ना ऽ म की ऽ ओ ऽ ट ब डी ऽ है ऽ ऽ ऽ
 म् ऽ रे सा ऽ रे सा ऽ म् ऽ म् ग प ऽ पध पप
 तु ल सी दा ऽ स पा ऽ र चु के ऽ प र सो ऽ
 म् म् प साँ ऽ साँ ध नी साँ रेँ साँ ऽ ध प म् ऽ
 मि ट त ऽ छो ऽ ह के ऽ ऽ को ऽ ट ब डे ऽ है ऽ ऽ ऽ
 म् म् म् ग प ऽ प साँ साँ रेँ साँ नी ध प म् ऽ पध पप.
 रा ऽ म ना ऽ म की ऽ ओ ऽ ट ब डी ऽ है ऽ ऽ ऽ
 म् ऽ रे सा ऽ रे सा ऽ म् ऽ म् ग प ऽ पध पप

ध्रुपद, राग—केदार

ताल—चौताल (मध्यलय)

सरस सीस मुगुट मोर पौछन को राजत कुंडल । ललत कुटील आलख
 भाल बिसाल तिलक । मृग मदको नीके झलके ॥ धृ० ॥ भोये धनुख नैन
 कमल नास कीर आधार बिब । दसन कुंद केंबु । कौंठता मधमणी कौस्तुभ ।
 छबी छाय रहे ॥ १ ॥

धा	धा	धीँ	ता	किट	धा	धीँ	ता	किट	कत	गदि	गुन
+		०		४		०		१		२	
					स	र	स	सी	ऽ	स	
					सा	सा	सा	म्	ऽ	म्	
मु	गु	ट	मो	ऽ	र	पौँ	ऽ	छ	न	को	ऽ
म्	म्	ग	प	ऽ	प	प	ऽ	प	प	ध	नि

रा	ऽ	ऽ	ज	त	ऽ	कुं	ऽ	ड	ल	ल	ल
ध	ऽ	प	प	प	ऽ	प	ऽ	म्	म्	म्	म्
त	कु	टि	ल	अ	ल	ख	भा	ऽ	ल	बि	सा
म्	प	प	प	ध	प	म्	म्	ऽ	म्	म्	म्
ऽ	ल	ति	ल	क	मृ	ग	म	द	को	ऽ	ऽ
ऽ	म्	म्	म्	म्	म्	ग	प	प	प	ऽ	ऽ
नी	ऽ	के	ज्ञ	ल	के	स	र	स	सी	ऽ	स
म्	ऽ	रे	सा	सा	सा	सा	सा	सा	म्	ऽ	म्

अंतरा

धा	धा	धीं	ता	किट	धा	धीं	ता	किट	कृत	गदि	गन
+		०		४		०		१		२	
भो	ऽ	ये	ऽ	ध	नु	ख	नै	न	क	म	ल
म्	ऽ	प	ऽ	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा
ना	ऽ	स	की	ऽ	र	अ	ध	र	बी	ऽ	ब
सा	ऽ	रै	सा	ऽ	नी	ध	ध	प	प	म्	म्
द	स	न	कुं	ऽ	द	कैं	ऽ	बु	कौं	ऽ	ठ
म्	म्	म्	प	ऽ	प	ध	नी	रै	सा	नी	ध
ता	ऽ	म	ध	मऽ	णी	कौ	ऽ	स्तु	म	छ	बीऽऽ
प	ऽ	प	प	धप	म्	म्	ऽ	प	प	सा	धपप
छा	ऽ	ये	र	ही	ऽ	स	र	स	सी	ऽ	स
म्	ऽ	म्	रे	सा	ऽ	सा	सा	सा	म्	ऽ	म्

राग—केदार

तराना, त्रिताल (जलदलय)

नादिर दिर दानि तदानि तों तों तों तन नननन देरेना देरेना दीं तदीं
 तान्न देरे तदारे तन देरे तद्रे दानि ॥ धृ० ॥ यल्लमु यल्ली यला यलले दीं
 तन नननन तदारे तद्रे दानि ॥ १ ॥

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
ना	दिर	दिर	दा	नि	त	दा	नि	तों	ऽ	तों	ऽ	तों	ऽ	त	न
सा	म्	म्	म्	म्	प	म	प	सा	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	म्	म्
न	न	न	न	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दीं	ऽ	त	दीं	ऽ	ता
प	ध	म्	प	म्	म्	रे	सा	सा	रे	सा	ऽ	प	ध	ऽ	प
ऽ	न	दे	रे	त	दा	ऽ	रे	त	न	दे	रे	त	द्रे	दा	नि
ऽ	ध	म्	प	सा	ध	ऽ	रे	सा	सा	ध	प	म्	म्	रे	सा

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
य	ल	ल	मु	य	ल	ली	ऽ	य	ला	ऽ	य	ला	ले	दीं	ऽ
ध	प	म्	म्	प	प	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	म्	म्	प	सा	ध
ऽ	त	न	न	न	न	न	ऽ	त	दा	ऽ	रे	त	द्रे	दा	नि
ऽ	रे	रे	सा	सा	ध	प	ऽ	म्	म्	ऽ	प	म्	म्	रे	सा

राग—हमीर

इस रागमें रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद । यह स्वर तीव्र लगते हैं । मध्यम यह स्वर कोमल और तीव्र दोनो तरह से लगता है । इस राग का स्वरूप ऋक्ष है । रात के दूसरे प्रहरमें यह राग गाया जाता है । इस का गंभीर रस है ।

आरोह—सा रे सा ग म् ध नी सा

अवरोह—सा नी ध प म प ग म् रे सा

मुख्य अंग—सा ग म् ध ऽ ध प म प ग म् रे ग म् ध प ग म् रे सा

जाती—ओङ्क-संपूर्ण

वादी—धैवत

संवादी—गंधार

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

सा ग म् ध प म ग म् ध ऽ ऽ ध ध ऽ प ऽ

प प ग म् रे रे ग म् प प ग म् रे रे सा सा

प नी सा रे सा सा ग म् ध ध प प ग म् रे सा ॥

प म ग म् ध ऽ ध ध ध नी ध प नी ध प प

प प ग म् रे रे ग म् ध ऽ म ध नी ऽ ध नी

रे सा नी ध प ग म् रे ग म् ध प ग म् रे सा ॥ १ ॥

राग—हमीर

ताल—एकताल (मध्यल्य)

रे सुरजा रही रे सुरञ्जत नाहीं । उरञ्जन को कैसे करे सुर झाऊं ॥ धृ० ॥

गडझड परी प्रेम की मुंद मुंद मुसकाय रही रे । गडझड परी है प्रेम की । मन को नित उठ लागि रहे नित उरजे ॥ १ ॥

आस्ताई.

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+	०			४	०			१		२	
जाऽ	ऽऽऽ	रही	ऽऽ	रेऽऽऽ	ऽ	सुर	झत	नाऽ	हीऽ	रेऽऽऽ	ऽऽसुर
नीध	नीमध	नीसा	नीध	पधपप	ऽ	परे	गम्	धऽ	पऽ	पधपप	पऽगम्
उर	झऽ	नऽ	कीऽ	कैऽ	सेऽऽऽ	कऽ	रेऽ	सुर	झाऽ	ऊंऽऽऽ	ऽऽसुर
सासा	गम्	धऽ	नीध	धनी	सा	रेसा	सा	नीध	नीध	पऽ	पधपप
जाऽ	ऽऽऽ	रही	ऽऽ	रेऽऽऽ	ऽ	सुर	झत	नाऽ	हीऽ		
नीध	नीमध	नीसा	नीध	पधपप	ऽ	परे	गम्	धऽ	पऽ		

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+	०			४	०			१		२	
पऽऽ	री	प्रेम	कीऽ	मुंद	मुद	मुऽऽ	सकाय	रही	रेऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽसुर
धनीसा	सा	नीध	नीसा	नीध	पप	मपधप	पग	नीध	धनीसा	नीधप	पऽगम्

अंतरेका २ रा प्रकार

जाऽ	ऽऽऽ	रही	ऽऽ	रेऽऽऽ	ऽ	गड	झड	पऽरी	हैऽ	प्रेम	कीऽ
नीध	नीमध	नीसा	नीध	पधपप	ऽ	पप	नीध	धनीसा	साऽ	नीध	नीसा

मनकोऽऽऽनित उठ छाऽ गिर हेऽऽनित उर जेऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
नीध पधपप मप गम् नीध धनी धनीसा नीध नीध पऽ पधपप पऽगम्

आस्ताईका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
+ ० ४ ० १ २

रेऽऽऽ ऽऽसुर

१जाऽ ऽऽऽ रही ऽऽ रेऽऽऽ ऽ गम् धप गम् रेसा रेऽऽऽ ऽऽसुर
२जाऽ ऽऽऽ रही ऽऽ रेऽऽऽ ऽ धप गम् रेसा गम्ध रेऽऽऽ ऽऽसुर
३जाऽ ऽऽऽ रही ऽऽ रेऽऽऽ सा गम् ध मप मप ग म्
ध नीध पऽ गम् रे गम् रे सा गम् धऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
४जाऽ नीध पऽ गम् रे सा नीसा गम् धनी धऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
५जाऽ ऽऽऽ रही मऽ नीध नी सा नीध पधप पऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
६जाऽ ध नीऽ धनी सा गम् धनी धनीसा धनीसा नीध रेऽऽऽ ऽऽसुर
७जाऽ ऽऽऽ रही ऽऽ रेऽऽऽ ऽ धपप गम् धऽ पध मप गम्
रे सा गम् गम्ध मधनी धनी धनीसा मध नीसा नीध रेऽऽऽ ऽऽसुर
८जाऽऽऽ रऽ हीऽ ऽऽ रेऽ ऽऽऽ सुर कृत नाही रेऽऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
साऽमगगम् धनी मध धनीधनीसा नीध पप मप गम्ध

९ जाऽ रही रेऽ ऽऽ सुर झत नाऽहीऽऽऽ रेऽऽऽऽऽ रेऽऽऽ ऽऽसुर
 मूरे सासा रेग मध रैसा नीध मधधनीसा रैसा नीधनीधप
 जाऽ ऽऽऽ रही ऽऽ रेऽऽऽ ऽ सुर झत नाऽ हीऽ ऽऽऽ ऽऽऽ
 १० धनी मध मध नीसा धनी रैसा रे सा नीध मपमप गम् रेग
 धनी सासा धनी सासा गम् धनी सा नीधमध नीसा नीध रेऽऽऽ ऽऽसुर

अंतरेका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

१ पऽऽ री गम् धनी धनीसा सा सा नीध पधपप गम् रेसा गड झड
 २ पऽऽ री सागऽमधनी धनीऽध प रैसा नीध पऽ गम् गड झड
 ३ पऽऽ रीसाऽऽनीधप म प गम् रे गम् धनी धसा नीध
 म प धनी सा रै रैसा नीध सा नीध मप नीध गड झड
 ४ पऽऽ री प्रेम कीऽ पध पप नीध पप सासा नीध पप प
 गग मूरे धध पऽ गऽमग नीध सा रैसा रैसा साऽ गड झड
 ५ पऽऽ री प्रेम कीऽ मुंद मुंद परे सा नीध धप साग मूरे सा
 नीध नी रै साऽ रैसा नीध सा नीध नी धप परैसा गड झड
 ६ पऽऽ री प्रेम कीऽ मुंद मुंद मूरे सा गम् रैसा मूरे सा
 गम् रेसा रैसा नीध रेसा नीध सासा ऽसा नीध सा रैसा गड झड

७ पऽऽ री ऽऽ ऽऽ सां रैसा नीध नीरै रैसा नीनीधप गड झड
 ८ गड झड पऽ रीऽ ऽऽऽ ऽ प्रे ऽम कीऽ मुंदमुंद गड झड
 मूं रैसा साऽ नीध धनीसा सा सा ऽरै साऽ गूं रैसा
 ९ पऽऽ री गड झड पऽऽऽ रीऽ प्रेम कीऽ मुंद मुंऽ दऽ मुस
 गूं मूं रैसा रैसा नीध मप गूं नीध नीसा नीसा रैसा
 काय रऽ हीऽऽ ऽऽ ऽऽऽ रैऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽ गड झड
 नीध मध मधनी धनी धनीसा नीसा गूं रै रै रै साऽ नीनीध
 १० पऽऽ री नीसा गूं पंगूं मूं सा नीसा गूं रैसा गड झड

राग—हमीर

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

घीट लंगरवा कैसे घर जाऊं । सुन पावे मोरि सास ननदिया, छांड दे
 मोहे ॥ धृ० ॥ हूं चली पनघटवा ठाढे । कौन बहाने प्यारे बलमा । छीन लई
 मोरी सीस गगरिया । बरजोरी पी आवे सुंदरवा । कैसे घर जाऊं ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 धी ऽ ट लं ग र वा ऽ कैऽ ऽ ऽ ऽ सेऽ ऽ घ र
 प ऽ प ध म प ग म् नीध ऽ ऽ ऽ धनी सा सा सा
 जाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऊं ऽ सु न पा ऽ वे ऽ मो ति
 सारै सां नी धप मूं रैसा सा सा ऽ सा सा म् ग प ऽ प

सा ऽ स न न दि या ऽ छां ऽ ऽ ड देऽ ऽ मो हे
 प ऽ प ध म प ग म् नी ध ऽ नी धनी सा सा सा
 धी ऽ ट लं ग र वा ऽ कैऽ ऽ ऽ सेऽ ऽ घ र
 प ऽ प ध म प ग म् नीध ऽ ऽ धनी सा सा सा

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 हूं ऽ ऽ च छी ऽ प न घ ट वा ऽ ठा ऽ डे ऽ
 प ऽ ऽ प सां ऽ सां सां सां सां ध सां रे सां ऽ
 कौ ऽ न ब हाऽ ऽ ने ऽ प्या ऽ रेऽ ऽ ब ल मा ऽ
 नी ध ध नी धनी सां सां ऽ ध नी धनी सां सां ध प ऽ
 छी ऽ ऽ न ल ई ऽ मो री सी ऽ स ग ग रि या ऽ
 म् ऽ रे रे रे सां रे सां सां नी ध नी सां नी ध प ऽ
 ब र जो ऽ रीऽ ऽ पी ऽ आ ऽ वे छुं द र वा ऽ
 प प प ऽ धनी रे सां ऽ ध ऽ प ध म प ग म्
 कै ऽ ऽ सेऽ ऽ घ र धी ऽ ट लं ग र वा ऽ
 नी ध ऽ धनी सां सां सां प ऽ प ध म प ग म्

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 धी ऽ ट लं ग र वा ऽ कैऽ ऽ सेऽ ऽ घ र
 १ धी ऽ ट लं ग र वा ऽ सासा गम् धनी सां नी ध प म प गम् रेसां

२धी ऽ ट लं ग र वा ऽ गम् धध धनी सां नी धप मप गम् रेसा
 ३धी ऽ ट लं ग र वा ऽ गम् धनी सां रे सां नी धप मप गम् रेसा
 ४धी ऽ ट लं ग र धध पप गम् पप गम् रेसा सासागम् ध ध
 ५धी ऽ ट लं ग र सासागम् धध धध नीनी धप मप धनी सां ऽ
 ६धी ऽ ऽ ट पध मप गम् धनी सां नी धप मप गम् ध मप गम् ध
 ७धी ऽ ट लं ग र वा ऽ कैऽ ऽ ऽ ऽ सेऽ ऽ घ र
 ८धनी सां नी सां नी धप मप गम् रे ऽ सां नी धप मप गम् धनी सां धनी सां
 ९साग म्ध गम् धनी धनी सां नी धप मप गम् रेग म्ध पप गम् रेरे सा ऽ
 १०धीऽ ऽऽ ऽऽ टऽ ऽऽ लंऽ ऽ गऽ रऽ वाऽ ऽ कैऽ ऽऽ सेऽ घ र
 पम गम धम मध नीध धनी सां नीध नीध पम प धनी सां नी धप म प
 १०धीऽ ऽऽ ऽऽ टऽ लंऽ गऽ र वा कैऽ ऽऽ ऽऽ सेऽ घऽ रऽ ऽ ऽ
 मप धनी सां नी धप मप गम् रे सा मप धनी सां नी धप मप गम् रे सा

अंतरेकी तानें

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना

+

३

०

१

हूं ऽ ऽ च ली ऽ प न घ ट वा ऽ ठा ऽ डे ऽ
 १हूं ऽ ऽ च ली ऽ प न गम् धनी सां गम् धनी सां गम् धनी
 २हूं ऽ ऽ च ली ऽ प न गम् धध नीनी धप मप नीनी धप मप
 ३हूं ऽ ऽ च ली ऽ प न सां नी धप मप गम् रेसा गम् धनी सां
 ४हूं ऽ ऽ च ली ऽ रे रे सां नी धप मप धनी सां रे सां नी धप मप धनी सां

५ हुं S S च ली S मप धनी सा नी मप धनी सारे म् म् रे सा नी ध पप
 हुं S S च ली S प न घ ट वा S ठा S डे S
 ६ सारे सा नी पध मप गम् सारे नी सा गम् ध मप धप मप धनी सारे सा S
 सा सा म् म् रे सा नी सा धनी पध मप गम् रेरे सा गम् रेरे सा गम् रेरे सा
 ७ म् म् रेरे सा नी नी धध मप म् म् रेरे सा सा पप रेरे सा सा पप धध पप सा
 ८ हुं S S च ली प न घ S S ट S वा S S ठा S S डे S S
 रेरे म् म् रे सा नी सा धनी धनी सा नी धप मप
 ९ हुं S S S S च S S ली S S S S प S न S घ S ट S वा S ठा S डे S
 पम गम् ध S धनी सा नी सा नी धप मप नी रे सा नी धप मप पप म् म् रे सा
 हुं S S च ली S प न घ ट वा S ठा S डे S
 १० सा सा सा धध नी नी सा सा सा नी नी नी धध पम पम गम् नी ध नी नी सा S
 म् म् रे सा नी ध पप गम् धनी सा नी सा गम् धनी सा ध नी सा धनी सा धनी सा

राग—हमीर

ताल—एकताल (मध्यलय)

मेंढेरे यार हां मीवे तपदिसी कैदी जिनेना माने । तेंढेरे कारन में
 ढेरे यार हां मीवे ॥ धृ० ॥ कमली रमली फिरदी सदारंग तुहिना मिला मेनू
 तेंढेरे कारन मेंढेरे यार हां मीवे ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
						में	डे	रे S	या	S	र
						प	प	धप	ग	S	म्

हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नी	म	धनी	सा	सा	ध	प	ऽ
त	प	दि	सी	कें	दी	जि	ने	ना	मा	ऽ	ने
प	रे	ग	म्	ध	प	ग	म्	प	म्	रे	सा
तें	डे	रे	का	र	न	में	डे	रेऽ	या	ऽ	र
प	नी	ध	सा	नी	ध	प	प	धप	ग	ऽ	म्
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नी	म	धनी	सा	सा	ध	प	ऽ

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
क	म	ली	ऽ	र	मं	ली	ऽ	फि	र	दि	स
प	प	सा	ऽ	सा	रें	सा	ऽ	नी	ध	नी	सा
दा	ऽ	रं	ग	तु	हि	न	मि	ला	ऽ	मे	तु
नी	ध	प	प	सा	ग	रें	म्	ग	रें	सा	नी
तें	डे	रे	काऽ	र	नऽ	में	डे	रेऽ	या	ऽ	र
प	नी	सा	गंरें	सा	नीध	प	प	धप	ग	ऽ	म्
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ध	ऽ	ऽ	नी	म	धनी	सा	सा	ध	प	ऽ

राग—हमीर

धूपद, ताल—तेवरा (मध्यलय)

श्रीरामचंद्र कृपाल भजमन हरण भव भय दारुणं नव कंज लोचन कंज
मुख कर कंज पद कं जारुणं ॥ धृ० ॥ कंदर्प अगणित अमित छबी नव नील
नीरज सुंदरं पट पीत मानहु तडीत रुचि शुचि नोमि जनक सुता वरं ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गुन	धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गुन
+			२		३	+				२		३	
					श्री	ऽ	रा	ऽ	म	चंऽ	ऽऽ	द्र	कृ
					सा	ऽ	सा	घ	प	पघ	पप	ग	म्
पा	ऽ	ल	भ	ज	म	न	ह	र	ण	म	व	भ	य
घ	ऽ	रै	सा	नी	ध	प	ग	म	ध	नी	ध	म	प
दा	ऽ	रु	णं	ऽ	न	व	कं	ऽ	ज	लो	ऽ	च	न
ग	ऽ	म्	ध	ऽ	ग	म	नी	ऽ	ध	नी	ध	नी	रै
कं	ऽ	ज	मु	ख	क	र	कं	ऽ	ज	प	द	कं	ऽ
सा	नी	ध	म	प	म	प	गं	म्	रे	ग	म्	घ	प
जा	ऽ	रु	णं	ऽ									
ग	म्	रे	सा	ऽ									

अंतरा

धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गुन	धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गुन
+			२		३	+				२		३	
					कं	ऽ	द	ऽ	प	अ	ग	णि	त
					म	ऽ	नी	ऽ	ध	नी	ध	नी	रै
अ	मि	त	छ	बी	न	व	नी	ऽ	ल	नी	ऽ	र	ज
सा	नी	ध	नी	सा	नी	सा	सा	नी	ध	नी	ध	नी	रै

रा.सं.(३)३

[३४]

सुं ऽ द रं ऽ प ट पीऽ ऽ त मा ऽ न हु
 सा नी ध म प नी सा पं म् रे नी ध नी रे
 त डि त रु चि शु चि नो ऽ मि ज न क सु
 सा नी ध नी ध म प ग म् रे ग म् ध प
 ता ऽ व रं ऽ
 ग म् रे सा ऽ

राग—हमीर

तराना, ताल—एकताल, जलद

दिं दारा दिर दिर तेलेलाना । तन नितन तनतना तन तुंद्रे तद्रे दानी ।
 तदियन रे तदियन रे नितरेदानी तद्रेदानी । ओदानि ओदानि तदानि तदानि
 तोम् तनन तोम् तनन तोम् तनन ॥ धृ० ॥ तेले तेले नाना तेलेलेले नाना ।
 तेलेलेलेलेलाना । नित नितान तन नितनना । नादिर दिर देनी तुं दिर दिर
 देनी । तननननन तुं दिर दिर देनी । तननननन तुं दिर दिर देनी ।
 तननननन ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
						दीं	ऽ	दा	रा	दिर	दिर
						प	म	ग	म	ध	ध
ते	ले	ला	ना	त	न	नि	त	न	त	न	त
नी	ध	नी	सा	सा	नी	ध	नी	ध	प	प	ध
ना	ऽ	त	न	तुं	द्रे	त	द्रे	दा	ऽ	नी	ऽ
प	ऽ	म्	रे	प	प	म्	म्	रे	ऽ	सा	ऽ

[३५]

त	दि	य	न	रे	ऽ	त	दि	य	न	रे	ऽ
सा	सा	म्	ग	प	ऽ	प	प	नी	घ	प	ऽ
नि	त	रे	दा	ऽ	नि	त	द्रे	दाऽ	ऽऽ	नी	ऽ
ध	नी	ध	प	ऽ	प	प	प	मप	धप	म्	ऽ
ओ	दा	नि	ओ	दा	नि	त	दा	नि	त	दा	नि
म्	म्	म्	रे	सा	सा	म्	म्	म्	रे	सा	सा
तों	ऽ	ऽम्	त	न	न	तो	ऽ	ऽम्	त	न	न
रे	ग	म्म्	रे	सा	सा	म	प	धध	प	म	प
तो	ऽ	ऽम्	त	न	न	दि	ऽ	दा	रा	दिर	दिर
ध	नी	सासा	ध	म	प	प	म	ग	म	ध	ध

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+	ले	०	ले	४	ना	०	ले	१	ले	२	ना
ते	रे	ते	प	ना	ना	ते	ध	ले	सा	ला	ना
म्	ले	प	ले	प	प	नी	ना	नी	ता	सा	सा
ते	रे	ले	सा	ले	ध	छा	प	नि	प	नि	ता
सा	रे	सा	सा	ध	त	प	ना	प	ऽ	ध	प
ऽ	न	त	न	नि	त	न	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	प	प	प	ध	प	प	सा	ऽ	ऽ	ध	प
ना	दिर	दिर	दे	ऽ	नी	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ	नी
रे	म्	रे	प	ऽ	प	प	नी	ध	नी	सा	सा
त	न	न	न	न	न	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ	नी
सा	म्	म्	ग	म्	रे	सा	सा	रे	सा	ऽ	सा

त	न	न	न	न	न	तुं	दिर	दिर	दे	ऽ	नी
प	प	सा	सा	सा	ध	प	प	ध	प	ऽ	प
त	न	न	न	न	न	दिं	ऽ	दा	रा	दिर	दिर
म्	रे	म	म	प	ध	प	म	ग	म	ध	ध

राग-शंकरा

इस रागमें ऋषभ, गंधार, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। मध्यम यह स्वर वर्जित है। आरोह में ऋषभ वर्ज है। आवरोह में लगता है। यह राग रातके दूसरे प्रहर में गाया जाता है। यह राग वीरस प्रधान है।

आरोह—सा ग प नी ध सा

अवरोह—सा नी ध प ग प रेग ऽ रे सा

जाती—ओडव-षाडव

वादी—गंधार

संवादी—निषाद

मुख्य अंग—सा नी प ग प ग ऽ रे सा ऽ प नी सा ग प रेग ऽ रेसा

सुरावट, ताल—झपताल

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
सा	सा	ग	ग	ग	प	प	नी	ध	नी
सा	नी	प	प	प	ग	प	रेग	ऽ	रे
सा	ऽ	प	प	नी	सा	ग	प	गप	गरे ॥
प	नी	सा	नी	प	नी	सा	ग	रे	सा
नी	ध	नी	रेसा	नी	ध	नी	प	ऽ	प
प	नी	सा	ग	रेसा	प	नी	सा	ग	प
ग	रे	सा	नी	प	ग	प	रेग	रे	सा ॥

राग—शंकरा

ताल—तिलवाडा (मध्यलय)

माथे तिलक धरे हो बेरागी । आज जो जोगी चले हो बिदेस ॥ ध्र० ॥
झाड कमरिया डाल कंधे पर । कहाँ चले हो बिदेस । ना काहुँ के तुम । ना
कोऊं तुम्हरे ॥ १ ॥

आस्ताई

धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं

+ ३ ० १
माऽ थेऽऽऽ तिऽ लक
नीध सा रे सा नीध नीनी

धऽऽ स रे स होऽऽ स स बेऽ राऽ स गी स आ स ज जो
धप ग प नी धप ग स गप रेग रे सा स प नी सा सा
जो स गी स चऽ लेऽ हो बिऽ देऽ स स स
सा गप ग रेसा नीनीधप ग गप रेग रे सा स

अंतरा

धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं

+ ३ ० १
झा स ड क
प स सा सा
म रि या स डा ल स कंऽ घेऽ स प र क स हां चऽऽ
सा सा सा स सा ग स गप रेग रे सा सा सा स सा ग रे सा
ले स होऽऽ स स स स बिदेऽऽ सऽ सऽ स ना स काऽ हुंऽ
नी स नीधप स ग प स नी धप गप गरे सा सा स ग रे साऽ

के ऽ तुऽऽ म ना ऽ कोऽऽतुऽऽम्हऽ ऽ रे
नी ऽ धप प प ऽ सोनीधपपगप रेग रे सा

आस्ताईका बिलंपद

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं

१

+

३

०

माऽ थेऽऽऽ तिऽ लकधऽऽऽ रे ऽ होऽऽऽ ऽ बेऽ राऽ ऽ गी ऽ
१ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लक सा पग प ग ग ग ग प ग प गरे सा
२ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लक प ग प गप रेग ऽ डरे सा प नीसा ग प
३ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लकधऽऽऽ रे ऽ नी ऽ प ग पग ऽ ग प
सा ग डरे सा नी ऽ ऽ प नी ऽ सा ऽ ग डरे सा ऽ
४ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लक सा पग पग प प नीध प ग गप गप गरे सा
५ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लकधऽऽ रे प नीध नी सो नीध पप ग पग डरे सा
प नीसा गरे सा सा ग पग प पप ग सा ग ग प गप पप
६ माऽ थेऽऽऽ तिऽ लकधऽऽऽ रे ऽ होऽऽऽ ऽ बेऽ राऽ ऽ गी ऽ
६ ग प नी ऽ नी सो नीध नीधपप ऽ ग ऽ ग डरे सा ऽ
ग डरे सा ऽ प ग डरे सा नीध प ग प सा ग गपगरेसा
७ माऽ ऽऽ थेऽ ऽऽ तिऽ लक धऽ रेऽ होऽ बेऽ रा ऽ गीऽ ऽऽ ऽ ऽ
पग पप नीध नीनी पप पप गग गग गग पप ग ऽ गप गरे सा ऽ
८ माऽ थे तिऽ लक धऽ ऽ रे ऽ होऽ ऽ ऽऽऽ ऽ बेऽ राऽ गी ऽ
गप सो नीध नीऽ पग प नी ऽ पग गपगपप प गप गरे सा ऽ

९ प नी पनी सा नीध नी प प ग गपनीसा ऽ प नीध सा नी
 प सा नीधपपग प प नी नी नी सा ऽ प सा ऽ ऽ
 १० प ऽ सा ऽ नी धनीपधपपग ऽ प नी ऽ प नी नीसा नी
 पनी प पग पसासागप गगगप ग प प नी सागपनी सा ऽ

अंतरेका बिलंपद

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं
 १ + ३ ०
 १ झा ऽ ड क म रि या ऽ डा ल ऽ कं ऽ धे ऽ प र
 १ झा ऽ ड क म रि या ऽ नीध प गरे सा सा पग पप नी
 २ झा ऽ ड क म रि या ऽ प नीसा रैसा नीधनी प गप नीध सा
 ३ झा डक मरि या गे ऽ रै सा नी प नी रैसा नी ग प प नी
 झा ऽ ड क म रि या ऽ डा ल ऽ कं ऽ धे ऽ प र
 ४ सा नीध प ग प ग गरे सा प ग नीधनी प सा नी प नी
 ५ झा ऽ ड क म रि या ऽ प नी सा गे गे गरे सा नी
 प नी रैसा नी प नी पसा नी नी ग नी प रैसा नी प नीसा
 ६ झा ऽ ड क म रि या ऽ प नीसा गे ऽ गे ऽ रैसा ऽ
 प रै सा नी प ग ऽ ऽ सा प ग ऽ ग ऽ नी ऽ
 प ऽ सा ऽ प ऽ रैसासा रैसासा नी ऽ नी प सा ऽ
 झा ऽ ड क म रि या ऽ डा ल ऽ कं ऽ धे ऽ प र

७ प ऽ धप सा प सा ऽ नी धप ग ऽ ग प नी ऽ ग प
 सा ऽ ऽ ऽ पग प नी सा सा ग ऽ ग ग रे सा ग रे सा नी
 ट साग ऽ ग प ऽ प नी ऽ नी नी ऽ नी सा ऽ सा सा ऽ सा ग ऽ प ग रे सा
 नी ध सा नी ध प पग प ग रे सा सा प प ऽ प नी नी सा ऽ ऽ
 ९ झा ड ऽ क म रि या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ड ड ल ऽ कं धे ऽ ऽ ऽ प र
 प नी सा ग सा सा नी ध नी प ग नी सा ऽ सा ग रे सा ऽ सा सा
 १० झा ऽ ड ऽ क ऽ म ऽ रि ऽ या ऽ ड ल ऽ कं धे प ऽ र प ऽ र प ऽ र प
 प प सा सा नी नी प प ग ग प नी नी सा नी नी नी ध प ग प ग रे सा

राग-शंकरा

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

करना हो सो करले प्यारे । जनम जात दिन रेन सकारे ॥ धृ० ॥
 धन जोबन कछु स्थिर नहीं है । चलन हो सो चेत संवारे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 क र ना ऽ हो ऽ सो ऽ क र ले ऽ प्या ऽ रे ऽ
 सा सा ग ऽ प ऽ सा नी प प ग प ग रे सा सा सा
 ज न म जा ऽ त दि न रे ऽ न स ऽ का ऽ रे ऽ
 सा नी प सा ऽ सा ग ग प ऽ ग ग प रे ग रे सा रे सा सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
 ध न जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न हीऽऽऽ है ऽ
 प प सा ऽ सा सा सा सा ऽ सा सा नीसा रेसा नी ऽ
 च छ ऽ न हो ऽ सोऽऽ चे ऽ त सऽ वाऽऽ रे ऽ
 प नी ऽ नी सा नी धप प प ऽ ग गप रेग ऽरे सा सा

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
 क र ना ऽ हो ऽ सो ऽ क र ले ऽ प्याऽऽ रे ऽ
 १ क र ना ऽ हो ऽ सो ऽ पपनीनीसासाग गग प गरे सा
 २ क र ना ऽ हो ऽ सो ऽ पनीसाग ऽरे सा ग ऽप गरे सा
 ३ क र ना ऽ सासागगग प गगपप ग प गप गरे सा ऽ
 ४ क र ना ऽ सासा गगपप गप नीध प नीध पप ग प गरे सा
 ५ क र ना ऽ पपनीसा गरे सासा गप नीध पप ग गपनीसा नीध पप
 क र ना ऽ हो ऽ सो ऽ क र ले ऽ प्याऽऽ रे ऽ
 ६ पनी साग गरे सा गगपप ग ऽ नीध पप ग ऽ गप गरे सा सा
 नीध पप गप गरे सा सा गगपप पप नीसा नीध पप सासा गगपप ग
 ७ पप गप नीध नी नी सा नीध प नीनीनीनी नी सा नीध पप गप नी
 ८ सासागग पपनीध नी सा नीध प नी सा नीध पप ग प नीध प

९ गप गरे सासा सा पप गप गरे सासा सा पप गपनीनी नीनी पप गप गरे
 १० कर नाऽ होऽ सोऽ कर लेऽ प्याऽ रे कर लेऽ प्याऽ रे कर लेऽ प्याऽ रे
 गंग पप गरे सासा नीसा नीध पग प पपनीध पग प गप गरे सासा सा
 ११ कऽ रऽ नाऽ ऽऽ होऽ ऽऽ सोऽ ऽ क र ले प्या रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 गप गप नीसा नीध गप गप गरे सा ग प नी सा रेसा नीध पप ग

अंतरेकी ताने

ना ती ती ना ना धी धी ना ना धी धी ना ना धी धी ना
 ० १ + ३
 ध न जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न हीऽ ऽऽ है ऽ
 १ ध न जो ऽ ब न क छु सासा गपनीसा नीध पप गप गरे सा
 २ ध न जो ऽ ब न सासा गग पप नीसा ग रेसा नी धप गप गरे सा
 ३ ध न जो ऽ ब न क छु पप गप नी नी पप नीसा रेसा रेसा
 नीनी पप सा सा पप गग प प पप सा सा पप सा सा पप सा
 ४ ध न जो ऽ ब न पप सासा गग पप सासा गग गग पप नीध नीसा
 ५ ध न जो ऽ ब न पप नीसा पनी सा ग रेसा नीध पप सा नीध पप
 ध न जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न हीऽ ऽऽ है ऽ
 ६ पप गप नीध नीसा नी ऽ पप नीसा ग रेसा नीध पप नीध नी सा ऽ
 ७ पप नीसा ग रेसा नी धप पप सा रेसा नी धप पप नीसा नीध पप गप गरे सा
 ८ पसा ऽ नी धप पप गंग पप गरे सा सा ग रेसा सा सा गग पप गरे सा

९ धन जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न ही ऽ है ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सासागग प प पप नीध नी सा नी सा नीध पप ग ऽप गरे सा
 ध न जो ऽ ब न क छु स्थि ऽ र न ही ऽ ऽ है ऽ
 १० ध न जो ऽ ब ऽ न ऽ ऽ क छु स्थि ऽ र न ही है ऽ ऽ
 प प नी सा ग प गरे सा सा नी सा नीध प ग प गरे सा सा
 ११ सासागग पप नी सा गप गरे सा नी धप गप गरे सा सा गरे सा गप गरे सा

राग—शंकरा

ताल—तिलवाडा (मध्यलय)

अन हृद आद नादको । मेद बखान ये, पछ हारी गुनी, ग्यानी ॥ धृ० ॥
 बलहारी उन गुरुनकी । जीनो ये बेद बखाने ॥ १ ॥

आस्ताई

धा धा धीं धीं धा त्रु धीं धीं धा धा तीं तीं ता त्रु धीं धीं
 १ + ३ ०
 अ न ह ऽ द आ ऽ ऽ द ना ऽ ऽ द को ऽ ऽ ऽ ऽ
 रे सा नीध नी प ऽ ऽ प नी ऽ ध सा नी ऽ धपप ऽ
 मे ऽ द ब ऽ खा ऽ न ये प छ हा ऽ री ऽ ऽ ऽ
 प ग ग गप रेग ऽ रे सा सा सा प ग प ऽ ऽ ऽ
 गु नी ऽ ऽ ऽ ऽ ग्या ऽ ऽ ऽ नी ऽ ऽ ऽ
 प नी ऽ ऽ नी सा रे सा ऽ सा नी ध नी धपप ऽ नीध नी सा

अंतरा

धा धा धीं धीं धा त्रक धीं धीं धा धा तीं तीं ता त्रक धीं धीं

१ + ३ ०
 ब ल हा ऽ री ऽ उ न गु रु ऽ न ऽ की ऽ ऽ ऽ ऽ
 प प सां ऽ सां ऽ सां सां सां गं ऽ गर्प रेग रे सां ऽ
 जी ऽ नो ऽ ऽ ऽ ये ऽ ऽ ऽ ऽ बे ऽ द ब ऽ खा ऽ ऽ ने ऽ
 नी ऽ सां रे सां सां नी ध पप ऽ ऽ प ग ग गप रेग रे सां ऽ

राग-शंकरा

ताल-झपताल (मध्यलय)

निदरदर निवारे हो शाहे जाहांगीर । बलबीर राजाराम ॥ धृ० ।
 ऐसी हटसेंस कोट धावे । और नैनन सो खंजन नचावे ॥ १ ॥

आस्ताई

धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना
 + ३ ० १
 नि ड र ड र नि
 रे सां सां नी ध नी
 वा ऽ ऽ ऽ रे ऽ हो ऽ ऽ ऽ
 घपप नी ध सां नी ऽ नी ध पप ग ऽ ऽ
 शा ऽ हे ऽ ज ऽ हां ऽ ऽ गी ऽ र
 ग ऽ ग ऽ गप रेग रे सां ऽ सा

ब	ल	बी	S	र	रा	S	जा	SS	S
सा	प	सा	S	सा	ग	S	ग	पग	प
रा	S	म	SSSS	नि	ड	र	ड	र	नि
ग	रे	सा	गपधनी	रे	सा	सा	नी	ध	नी
वाSS	SS	S	रे	S					
धपप	नीध	सा	नी	S					

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
					ऐ	S	सी	S	ह
					प	S	सा	S	सा
ट	सें	स	को	ट	धा	S	वे	S	और
सा	सा	सा	सा	सा	नी	ध	नी	S	सासा
नैS	न	नSS	सो	S	खं	S	ज	न	न
नीध	नी	धपप	प	ग	प	S	ग	ग	प
चा	S	वे	SSSS	नि	ड	र	ड	र	नि
ग	रे	सा	गपधनी	रे	सा	सा	नी	ध	नी
वाSS	SS	S	रे	S					
धपप	नीध	सा	नी	S					

तराना, ताल—त्रिताल जलद

तों तनन तन देरेना तारेदानी । दिर दिर दिर तान तन दीं तन देरेना ।
 यलीयाळे यलीयाळे दूतन देरेना दूतन देरेना ॥ धृ० ॥ घेतोळे घेतोळेलाना घेतोळाना
 घेतोळाना । दूगनारे दूगनारे दीं तन देरेना ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
	तों	त	न दे
	नी	ध रे	प नी
ना	ता	दा	नी
नी	प ग	प रे	सा
दिर	न	दी	न दे
सा	ग	ग	ग रे
य	ली	ह	त न दे
नी	ध नी	प नी	ध प
ह	त न	त न	न दे
ग	ग प	रे	सा
ना	ता	रे	
नी	प ग	प	

[४७]

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १ ०
 धे ते ले धे ते ले ला ना
 प प सां सां सां सां सां सां
 धे ते ला ना धे ते ला ना दृ ग ना रे दृ ग ना रे
 प प नी सां गं रैं सां सां नी सां नी ध नी ध प प
 दीं ऽ त न दे रे ना ऽ त न न त न दे ऽ रे
 प ग ग प ग रे सा ऽ रैं सां नी प प नी ध सां

राग—दरबारी कानडा

इस रागमें गन्धार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल लगते हैं। रिषभ तीव्र लगता है। गन्धार और धैवत को आंदोलन देना चाहिये। आरोहमें तीव्र निषाद कभी लेते हैं लेकिन इससे राग स्वरूप बिगड़ जाता है। यह राग रातके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। मंद्र और मध्य सप्तकमें इस राग की गंभीरता जादा मालूम होती है की जैसे दरबार भरा हुआ है। गंभीर और भक्तिरस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे गू म् प धू नि सां

अवरोह—सां धू नि प म् प गू म् रे सा

मुख्य अंग—गू गू रे सा रे ऽ सा, म् प निध निप मुगू म् रे सा ऽ

जाती—संपूर्ण
 वादी—रिषभ
 संवादी—पंचम

सुरावट, ताल—एकताल (मध्यलय)

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धांगे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
रे	रे	सा	नि	सा	रे	मग्	S	रेसा	रे	सा	S
नि	सा	रे	सा	निध्	S	नि	S	प	S	S	S
म्	प	नि	ध्	नि	S	सा	S	सारे	गुम्	सा	S ॥
म्	म्	प	प	निध्	ध्	नि	नि	सा	S	S	S
नि	सा	रे	सा	निध्	S	S	S	नि	S	प	S
म्	प	नि	सा	मग्	S	म्	S	रे	S	सा	S
नि	प	म्	प	मग्	S	म्	S	रे	S	सा	S ॥

रांग—दरबारी कानडा

ताल—एकताल (मध्यलय)

हजरत दरकमान जूं के बलबल जैयेरी । पिर मेरो साचो ॥ धृ०
शमशूला और फीन दुख दलिद्र दूर करो छिन । रोशन दोऊं वे जहां ॥ १

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
SSSह जरSत साSSरे सानिध्											

[४९]

तू रऽऽक माऽ ऽन जुंऽ ऽऽ ऽऽऽऽ ऽ केऽ ऽऽऽब ल बल
 सासाऽनिऽसा रेऽ ऽसा मग् मग् गग् रेसा रे साऽ निऽसाम् रे सा धुनि
 जै ये ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ रीऽ ऽ पिर मेऽऽ रोऽ साऽ चोऽऽह जरऽत
 सा सा निऽसारेसा निऽसारेसानिधुनि म्प निधुनि सानि रेऽ साऽऽरेसानिधुनि
 तू रऽऽक माऽ ऽन जुंऽ ऽऽ ऽऽऽऽ ऽ केऽ ऽऽ
 सासाऽनिऽसा रेऽ ऽसा मग् मग् गग् रेसा रे साऽ ऽऽ

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 शम शुऽऽ
 म्प निधुनि
 ला ऽ औऽऽऽ रऽऽ फी ऽन दुख दऽऽऽऽ ऽऽऽ लिद्र दूऽऽ रऽकऽ
 सा ऽ निऽसा रेसा निधुनि सा ऽसा सासा सानिरेसाम् मग् रेसा रेनिऽसा साऽसा रे
 रोऽ छीन रोश नऽदोऽकऽऽऽऽ ऽ वेऽऽजहांऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽहजरऽत
 रेध् निप निऽसा रेऽमग् म्पनिधुनि सा निम्पनिमग्ऽऽगग् रेसारेऽसारेसानिधुनि

आस्ताईका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 ऽऽऽह जरऽत

रा.सं.(३)४

१ तू र म्प निधुऽ नि सा निधु निसा निरे साऽ SSSह जरऽत
 २ तू र निधु निधु सानि रे सा म्प साऽ रेऽ साऽह जरऽत
 ३ तू र निसा रेऽ रे सा ग् रेसा रेरे साऽ SSSह जरऽत
 ४ तू रऽऽक माऽ ऽन सारे सारे म्ग् मसा रेग् मसा SSSह जरऽत
 ५ तू रऽऽक माऽ ऽन सारे ग्म् प म्प म्ग्म् सारे साऽह जरऽत
 ६ तू रऽऽक माऽ ऽन जूऽ S SSSS S केऽ रेरे सा सारे
 सारेग् रे साऽ म्ऽ पऽ म्प म्पनिमग्ऽ म्ऽ साऽSSSह जरऽत
 ७ तू र हऽ जऽ रत तूऽ रऽ कऽऽ मान जंकेऽSSSह जरऽत
 म्ग् म्ऽ पप निम् पऽ म्पनि ग्म् रेसा
 ८ तू र सारेसारेग्म् सा ग्म्प म्पनि म्प सारे म्ग्म्पऽह जरऽत
 ९ तूऽ रऽ कऽमा नजं केऽSSS S बल बल जैऽ येऽSSSSह जरऽत
 सारे सारे म्ग्म् पप निम्निप सा निप म्प म्ग्म् रेसारे सा
 १० तू रऽऽक माऽ ऽन जूऽ S SSSS S केऽ निधु नि सा
 सारे म्ग्म् म्प निधुनि निधुनि साऽ निप म्प ग्म्पप ग्म्रेसाऽSSहजरऽत

अंतरेका विलंपद

धी धी धागे व्रक तू ना क ता धागे व्रक धी ना
 + ० ४ ० १ २
 शम शुऽ

१ ला ऽ साऽ निध् निप म् प मग्म् रेसारे पपग् शम शुऽऽ

२ ला ऽ रेध् निप म्प निग् म्प निध् निनि साऽ शम शुऽऽ

३ ला ऽ म्प म्पनिध् निसा सा निसा निरे साऽ ऽऽ शम शुऽऽ

४ ला ऽ परे साऽ निसा निध् निप म्पसा म्पसा म्प शम शुऽऽ

५ ला ऽ औऽऽऽऽऽऽ फी ऽन सानि रेऽ साऽ रेऽ सा रे निसा

नि ध् म्प निध् म्प सा रेसा सा रे सारेग् रेसा शम शुऽऽ

६ ला ऽ औऽऽऽऽऽऽ फी ऽन निसा रेरे सा रे मग्म् गुम् रेसा

निध्निम्प निध् सानि रे रे सानि ध्नि ध्निसा साऽ शम शुऽऽ

७ ला ऽ निप म्प सा सारे मग्म् पम्प निध्निध्निसा शम शुऽऽ

८ ला ऽ शम शुऽऽ लाऽऽ औऽ रऽऽऽ फीऽऽनशमशुलाऽऽऽशम शुऽऽ

सा रे सानिसानिध्नि म्प म्पनिपम्पनिध्निमपग्मरेसा

९ ला शम शुऽऽ लाऽऽ ऽऽऽ औऽऽऽ रऽऽऽ फीऽऽ ऽऽन ऽ शम शुऽऽ

निसा मग्म् रेसारै सानिसानिसारैसानिध्निध् ध्निसा ध्निसा ऽ

१० ला ऽ औऽऽऽऽऽऽ फी ऽन म्प निध्नि साऽ निसा मग्म् रेसा

रेध् निसा रेरेरेरे सारे सारेग् रेसा निसाम्मम्पनिध्निसा शम शुऽऽ

राग—दरबारी कानडा

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

कित गये ऊधो का भईलो । अबके बिछुरे कबहिं मिलेंगे । नदी
नाब्र संजोग ॥ धृ० ॥ भव जल उतरूं ना मो में गुन । ललाट लिखा सोही
होत ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३			०				१				+				
कि	त	ग	ये	ऊ	ऽ	धो	ऽ	का	ऽ	भ	ई	लो	ऽ	ऽ	ऽ
सा	नि	सा	रे	मृ	मृ	रे	सा	नि	सा	रे	सा	नि	धृ	ऽ	नि
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	के	ऽ	बि	छु	रे	ऽ	क	ब	हि	मि
सा	ऽ	ऽ	ऽ	मृ	मृ	प	ऽ	नि	नि	नि	ऽ	सा	सा	सा	सा
लें	ऽ	गे	ऽ	न	दी	ऽ	ना	ऽ	व	सं	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ग
रे	नि	सा	ऽ	सा	रे	ऽ	रे	ऽ	रे	रे	पनि	मृ	ऽ	ऽ	मृ
कि	त	ग	ये	ऊ	ऽ	धो	ऽ	का	ऽ	भ	ई	लो	ऽ	ऽ	ऽ
रे	सा	रे	सा	नि	सा	रे	सा	नि	सा	रे	सा	नि	धृ	ऽ	नि

अंतरा

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३			०				१				+				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	व	ज	ल	उ	त	रूं	ऽ	ना	ऽ	मों	ऽ
सा	ऽ	ऽ	ऽ	मृ	मृ	मृ	मृ	प	प	नि	धृ	ऽ	नि	सा	सा

में ऽ गु न ल ला ट लि खा ऽ सो ही होऽ ऽ ऽ त
 नि ऽ सा सा नि नि प नि म् प प नि म्ऽ ऽ ऽ म्
 कि त ग ये ऊऽ ऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 रे सा रे सा नि सा रे म् रे सा नि सा रे सा नि धु ऽ नि ऽ

आस्ताईकी तानें

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १ +
 कि त ग ये ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 १ कि त ग ये ऊऽ ऽ धो ऽ रे रे सानि धु नि म्प धु नि सा ऽ
 २ कि त ग ये ऊऽ ऽ धो ऽ रे रे सानि धु नि सारे ग्ग म् रे रे सा
 ३ कि त ग ये ऊऽ ऽ धो ऽ सा सा रे रे ग्ग म् प म् ग्ग म् रे सा
 रे सानि सा ऽ ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 ४ ऽ ऽ ऽ रे रे सानि धु नि सारे ग्ग म् प नि धु नि नि प म्प ग्ग
 रे सा रे सा ऽ ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 ५ ऽ ऽ ऽ म् रे सा रे रे सा सानि नि प म् प नि म्प ग्ग प्ग म् रे सारे
 ग्ग म् रे सा ऽ ऊऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 ६ कि त ग ये ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई सारे ग्ग म् प्प
 नि धु नि नि प नि नि म्प नि नि म्प प्प म् रे सा नि नि ग्ग म् रे सा
 सारे ग्ग सा ऽ ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लो ऽ ऽ ऽ

७ ऽ ऽ ऽ ऽ किऽ तऽ गऽ येऽ ऊऽ धोऽ काऽ म ईऽ ऽऽ लोऽ ऽऽ
 सासा रेरे म्ग् म्ग् पप निध् सां निऽ निप म्प गुग् पगु
 ८ ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽऽ
 मरे सा रेरे सा म्ग् म् रे सा नि सा रे सा सारे गुम्पनिध्निऽ
 ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ कीऽ तऽ गऽ येऽ ऽऽ ऊऽ ऽ धो ऽऽ काऽ ऽ म ई लो
 निप म्प गुग् रेसा गुग् रेसा पनि पम् पसापनि निम् पप गुग् म्सा रे सा
 कित गये उ धो ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ
 म्ग् रेसा रे सा म्ग् म् रे सा नि सा रे सा निध् ऽ नि सा
 ९ कि त ग ये म्ग् रेसा रेरे सासासासासारे रेरे म्ग् गुग् म्ग् पप निध्
 निनिऽ निप म्प सा निप म्प निग् ऽ गुग् प गुग् रेसा रेरेसानि सारे
 १० कि त ग ये सासा मरे पम् निपसासा निप म्प निनिग्ग् म्ग् रेसा रेसा
 गुग् गुग् म्ग् पप पनि ध्धनिनिऽ म्ग् पप सा ऽ म्ग् पप सा ऽ
 म्ग् पप सा ऽ ऊऽ ऽ धो ऽ का ऽ म ई लोऽ ऽ ऽ ऽ

अंतरेकी तानें

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ ऽ ऽ भ व ज ल उ त रुंऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
 १ में ऽ गु न म्ग् पप निध्निनिऽसासा निध्निनिपप म्प गुग् म्ग् रेरे
 सासा पप गुग् रेसा भ व ज ल उ त रुंऽ ऽ ना ऽ मो ऽ

- २ में ऽ गु न म्प पप निधुनिनि सा सा म्प पप गुग्गु म्प सा सा रे रे म्गुग्गु
 म्प रे रे सा सा सा भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
- ३ में ऽ गु न नि सा सा प नि नि म्प पग्गु म्प सा रे रे सा रे गु सा रे गुग्गु सा रे
 गुग्गु प सा रे गु म्प नि म्प सा सा नि नि पप म्गु म्प रे सा सा रे गुग्गु निधुनि नि सा
 म्प पप निधुनि नि सा भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
- ४ में ऽ गु न भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ नि सा रे सा नि सा प नि नि पप म्प
 गुग्गु रे सा रे सा सा सा रे रे रे गुग्गु म्प म्प पप निधुनि नि नि सा निधुनि नि नि नि ना ऽ मो ऽ
 में ऽ गु न भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
- ५ में ऽ गु न म्प नि सा रे रे सा नि सा रे रे सा निधु नि नि म्प पप निधु नि नि
 सा रे रे सा निधु नि भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
- ६ में ऽ गु न भ ऽ व ऽ ज ल उ ऽ त ऽ रुं ऽ ना ऽ ऽ मो ऽ
 नि सा रे रे सा रे रे सा नि धु नि सा रे रे गुग्गु सा ऽ
 में ऽ ऽ गु न भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
 सा रे रे गुग्गु सा सा
- ७ में ऽ गु न भ व ज ऽ ल ऽ उ ऽ त ऽ ऽ रुं ऽ ना ऽ मो ऽ मे ऽ गु न
 नि ऽ सा सा म्प रे सा रे रे सा निधु निधु नि सा ऽ म्प पप निधु नि सा
 ना मो ऽ में गु न भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
 सा निधु नि पप
- ८ में ऽ गु न म्प सा गुग्गु म्प रे रे सा रे रे सा नि सा रे रे सा नि सा
 पप गु म्प रे सा भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ

९ में ऽ गु न सारे पप गुगु म्म रेरे सा निनिपम् पप म्म म्म रेसा
गुरे सानिनिधु ऽ

भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ

१० में ऽ गु न म्म म्म रे सा गुम् पम् ऽ म् रेसा रे रे सानिनिधु नि
म्म पप निधु निधु म्म पप निधु निनि सा म्म पप निधु निनि सा निनि रे म्म
म् रेसा धुनि सा भ व ज ल उ त रुं ऽ ऽ ना ऽ मो ऽ
में ऽ गु न

राग—दरबारी कानडा

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

मालनिया बंधनवा बांधोरे बांधो बांधो सब मिलके मालनिया । मौमदसा
प्यारे के घर काजे ॥ धृ० ॥ सदारंगीली ताननसो बधवा माई गावो सब
साहेबसो ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
+ ३ ० १

माऽ ऽऽ ल नि या ऽ ऽ बं ध न

निसा रेम् रे सा नि धू नि प म् प

वा ऽ ऽ ऽ ऽ बां ऽ धो रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ बां ऽ धो ऽ
नि धू सा नि सा रे सा रे म्म म्म म्म म् रे ऽ सा ऽ

सऽ ब मि ल के ऽ माऽ ऽऽ ल नि या ऽ ऽ बं ध न
 म्ग् म् रे सा रे सा निऽसा रेम् रे सा नि ध् नि प म् प
 वा ऽ ऽ ऽ ऽ बां ऽ घो रेऽ ऽ बां ऽ धो बां ऽ धो
 नि ध् सा नि सा रे सा रे म्ग् म् रे ऽ सा रे नि सा
 सऽ ब मि ल के ऽ माऽ ऽऽ ल नि या ऽ ऽ बं ध न
 म्ग् म् रे सा रे सा निऽसा रेम् रे सा नि ध् नि प म् प
 वा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ मौ मऽ द साऽ ऽ
 नि ध् सा नि सा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रे सा नि सा म्ग् म्
 ऽ प्या रे के घ र काऽ ऽऽ जे ऽ ऽ ऽ ऽ बं ध न
 ऽ नि प म् रे सा निऽसा रेम् नि ध् नि ध् नि प म् प
 वा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 नि ध् सा नि सा ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 स दाऽ ऽ रं गी ऽ ली ऽ
 सा म्ग् रे ऽ म् प ऽ प ऽ
 ताऽ ऽ ऽ न न सो ऽ ब ध वा ऽ ऽ मा ऽ ई
 प नि सा ऽ ऽ नि प ग् म् म् प सा ऽ ऽ सा ऽ रे

गा ऽ वो ऽ स ब साऽऽ हे ब सो ऽ ऽ बं ध न
 रे ऽ सा ऽ नि नि पम् रेसा रे सा नि ध् नि प म् प
 वा ऽ ऽ ऽ ऽ
 नि ध् सा नि सा

राग-दरबारी कानडा

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

जानकी राम राजाकी मोरे मनमें छबि बसगई रे ॥ धृ० ॥
 अजब छबिले राम रंगीले । सदारंग गायन पान । तनमन जोग रमाई रे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

जा ऽन की राऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽम राऽ ऽऽ
 रे सासा रे म्गु ऽ म्गु म्गु म्गु म् रेगु रेसा
 जा ऽ की ऽ ऽ मो ऽ रे म न में ऽ छऽ बि ब स
 रे ऽ सा ऽ ऽ रे नि सा प नि म् प म्गु म् रे सा
 गऽ ईऽ रेऽ ऽऽ ऽ जा ऽन की राऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽम राऽ ऽऽ
 सारेरेसा निध् सानि सा रे सासा रे म्गु ऽ म्गु म्गु म्गु म् रेगु रेसा
 जा ऽ की ऽ ऽ जा ऽन की
 रे ऽ सा ऽ ऽ रे सासा रे

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 अ ज ऽब छ बि ऽ लेऽ ऽ
 म् म् ऽम् म् प ऽ निध् ऽ
 रा ऽ ऽम रं गी ऽ ले ऽ स दा रं ग गाऽ ऽ य न
 नि सा ऽसा सा रे नि सा ऽ प नि म् प म्गू म् रे सा
 पा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न त न म न जोऽ ऽ ग र
 रे ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ सा प नि म् प म्गू म् रे सा
 माऽऽ ईऽ रेऽ ऽऽ जा ऽन की राऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽम राऽ ऽऽ
 नि सारेम् रेसा निध् निसा रे सासा रे म्गू ऽ म्गू म्गू म्गू म्ग् रेग् रेसा
 जा ऽ की ऽ ऽ
 रे ऽ सा ऽ ऽ

राग—दरबारी कानडा

तराना, ताल—त्रिताल जलदलय

ओद तनन दीं तनन देरेना । तन देरेना तदरे दानी । नाद्रे तुंद्रे धेत्लांग
 तुंद्रे धेत्लांग तुंद्रे दानी ॥धृ०॥ तदानि तना दिरदिर दीं । तनन दीं दीं तनन
 तन देरेना । नाद्रे तुंद्रे धेत्लांग तनन धेत्लांग तनन धेत्लांग तनन दानि ॥१॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ ओ द त न न दी ऽ त न न दे ऽ रे ऽ
 नि सा म् ग् म् रे सा नि म् प नि ध् सा नि

ना ऽ त न दे रे ना त दा रे दा नि ना द्रे तुं द्रे
 सा ऽ सा नि सा रे रे म् गु म् रे सा म् नि म् प
 घेत् लां ऽ ग तुं द्रे द्रे घेत् लां ऽ ऽ ग तुं द्रे द्रे दा
 (घेत्) (लां) (ग) (तुं) (द्रे) (द्रे) (घेत्) (लां) (ग) (तुं) (द्रे) (द्रे)
 म् गु ऽ म् गु म् गु म् रे ऽ ऽ रे गु म् म् रे
 (म्) (गु) (म्) (गु) (म्) (गु) (म्) (गु) (म्) (गु) (म्)
 ऽ नि
 ऽ सा

अंतरा

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ ओ द त न न दीं ऽ त न न त दा नि त
 ऽ ऽ ओ द त न न दीं ऽ त न न त दा नि त
 ना ऽ दिर दिर दीं ऽ ऽ त न न दीं ऽ दीं ऽ ऽ ऽ
 प ऽ नि ध् नि सां ऽ सां सां सां रे नि सां ऽ ऽ ऽ
 त न न न न दे रे ना ना द्रे तुं द्रे घेत् लां ऽ ग त
 प नि म् प गु म् रे सा म् प नि सां म् गु ऽ म् रे
 न न घेत् लां ऽ गु त न न घेत् लां ऽ ग त न न दा ऽ
 सां सां पप नि ऽ नि प म् प म् गु ग् ऽ गु म् रे रे रे ऽ
 नि ऽ ओ द त न न दीं ऽ त न न दे ऽ रे ऽ
 सा ऽ नि सा म् गु म् रे सा नि म् प नि ध् सा नि

राग—अडाणा

इस राग में गन्धार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल लगते हैं। रिषम यह स्वर तीव्र लगता है। इस राग में मध्यम, निषाद, धैवत निषाद की स्वर-संगती बड़ी मनोरंजक है। और इससे दरबारी कानडा से यह राग अलग मालुम होता है। यह राग विशेषतः तार सप्तकमें गाया जाता है। गानेका समय रातका दूसरा प्रहर, यह राग वीररस प्रधान है।

आरोह—सा रे ग् म् प नि ध् नि सा
अवरोह—सा नि प म् प ग् म् रे सा

| जाती—ओडव-संपूर्णः
वादी—मध्यम
संवादी—निषाद

प्रकार २ रा

आरोह—सा रे म् प ध् नि सा | अवरोह—सा नि प म् प ग् म् रे सा
मुख्य अंग—सा रे म् प नि ध् नि सा रे नि सा नि प म् प ग् म् रे सा

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
+ ३ ० १
रे रे सा सा नि प म् प
मृग ऽ ऽ म् रे रे सा ऽ सा ऽ रे मृग ऽ म् प ऽ
नि ऽ ध् नि ऽ नि सा ऽ नि प म् प ग् म् रे सा ॥
म् म् नि नि निध् ध् नि नि म् ऽ नि नि निध् ऽ नि सा
रे रे सा सा म् ग् म् म् रे रे सा सा निध् नि सा रे
नि सा ऽ ऽ नि प म् प ग् म् रे सा नि ध् नि सा ॥

राग-अडाणा

ताल-तिलवाडा (मध्यलय)

छेला देऊ छेल छबीली चरच्या करेंगी सब घरकी मोरी कहां किनवा
॥ धृ० ॥ ओर के दियेसो क्या पावोंगे जो हमरा तुमनें लिनवा ॥ १ ॥

आस्ताई

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं
१ + ३ ०
छे ला ऽऽऽऽ देऊं छे ऽ ल छबीऽऽऽलीऽ ऽऽ ऽ च र च्याऽऽऽक
नि प निनिपमपसां नि प प ऽप मपनिपमगु मगु म म म गुमप ऽप
रेंऽ गी स ब घर कीऽ ऽ मो रीऽ ऽ ऽक हां किनवाऽ ऽऽऽ ऽ
मगु म रे सा सारे मगु म प निधु नि ऽनि सां सारे निसां निधुनि प

अंतरा

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं
१ + ३ ०
ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ क्या ऽ पा ऽ बोंऽ ऽ ने ऽ
म ऽप निधु ऽनि सां ऽ सां ऽ सां ऽ सां नि सारे ऽ सां ऽ
जो ऽ ऽ हम राऽ ऽऽ ऽ तुम नेऽ लीऽ ऽन वाऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽ
नि सां ऽ रेंसां निधुनिधु नि ऽ मप निसां मगु मरे सारे निसां निधुनि प

आस्ताईका बिलंपद

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं

१

+

३

०

१ छे ला SSSSदेऊं छे S ल S म् प नि म्गु म् रे सा S

२ छे ला SSSSदेऊं छे S ल S म्प नि म् प म्प गुम् रे सा

३ छे ला SSSSदेऊं छे S ल S सा रे म्गु म् म् नि निध् नि

४ छे ला SSSSदेऊं सा रे म्गु म् प म्गु म् नि निध् नि निध् नि

५ छे ला SSSSदेऊं निप म्गु म् रे सा S सा म् नि निध् नि सा

६ छे ला SSSSदेऊं छे S S ला देऊं छे S ल S छ S बी S ली S

म्गु पम् प म्गुम् रे S सा S निध् सा नि सा S

७ छे ला SSSSदेऊं छे ला दे S ऊं छे S ल छ बीली SSSSSSSS S

म् प म्गु म् नि निध् नि सा नि सा नि ध् नि ध् नि सा

८ छे ला SSSSदेऊं छे S ल S छ बी SSSली SSS S रे रे सा S

म् म्प म्गु म् म् नि निध् नि म् प सा S म् प सा S

९ छे ला SSSSदेऊं छे S ल S छ बी SSSली SSS S सा रे म्गु म्

प निध् नि निध् नि सा निध् नि सा निप म्प सा निप म्प सा S

१० छे ला SSSSदेऊं म् सा नि प म् नि निध् नि नि नि सा सा

अंतरेका बिलंपद

घा घा घीं घीं धा तुक घीं घीं धा घा तीं तीं ता तुक घीं घीं

- १ + ३ ०
- १ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ म् नि निध् नि धुन् सा धुन् रैसा
- २ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ निसा पन् म्प गुम् रेसा म् निध् निसा
- ३ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ निध् नि धुन् सा धुन् सारे रै सा
- ४ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ रै सानिनिध् नि म्प पन् निनि धुन्
- ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ क्या ऽ पा ऽ वोंऽ ऽ गे ऽ
- ५ म् प म्प निध् नि ऽ सा ऽ धुन् सारे रैसा निध् नि ऽ सा ऽ
- ६ सा ऽ निध् नि धुन् सा ऽ ऽ म् ऽ नि धुन् म्प साध् ऽन् सा
- ७ ओऽ र केऽ दि ये ऽ सो ऽ क्याऽ पा वोंऽ ऽऽ गेऽ ऽ ऽऽ ऽऽऽ
- म्प सा निध् नि सा ऽ सा ऽ निसा रै सानिधुनिसानि रै सानिधुनिसा
- ८ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ क्या ऽ पा ऽ वोंऽ ऽ गे ऽ
- ओ ऽ रऽ केऽ दिऽ येऽ ऽ सो ऽ क्याऽऽ पाऽऽ ऽ वों गे ऽ
- म् प निध् सानि रैसा म्ग् म् रै सा रैसानि ध् रैसानि ध् नि सा ऽ
- ९ ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ म् प सा ऽ म् प निध् नि
- सा ऽ म् प निसा रै सानिनिध् नि सा म् प सा ऽसा ऽसा सा
- १० ओ ऽर केऽ ऽदि ये ऽ सो ऽ म्ग् म् रै सा निध् नि म् नि
- म्प निनिध् नि सा ऽ म् म्प सा ऽरैसानिध् निम्प सा म् निध् नि

राग-अडाणा

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

मुंदरी मोरी काहे को छीन लई छैलवा । कारे कियो में तोरा ॥ धृ० ॥

हुं तो नहीं इतरात रंगीले । मान कहाँ अब मोरा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽ हे ऽ को ऽ
 नि प म् प सा सा ऽ ऽ निधु नि ऽ प ऽ
 छीऽ न लऽ ई ऽ ऽ ऽ छेऽ ऽ ऽ लऽ वा ऽ
 निप म् प पनि नि ग् ऽ ऽ गुम् प म्पु म् रेसा रे सा ऽ
 ऽ काऽ रे कि योऽ ऽ मैऽ ऽ तोऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ
 ऽ सारे म् प निधु ऽ धुनि सा धुनि सारे रे ऽ निधु नि धुनि सारे
 ऽ ऽ ऽ मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽ हे ऽ को ऽ
 रे सा ऽ नि प म् प सा सा ऽ ऽ निधु नि ऽ प ऽ
 ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ ऽ ऽ हूं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ इ त
 म् प निधु ऽ नि सा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ सा नि
 राऽ ऽ ऽ त ऽ ऽ रं गीऽ ऽ लेऽ ऽ ऽ ऽ
 सारे ऽ ऽ सा ऽ ऽ सा निसा रेसा निधु ऽ नि ऽ प ऽ
 (सारे) (निसा) (रेसा) (निधु)

रा.सं.(३)५

ऽ माऽ न क हांऽ ऽ अ ब मोऽ ऽ ऽऽ ऽऽ रा ऽ ऽऽ ऽ
 ऽ म्प नि सा म्पे म् रे सा निधु नि धुनि सारे रे सा निधु नि
 ऽऽ ऽऽ ऽ मुं द रि मो रि
 धुनि सारे सा नि प म् प सा

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽऽ हे ऽ को ऽ
 १ ऽ ऽ ऽ मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽ म्प प धु नि नि
 २ सा धु नि सा मुं द रि मो री का ऽ म्प नि नि धु नि धु नि सा नि
 ३ धु नि सा ऽ मुं द रि मो री का ऽ सासा रेरे गुगु म्प नि नि धु नि
 ४ सा ऽ ऽ मुं द रि मो री का ऽ सासा रेरे गुगु म्प प धु नि
 ५ धु नि सा ऽ मुं द रि मो री नि प म्प नि प ग् म् गुम् पम्
 रेसा रे सा मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽऽ हे ऽ को ऽ
 ६ म्प रेसा रे सा नि नि पम् पम् ग् म् गुम् नि धु नि धु नि सा नि धु
 ७ नि सा ऽ मुं द रि मो री काऽ हेऽ कोऽ छी न छऽ ईऽ छेऽ
 म्प प नि धु नि सा म्प प नि धु
 ८ छऽ वा ऽ मुं द रि मो री मुं द रि मो री का हेऽ को छी न छेऽ
 सानि सा नि नि ऽ नि धु नि सा नि प नि पम् पम्
 छेऽ ल वाऽ मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽऽ हे ऽ को ऽ
 म्प म् रेसा

९ म् म्प निप गु म् म्मनिनि ध्व निनिध्वनिसानि ध्व नि ध्वनि सा ध्वनि
 १० सा ध्वनि सा मुं द रि मो री म्म म्प पप ध्व ध्वनिनिनि सा ध्वनि
 सा म्प सा मुं द रि मो री का ऽ ऽ ऽ ऽ हे ऽ को ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १ ऽ ऽ ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ म्म निनि म्मनिनि
 २ ध्वनि सा ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ निसानिसा ध्वनि ध्वनि
 ३ ध्वनिसानि सा हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ निसा रैसा निध्व नि
 ४ ध्वनि सा सा हुं ऽ तोऽ ऽ न ही म्म निनि ध्वनि सा ध्वनि सारै रै रै
 ५ सानि ध्व नि हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ रै रै सानि ध्वनि सा
 म्म निनि ध्व नि ध्वनि सा ध्वनि सा सासा ररे गुगु म्म म्म निनि ध्व नि
 ध्वनि सारै ऽ हुं तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ६ म् ऽ गुम् पम् गु म् नि ऽ ध्वनिसानि ध्व नि रै ऽ सारसानि
 ध्वनि सा ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ७ सासा ररे गुगु म्म म्म नि ध्वनि सा ध्वनि सारै रै रै सानि ध्व ऽ निध्वनि सा
 ८ सा सा सा हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ हुं तोऽ नऽ हीऽ
 म्मनिनिध्वनिसानि
 इऽ तऽ राऽ तऽ रंऽ ऽऽ गीऽ ले हुंऽ ऽऽ तोऽ न ही हुंऽ ऽऽ तोऽ
 सारै रै सानिसानि ध्वनि ध्वनि सानि सा म्म पप निध्व नि सा म्म पप निध्व

९ न ही ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ हुंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ तो नऽ
 रे रे सा नि सा रे गुम् सा सा रे
 ऽऽ ही ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 गुम् सा ऽ
 १० गुम् रे सा रे रे सा नि ध नि ध नि सा ऽ गुम् रे रे सा नि ध नि ध गु ऽ रे रे रे सा
 नि ध सा रे गुम् सा सा रे गुम् सा सा रे गुम् सा रे रे सा नि ध नि सा ध नि सा ध नि
 सा ऽ ऽ हुं ऽ तोऽ ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

राग—अडाणा

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

एरी मोहे जानेना जानेना देवे मा । शाम सुंदर की संगवा ॥ धृ० ॥
 लोकछाज सो नेक ना लज हो । लागो पियाके अंगवा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
+			३				०					१			
												ए	री	मो	
												नि	म्	प	सा
जा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ने	ऽ	ना	ऽ	जा	ऽ	ऽऽ	ने	ऽ	ना	ऽ	ऽऽ
सा	ऽ	ऽ	निप	नि	ऽ	प	ऽ	मूप	निप	मृग	ऽ	गुम्	प	मृग	
ऽ	दे	ऽ	वे	मा	ऽ	ऽ	ऽ	शा	मऽ	ऽ	सुं	द	रऽ	की	ऽ
ऽ	रे	ऽ	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	मृग	म्	म्	प	निध	नि	सा
ऽ	ऽ	सं	ग	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ए	री	मो	
ऽ	ऽ	रे	सा	निध	नि	ध	नि	धनि	सा	रे	सा	ऽ	नि	पम्	प

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 लो ऽ कऽ ला ऽ ज सो ऽ
 म् प निध् नि सां सां सां ऽ
 ने ऽ क ना ल ज होऽ ऽ ला ऽ गो पि याऽ ऽ के ऽ
 नि सां रे सां नि सां निध् नि म् प नि सां म् रे सां
 ऽ ऽ अं ग वाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ए रीऽ मो हैं
 ऽ ऽ रे सां निध् नि ध् नि ध् नि सां ऽ नि पम् प सां

राग—अडाणा

तराना, ताल—त्रिताल, जलदलय

तदेर्ना देर्ना देर्ना देर्ना तनद्रेना दीं तानों दीं तननन तन देरेना तदरे
 दानि उदानिदानि तदानि तन देरेना ॥ ध्रु० ॥ नादिर दिर तनों तन देरेना
 तदरे दानि उदानि दानि तदानि तन देरेना दीं तननन दीं तनन तन देरेना ॥१॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 त दे ऽ र्ना देऽ ऽ र्ना दे ऽ र्ना दे ऽ र्ना त न द्रे
 रे सां नि सां ध्रुप ऽ प नि म् प ग् ऽ म् रे रे सां
 ना ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ दीं ऽ ऽ ऽ ताऽ ऽ नोंऽ ऽ
 म् रे प म् नि प म् प सां ऽ ऽ ऽ नि सां रे सां निध् नि

दी ऽ त न न न त न दे रे ना त द रे दा नि
 नि ऽ नि नि सा सा रे रे सा नि सा प नि नि म प
 उ दा नि दा नि त दा नि त न दे रे ना ऽ ऽ ऽ
 सा म् गु म् रे सा नि सा नि सा रे सा नि ध् नि ऽ

अंतरा

ना धी धी ना ना धी धी ना ना ती ती ना ना धी धी ना
 + ३ ० १
 ना दिर दिर त नों ऽ त न दे रे ना त द रे दा नि
 म् म् म् म् प ऽ नि ध् नि नि सा सा रे नि सा सा
 उ दा नि दा नि त दा नि त न दे रे ना ऽ ऽ ऽ
 सा म् गु म् रे सा नि सा नि सा रे सा नि ध् नि ऽ
 दी ऽ त न न न दी ऽ त न न त न दे रे ना
 रे ऽ रे रे रे रे गु म् रे रे सा रे रे सा नि प

राग-मल्हार

इस राग में गन्धार, मध्यम यह स्वर कोमल लगते हैं। रिषभ, धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं, निषाद यह स्वर कोमल और तीव्र दोन्हो वक्र तन्हेसे लगता है। यह वर्षा ऋतुका राग है। वर्षाऋतुमें हर समय गाया करते हैं। परंतु दिनके तीसरे प्रहरमें और रातके दूसरे प्रहरमें इस राग को जादातर गाया करते हैं। गंभीर और भक्तिरस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा म् रे प प नि ध् नी सा
 अवरोह—सा नि प म् प म् गु म् रे सा

| जाती-वक्र-संपूर्ण
 | वादी-षड्ज
 | संवादी-पंचम

प्रकार २ रा

आरोह—सा रे म्गु म् रे प ध नी सा । अवरोह—सा ध नि प म्गु म् रे सा
मुख्य अंग—प प नि ध नी सा रे प म्गु ऽ म् रे ऽ सा नि ध नी सा

सुरावट, ताल—झपताल

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
प	म्गु	म्	रे	सा	नि	ध	नी	सा	सा
सा	सा	म्	रे	रे	प	म्गु	म्	रे	प
नि	म्	प	म्गु	म्गु	म्	रे	रे	ऽ	सा ॥
प	प	नि	ध	नी	सा	ऽ	सा	सा	सा
सा	ऽ	रे	सा	सा	नि	म्	प	ऽ	प
म्	रे	सा	नि	प	म्गु	म्गु	म्	रे	स ॥

राग—मल्हार

ताल—एकताल (मध्यलय)

करीम नाम तेरो तूमी साहेब सतार ॥ धृ० ॥ दुख दलिद्र दूर कीजे
सुख देहो सबनको अदारौंग बिनति सुनले हो करतार ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
										करी	ऽऽमना
										रेसा	नीसानिप

S SS SS SM ते रो तू मीSSS साSहेS SS ब S
 प निध नीS सासा रे सा रे सारेसासासारेनीसानिध सा S
 सSSSS ताSSS SSSSSSSSS र SS SS SS करी SSमना
 मरेमरे प पन्निम्प मग्मम्पम्प मरे सा निध साS SS रेसा नीसानिध
 S SS SS SM ते रो तू मीSSS साSहेS SS ब S
 प निध नीS सासा रे सा रे सारेसासासारेनीसानिध सा S
 सSSSS ताSSS SSSSSSSSS र SS SS SS करी SSमना
 मरेमरे प पन्निम्प मग्मम्पम्प मरे सा निध साS SS रेसा नीसानिध

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क चा धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 दुख दली Sद्र दूSSर
 पप पन्नि Sध धनीसासा
 की जे सुख देSS हो SसबनकोSSS S अS दाSS रौSSS ग
 सां सां निध धनीसा सांसासासारेसाधनिम्प प म्प धनीसा मग्मग्म म्
 बिन ती सुन लेSSS हो कर ताSS SSS रS SSS करी SSमना
 रेरे सा सासा मरेमरे प म्प धनीसा मग्म रेसा निधसा रेसा नीसानिध

आस्ताईका बिलंपद

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+	०		४		०		१		२		
										करी	SSमना
१	SS	SS	SS	ते	रो	प	निध्	नी	सा	करी	SSमना
२	प	नि	निध्	नी	सा	S	निध्	नीसा	रे	सा	करी
३	सा	प	पनि	धनी	सा	S	धनी	सारे	सा	निप	करी
४	सारे	सा	मग्म	रेसा	सारे	प	मग्म	रे	सा	निध्सा	करी
५	सा	प	मरे	सारेसासा	निप	निध्	नीसा	रे	सा	धनीसारे	करी
६	क	री	म	ना	ते	रो	तुमी	सा	हे	बस	तार
	सा	मरे	प	मग्म	मरे	प	निप	मग्म	रेरे	सासा	
७	क	री	म	ना	म	ते	रो	तू	मी	सा	हे
	सारे	प	मग्म	रे	सा	मरे	प	प	निमप	प	निध्
	स	SS	ता	SS	र	SS	SS	SS	SS	SS	करी
	प	निध्	नी	सा	मरे	पप	निध्	नीसा	मग्म	रेसा	
८	स	SS	SS	SS	ते	रो	पग्	मरे	रेसा	निप	पनि
	सा	मरे	पप	पप	निम्	पनि	धनी	सा	पपनिध्	सा	करी

९सा प निध सा निध सा निधसा साग् मरे सा करी SSमना
 १०सा सारे पपग् मरे रेरेसा निध नीनीसा सा पग्मरे रेसा करी SSमना

अंतरेका बिलंपद

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+	०			४		०		१		२	
								दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
१की	जे	मरे	पप	निप	धनी	सा	रेसा	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
२की	जे	सासामरे	पप	निनिम्प	निध	धनी	धनीरेसा	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
३की	जे	रेसा	निप	मरेपप	मरेपप	मग्म	रेसा	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
४की	जे	धनीसारे	साऽ	रेसा	निप	धनी	सारे	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
५की	जे	मग्म	रेसा	निम्प	निध	नीनी	सासा	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
६की	जे	सुख	देऽऽ	हो	ऽसबनकोऽऽऽ	ऽ	मरे	पप	मग्म	रेसा	
	मरे	पप	निध	सानी	रेसा	मग्म	रेसा	मप	दुख	दली	ऽद्र
७की	जे	दुख	दऽली	द्रऽदू	रकी	जेऽऽऽ	ऽ	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
		रेसा	मरेप	निधनी	सारेसानी	निध	सा				
८की	जे	दुख	दली	द्रदू	र	कीऽऽजेऽऽऽ		दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
		परे	सानि	परे	सा	मरेप	ग्मरेसा				
९की	जे	साऽ	मरे	पग्	मरे	सा	मपधनी	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ
१०की	जे	मरेप	मरेप	रेसा	रेसानिधनी	सानिधनी	सा	दुख	दली	ऽद्र	दूऽऽ

राग—मल्हार

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

बिजली चमके बरसे मैं । हरवा आई बदरिया गरज गरज में अत ही
 बरावे ॥ धृ० ॥ घन गरजे घन बिजली चमके । पपिया पिहूँ की ढेर सुनावे ।
 कहां कहूँ कित जाऊँ मुरादजी तरसे मै ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+								३
बि	ज	ली	ऽ	च	म	के	ऽ	ब	र	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं
सा	सा	रे	ऽ	ध	नि	प	ऽ	प	प	नि	ध	सा	ऽ	ऽ	सा
ऽ	ह	ऽ	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ई	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ
ऽ	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नि	ध	नी	सा	सा	सा	ऽ
ग	र	ज	ग	र	ज	में	ऽ	अ	त	ही	ड	रा	ऽ	वे	ऽ
सा	म्	रे	प	प	नि	म्	प	म्	म्	म्	म्	रे	ऽ	सा	ऽ

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+								३
								घ	न	ग	र	जे	ऽ	घ	न
								म्	म्	रे	रे	प	ऽ	नि	ध
बि	ज	ली	ऽ	च	म	के	ऽ	प	पि	या	ऽ	पि	हुं	की	ऽ
नी	नी	सा	ऽ	सा	रे	सा	ऽ	नि	नि	ध	ऽ	नी	नी	सा	ऽ
टे	ऽ	र	सु	ना	ऽ	वे	ऽ	क	हां	ऽ	क	हूं	ऽ	कि	त
सा	रे	सा	सा	नि	ध	नि	प	ऽ	म्	म्	रे	रे	प	ऽ	प

जा ऊं ऽ मु रा ऽ ऽ द जी ऽ त र सेऽ ऽ मै ऽ
प नि ध नी सां ऽ ऽ रे सां ऽ नि प म्ग् म् रे सां

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

०

१

+

३

१ बि ज ली ऽ च म के ऽ पप निध सासा रे निध नी सा ऽ

२ बि ज ली ऽ च म के ऽ पप निध सासा रेरे रेरे सासानिध सा

३ बि ज ली ऽ च म के ऽ सासानिनि पप रेरे सासानिनि पप सा

४ बि ज ली ऽ च म के ऽ म्ग् म्ग् रेरे सासा पप म्ग् म्ग् रेसा

बि ज ली ऽ च म के ऽ ब र से ऽ ऽ ऽ ऽ मै

५ निध सा रेरे सा पप निध सा रेरे म्ग् पप म्ग् म्ग् सासा रेरे धनी सा

६ निध नीनी सा निध सानी रेरे निध सानी रेसा म्ग् निध सानी रेसा म्ग् पप ऽ

७ बि ज ली ऽ च म के ऽ सासा म्ग् पप निनि म्ग् म्ग् म्ग् रेसा

८ बि ज ली ऽ च म के ऽ बिज लीऽ चम के बर सेऽ ऽ ऽ

पप निनि पम् प पप म्ग् रेरे सा

९ बिज लीऽ चम केऽ ऽ बर सेऽ मेंऽ हर वाऽ ऽ बर सेऽ में हर वा

सासा म्ग् पप निध सां पप निनि पम् पप म्ग् म्ग् पप म्ग् म्ग् रेरे सा

१० सा म्ग् प म्ग् म्ग् रे निनि म्ग् धनी सां म्ग् पप म्ग् म्ग् सासा रे

अंतरेकी ताने

नार्धी धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना

+

३

०

१

१ घ न ग र जे ऽ घ न निनि पप म्ग म्म सासारेरे धनी सा

२ घ न ग र जे ऽ घ न सासा निनि पप म्ग म्म रेरे रेरे सा

३ घ न ग र जे ऽ घ न सासा म्मे पप निधसांनी रे धनी सा

४ घ न ग र जे ऽ घ न धनी सांरे धनी सा पनि म्प ग्म रेसा

घ न ग र जे ऽ घ न बि ज ली ऽ च म के ऽ

५ सासाम्मे पप निधसांनी रेरे सासा निनि म्प धनी सा धनी सांरे धनि म्प ऽ

६ घ न ऽ ग र जे बिज ली चम के ऽ घ न गर जे ऽ बिज ली ऽ चम के ऽ ऽ

रेप ऽ पप निध सा निनि म् प रेरे सासा निनि पप म्ग म्म रेरे सासा

७ घ न ग र जे ऽ घ न रेरे सासा म्ग म्म रेरे सासा धनी सांरे

८ घ न गर जे ऽ घ न बि ऽ ज ली चम के बि ऽ ज ली चम के ऽ

सासाम्मे पप निध सा सा ऽ रे सा निनि प म्ग म्म रे रे सा ऽ

घ न ग र जे ऽ घ न बि ज ली ऽ च म के ऽ

९ म्ग म्म रेरे सासा निनि पप म्ग म्म रेरे सा रेरे सा धनी सा म्ग म्

१० घ न ग र जे ऽ रेरे सा धनी सा म्प निरे म्प सासारे धनी सा म्मे पप निध नी सा

राग—मल्हार

ताल—एकताल (मध्यल्य)

आई समधन मोरारे घर । केसर रंग मद भराई मद भराई ॥ ध्रु० ॥
 संदल गुलाब घिस लगावो । कर भर गालन लगावो । सब सुहाग न मिलके ।
 ममदसा को पेहेरवा पेहेराई ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
				आ	५	ई	५	स	म	ध	न
				सा	५	मृ	मृ	रे	सा	नी	सा
मो	५	५	५	५	५	५५	५	५	५	रा	५
मृ	रे	प	प	नि	ध	धनी	सा	५	५	धप	प
रे	५	५	५	५	५	घ	५	५	५	र	५
मृ	गृ	मृ	गृ	मृ	५	रे	५	५	५	सा	५
के	५	स	र	रं	ग	म	द	म	रा	५	ई
नि	ध	नी	नी	सा	सा	रे	रे	प	मृ	५	म
म	द	म	रा	५	ई	५५	५	स	म	ध	न
रे	रे	रे	सा	५	सा	मृ	मृ	रे	सा	नी	सा

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
सं	द	ल	गु	ला	ब	धि	स	ल	गा	५	बो
रे	म	रे	प	प	प	नि	ध	नी	सा	५	सा

क र म र गा ऽ ल न ल गा ऽ वो
 नि ध नी नी सा ऽ सा सा रे नि ऽ प
 स ब सु हा ऽ ऽ ऽ ग न मि ल के ऽ
 प म् प धनी सा ऽ नि प म् प मग् म्
 मं म द सा ऽ ऽ को ऽ ऽ पे ह र वा ऽ
 प प प धनी सा मग् म् रे नी सा नि प
 पे ऽ हे रा ऽ ई ऽ ऽ ऽ स म ध न
 मग् म् रे ऽ सा ऽ मग् म् रे सा नी सा

राग-मल्हार

तराना, ताल—त्रिताल, जलदलय

ना द्वे द्वे दीम तानदेरेना दीमतना तोम तना तदरे दानि दीम ॥ धृ० ॥

दीम दीम तोम तोम तनन तदेरेना देरेना देरेना दीम नितान देरेना ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ना ऽ ऽ द्वे द्वे दी ऽम ता न दे ऽ रे ऽ ना ऽ दी ऽम
 मग् म् रे रे सा ऽसा नि प नि ध नी ऽ सा ऽ सा ऽसा
 त ना ऽ तो ऽम त ना ऽ त ऽ द रे दा ऽ नि दी ऽम
 म् रे ऽ प ऽप नि म् प मग् म् रे रे ऽ रे सा ऽसा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 दी ऽम दी ऽम तो ऽम तो ऽम त न न त दे रे ना ऽ
 म् ३३ प ऽप प ऽप नि धध नी सा सा सा सा रे सा ऽ
 दे रे ना दे रे ना दी ऽम नि ताऽ ऽ न दे रे ना ऽ
 ध नि ध नी सा सा नि ऽप प म्ग् ऽ म् रे रे सा ऽ

राग-जैजैवंती

इस राग में ऋषभ, धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं। मध्यम कोमल हैं।
 गन्धार और निषाद यह स्वर कोमल और तीव्र दोनों तरह के लगते हैं।
 कोमल गन्धार अवरोह में वक्र तरह से लगता है। इस राग में बागेश्री और
 देस का अंग बहुत है। यह राग रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। यह
 राग करुण-रस प्रधान है।

आरोह—सा ग म् ध नि सा

अवरोह—सा नि ध प म् ग रे ग् रे सा

मुख्य अंग—सा ध नि रे ऽ ग रे प म् ग रे ग् रे सा नी सा

जाती—ओडव-संपूर्ण

वादी—रिषभ

संवादी—पंचम

सुरावट, ताल—रूपक

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२	
म्	ग	रे	ग	रे	सा	नी
सा	ध	नि	रे	ऽ	रे	ग
	—	—				

रे	प	म्	ग	रे	गु	रे
सा	नी	सा	ध	नि	रे	ऽ ॥
ध	ऽ	प	म्	ग	रे	ग
म्	ध	नि	सा	नि	ध	नि
रे	ऽ	ऽ	गु	रे	सा	नि
ध	प	नि	ध	प	म्	ग
रे	ग	रे	प	म्	ग	रे
म्	ग	रे	गु	रे	सा	नी
सा	नी	सा	ध	नि	रे	ऽ ॥

राग-जैजैवंती

ताल-झपताल (मध्यलय)

अचल रहो राज । आकाश धरणी । जबतक इन्द्र पद राज ॥ धृ० ॥
ये मोतियन को सेहरा विराजे । मोर मुकुट सिर साजे ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
अऽ	चऽऽ	लऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	रऽऽऽ	होऽ	ऽ	ऽरा	ऽज
(निध)	(पधप)	(मपम्)	(गमग)	रे	(रेगमप)	(मग)	रे	(गुरे)	(सासा)
आ	ऽ	का	ऽ	शऽ	ध	र	णी	ऽ	ऽ
नी	सा	रे	गु	रेसा	नी	सा	नि	ध	ऽ
ज	ब	त	ऽ	क	इ	ऽ	न्द्रऽ	ऽऽ	ऽ
सा	सा	ध	ऽ	ध	ध	प	पध	(निसा)	ऽ

रा.सं.(३)६

पऽ	दऽ	ऽ	राऽऽऽ	जऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
सांनि	धध	प	पधनिध	पधप	मपम	गमरे	नीसा	रेग	म

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
ये	ऽ	मो	ऽ	तिऽ	य	न	को	ऽ	ऽ
ग	म्	ध	ऽ	निध	सां	सां	सां	ऽ	ऽ
से	ह	रा	ऽ	बिऽ	राऽ	ऽ	जेऽ	ऽऽ	ऽ
नी	सां	रै	गुं	रैसां	सांनि	सां	निनि	धध	प
मोऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	मुऽ	कुऽ	ट	ऽ	ऽ
पध	प	सां	ऽ	ऽ	सांनि	धध	प	ऽ	ऽ
ऽऽऽऽ	सिऽर	साऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जेऽ	ऽऽ	ऽऽ
पधनिध	पधप	मपम	गमग	रेगुं	रेसा	सा	नीसा	रेग	म

आस्ताईका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
अऽ	चऽऽ	छऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	रऽऽऽ	होऽ	ऽ	ऽरा	ऽऽ
१ ध	नि	रे	ऽ	रे	ऽ	गुं	रे	सानि	सा
२ नि	ध	प	म्	ग	म्	ध	नि	रे	ऽ
३ रे	ऽ	गुं	रे	सा	नी	सा	म्	ग	१
३ सा	नि	ध	गुं	रे	सानि	सा	म्	ग	१

प	म्	गग	रे	गग	रे	ग्	रेसा	नी	सा
नी	सा	म्	ग	रे	ऽ	ग्	रे	सा	नीसा
४ अऽ	चऽऽ	लऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	ग	ऽ	रे	ऽ	ग
रे	ग्	रे	सा	पप	म्म्	गग	रे	म्ग	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ग	पम्	ग	रे	म्ग	रेग्	रेसा
५ अऽ	चऽऽ	लऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	रे	ग	रेग	म्प	म्
सान्ति	धन्ति	रे	ग	ग	रे	रे	म्	ग	रे
ग	म्	न्ति	ऽ	घ	ऽ	प	म्	ग	रे
अऽ	चऽऽ	लऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	रऽऽऽ	होऽ	ऽ	ऽरा	ऽज
६ रे	ग	रे	न्ति	घ	प	म्	ग	रे	ऽ
प	म्	म्ग	रे	म्	ग	रे	ग्	रे	सा
७ सान्ति	सान्ति	सान्ति	ध	ऽ	न्ति	रे	रे	रे	रे
ग	ग	ग	म्	म्	म्	म्	ग	ग	रे
म्	ग	म्	न्ति	घ	प	म्	ग	रे	ग
८ रे	ग	म्	ध	न्ति	सान्ति	ध	प	म्	ग
ग	म्	ध	न्ति	सा	ध	न्ति	सा	न्ति	सा
निध	धप	पम्	म्ग	ग	रे	ग	पम्	म्ग	रेग्रेसा
९ अ	च	लऽ	र	होऽ	ऽऽ	राऽ	जऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ
ग	म्	धप	म्	पम्	पम्	निध	पम्	गरे	रेग्रेसा

१० अऽऽ चऽऽ लऽ ऽऽ रऽऽऽ हो ऽऽ ऽऽ ऽराऽ ऽऽ
 सागरे गमपे गम् धन् धपधप म् धन् सारे ग्रे सारे

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
ये	ऽ	मो	ऽ	तिऽ	य	न	को	ऽ	ऽ
१ सा	नि	नि	ध	ध	ध	नि	ध	नि	सा
२ रे	सानी	सा	ध	नि	रे	रे	सा	नीसा	सा
३ रे	सानि	ध	नि	रे	रे	ग	रे	सानी	सा
४ रेरे	सासा	निनि	धध	निनि	धध	पप	मृग	मृध	नि
ये	ऽ	मो	ऽ	तिऽ	य	न	को	ऽ	ऽ
५ नि	ध	रे	ध	रे	नीसा	ध	रे	ध	रे
६ ग	म्	ध	नि	रे	ग	ग	मृग	रे	रे
गरे	सानी	सा	ध	नि	सा	ध	नि	रे	सा
७ ध	नि	रे	ग	मृग	रे	रे	ग	मृग	रे
सासा	निनि	धध	रेरे	सासा	निनि	धध	धनि	ध	रे
ये	ऽ	मो	ऽ	तिऽ	य	न	को	ऽ	ऽ
८ येऽ	मोऽ	तिऽ	यन	को	सेह	राऽ	विऽ	राऽ	ध
निध	सानि	धनि	रेरे	रे	धनि	सानि	सानि	धनि	रे

२ ये मोऽ ति यन को सेह राऽ वि राऽऽ जेऽ
 गू रेसा रे सोनी सा धनि सरै ग रेगम् गरे
 गू रेसा रे सोनी सा धनि धनि सा ऽ ऽ
 १० येऽऽ मोऽऽ तिऽऽ यऽऽ कोऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 रेसानि सानिध निधप धपम् मगरे निध सानि धनि मग रेगरेसा

राग—जैजैवंती

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

मोरे मंदर अजहूं नहिं आये । कैसी भूल परी ॥ धृ० ॥ प्रेम पिया बिन
आंखिया तरसे । किन सोतन बिलमाये ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ मो रे मं द र अ ज हूं ऽ न हिं आऽ ऽऽ ये ऽ
 ऽ रे रे गू रे सा रे नी सा ऽ सा सा नीसा रेसा नि ध
 ऽ कै सी ऽ भू ऽ ल प रीऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
 नि ग ग ऽ ग ऽ म् प म् ग म् गुरे गू रेसा नीसा ध नि

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ प्रे म पिंड या ऽ बि न आंऽखिऽ या ऽ त र से ऽ
 ऽ म् ध निध सा ऽ सा सा निध सानि ध प म् ग ग रे

ऽ किन सो ऽ त न बि ल मा ऽ ऽ ऽ ये ऽ ऽ ऽ
 ऽ गग ग ऽ ग ग म् प म् ग म् गुरे ग् रेसा नीसा ष

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० ऽ मो रे मं द र अ ज हूं ऽ न हि आ ऽ ऽ ये ऽ
 १ ऽ मो रे मं द र अ ज नीसा रेरे सान्निधनिधनिधनिधनि

२ ऽ मो रे मं द र अ ज नीसा रेरे सान्निधनिधनिधनिधनि
 ३ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

४ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 ५ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

६ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 ७ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

८ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 ९ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

१० ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 ११ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

१२ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 १३ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

१४ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 १५ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

१६ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 १७ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

१८ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 १९ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

२० ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 २१ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

२२ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 २३ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

२४ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 २५ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

२६ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 २७ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

२८ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि
 २९ ऽ मो रे मं द र अ ज धनिधनिधनिधनिधनिधनिधनिधनि

अंतरेकी तानें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

८ ऽ प्रेऽ मऽ पिऽ याऽ ऽऽ बिऽ न आंऽ खिऽ याऽ ऽ तऽ रऽ सेऽ ऽऽ
 १. ऽ रेग् रेसान्धि धन् धप म्ग रे गम् निध सान्धि सा सान्धि धप म्ग रेसा
 १९ ऽ प्रेऽ मऽ पिऽ या बिऽ नऽ आंऽ खिऽ याऽ ऽऽ ऽ तऽ रऽ सेऽ ऽऽ
 ऽ म्ग निध सान्धि सा सासा गरे म्ग पम् निध सान्धि सा धप म्ग रेग् रेसा

राग-जैजैवंती

ताल-एकताल (मध्यलय)

लरा माई सजन आये । सोहे लरिया ॥ धृ० ॥ कोन सुनेरी कासे कहूं
 आलीरी रस बतिया ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

लरा ऽऽमाई

रेसानीसाधनि

स ज नऽ आऽ येऽऽ ऽ सोऽ हेऽऽऽ ऽऽऽऽ लरीयाऽ
 रे रे रेग् रेसा रेनीसा ऽ नीसा रेगम्प म्गरेग् म्गरेसा

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

कोऽ नऽऽऽ

गम् घऽनि

ने री काऽसेऽ ऽकहं आऽलीऽऽऽ रीऽ रस बऽतिऽयाऽऽऽ लाऽऽमाई
 सा सा सा निऽसारे ग्रे सा सा नि धपमग रेग रेग पऽमग रेग्रे सा रेसा नीसा धनि

राग-जैजैवंती

ताल-झपताल (झंपा) मध्यलय

तुजै मालरानी तुमनमानी । बिद्या सरसती वैकुण्ठ निसानी ॥ धृ० ॥

तुं ही गुप्त तुं ही प्रगट । तुं ही जल थल मे । सकल जग मानी । तु आद
 भवानी ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	ऽ	धा	गे	कि	ट	किट	धा	की	ट	पखवाज
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	तबला
+		३			०		१			

तुऽ
 मग
 ऽ

जै	ऽ	मा	ऽ	लऽ	राऽ	ऽऽ	नी	ऽ	ऽ
ग	रे	रे	ग	मप	मग	रेग	रे	सा	सा
तू	ऽ	मऽ	ऽ	नऽ	माऽ	ऽऽ	नी	ऽ	ऽ
नी	सा	सारे	ग	रेसा	सारे	सासा	नि	ध	ऽ
बि	ऽ	द्या	स	र	स	ती	ऽ	वै	ऽ
ध	रे	रे	रे	ग	म्	प	ध	ध	ऽ
कुं	ऽ	ठ	ऽ	नि	सा	ऽ	नी	ऽ	तुऽ
प	ऽ	प	ऽ	ध	ग	म्	रे	ग	मग

जै	S	मा	S	लS	राS	SS	नी	S	S
ग	रे	रे	ग	मप	मग	रेग	रे	सा	सा

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
तुं	ही	गु	प	त	तुं	ही	प्र	ग	ट
म्	म्	प	नी	नी	सा	नी	सा	सा	सा
तुं	ही	ज	S	ल	थ	ल	मे	S	S
नी	सा	रे	ग	रे	सा	नि	ध	प	प
स	क	ल	ज	ग	मा	S	नी	S	तुं
प	रे	रे	सा	रे	नी	सा	सा	S	रे
आ	S	द	S	म	वा	S	नी	S	तुS
नि	ध	प	S	ध	ग	म्	रे	ग	मग

राग-जैजैवंती

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

खबरी नहीं जीया की । कैसें कहूं दिलकी कहानी ॥ धृ० ॥
 बिनति हमारी सुनले ओजी । तुमपर वारी प्रेम कियो कियोजी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
S	S	S	ख	वS	री	S	न	ही	S	S	जी	याS	S	S	S
S	S	S	प	मग	रे	ग	रे	सा	S	S	रे	सानी	सा	ध	ति

की ऽ ऽ ऽ ऽ कै से कऽ हूं ऽ ऽ दिऽ लऽ कीऽऽऽ क
 रे ऽ ऽ ग ऽ म् ध निऽ सा ऽ ऽ सांनिऽ धपऽ पध निऽ प
 हा ऽ नी ख बऽ री ऽ न ही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 म् ग रे प म्ग रे ग् रे सा ऽ ऽ ऽ रे नी सा ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 बि न ती हऽ मा ऽ री ऽ सु न ले ऽ ओ ऽ जी ऽ
 ग म् ध निऽ सा ऽ सा ऽ नी सा रे सां निऽ ध सा ऽ
 तु म प रऽ वाऽऽ री ऽ प्रेऽऽ म की यो ऽ ऽ कीऽ
 ध ध ध धप धनिऽ सांनिऽ ध प पध निऽ प म् ग रे ग पम्
 योऽ ऽ जीऽ ख बऽ री ऽ न ही ऽ ऽ
 ग्रे ग् रेसा प म्ग रे ग् रे सा ऽ ऽ

राग-खंभावती

खंभावती यह खमाज थाट का राग है. परंतु आरोह में रिषभ लगाने से और थोड़ा फरक करने से खंभावती राग का स्वरूप प्रगट होता है. इस राग में खमाज और मांड राग का मिश्रण है. दूसरे प्रकार से खंभावती राग गाया करते हैं की जिस में बागेश्री राग का अंग है. परंतु तीव्र गंधार लगाने से बागेश्री से इस का स्वरूप अलग होता है. मैंने दोन्हीं तरह से इस राग को लिखा है. यह राग रातके दूसरे प्रहर में गाया जाता है. श्रृंगार और करुण रस प्रधान यह राग है.

प्रकार १ ला

आरोह—सा रे म् प ध, प ध सा

अवरोह—सा नि ध प, ध म्, ग म् सा

मुख्य अंग—सा रे म् प ध प ध सा ऽ सा रे ग सा ऽ नि ध प, ध म् ग म् सा

जाती—ओडव-षाडव

वादी—गंधार

संवादी—धैवत

प्रकार २ रा

आरोह—सा ग म् ध नि सा

अवरोह—सा नि सा ध ग म् ग रे सा

मुख्य अंग—ध नि सा ग म् ध ग म् ध नि सा नि सा ध ग म् ध ग म् ग रे सा

जाती—ओडव-षाडव

वादी—गंधार

संवादी—धैवत

सुरावट, प्रकार १ ला, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

रे म् प ध प ध प ध सा ऽ ऽ ऽ नि ध प ध

प ध म् ऽ ग ऽ ऽ म् सा ऽ ऽ ऽ म् ऽ सा ऽ ॥

प ध प ध सा ऽ ऽ ऽ सा रे ग ऽ ग ऽ सा ऽ

ग ग सा ऽ नि ध प ऽ ध म् ग ऽ ग म् सा ऽ ॥

सुरावट, प्रकार २ रा, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

ग म् ग रे सा नि सा ध नि सा ग ऽ म् ग ऽ म् ऽ

ध ऽ ग ऽ ग म् ध ऽ ग ऽ ऽ म् ग रे ऽ सा ऽ ॥

ग म् ध सा नि सा ऽ ऽ ऽ सा ऽ नि ऽ सा ऽ ऽ

सा ग ऽ म् ग रे ऽ सा ऽ नि ऽ सा ऽ ध ऽ ग ऽ

ग म् ध ऽ नि ऽ सा ऽ ध ऽ ग ऽ ग म् ग रे सा ॥

राग—खंवावती

प्रकार १ ला, ताल—झपताल (मध्यलय)

बाजत घन घन, बाजत मृदंग ताल । शंख नाद गगन मेरी । शृंगी
भृंगी करत गान ॥ धृ० ॥ शंकर शिव सांब, शोमे तिलक भाल । रुंडनकी
माल, शिवगण धरत ध्यान ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
बा	५	ज	५	त	घ	न	घ	५	न
ग	५	म्	प	ध	म्	प	ग	म्	सा
बा	५	ज	त	मृ	दं५	ग५	ता	५	ल
सा	५	ग	ग	म्	म्प	म्प	ग	५	ग
शं	ख	ना	५	द	ग	ग	न	मे	री
सा	रे	म्	प	ध	प	प	घ	सां	सां
शृ	गी	भृं	५	गी	क	र	त	गा	न
सां	नि	ध	प	घ	म्	ग	म्	सा	सा

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
शं	५	क	५	र	शि	ब	सां	५	ब
घ	५	प	घ	सां	सां	सां	सां	५	सां
शो	५	मे	५	ति	ल	क	भा	५	ल
नि	५	ध	५	नि	ध	प	ध	ग	म्
रुं	५	ड	५	न	की	५	मा	५	ल
प	ध	सां	५	सां	रे	ग	सां	५	सां

शि	व	ग	ऽ	ण	ध	र	त	ध्या	ज
नि	ध	प	ऽ	ध	म्	म्	प	ग	मूसा

आस्ताईका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
बा	ऽ	ज	ऽ	त	ध	न	ध	ऽ	न
१ सा	ऽ	रे	म्	प	ध	म्	ग	म्	सा
२ ग	ऽ	ग	म्	सा	म्	प	ध	प	ध
ध	म्	ग	ऽ	ऽ	ग	म्	म्	सा	सा
३ सा	ग	म्	पध	म्	पध	म्	पग	म्	सा
४ प	ध	म्	ग	म्	रे	म्	प	ध	नि
ध	प	ध	म्	प	ग	म्	म्	सा	ऽ
५ प	ध	प	ध	सा	नि	नि	ध	प	ध
म्	म्	प	ध	म्	पग	ग	म्	गम्	सा

तानें

६ म्म	पप	म्म	गग	गग	म्म	सासा	निनि	सासा	गग
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()
७ निनि	सासा	गग	म्म	रेम्प	पप	धध	पप	धध	सा
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()
८ बाऽ	जऽ	तऽ	धन	धन	बाऽ	जत	मुदं	गता	ऽ
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()
रेरे	म्म	पप	पप	धध	सानि	धप	पप	धम्	पा
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
शं	ऽ	क	ऽ	र	शि	व	सां	ऽ	व

१	प	ध	प	ध	सा	नि	ध	प	ध	सा
२	प	ध	सा	नि	ध	म्	म्	प	नीनी	सा
३	म्	म्	म्	प	प	प	ध	प	ध	सा
	नी	नी	सा	ऽ	ऽ	सा	रै	ग	सा	ऽ
४	सा	रै	ग	रै	सा	नि	ध	पध	म्प	ग
								(नी)	(सा)	ऽ
५	रै	म्	प	ध	प	ध	सा	नी	सा	ऽ
	नी	सा	सा	रै	सा	रै	ग	रै	सा	ऽ

तानें

६	पप	धध	पध	सासा	रैरै	सासा	रैरै	गग	रैरै	सासा
	(गग)	(रैरै)	(सासा)	(निनि)	(धप)	(पप)	(धध)	(सासा)	(नीनी)	(सासा)
७	गग	रैरै	सासा	निनि	धप	पप	धध	सासा	नीनी	सासा
	(शऽ)	(कर)	(शिव)	(सांब)	(शोऽ)	(मेऽ)	(तिऽ)	(लक)	(भाऽऽऽ)	(ल)
८	शऽ	कर	शिव	सांब	शोऽ	मेऽ	तिऽ	लक	भाऽऽऽ	ल
	(सांरै)	(सासा)	(निनि)	(धप)	(गग)	(रैसा)	(सानि)	(धप)	(म्पम्प)	(ग)

राग—खंवावती

प्रकार २ रा, ताल—अध्या (मध्यलय)

माधो मुकुंद हरी मधुसुदना मन हरलीनो ॥ धृ० ॥ नयन मनोहर बेनु-
करे बिराजे । नरहर रूप धारिये ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	ऽधीं	ना	ना	धीं	ऽधीं	ना	ना	धीं	ऽधीं	ना	ना	तीं	ऽतीं	ना
१			+				३						०		
मा	धो	मुऽकुं	ऽद	ह	ऽ	रीऽ	ऽ	म	धु	ऽसु	ऽदऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
ध	ग	मगरे	ऽसा	सा	ऽ	साऽ	ऽ	ग	म्	ऽध	ऽनिध	सा	ऽ	नि	सा
		(मगरे)	(सासा)			(साऽ)				(ध)	(निध)	(सा)		(नि)	(सा)

ऽ ऽ ऽ ऽ म न ऽह् रऽ ली ऽ ऽ ऽ नो ऽ ऽ ऽ
 ध ऽ ग ऽ ग म् ऽध निध सा ऽ नि सा ध ऽ ग
 मा धो मुऽकुं ऽद ह ऽ रीऽ ऽ
 ध ग म्गरे ऽसा सा ऽ साऽ ऽ

अंतरा

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना
 १ + ३ ०
 मा धो मुऽकुं ऽद ह ऽ रीऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न य ऽन म्
 ग म् ऽध निध
 नो ऽ हऽ र वे नु ऽक्रऽ रे बि रा ऽ ऽ जे ऽ ऽ
 सा ऽ साऽ सा ग ग ऽमर्ग रै सा नि सा ऽ ध ऽ ग
 न र ऽह रऽ रुऽ ऽ ऽ प धा ऽ ऽ री ये ऽ ऽ
 ग म् ऽध निध धनि सा ऽ सा सा नि ऽ सा ध ऽ ग
 मा धो मुऽकुं ऽद ह ऽ रीऽ ऽ
 ध ग म्गरे ऽसा सा ऽ साऽ ऽ

आस्ताई कां बिलंपद

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना
 १ + ३ ०
 १ मा धो मुऽकुं ऽद ऽ ऽ ऽ ऽ नि ऽ सा ऽ ग ऽ म्
 २ मा धो मुऽकुं ऽद ऽ ऽ ऽ ऽ नि सा ग म् ध ग म्
 ३ मा धो मुऽकुं ऽद सा नि सा ऽ ग ऽ ग म् ग म्ग रे

४ मा धो मुऽकुं ऽद सा ग म धग म ग म ध ध गग म गम्

५ मा धो मुऽकुं ऽद ऽ ऽ ऽ ऽ सा ग म म्गरे सा ऽ नि सा

ग म ग म ध नि ध ऽ ध ग म ध निध नि ध ग

६ मा धो मुऽकुं ऽद ऽ ऽ ग म ध सा नि सा ध ग म ध ग म

सानि सा ग ऽ म ऽ ध ऽ नि ऽ सा नि सा ध ग ऽ म्गरे सा

७ मा धो मुऽकुं ऽद मा धो मुकुं ऽद म धु सुऽ दऽ नाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

सा ग म्ग ऽ म् ध ग सा नि सा नि ध ध गग गग म्म्

८ मा धो मुऽकुं ऽद मा धो मुऽकुं ऽद म धु सु द नाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ

सा सा नि सा नि नि सा ध ध ध नि सा सा नि नि ध ध ध गग

९ मा धो मुऽकुं ऽद सा ग ध नि नि सा ध ग ध ग म् सा नि सा

ग म् ध नि सा नि सा ऽ ग म् ध नि सा ग म् ध

१० मा धो मुऽकुं ऽद ऽ ऽ ऽ ऽ ग म्ग ऽ म् गम् ध ऽ ग म्

ध नि ध ऽ नि ध ग म् म्गरे सा ध ग म्गरे सा सा नि ध ग म्गरे सा

अंतरेका बिलंपद

ना तीं ऽ तीं ना ना धीं ऽ धीं ना ना धीं ऽ धीं ना ना धीं ऽ धीं ना

०

१

+

३

१ न य न मऽ नो ऽ ह र सा नि सा ध गम् ध नि सा

रा.सं.(३)७

२ न य न मऽ नो ऽ ह र सा नि सा ध ग म ध नि
 सा ध ग म मृग रे सा ऽ नि सा ग म ध सा नि सा ऽ
 ३ न य न मऽ नो ऽ ह र सा ध गग म मृगरे सा नि नि सा
 ४ न य न मऽ नो ऽ ह र ग म ध सा नि सा नि सा
 ग ऽ ग मृग रे सा ऽ नि सा ध ग म ध नि सा
 न य न मऽ नो ऽ ह र बे नु ऽ कऽ रे बि रा ऽ
 ५ जे ऽ ऽ ध नि सा ऽ ध नि सा ग ऽ ग ऽ
 ऽ मृग रे सा ऽ नि सा नि सा ध ऽ ग म ध नि सा नि नि सा
 ६ न य न मऽ नो ऽ ह र ग मृग रे सा ऽ नि सा ध ध ग
 ग म मृग रे सा नि सा ऽ ग ग म ग म ध नि सा नि नि ध
 ७ न य न मऽ नो ऽ ह र सा ग सा नि सा नि सा ध ग म
 गऽ गग म ऽ मृग म ध नि ध नि सा नि नि ध ध ग गग
 ८ न य न मऽ नो ऽ ह र न य ऽ न म नो ह ऽ र बे नु
 नि सा नि सा ध ग ग ऽ म रे सा
 क रे बि रा ऽ जे ऽ ऽ न य न म नो ह र न य न म नो ह
 ग म ध मृग म ध सा नि सा नि सा नि सा ध गग गग ग म रे सा
 ९ न य न मऽ नो ऽ ह र बे ऽ ऽ नु ऽ कऽ रे ऽ
 ध नि सा ग ग ऽ मृग रे सा नि सा

बिराऽ ऽ जेऽऽऽऽऽऽऽ नय नम नोऽऽऽऽऽ हऽऽऽऽ रऽऽऽ ऽ
 धमसा नि सासासा नि निधध गग धध गम नि सा नि सा धध गम गम ध नि सा
 १० न य न मऽ नो ऽ ह र म्ग रे सा नि सा गम ध नि सा नि सा
 सा गम ध सा नि सा नि सा सा गग रे सा नि सा ध ग सा नि सा ध ग म् ध
 नि सा ग ऽ म् म्ग रे सा सा नि सा ध धध ग म् म्ग रे रे सा सा ग म् ध नि सा

राग—खंभावती

ताल—एकताल (मध्यलय)

झनन झनन झनन बाजे । सखियां मिल नाचे गाये ॥ धृ० ॥ सखि सहेली
 आवत है । ताल सूर छेडत है । राग रंग आति सुरंग सुनकर मन भाये ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
झ	न	न	झ	न	न	झ	नऽ	न	बा	ऽ	जे
सा	नि	सा	ध	ध	ग	ग	म्ग	रे	सा	ऽ	सा
स	खि	यांऽ	ऽ	मि	ल	ना	ऽ	चे	गा	ऽ	ये
ग	म्	धनि	सा	सा	सा	सा	नि	सा	ध	ग	म्

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
स	खि	स	हे	ली	ऽ	आ	ऽ	व	त	है	ऽ
ग	म्	ध	नि	सा	ऽ	सा	ऽ	नि	नि	सा	ऽ

ता	ऽ	ल	सू	ऽ	र	छे	ऽ	ड	त	है
सा	ऽ	न्	न्	सा	सा	ध	ऽ	ग	ग	म्
रा	ऽ	ग	रं	ऽ	ग	अ	ति	सु	रं	ऽ
ग	ऽ	म	रे	सा	सा	न्	सा	ध	ग	ऽ
सु	न	क	र	म	न	भा	ऽ	ये	ऽ	ऽ
ग	म्	ध	न्	सा	सा	न्	सा	ध	ऽ	ग

आस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी
+		०		४		०		१		२
झ	न	न	झ	न	न	झ	नऽ	न	बा	ऽ
१ झ	न	न	झ	न	न	गग	मृग	रेरे	सासा	निन्
२ झ	न	न	झ	न	न	गम्	धध	गग	मृम्	रेरे
झ	न	न	झ	न	न	झ	नऽ	न	बा	ऽ
३ निसा	गम्	घन्	सा	निन्	सासा	धध	गग	गग	मृग	रेरे
४ सासा	गग	गग	मृम्	मृम्	धध	गग	मृम्	धध	गग	मृग
५ सासा	सासा	निन्	सासा	गग	मृम्	धध	गग	मृम्	धध	निन्
६ झ	न	न	झ	न	न	सासा	सासा	गग	गग	मृम्
धध	धध	निन्	निन्	सासा	सासा	धध	धध	गग	गग	मृम्
७ झ	न	न	झ	न	न	निन्	सासा	मृम्	धध	गग
सानि	घन्	साग	मध	निसा	धध	मृग	म्	मृग	रेसा	निसा

८	झ	नऽ	ऽऽ	न	झऽ	नऽ	ऽऽ	न	बा	जेऽ	ऽऽ	ऽ
	ग	मृग	रेसा	सा	सांनि	सांनि	धनि	ग	ग	मृग	रेसा	सा
९	झ	नऽ	न	झऽ	नऽ	न	झऽ	नऽ	न	बाऽ	ऽऽ	जे
	सा	मृग	म्	धध	निनि	सां	गंग	सांसा	नि	सांसा	धध	ग
	झ	न	न	झ	न	न	झ	नऽ	न	बा	ऽ	जे
१०	सासा	गग	मृमृ	गग	मृमृ	धध	मृमृ	धध	निनि	धध	निनि	सांसा
	सांसा	धध	निनि	गग	मृमृ	सांसा	गग	मृमृ	ऽनि	सां	निनि	सां
अंतरेकी तानें												
	धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
	+		०		४		०		१		२	
	स	खि	स	हे	ली	ऽ	आ	ऽ	व	त	है	ऽ
१	सांनि	धनि	सांसा	धध	गग	मृग	रेरे	सा	गमृ	धनि	सां	निंसा
२	धनि	सांग	सांसा	निनि	धध	गग	मृमृ	धध	निनि	सांसा	सांसा	ग
३	स	खि	स	हे	ली	ऽ	गंग	रेसा	निंसा	धनि	गमृ	रेसा
४	स	खि	स	हे	ली	ऽ	गमृ	धनि	सांग	मृग	रेसा	निंसा
	स	खि	स	हे	ली	ऽ	आ	ऽ	व	त	है	ऽ
५	गंग	गमृ	गंग	सांनि	सां	सांसा	निंसा	धध	ग	गग	मृग	रेसा
६	सऽ	खिऽ	स	हेऽ	ऽऽ	ली	आऽ	वऽ	ऽऽ	तऽ	ऽऽ	है
	मृमृ	धध	म्	सांनि	सांनि	सां	गंग	गंग	रेरे	सांसा	निनि	सां
७	स	खि	स	हे	ली	ऽ	सऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	खि	सऽ
	ग	म्	ध	नि	सां	ऽ	सांसा	गमृ	धनि	सांनि	सां	सांसा

हेऽ	ऽऽ	ली	आऽ	ऽऽ	वऽ	तऽ	है	आऽ	वऽ	तऽ
धध	गग	म्	धनि	साम्	गरे	सानि	सा	धध	मग	मग
८ सखि	सहे	ऽली	आऽ	ऽऽ	वऽ	ऽ	तऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
धनि	साम्	ऽग	रैसा	निसा	गग	सा	निनि	सा	गग	रैसा
स	खि	स	हे	ली	ऽ	आ	ऽ	व	त	है
९ गम्	धनि	साग	मग	रैसा	निसा	धध	मग	मग	रेसा	गम्
साग	रैसा	निसा	धध	गग	मग	रेसा	निनि	धध	गग	मग
स	खि	स	हे	ली	ऽ	आ	ऽ	व	त	है
१० ग	ग	गम्	गरे	सा	नि	सा	निसा	धध	ग	ग
गम्	गरे	सा	गम्	गरे	सा	निनि	सा	मम्	ध	धनिसाधनि

राग-बहार

इस रागमें रिषभ, धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं। गंधार और मध्यम स्वर कोमल लगते हैं। निषाद यह स्वर कोमल और तीव्र दोनों तरहसे लगते हैं परंतु वक्र तरहसे लगता है। बसंत रतु और शरद रतुमें इस रागको जगाते हैं। रातके तीसरे प्रहरमें यह राग गाया जाता है। यह राग भक्तिरस श्रृंगार रस प्रधान है।

आरोह—सा रे सा, म् प म्गु म्, निध नी सा

अवरोह—सा नि प म्गु म् रे सा

मुख्य अंग—सा सा म् म् प म् प म्गु म् नि ध नी सा नि प म् प म्गु म् रे

जाती—ओढव-वा
वादी—मध्यम
संवादी—षड्ज

सुरावट, ताल-त्रिताल

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 सा सा म् म् म् प म् म् नि ध नि प म् प म् म्
 प प म् म् रे रे सा सा धनी सा नि प म् म् रे सा ॥
 म् म् म् म् प प म् म् नि ध नी नी सा नी सा S
 नी सा नी सा रे सा नि ध नी सा म् म् रे सा नी सा ध नी
 सा S नि प म् प म् म् प म् म् रे रे सा S ॥

राग-बहार

ताल-तिलवाडा (मध्यलय)

तुं तो बाहु की देसवा जाहां मोरा कुंथू लीनो लुम्या ॥ धृ० ॥
 चलो सखी मिल होरी खेलो । गारी दूंगी, नाही डरूंगी, डफबजा ॥ १ ॥

आस्ताई

ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं
 ० १ + ३
 तुं तो बाहु की दे S स वा S S S S S S S जाहां S मो रा
 प म् प प प S प नि नि प म् प म् म् नि S S ध S धनी S सा सा
 कं S S थू S S S S S ली नो S S S S लु S म्या S
 नी सा रे सा नि S ध S S S नी सा नी सा रे S सा रे म् रे सा नि ध

SSS S तुंतो बाहु कीदेऽस वाSSSSSSS

घनीसाऽ पम् पप पपऽपनिन्पम् पम्गम्

अंतरा

ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं

०

१

+

३

च लोऽ स खीऽ मि

म् नि ध नी साऽ सां सां

होऽ रीऽ खेऽऽ लोऽ गाऽऽ री दूंऽ गीऽ

नीऽ साऽ नीसारैसां नि ध म्गंऽऽ म् रैऽ सांऽ

नाऽ ही ड रुंऽऽ गीऽऽऽ ड फ ब जाऽ

नी सां सां सां नीसारैसां निऽ धऽऽ ध नी सां निऽ

SSS SS तुंतो बाहु किदेऽस वाSSSSSSS

घनीसान्निप पम् पप पपऽप निन्पम् पम्गम्

आस्ताई का बिलंपद

ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं

०

१

+

३

१ तुंतो बाहु किदेऽस वाSSSSSSSSSऽऽऽ नि म् प ग्

म् रे साऽ सा सा म् म् म् प ग् म् रे सा रे सा

२ऽऽ तुंतो बाहु किदेऽस वाSSSSSSSSSऽऽऽ ध नि प म्

प म्गं म् प म्गं म् रे साऽऽऽ सा म् म् प म्गं

- ३ म् ऽ तुंतो वाहु किदे ऽसवाऽऽऽऽऽऽऽऽऽ ऽ नि ध धन्नि प प म्
सा सा म् म् प प म् प म् म् म् नि ध ऽ निनि प पम्
- ४ प गुम् तुंतो वाहु किदे ऽस प गुम् रे सा ऽ म्प म्प म्प म् नि
ऽ ध ऽ धनीसा नि प म्प पप म्प म् सा म् पम् ऽप म्प म्
- ५ रे सा तुंतो वाहु किदे ऽस म्प म् नि ध ऽ नी ऽ सा ऽ नीसा
नीसा नि ऽ ध ऽ नि ध नि पम् प म्प म् पप गुम् म्प रे
- ६ सा ऽ तुंतो वाहु किदे ऽस धनी सा निप म् म्प म् म् म् नि प म्प
म् रेसा सा नीसा म् प ऽ निनिपम्प म्प म् नि ध धनी सा सा
- ७ सा ऽ तुंतो वाहु किदे ऽसवाऽऽऽऽऽऽऽऽऽ नि ध नी सा नीसा रे सा ऽ
नी सा नीसा रे सा नि ध ऽ ध ध नि प ऽ नि प नि म् प
- ८ गुम् धनी सा वाहु किदे ऽस म्प म्प रे रे सा ऽ सा ऽ सासा म्प
सासाम्प पप सासा म्प पप निनि पप पप म्प म् ऽ ध नी सा सा नी
- ९ सा ऽ तुंतो वाहु किदे ऽस वाऽ ऽऽ जंऽ हां मोऽऽराऽकंऽ ऽ थूऽऽ ऽऽ
म्प म्प म्प म्प धनीसा निप निम्प प म्प म् रेसा
- १० ऽ ऽ तुंतो वाहु किदे ऽस वाऽ ऽऽ ऽ ऽ जहां मोरा कं ऽऽ थूऽ ऽऽ
निध सा नी सा ऽ नीसा निध नि पप पप गुम्
- लीनो ऽलु भ्या वाहु किदे ऽसवाऽऽऽऽऽऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ जहां मो रा
निध ऽनी सा

अंतरेका बिलंपद

ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा धीं

०

१

+

३

१च लो ऽ स खी ऽ मि ल नि ध नी सा ऽ नीसा नीसा

नी सा ऽ म् नि ध नी ऽ सा ऽ म् प म्गु म् नि

२च लो ऽ स खी ऽ मि ल धनी रे सा नीसा ध नि निनि

म् प म्पधपग्मु नि प नि ध ऽ नी ऽ सा ऽ रे सा नी

३च लो ऽ स खी ऽ मि ल नी सा नीसा नीसा रेसा नि ध म्गु

नि ध नी सा ऽ म्गु म् रे सा ऽ रे सा नि ध ऽ सा नी

च लो ऽ स खी ऽ मि ल हो ऽ री ऽ खे ऽ ऽ लो

४सा म्म ऽ म् प म्गु म्गु म् ऽ ध नि ध ऽ नि ध नि प प

म्गु म्नि ऽ ध नी सा ऽ ऽ सा म्म रे सा धनी रे सा

५धनी सा ऽ निनि प म्गु म् धनी सा ऽ सासाम्म सा म् पम्

म्गु म् नि ध ऽ नी सा निधनीसा ऽ नी सा रे रेसा ऽ सा नि ध नी

६म्गु म् रे ऽ सा ऽ नि ध नी सा रे सा म् प निनि प म्गु

रेरे सा नि ध रेरे सा धनी सा रेरे सा रेरे सा रेरे सा नि ध नी

७च लो ऽ स खी ऽ मि ऽ ऽ लो ऽ हो ऽ री ऽ खे ऽ ऽ लो

म् नि ध नी सा नीसा सा रेसा रेसा नि ध म्गु म् रे ऽ धनी

८च ऽ लो ऽ स खी हो री खे ऽ ऽ लो ऽ लो ऽ लो

सा नीसा म् नि ध नी नीसा नि प पग्मु रेरे सा सासा म्म धनी

१० च ङ ङ लो ङ स ङ ङ खी ङ ङ हो ङ री ङ ङ खे ङ लो ङ ङ ङ ङ ङ
 सां गं रं सां सां नि नि ध ध नी नी सां ङ नि प म प ग् म ध नी ध नी सां सां
 १० च लो ङ स खी ङ मि ल मं ग् म् रं सां पं ग् ङ म् रं सां
 नि ध गं रं सां नि ध रं रं सां ध नी सां ङ म् नि ध नी सां
 ङ ङ म् नि ध नी सां ङ ङ म् नि ध नी सां ङ ङ ध नी सां

राग—बहार

ताल—एकताल (मध्यलय)

सुनत बन मुरली की धुन बाजरी ॥ धृ० ॥ पपिया गुंजत कोयल गुंजत
 है । और मुरन की गाजरी ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
											सु
											सां
न	त	बङ	न	मु	र	लीङ	ङङ	कीङ	ङ	धुङ	न
प	नी	संरें	सां	नि	प	मप	निनि	पम्	प	मग	म्
बा	ङ	ङ	ङ	ङङ	ङङ	ङङ	ज	री	ङ	ङ	सु
नि	ङ	ध	म्	गुम्	पध	नीसां	नी	सां	ङ	ङ	सां
न	त	बङ	न								
प	नी	संरें	सां								

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
				प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त	
				म्	म्	नि	ध धनीसां	सां	सां	सां	
को	ऽ	य	ल	गुंऽ	ऽऽ	ज	त	है	ऽ	औऽ	ऽऽ
नी	ऽ	सां	सां	नीसां	रेगुं	रे	सां	नि	ध	धनी	सां
र	मु	र	न	की	ऽ	गाऽ	ऽऽ	ज	री	ऽ	सु
रे	सां	नी	सां	नि	ध	धनी	सां	नी	सां	ऽ	सां
न	त	बऽ	न	मु	र	लीऽ	ऽऽ	कीऽ	ऽ	धुऽ	न
प	नी	सां	सां	नि	प	मप	निनि	पम्	प	मगुं	म

आस्ताईकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
				न	त	बऽ	न	मु	र	लीऽ	ऽऽ
				कीऽ	ऽ	धु	न				
१	गुम्	धनी	सां	नि	धनी	सां	ऽ	गुम्	धनी	सां	नि
२	न	त	बऽ	न	मु	र	सासा	मम्	पम्	गुम्	धनि
३	न	त	बऽ	न	मु	र	रेरे	सां	नी	सां	नी
४	न	त	बऽ	न	नीसां	नीसां	धनी	सां	सां	मम्	निध

- ५ न त बऽ न नीसा निप म्प गुम् पप गुम् रेसा सु
 न त बऽ न मु र लीऽ ऽऽ कीऽ ऽ धु न
- ६ सासा म्प पप गुम् निध नीसा धनी धनी रेरे सानी सा सु
 ७ न त बऽ न मु र लीऽ ऽऽ कीऽ ऽ गुम् धनी
 सारे सानि निनि पप म्प गुम् रेसा गुम् रेसा निनि पप रेरे
 सासा रेरे सासा धनि मु र लीऽ ऽऽ कीऽ ऽ धु न
- ८ निनि पप गुम् पप गुम् रेसा रेरे सासा धनी सासा निम् म्प
 गुम् रेसा सासा साम् म्प गुम् निध नीनी सानी सा ऽ सु
- ९ नऽ तऽ ब न मुऽ रऽ ली कीऽ ऽ धुऽ नऽ सु
 निप म्प ग् म् निनि पम् प गुम् प गुम् रेसा
- १० नऽ तऽ ऽऽ ब न मुऽ रऽ लीऽ की धुऽ नऽ बाऽ
 निप म्प धप ग् म् पम् पप म्प म् म् निध धनी
 ऽ जेऽ री ऽ मु र लीऽ ऽऽ कीऽ ऽ धु न
 सा धनी सा ऽ
- ११ सागु म्प गुम् निनि पप म्प गुम् सासा निप म्प गुम् नीसा
 रेरे नीसा निप म्प गुम् निनि निनि धध धध नीनी सा सु
 न त बऽ नऽ मु र लीऽ ऽऽ कीऽ ऽ धु न

अंतरेकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
				प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त	
१	मग्	मनि	ऽनि	धध	नीनी	सा	सासा	सासा	निनि	धध	नीनी
	गुग्	निध	सा	ऽ	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
२	सानि	धनी	सा	धनी	सरै	सानि	धनी	सा	रैरै	सानि	धनी
	मग्	मनि	धनी	सा	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
३	साग्	मप	गम्	निध	सानी	रैसा	गुरै	सानि	धनी	सा	ऽ धनी
	सा	ऽ	धनी	सा	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
४	गम्	धनी	सरै	गुरै	सानी	धध	नीनी	सा	साम्	गुम्	रैरै
	गुरै	सानि	धनी	सा	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
५	को	ऽ	य	ल	साग्	मप	गुम्	निध	सानि	रैसा	गुम्
	सासा	निप	मप	गुम्	रैरे	सासा	सासा	सासा	मम्	मम्	पप
	मम्	मम्	निनि	धध	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
६	कोऽ	ऽऽ	यऽ	ल	गुंऽ	ऽ	जऽ	तऽ	हैऽ	ऽ	पऽ
	रैरै	सानि	धनी	सा	सानी	सा	निप	मप	मग्	म्	नीसा
	पिऽ	ऽऽ	याऽ	ऽ	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त
	पम्	गुम्	धनी	सा							
७	धनी	साध	नीसा	धनी	सा	निप	मप	निम्	पनि	मप	गुम्
	मप	गुम्	रैसा	रैसा	प	पि	या	ऽ गुंऽऽ	ऽ	ज	त

८ नीसा म्म रसा नीसा रेगु रसा नीसा नीसा रसा नि ध धनि
 पप गुम् निध नीनी धनी सा गुम् निध नीनी नीनी सा ऽ
 नीनी सा नीनी सा प पि या ऽ गुंऽऽ ऽ ज त
 ९ गुम् धनि सानि धनी सागु म्प गुम् रसा नीसा धनी सा रसा
 नि ध धनी सा प पि या ऽ गुंऽऽ ऽ ज त
 १० गुं ऽ जऽ त पऽ ऽपि ऽऽ या गुंऽ ऽऽ जऽ ऽऽ
 नि ध धनी सा नीसा ऽरै सासा नि साम् गुम् रसा नीसा
 तऽ ऽऽ ऽ ऽऽऽ प पि या ऽ गुंऽऽ ऽ ज त
 रसा निनि ध धनीसा

राग—बहार

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

करसो लेजाई गडवा पी पास मोतियन की लरसो ॥ धृ० ॥ अरे लाल

रंग रसकी ना फरमानी ईसो । देखी कैसी फली सरसों ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 क र सो ऽ ले जाऽ ऽऽ ईऽ ऽ ऽ ऽ ग ऽ
 नि प प ऽ प म्प धप म्गु ऽ ऽ ऽ ध नी
 वा ऽऽ ऽ क र सो ऽ ले जाऽ ऽऽ ईऽ ऽ गऽ ड वाऽ ऽ
 सा धनी सा नि प प ऽ प म्प धप म्गु म् म्गु म् धनी सा

पी ऽ ऽ पा ऽ स मो ति यऽ न कीऽ ऽ ऽऽ ऽ ल
 सा ऽ ऽ नि ऽ प म् प म् ग् ग् गुम् प म् ग् म् रे
 सो ऽ ऽ क र सो ऽ ले
 रे सा ऽ म् म् प ऽ प
 अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 अ रे ऽ ला ऽ ल रं
 रे सा ऽ नि ध नी सा
 र स की ऽ ऽ ना फ रं मा ऽ नी ऽ ईऽ ऽऽ सो
 सा नी सा ऽ ऽ सा रे सा रे ऽ सा ऽ नीसा रेसा नि
 देऽ ऽऽ ऽ खी कै ऽ सी ऽ फूऽ ऽऽ ली ऽ म र सो
 धनी सा म् ग् म् रे ऽ सा ऽ नीसा रेसा नि ध म् म् नि
 ऽऽ ऽ ऽ क र सो ऽ ले
 धनी सा ऽ नि प प ऽ प

राग-बसंत

इस रागमें रिषभ, धैवत यह स्वर कोमल लगते हैं. मध्यम और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं. कचित तीव्र धैवत भी लगता है. कोमल मध्यम लल्लू रागके अंगसे आरोहमें लगता है. इस रागके, चिजोंमें बसंत रतुका वर्ण ज्योदेतर होता है. यह राग रातके तीसरे प्रहरमें गाया जाता है. शृंगार प्रधान यह राग है.

आरोह—	नी रे ग म ध नी सा		सा ग म ध नी सा		जाती—ओडव—संपूर्ण
अवरोह—	सा नी ध प म ग रे सा				वादी—षड्ज
मुख्य अंग—	सा ऽ नी ध प म म ऽ ग ऽ म ग रे सा,				संवादी—मध्यम
	म ध नी रे सा				

सुरावट, ताल—एकताल

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 नी सा नी ध् प ऽ म ग म ऽ ग ऽ
 ग म नी ध म ग म ग रे सा ऽ सा
 सा सा म् ऽ म् ऽ ग ऽ ग म ध् नी
 सा ऽ नी ध् ध् नी सा रे सा नी ध् प ॥
 म ध् नी सा ऽ रे सा ऽ नी ध् प ऽ
 ग रे सा रे सा ऽ नी ध् नी ध् प ऽ
 सा ऽ नी ध म ग म ग रे सा ऽ सा
 सा ग रे म ग रे सा ऽ नी ध् म ध् ॥

राग—बसंत

ताल—अध्या (मध्यलय)

बरजोना माने आई । बरन कोयली कूक बुलाई । तैसो ही पपैया पिहू
 पिहू करे ॥ धृ० ॥ जबसे पिया परदेस गईलवा तबते कछु ना सुहायरे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना
 १ + ३ ०
 ऽब रजो ऽना मा ऽ नेऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ बर नकोयली ऽऽ
 ऽध् सांनी ध्प प ऽ ध्पमग मग मध् सा ऽ ऽ ध्रे सांरेनीसा नीध्
 कूऽ कबुलाऽऽऽईऽ तैऽ सोऽ हीऽ ऽ प पै या ऽ पिऽहूऽपि हू ऽक
 नीध् पप ध्पमग मग मग गरे सा सा म् म् ग मध्नी ध्ध् सा नीरे
 रा.सं.(३)८

रे ऽऽब रजो ऽना मा ऽ नेऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ
 सांनीधूसांनी धूप प ऽ धूपमग मग मधू सां ऽ ऽ

अंतरा

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना
 १ + ३ ०

जब से ऽपि या
 सासा म् ऽम् ग

परदेऽऽ ऽस ऽग ई लऽ वा ऽ तब तेऽ ऽ कछुनाऽऽ ऽसुहाऽऽ ऽ
 गमधूनीसांसांसांसां रूसांसां ऽ रूगं रूसां ऽ सांरूसांसांनीधूनीसांनी
 रेऽऽऽऽ ऽब रजो ऽना मा ऽ नेऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ
 नीधूपमगसांनी धूप प ऽ धूपमग मग मधू सां ऽ ऽ

आस्ताईका बिलंपद

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना
 १ + ३ ०

१ ऽब रजो ऽना मा ऽ नेऽऽऽऽ म धू नी धू प ऽ म ग
 २ रूसांऽब रजो ऽना मा ऽ नेऽऽऽऽ मधूनीधू प ऽ म ग मग रू
 ३ ऽ ऽब रजो ऽना म ग मग रूसा नी सा म् ग नी धू प म्
 ४ म गब रजो ऽना म ग नी धू प मग म ग गम नीधू प म्
 म ग रू सा ऽ ऽ सा म् ग म धू नी ऽ धू ऽ

५ प मब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ ग ऽ नीध मग मग रे सा ऽ
 मू ग नी ध् सा नी ध् ऽ प ऽधूपमग म ग ऽ मग रेसा
 ६ सा ऽब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ नी ध् प सा नी ध् प ऽ
 म ग नी ध् प म ग ऽ नीनी ध् ध् मग मग रेसा मग रेसा
 ७ ऽ ऽब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ ब रऽ जो ऽ
 सा नीध् नी ध्
 ना ऽमाऽऽऽ ऽ ऽ ने ऽ आ ऽ ईऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 प ऽ धूपमग म ग प ध् नी ध् ध्नी सा ऽ नीध् पम गम गरे
 ८ सा ऽब रजो ऽना माऽ ऽऽ ऽ ऽ नेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 पम पग म ग नीध् नीध् नीध् प सा नीनी ध् ध् पम
 ९ ई ऽब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ ऽ ऽऽऽऽऽ
 म ध् सा नी ध् प ऽ धूपमग मग मध् सा ऽ ऽ नी ध् नीध् पमग
 म ग मग रेसा सा ऽ सा मू ऽ मू ग ऽ गम ध्नी ध्नी सा नीध्
 १० नी ध्ब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ गम ध्नी सा नीध्
 नीध् नी ध्नी सा नी ध् नीध् प ध्पध्प मग म ग मग मग रेसा सा मू नी
 ध् सा नी ध् नी ध् प ऽ नीध् प प मग नीध्पध्पममग म
 ध् साब रजो ऽना मा ऽनेऽऽऽऽऽ आऽ ई ऽ ऽ

अंतरेका बिलंपद

ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना धीं ऽधीं ना ना तीं ऽतीं ना

१

+

३

०

जब से ऽपि या

१ पर देऽऽ ऽस ऽग ई लऽ वा ऽ धुपम ध् म ध् नी ध् सा नी
नी ध् प ऽ म ध् नी ध् नी ध् धुनी सा जब से ऽपि या

२ पर देऽऽ ऽस ऽग ई लऽ वा ऽ नी ध् नी सा नीध् सा नी ध्
धुपम म ऽ ग ऽ सा ग म नीध् मग रेसा जब से ऽपि या

३ पर देऽऽ ऽस ऽग ई लऽ वा ऽ सा म् म् ग ऽ नी ऽ
ध् सा नीध् नी ध् प म ध् सा ऽ रे सा जब से ऽपि या

४ पर देऽऽ ऽस ऽग ई लऽ वा ऽ मग धुम नीध् सा नीध् नीध् प
मग मग रेसा म् म् नी नी धुनी सा धुनी रेसा ऽ जब से ऽपि या

५ नी ध् धुनी सा ऽ नी ध् सा नी रे सा ऽ नी ध् नी सा
नीध् सानी रे सा ग रे सा ऽ नीध् प मग मग जब से ऽपि या

६ गम नी नीध् नी रे रे सा नीध् सा नी ध् नीध् प म् ग गनीध्
गरेसासा म् म् गगनीनीनीध् नीध् सा ऽ म ध् सा जब से ऽपि या

७ पर देऽ ऽस ग ई लऽ वाऽ ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽऽऽ जब से ऽपि या
गम धुनी रे रे ग रे रे सा नीध् नीध् प मममम मगमग रेसा

८ प र देऽ ऽ स ग ई ऽ ऽ ल वा ऽ ज ब से
म ध् नीध् सा नी रे ग रे म ग रे सा नी ध् प

पि याऽ ऽ ऽ पर दे स गऽई ऽल वाऽ ऽऽ ऽ जब से ऽपि या
 म ग रे सा ऽ सासा म् ग नीधूप मग मग रेसा ऽ
 ६ सा नीधूप प प धु नीधूप प प मग म ग ग मधु नीसा रेसा
 ग रे मग रेसा ऽ नीधुसानी रे सा नी ध नीनी धुष जब से ऽपि या
 १० म ग रे सा ऽ नी धुप मग रेसा सा नीधूप म ग रे सा ग रेसा नीधु
 पम म ग सा म् ग मधु नीसा नीधूप म ग रे सा जब से ऽपि या

राग-बसंत

ताल-एकताल (मध्यल्य)

गैली गैली एंडी एंडी डोले सबनारी । गरवा लागे रंग बरसा रुतु बसौत
 माती । जोबन माती चाल तोरी ॥ धृ० ॥ सोले हो सिंगार कर अबरन पेहेरे
 पेहेरे पेहेरे माला अबिर गुलाल लियो भर झोरी ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	एं	ऽ	डीऽ	एं	ऽ	डी
धुनी	सा	रेसा	नी	धु	प	प	ऽ	धुप	म	ग	ग
डो	ऽ	ले	ऽ	स	ब	नाऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
म	ऽ	ग	ऽ	म	धु	नीसा	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	र	वा	ला	ऽ	गेऽ	रं	ग	ब	र	सा	ऽ
म	म	धु	सा	ऽ	रेसा	नी	धु	प	प	म	धु

रु	तु	बऽ	सौं	ऽ	त	मा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ
नी	सा	नीध्	म	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ
जो	ब	न	मा	ऽ	ती	चा	ऽ	ल	तोऽ	ऽऽ	री
रे	सा	सा	०म्	ऽ	ग	म	ऽ	ध्	धुनी	साँरे	ध्

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
सो	ले	हो	सिं	गा	र	क	र	अ	ब	र	न
म	ध्	म	ध्	साँ	साँ	साँ	साँ	साँ	रे	साँ	साँ
पे	हे	रे	पे	हे	रे	पे	हे	रे	ऽ	मा	ल
साँ	रे	साँ	रे	साँ	साँ	नी	ध्	नी	ऽ	साँ	नी
अ	बि	र	गु	ला	ल	लि	यो	भ	र	झो	री
रे	ग	रे	म	ग	रे	नी	साँ	नी	ध्	म	ध्

आस्ताईकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	लीं	एं	ऽ	डीऽ	एं	ऽ	डी
१ गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	धुप	मग	मग	गम	गरे	ल
२ गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	गम	धुनी	धुप	धुप	मग	म
३ गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	गम	धुनी	साँनी	धुप	मग	रे
गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	एं	ऽ	डीऽ	एं	ऽ	डी

४ नीसा	म्	म्	ग	गम	धुनी	ध्	प	धुप	मग	म	ग
५ धुप	धुप	धुप	मग	गम	धुनी	धुप	धुप	मग	मग	रेसा	सा
६ गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	नीसा	गम	धुनी	सांनी	धुप	मग
७ गैऽ	लीऽ	गैऽ	ली	एंऽ	डीऽ	एंऽ	ऽऽ	डीऽ	डोऽ	लेऽ	सब
पध्	पम	गम	ग	सांरै	सांनी	धुनी	सांरै	सांनी	धुनी	धुप	मध्
८ गैऽ	ऽऽ	लीऽ	ऽ	एंऽ	ऽऽ	डीऽ	ऽऽ	डोऽ	लेऽ	स	ब
गम	गम	गरे	सा	धुनी	सांनी	धुप	मग	गम	गरे	सा	सा
९ गैली	गैली	एं	डी	डोले	सब	ना	री	गर	डवा	छागे	रंग
सासा	मम्	म्	ग	गम	धुनी	ध्	प	नीसा	ऽनी	धुप	मध्
गैऽ	ऽ	लीऽ	गै	ऽ	ली	एं	ऽ	डीऽ	एं	ऽ	डी
१० नीसा	गम	गरे	सा	गम	धुनी	धुप	मग	रेसा	गम	धुनी	सांनी
धुप	मग	रेसा	गम	धुनी	सां	गम	धुनी	सां	गम	धुनी	सां

अंतरेकी ताने

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
१ सो	ले	हो	सि	गा	र	क	र	सांनी	धुप	मग	रेसा
२ सो	ले	हो	सि	गा	र	धुनी	सांरै	धुनी	सांनी	धुनी	धप
३ सो	ले	हो	सि	गा	र	गम	धुनी	सांग	ऽरै	सांनी	धुप
सो	ले	हो	सि	गा	र	क	र	अ	ब	र	न
४ नीसा	गम	धुनी	सांरै	सांनी	धुप	मग	रेसा	गम	धुनी	सांरै	सां

५	रैरै	सानी	धुनी	सानी	धुप	धुप	मग	म	ग	गम	धुनी	नी
	मग	मग	रेसा	नीसा	म	ग	गम	धुनी	साधु	नीसा	धुनी	सा
	सो	ले	हो	सिं	गा	र	क	र	अ	ब	र	न
६	सोऽ	ऽऽ	लेऽ	ऽऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	सिंऽ	गाऽ	रऽ	कऽ	र
	धुनी	सांरै	धुनी	सांरै	सानी	धुनी	रैग	रैसा	सांरै	सानी	धुप	प
७	सो	ले	हो	सिं	गा	र	सोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	लेऽ	ऽऽ
	म	ध्	म	ध्	सां	सां	मध्	नांरै	गं	रै	गंम	गं
	हो	ऽ	सिंऽ	ऽऽ	गाऽ	रऽ	कऽ	रऽ	अऽ	बऽ	र	न
	सा	ऽ	सांरै	सानी	धुसां	नीध्	पध्	पम	गम	गरे	सा	सा
	सो	ले	हो	सिं	गा	र	क	र	अ	ब	र	व
८	सांरै	सांरै	सांरै	सानी	धुनी	सांरै	धुनी	सांरै	धुनी	सांरै	सानी	धा
	नीध्	पम	गम	गरे	सा	नीसा	म	मनी	ऽध्	प	धुप	मा
९	सो	ले	हो	सिं	गा	र	गम	धुनी	रैग	गम	धुनी	रै
	म	गंरै	सानी	धुप	मग	रेसा	गं	रैसा	नीध्	पम	गरे	सा
१०	सो	ले	हो	सिं	गा	र	गग	मम	धुध्	नीनी	रैरै	गं
	नीनी	रैरै	धुध्	नीनी	रैसां	ऽनी	धुप	मग	सांनी	धुप	मग	रैध्

राग-बसंत

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

जपिया नाम जाक्कोजी । निरंकार निरभय नारायन । परब्रह्म परमेश
स्वामी ॥ धृ० ॥ कृष्ण कन्हैया विष्णू छत्रमुज । गोवरधन गिरिवर गिरिधारी
कमलावर वैकुण्ठ धारीये ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ज पि या नाऽऽ म जाऽऽ कोऽऽ जीऽऽऽऽऽऽ
 ध् सा नी ध्प प म म ग म ध् साऽऽऽऽऽऽ
 निऽऽ रंऽऽ काऽऽ र नि र म य नाऽऽ राऽऽ य न
 नीध् ध्नी सा नी ध् प प प म ग म ग म ग रे सा
 पऽऽ रऽऽ ब्रऽऽ ह्य प र मेऽऽ श्व र स्वाऽऽ मीऽऽ
 सा रे नीसाऽऽ म्ऽऽ म् ग म ध्नी सा सा रे ध्नी सा नी ध्
 ज पि या नाऽऽ म जाऽऽ कोऽऽ जीऽऽऽऽऽऽ
 ध् सा नी ध्प प म म ग म ध् साऽऽऽऽऽऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 कऽऽ ण्ण क न्हैऽऽ याऽऽ विऽऽ ण्ण छऽऽ त्र मु ज
 म ध् म ध् ध्नी सा साऽऽ साऽऽ साऽऽ सा नी रे सा सा
 गोऽऽ व र ध न गि रि व र गि रि धाऽऽ रीऽऽ
 नीऽऽ रे ग रे सा सा रे सा सा नी ध् ध्नी सा नी ध्
 क म लाऽऽ व र वैऽऽ कुंऽऽ ठ धाऽऽ रीऽऽ येऽऽ
 ध् नी रे म ग रे साऽऽ साऽऽ नी ध्नी सा नी ध्प म ध्

राग-बसंत

तराना, ताल—त्रिताल, जलदलय

तोम् तननन नननन देरेना तन देरेना । तदरे दानी तारे तदरे
 तदानी दीम् तन नननन तोम् तननन नन देरेना तोम् तदरे दानी तदरे
 ॥ धृ० ॥ दिर दिर दिर तनन दिर दिर दिर तनन दिर दिर तन नाद्रे
 तुंद्रेद्रे तदानी दीम् तन तक् धिकिट तक् धा । गन गतक्धा, धाग
 तिरिकीट तक् धागनग धा, धाकीट तक् धुमकिट तक् किटता गदिगनधा
 ता गदिगन धा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धी	धी	ना	ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी
३			०				१				+			
तो	ऽम	त	न	न	न	न	न	न	न	न	दे	रे	ना	
सा	ऽनी	धू	सा	नी	धू	प	प	प	म	ग	म	म	म	
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	त	द	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	सा	सा	सा
नी	ता	रे	त	द	रे	दा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	त	दा	नी
म्	म्	म्	म्	म्	म्	पम्	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	धू
ऽम	त	न	न	ऽ	न	न	न	तो	ऽम	त	न	न	ऽ	न
ऽसा	सा	सा	रे	सा	नी	धू	धू	सा	ऽसा	सा	सा	रे	सा	नी
रे	ऽ	ना	ऽ	तो	ऽम	त	द	रे	दा	नी	त	दा	ऽ	ऽ
धू	ऽ	प	ऽ	सा	ऽसा	नी	धू	प	प	प	प	धूप	म	ग
नी	ऽ	तो	ऽम											
ग	ऽ													

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

राग-पीलू

जाती-ओडव-संपूर्ण
वादी-गंधार
संवादी-निषाद

आरोह—सा गू म् प नी सा

अवरोह—सां नि ध प म् ग म् ध्र प म्ग् रे सा

मुख्य अंग—म् प नी सा ग् ङ सा ङ ग म् प ग म् ध् प म्गु रेसा ङ ङ

सुरावट, ताल—एकताल

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
गू	गू	रे	सा	५	रे	नी	सा	नी	धू	प	५
प	धू	प	५	प	धू	नी	धू	सा	५	गू	रे
सा	५	गू	मू	प	५	गू	५	गू	रे	नी	सा॥
सा	सा	सा	ग	ग	ग	ग	मू	प	५	प	मू
ग	५	ग	मू	धू	प	गू	५	रे	सा	गू	पनी
सा	नी	धू	प	गू	५	प	गू	५	रे	सा	५॥

राग—पीलू

ताल—दीपचंदी

ये भंवरा बारिक मोल न देय ॥ धृ० ॥ उडकर भंवरा डाली पर वै
कली-कली रस लेय ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	गीं	५	धा	गे	धीं	५	ता	तीं	५	धा	गे	धीं
+			३				०			१		
							ये	५५	५	मं	व	रा
							पनी	सारे	गू	गू	गू	गू
५५	५५	५	५५	५	५	५	बा	रि	क	मो	५	ल
गू	गू	५	रे	सा	५	५	गू	नि	प	मू	गू	रे
दे	५	य	५५	५	५	५						
सा	५	सा	गू	रे	सा	५	५					

अंतरा

धा गीं ऽ धा ने धीं ऽ ता तीं ऽ धा ने धीं ऽ
 + ३ ० १
 उड कर मं व रा ऽ
 साग ग म् प प प ऽ
 डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ क ली क ली ऽ र स
 ग म्निऽ प ग् ऽ रेसा सा प प प प ऽ प ध
 ले ऽ य मं व राऽ ऽ बाऽ रि क मोऽ ऽ छऽ न
 ग प ऽ ग प म्ग ग गम् नि प म्ग ग् रेसा सा
 दे ऽ य ऽऽ ऽ ऽ ऽ
 सा ऽ सा गुरे सा ऽ ऽ

आस्ताईका विलंपद

धा गीं ऽ धा ने धीं ऽ ता तीं ऽ धा ने धीं ऽ
 + ३ ० १
 धेऽ ऽऽ ऽ मं व रा ऽ
 ऽऽ ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ बाऽ रि क मोऽ ऽ छऽ न
 १ दे ऽ य ग् ऽ सा ऽ धू नी धू सा ऽ ऽ ऽ
 ग् ऽ ऽ ग् रे सा ऽ बाऽ रि क मोऽ ऽ छऽ न
 २ दे ऽ य ग् रे ग् सा धू नी धू प ऽ पधू सा
 ग् ऽ सा सारे म्ग सा ऽ बाऽ रि क मोऽ ऽ छऽ न

३	दे	५	य	ध्	नी	सा	रे	गू	५	सा	सा	ग	म्
	मगग	५	५	गू	म्	प	मगगू	बा५	रि	क	मो५	५	ल५
४	दे	५	य	प	५	गू	म्	ध्	पम्	गू	प	गू	प
	रेसासा	५	५	ग	५	रे	५	म्	गूरे	रे	म्	प	ध्
	रे	प	५	मगगू	५	मगू	रेसा	बा५	रि	क	मो५	५	ल५
५	दे	५	य	५	५	५	५	ग	म्	नि	प	गू	सा
	ग	म्	ध्	प	गू	सा	५	प	गू	सा	ध्	५	प
	ध्	पम्	गूरे	सा	प	सा	प	बा५	रि	क	मो५	५	ल५
६	दे	५	य	मं	व	रा	५	५५	५	५	५	५	५
	सा	५	५	ग	ग	म्	५	गूरे	ग	रे	सा	रे	सा
	५	५	५	५	५	५	५	बा	रि	क	मो५	५	ल
	ग	५	५	सा	रे	ग	५	ग	म्	म्	गूरे	सा	रे
	दे५	५५	५५	५५	५	५५	५	बा५	रि	क	मो५	५	ल५
	रेम्	रेम्	निप	मगू	गू	रेसा	सा	रेम्	नि	प	मगू	गू	रेसा
७	दे	५	य	५५	५५	५	५	५	५	५	५५	५५	५
	सा	५	सा	गूरे	सान्नी	सा	५	प	५	५	गूरे	सान्नी	सा
	५	५	५	५५	५५	५	५	बा५	रि	क	मो५	५	ल५
	प	५	५	गूरे	सान्नी	सा	५	रेम्	नि	प	मगू	गू	रेसा
८	दे	५	य	५५	५५	५५	५५	५	५५	५५	५५	५५	५५
	सा	५	सा	गूरे	मगू	पम्	ध्प	नि	ध्प	गूरे	रेम्	गूरे	सान्नी
	गू	रेम्	सा	गूरे	म्	गूरे	रे	बा५	रि	क	मो५	५	ल५

९ दे ऽ य ऽ ऽ ऽ भंव रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 पघ पघ गप म् गु रे प निध पघ गप म्
 गुरे सारे प रेम् रेम् नि प बाऽ रि क मोऽ ऽ लऽ न
 १० दे ऽ य ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा प ग् सा प सा प ग् सा नि ध् प म्गुऽ
 गुरे सानी सा गुरे ग् रेसा रे सानी सा पम् ध् पम् ग् रेसा
 भंव राऽऽऽऽ भंव राऽ ऽऽ ऽ बाऽ रि क मोऽऽ ऽ लऽऽ न
 रेग् रेग्गुरेसा रेग् रेग् गुरे सा रेम् नि प म्गुऽ रेसासासा
 दे ऽ य ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा ऽ ऽ गुरे सा ऽ ऽ

अंतरेका बिलंपद

धा र्गी ऽ धा गे र्गी ऽ ता तीं ऽ धा गे र्गी ऽ
 + ३ ० १
 उड क र भं व रा ऽ
 डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ उड क र भं व रा ऽ
 १ ग ऽ सा सारे ग सारे प प ऽ ऽ म् ऽ ग ऽ
 ग म् प ग् ऽ सा ऽ उड क र भं व रा ऽ
 २ धध धप म् पम् ग ऽ ऽ सा पम् प म् ग ऽ ऽ
 गुरे ग् सा पम् प गुरे सा उड क र भं व रा ऽ
 ३ साग म्प नि ध् प ग् सा ध् पध् प गुरे सा ऽ ऽ
 सा सा सा ग् ग् प ऽ उड क र भं व रा ऽ

४ डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ सा गु रे पम् गु ऽ
 ग म् ग धप म् ऽ ऽ रेम् पध नि धप म् ऽ
 ५ डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ प मग् म् गु रे गु
 प ध् नी ध् प मध ध् प ऽ ऽ मग्ग् ऽ रे
 ६ सानी सानी सा गपम् ग गु सा उड क र भं व राऽ
 प नि धप
 डाऽऽ हीऽ ऽ पऽऽ रऽ बै ठे उड कर भंऽ वऽ रा भंऽ वऽ रा
 गुम्ग् म्प प गुम्ग् म्प गु सा पप गुम् पध्पम् गु रेम्गरे सा
 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ उड क र भं व रा
 सा ऽ ऽ गु सा ऽ ऽ साग ग म् प प प
 डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ उड क र भं व रा
 ७ सा मग् पम् ध् प गु प ध् पम् गु पम् पम् गु
 डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ उड क र भं व रा
 ८ सा गुम् प नी ऽ ऽ प नी सानी ध् प गु सा
 ९ डा लिप ऽर बै ऽ ठेऽ ऽ म्प सा ऽ प ध् ध्प
 गु ऽ ऽ ध्प प गु सा उड क र भं व रा
 १० नि धनि धनि प ऽ म्ध पध प ऽ ऽ पम् गुरे सा
 ग ऽ म् निध् प गु सा उड क र भं व रा

राग-पीछू

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

आली पिआ बिन मोरा कैसो जिया तरसत । बदरा छाये पवन पुरवाये ।
 दामिनि दमकत मेघवा बरसत ॥ धृ० ॥ सगरी सहेली फेर अलबेली अपने मंदर
 बिच हमहिं अकेली । हकिम पिआ सों कहियो जाय उन बिन रैन बीत मोहें
 तडपत ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 आ ली पि या बि न मोऽ रा कै सोऽ जि या त रऽ स त
 गु गु म् प गु गु रेसा सा सा नीधु प धु सा नीधु सा सा
 ब द रा ऽ छाऽ ऽ ये ऽ प व न पु र वाऽ ऽ ये
 सा सा सा ऽ सारे गु गु ऽ गु गु गु म् प म्गु गु सा
 दा ऽ मि नि द म क त मे घ वा ऽ ब र स त
 सा ऽ सा सा गु गु गु गु गु गु रे सा सा नी सा सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 स ग री स हेऽ ऽ ली ऽ फे र अ ल बेऽ ऽ लीऽ ऽ
 सा सा सा सा सारे गु गु ऽ गु गु म् प म्गु गु रेसा सा
 अ प ने मं द र बि च ह म हिं अ केऽ ऽ ली ऽ
 गु गु गु गु रे सा सा सा सा नी सा रे सारे सानी धु प

रा.सं.(३)१

ह कि म पि याऽऽ सोंऽ क हि योऽ जाऽऽऽ य
 सा सा सा सा सारे गु गुऽ रे गु म् प गुम् गुरे सा
 उ न बि न रैऽ न बीऽ त मो हैं त ड प
 गु गु गु रे रेऽ सा साऽ नी सा रे सा नी धू

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं

०

१

+

३

आ ली पि या बि न मोऽ रा कै सोऽ जि या त रऽ स

१ आ ली पि या बि न मोऽ रा पनी सारे गुरे गु गुरे सानी सानी

२ आ ली पि या बि न मोऽ रा पनी सारे सारे गु गुरे सानी धूप

३ आ ली पि या बि न मोऽ रा पनी सारे गु रे सानी सा गु रे सानी

४ आ ली पि या पध् पम् पध् सा धुनी साग् रेग् सा सा सारे गु

५ आ ली पि या धुनी सारे गुम् प गुरे सानी धुनी सा धुनी सारे सानी

आ ली पि या बि न मोऽ रा कै सोऽ जि या त रऽ स

६ नी साऽ नी धू प सारे गुरे सा सा साग् रेग् सा रे सारे गुरे सा

७ साग् रेग् सारे म् म्प म्ग् रे सानी सा पनी सारे गुरे सा गुम् पम् गुरे

८ गुरे गुरे गुरे सारे म् प गुरे सा पम् गुरे सा सारे म् गु गुरे

९ धूप म्ग् रे सा सा साग् म्प ग म् ध् पम् गुरे सा प पम् गुरे

आ ली पि या बि न मोऽ रा कै सोऽ जि या त रऽ स

१० आ ली पिऽ याऽ बिऽ नऽ मोऽ रा कै सो जिऽ याऽ त र सऽ त
 ग् ग् गुम् पध् पम् गुरे सानी सा ग् म् पन्नि धूप ग् प गुरे सा
 ११ आ लीऽ ऽऽ ऽऽ पिऽ या बिन मोऽ रा कैऽ सोऽ जिऽ याऽ तऽ रऽ सऽ त
 नि धूप म्गुरे सा पम् गुरे सानी सा पनी सारे गुरे गुरे साग म्प गम् प

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

स ग री स हे ऽ ली ऽ फे र अ ल बेऽ ऽ लीऽ ऽ

१ स ग री स हे ऽ ली ऽ धूप गुम् ध् पम् धूप म्गुरे सा सा

२ स ग री स हे ऽ ली ऽ नीसा गुम् पनी सानी धूप म्प गुरे सा

३ स ग री स हे ऽ ली ऽ पध् पम् गुम् पसा पध् पम् गुरे सा

स ग री स हे ऽ ली ऽ फे र अ ल बेऽ ऽ लीऽ ऽ

४ साग म्प गुम् पप धूप पम् ग ऽ गम् पध् पम् ग ग् ग् गुरे सा

५ ध् पम् गुरे सा नि धूप म्गुरे सानी सा पनी सारे गुसा गुम् पध् म्प ध्

६ गुरे गुरे सा धूप धूप गुरे सा गुम् पनी धूप म्प धूप गुम् गुरे सानी सा

स ग री स हे ऽ ली ऽ फे र अ ल बेऽ ऽ लीऽ ऽ

७ साग रीस हेऽ लीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ फेर अल बेऽ लीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ

सासा गुम् पध् पम् गुम् पध् पम् गुरे सा गुम् पनी सानी धूप म्गुरे सा ऽ

८ साग ऽरी सहे ली फेर अल बेऽ ली अप नेमं दर बिच हम हिअकेऽऽ ली

साग ऽग गुरे सा साग म्प पम् ग धूप धूनि धूप म्प रेम् निप म्गुरे सा

९सासा गुरे म्ग पम् ग गम् पधु पम् गम् ग नीसा गम् पनीसानी धुप
 ध् पम् गुरे सा प म्गुरेसा नि धुप म्गुरेसा सा नीध् पम् गुरे

राग-पीछू

तराना, ताल-त्रिताल (जलदलय)

नादिर दिर दीततन देरेना तदारे दानी । नादेरे देरे तन देरे तों
 दानी ॥ धृ० ॥ दिर दिर दिर तान तन तदीयरे नितारे दीं तों दीं तों
 तद्रे दानी । नादेरे देरे तन देरे तों तदारे दानी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं
+			३				०				१			
ना	दिर	दिर	दीं	ऽ	त	त	न	दे	रे	ना	त	दा	रे	दा
सा	ग्	रे	ग्	ऽ	रे	सा	रे	सा	नी	सा	रे	सा	नी	ध्
ना	दे	रे	दे	रे	त	न	दे	रे	तों	ऽ	त	दा	रे	दा
ध्	नी	ध्	सा	नी	ध्	प	सा	नी	सा	ऽ	ग्	रे	सा	सा

अंतरा

ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं
+			३				०				१			
दिर	दिर	दिर	ता	ऽ	न	त	न	त	दी	य	रे	नि	ता	ऽ
सा	सा	सा	ग्	ऽ	ग्	ग्	ग्	ग्	म्	प	म्	ग्	रे	ऽ
दीं	ऽ	तों	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	ता	ऽ	ऽ	न	त	द्रे	दा
ग्	ऽ	ग्	ऽ	रे	ऽ	सा	ऽ	नी	सा	ऽ	रे	सा	नी	ध्
ना	दे	रे	दे	रे	त	न	दे	रे	तों	ऽ	त	दा	रे	दा
ध्	नी	ध्	सा	नी	ध्	प	सा	नी	सा	ऽ	ग्	रे	सा	सा

राग—सोहनी

इस रागमें गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं । ऋषभ यह स्वर कोमल है । इसमें पंचम स्वर वर्जित है । गायक लोग कभी कभी कोमल मध्यमभी लगाते हैं । यह राग रातके तीसरे प्रहरमें गाया जाता है । और विशेषतः तार सप्तकमें गाया जाता है । यह राग गंभीर और वीर रस प्रधान है ।

आरोह—सा ग म ध नी सा	जाती—ओडव-वाडव
अवरोह—सा नी ध म ग रे सा	वादी—निषाद
मुख्य अंग—सा ग म ध नी सा नी ध नी ऽ ध म ग ऽ म ग रे सा	संवादी—गंधार

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+					३			
सा	ग	ऽ	म	ऽ	ध	म	ध	नी	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	नी
ध	नी	ऽ	म	ऽ	ध	म	ध	सा	नी	ध	म	ग	रे	सा	ऽ ॥
ग	ऽ	म	ध	म	ध	म	ध	नी	सा	ऽ	नी	ऽ	रे	सा	ऽ
रे	ऽ	सा	सा	सा	ऽ	नी	ध	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नी
सा	ग	ऽ	सा	ग	ऽ	म	ऽ	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	सा	ऽ
नी	सा	नी	सा	ध	नी	म	ध	सा	नी	ध	म	ग	रे	सा	ऽ ॥

राग—सोहनी

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

काहे अब तुम आये हो मेरे दुवारे । सौतन संग जागे अनुरागे रस पागे भागे ॥ धृ० ॥ मिठी-मिठी बतियां करोना मनरंग तुम । वहीं जावो जिनके छतियन सों लगें ॥ १ ॥

[१३४]
आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं

०

१

+

३

का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे ऽ

ऽ सा ऽ रे सा नी ध म धनी सा ऽ नीध ऽ नी ध ऽ

ऽ रे ऽ दु वाऽऽ रे ऽ सौ त न सं ग जा ऽ

ऽ ग ऽ म गम गरे सा ऽ सा नी सा ग ग म ऽ

अ नु राऽऽ ऽ गे ऽ र स ऽ ऽ पा ऽ गे भाऽऽ

ग ग मधनीसा ऽ नी ध नी ध ऽ ग ग ऽ म गम

गे का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ ऽ ऽ

सा सा ऽ रे सा नी ध म धनी सा ऽ नीध ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं

०

१

+

३

मि ठी मि ठी ब ति यां क रो ना म न रं ग तु

म ध म ध सा सा सा रे सा रे सा रे सा नी ध

व ही ऽ जा ऽ वो जि न के छ ति य न सों लाऽऽ

सा म ऽ ग रे सा सा नी ध नी ध म ग म गम

गे का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ

सा सा ऽ रे सा नी ध म धनी सा ऽ नीध ऽ

आस्ताईका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १ का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ऽ सा ऽ रे सा नी ध म धनी सा ऽ नीध ऽ म ग म
 ग रे सा ऽ ग धम नीध सा ऽ ऽ रे सा ऽ नी ध म
 २ ऽ का ऽ हे अ ब तु म सा ग म ग म ध नी रे
 ३ सा का ऽ हे अ ब तु म सा नी नी ध ध म म ग
 ४ ऽ का ऽ हे अ ब तु म सा ऽ ऽ ऽ नी ध म ध
 नी ऽ ऽ ऽ धनी धम ग ऽ ऽ म गम ग रे सा ऽ ऽ ऽ
 ५ ऽ का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ नी ध म ग
 ऽ ऽ ऽ सा नी ध म ग ऽ ऽ रे सा ऽ नी ध म
 ६ ध का ऽ हे अ ब तु म आ ऽ ऽ ये ऽ ऽ ऽ
 रे नी सा ध नी म ध ऽ

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ७ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ रे ऽ सा ऽ नी ध म ध
 नी ऽ ऽ ध म ध नी रे सा ऽ ऽ ऽ म ध नी रे सा ऽ
 ८ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ रे सा नीध नी ऽ धनी धम ग ऽ
 म ध नी रे ग ऽ ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ नीध म ध सा ऽ
 ९ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ मिऽ ठी ऽ ऽ मि ठी ऽ ऽ
 नी रे ग ऽ ऽ म ग रे सा

ब तिऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ क रो ना म न रं ग तु
 साँ रेसाँ नी ध नी ऽ ऽ ध म ग म ध साँ रेँ साँ
 १० मि ठी मि ठी ब ति या ऽ म ध नी रेँ ग रेँ मे
 रेँ साँ ऽ ऽ ऽ नी ध म ग रेँ साँ ऽ ऽ ऽ साँ
 ११ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ क ऽ रो ऽ ना ऽ ऽ
 साँ ऽ नी ध नी ऽ ऽ
 म ऽ न ऽ रं ऽ ग ऽ तु ऽ म ऽ ऽ ऽ ऽ
 ध नी रेँ ग रेँ ग गं मे ग रेँ साँ ऽ नी ध साँ

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे
 १ ऽ का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ नीनी धम
 २ सा का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ येऽ धनी साँनी धम गुरे
 ३ ऽ का ऽ हे अ ब तु म नीसा गम धनी साँनी धम गम गुरे
 ४ ऽ का ऽ हे अ ब तु म नीसा गम रेग मध गम धनी मधनी
 ५ ऽ का ऽ हे अ ब तु म मध मध नीसा धनी मध गम ग
 मध का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे
 ६ ऽ रे ऽ गम गुरे सा नीसाँ ऽ नी धम गम गुरे सा गम धनी गम
 साँ का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे
 ७ ऽ रे ऽ दु वाऽ ऽ ऽ रे ऽ सासा गग मम धध नी ऽ नीध
 ग ऽ गम धनी साँ ऽ साँनी धम ग ऽ गम धनी साँ रेँ साँ नीध

८ ऽ का ऽ हे अ ब तु म काऽ ऽऽ ऽऽ हेऽ अऽ बऽ तुऽ मऽ
 गम धनी सा रे सा नी ध सा नी ध म ध धम

आऽ ऽऽ येऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ
 गम मग रेग ग रे गम धनी सा ऽ ऽ गम धनी सा ऽ ऽ गम धनी
 सा का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे ऽ

९ ऽ रे ऽ दु वाऽ ऽऽ रे ऽ नी सा गम धनी सा नी धम गम गम धनी
 काऽ ऽऽ ऽ हेऽ ऽ अऽ बऽ तु म आऽ ऽऽ ऽ येऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 गम धनी सा नी ध नी धनी धम ग ग गम धनी सा नी ध म ध सा
 १० ऽ का ऽ हे अ ब तु म धनी सा नी धम ग धनी सा नी धम ग रे
 सा का ऽ हे अ ब तु म आऽ ऽ ऽ येऽ ऽ हो मे ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

०

१

+

३

मि ठी मि ठी ब ति या क रो ना म न रं ग तु म

१ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ सा रे सा नी ध नी सा नी धम गम धनी सा

२ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ गम धनी सा ग रे सा नी धम ग रे सा

मि ठी मि ठी ब ति या क रो ना म न रं ग तु म

३ रे सा नी धनी धनी सा नी धनी धम ग ऽ गम धनी म धनी सा धनी सा रे सा

४ मि ठी मि ठी ब ति या क रो ना म न नी सा गम धनी सा ग

सा ग म ग रे सा नी ध म ग रे सा रे सा नी ध म ग रे सा

५ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ रेसा नीध मध नीसा ऽ ऽ रेसा नी
 मग गम धनी सा ऽ ऽ रेसा नीध मग रेसानीसा गम धनी सा ऽ
 ६ मि ठी मि ठी ब ति या ऽ नीध मध नीसा ऽ रेसा नीध नीध
 नीसा ऽ ग रेसा रे सानीसानिधनी मध सा रे सा ऽ मध सा रे सा
 ७ मिऽ ऽऽ ठीऽ ऽऽ मिऽ ऽऽ ठीऽ ऽऽ बऽ तिऽ याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 गम मग मध धम धनी नीध धसा सानी रेग रे रे सा रेसानीधसा नीध मध
 ८ मिऽ ठीऽ मिऽ ठी बऽ तिऽ याऽ ऽ मिठीऽ मिठीऽ बऽ तिऽ याऽ ऽऽ
 मग धमनीध सा मग धम नीध सा मसा ऽ सा सा रेसानी धम धनी सा रे
 ९ मि ठी मि ठी ब ति याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 मध नीसा गम रे रे सानी धम गम धनीसा ग
 मि ठी मि ठी ब ति या क रो ना म न रं ग तु
 १० साग मग सा रेसानीधसा नीध मध मग गग मम धध नीनी सा धध नीनी

राग-सोहनी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

एरी जसोदा तोसे लरुंगी लराई तोरे कुंवरने धूम मचाई ॥ धृ० ॥

काहुं की उच की दध किया मट की लई । काहुं की सीर की गगरिया ढरकाई
बीच डगरमें लिपटत नट खट । चांद हांसत सब ब्रिजकी लुगाई ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ए री ऽ ज सो दा तो से ल रुं गी ल राऽ ऽऽ ई ऽ
 म ग ऽ ग म ध सा सा सा रे सा रे नीसा रेसा नी ध

ऽ तो रे कुं व र ने ऽ धू ऽ म म चाऽ ऽऽ ई ऽ
 ऽ रे सां रे नी सा नी ध म ध नी सा धनी सा नी ध म

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 का हुं की उ च की द ध की या ऽ म ट की ल ई
 म म ग ग म ध म ध सां सां ऽ सां सां रे सां सां
 का हुं की सी र की ग ग री या ऽ ढ र का ऽ ई
 सां रे सां रे सां सां सां रे सां सां ऽ नी ध नी ऽ नी
 बी ऽ च ङ ग र में ऽ लि प ट त न ट ख ट
 ध ऽ नी रे ग रे ग ऽ रे ग म ग म ग रे सां
 चां ऽ द ह स त स ब ब्रि ज की लु गाऽ ऽऽ ई ऽ
 नी रे सां रे नी सा नी ध म ध नी सा धनी सा नी ध म ॥

राग—सोहनी

तराना, ताल—त्रिताल (जलदलय)

दी तनन दिर दिर तानों तदेर्ना तन देरेना । देरेना दी दी ततदी तन
 देरेना तदारे तद्रे दानी । तदी तनननन दिर दिर दिर दिर दिर दिर दानी
 ॥ धू० ॥ नादिर दिर तनननन तुंदिर दिर तनननन तदी तनननन तदी तन-
 ननन । थुगुन नगन तक तक तक धित्ता तिठकत गदिगिन धा तिठकत गदि-
 गन धा तिठकत गदिगन धा ॥ १ ॥

[१४०]
आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं
०					१				+					३
दीं	ऽ	त	न	न	दिर	दिर	ता	ऽ	ऽ	नो	ऽ	त	दे	ऽ
सा	ऽ	रूं	सा	नी	ध	म	धनी	सा	ऽ	नी	ध	नी	ध	ऽ
नी	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ	दे	रे	ना	दीं	ऽ	दीं	ऽ
ग	ऽ	म	म	ग	रूं	सा	ऽ	सा	नी	सा	म्	ऽ	म्	ऽ
त	दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त	दा	ऽ	रे	त	द्रे	दा
नी	सा	ऽ	नी	ध	नी	म	ध	रूं	नी	ध	नी	ध	म	म
नी	दीं	ऽ	त	न	न	न	न	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा
ग	ग	ऽ	म	ग	रूं	सा	सा	ध	नी	ध	म	ग	म	ग
नी	दीं	ऽ	त	न	न	दिर	दिर							
सा	सा	ऽ	रूं	सा	नी	ध	म							

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं
०					१				+					३
								ना	दिर	दिर	त	न	न	न
								ग	ग	ग	ग	म	ध	म
तुं	दिर	दिर	त	न	न	न	न	त	दीं	ऽ	त	न	न	न
सा	सा	सा	सा	सा	रूं	सा	सा	सा	म	ऽ	ग	रूं	सा	सा
त	दीं	ऽ	त	न	न	न	न	थुगु	नन	गन	तक	तक	तक	धि
ध	नी	ऽ	ध	म	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म	ध	नी

ति॒ट॒ क॒त॒ ग॒दि॒ ग॒न॒ धा॒ ऽ ति॒ट॒ क॒त॒ ग॒दि॒ ग॒न॒ धा॒ ऽ ति॒ट॒ क॒त॒ ग॒दि॒ ग॒न॒
 नी॒ सा॑ नी॒ सा॑ नी॒ ध ध नी॒ ध म म ऽ ग म ग रे
 धा दी॑ ऽ त न न दि॒र दि॒र
 सा सा॑ ऽ रे सा॑ नी॒ ध म

राग—हिंडोल

इस रागमें गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं।
 रिषभ और पंचम स्वर वर्जित हैं। कोई गायक बिना निषाद हिंडोल राग गाते
 हैं वोही प्रकार नीचे लिखा हुआ चिजोमें है। गंभीर रस प्रधान यह राग है।
 रातके तीसरे प्रहरमें यह राग गाया जाता है।

आरोह—सा ग म ध सा॑	प्रकार १ ला	जाती—ओडव-षाडव
अवरोह—सा॑ ध म ग सा		वादी—धैवत
आरोह—सा ग म ध नी म ध सा॑	प्रकार २ रा	संवादी—षड्ज
अवरोह—सा॑ नी ध म ग सा		

मुख्य अंग—सा ग म ध म ध सा॑ ध म ग ऽ सा ऽ

प्रकार १ ला सुराष्ट, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 सा ग ऽ म ध म ऽ ध सा॑ ऽ ध ध म म ग ऽ
 सा ग ऽ म ग ऽ सा ऽ ध ऽ म म ऽ ग सा ऽ ॥
 ग ग ग म म म म ध सा॑ ऽ ऽ सा॑ ऽ ध सा॑ ऽ
 सा ग ऽ सा॑ ऽ ध म ध सा॑ ऽ ध म ऽ ग सा ऽ ॥

प्रकार २ रा

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
३ ० १ +

सा नी सा सा ग ग म म ध ध नी नी ध नी
नी ध नी ऽ म ध नी सा सा ग नी सा सा सा ऽ ध
म ध सा सा म ध ऽ ग ऽ म ऽ नी ध ऽ ऽ म
ऽ ग सा नी सा सा ग ग म म ध ध नी ऽ ध ध
म ग म ध सा ऽ सा नी ध नी सा ग ऽ सा सा ध
म ध सा सा म ध ऽ ग ऽ म ऽ नी ध ऽ ऽ म
ऽ ग सा नी ॥

राग—हिंडोल

होरी, ताल—धमार और रूपक

ए मा पी सौंग खेले । बनबन फाग ऋत बसंत ॥ धू० ॥ सांवरी गो
भोरी । ले गुलाल ले सोहे जमापर बसौत हंस हंस हंस हंसौत ॥ १ ॥

आस्ताई

ता	कि	ट	कि	ट	ता	ऽ	धा	कि	ट	कि	ट	धा
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना	धी	ना	धी
+			१		२		+			१		३
	ए	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सौ
	सा	मग	धम	धसा	मध		सा	ऽ	ऽ	ध	म	ग
खे	ऽ	ले	ब	न	ब	न	फा	ऽ	ग	ऽ	रु	त
ग	ऽ	सा	सा	सा	सा	ध	सा	ऽ	ग	ऽ	धम	धम

सौँ	S	त	मा	SS	SS	SS	पी	S	S	S	S	सौँ	ग
ग	S	सा	मग	धम	धसा	मध	सा	S	S	ध	म	ग	म

अंतरा

ता	कि	ट	कि	ट	ता	S	धा	कि	ट	कि	ट	धा	S
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२		+			१		२	
सा	व	री	गो	री	भो	री	ले	गु	ला	ल	S	ले	S
मध	मध	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	ध	सा	सा
सोहे	S	ज	मा	S	प	र	व	सौँ	S	त	S	ह	स
साध	मध	सा	ध	म	ग	म	ग	S	सा	S	सा	सा	ग
स	ह	S	S	S	ह	सौँ	S	त	S	ए	मा	SS	SS
ग	धम	धम	म	म	ग	S	सा	S	सा	मग	धम	धसा	मध
पी	S	S	S	S	सौँ	ग	खे	S	ले				
सा	S	S	ध	म	ग	म	ग	S	सा				

आस्ताईका बिलंपद

ता	कि	ट	कि	ट	ता	S	धा	कि	ट	कि	ट	धा	S
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२		+			१		२	
		ए	मा	SS	SS	SS	पी	S	S	S	S	सौँ	ग
१	खे	S	ले	सा	ध	सा	ग	ग	सा	ग	म	ग	सा
	S	S	ए	मा	SS	SS	पी	S	S	S	S	सौँ	ग
२	खे	S	ले	सा	ध	सा	ग	ग	S	सा	ग	म	S
	S	सा	S	ग	म	धम	म	ग	S	म	ग	म	S

सा	ऽ	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सौ
३ खे	ऽ	ले	म	ग	म	ग	सा	ऽ	सा	ग	साग	म
ऽ	म	धम	म	ध	म	ग	सा	ग	ग	म	म	ध
४ ग	सा	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	ध	मं	ग
ऽ	म	ग	सा	ऽ	सा	ग	म	ध	म	नीध	म	ग
५ म	ग	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	नी	ध	म
सा	ग	म	ध	म	नीध	म	ध	म	ध	ध	म	म
६ गग	सा	ऽ	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ध	म	ऽ	म	ध
म	ध	मध	सा	म	ध	ग	म	सा	मग	धम	नीध	म
सा	ऽ	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सौ
७ खेऽ	लेऽ	ऽ	ब	नब	ऽन	फा	ग	ऽ	रुत	ऽब	सौ	ऽऽ
धध	मम	ग	ग	मग	ऽम	ग	सा	ऽ	धम	ऽम	ग	मा
८ ऽ	ऽ	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	सौऽ	ग	खेऽ
										धसा	ध	मध
बऽ	न	बऽ	न	फाऽ	गऽ	रुऽ	ऽ	त	ऽ	ब	सौ	ऽ
गम	ग	मग	सा	मग	धम	धसा	ध	म	ग	ध	म	ग
९ ऽ	ऽ	ए	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	मग	धम	धसा	मध	सा	ऽ	ऽ	सा	ग	सा
सा	ग	ध	म	ध	साध	सा	ग	म	साग	म	धम	ऽम
१० ग	म	सा	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पी	ऽ	सा	ऽध	ध	ऽम
ऽग	सा	ग	ऽग	म	ग	ऽ	नी	ध	म	ग	म	ऽ

ग म सा ग म ध सा नीनी धध मम ग म ग सा
 ऽ ऽ ए माऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ पी ऽ ऽ ऽ ऽ सौ ग

अंतरेका विलंपद

ता	कि	ट	कि	ट	ता	धा	कि	ट	कि	ट	धा
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ती	ती	ना	धी	ना	धी
+			१		२	+			१		२
१साऽ	वऽ	री	गो	री	भो	री	सां	ध	म	ग	धम
२साऽ	वऽ	री	गो	री	भो	री	सां	धसां	म	ध	मध
ग	म	ध	सां	ऽ	सा	ग	म	ध	सां	ऽ	ध
३साऽ	वऽ	री	गो	री	भो	री	सां	धसां	ऽसां	ध	म
सा	ग	म	ग	ध	म	सां	नी	ध	म	मम	गग
४साऽ	वऽ	री	सां	मध	सां	ग	सा	ऽ	सां	मध	सां
सां	मध	ग	म	सा	ग	म	ध	ऽ	म	धम	सां
५साऽ	वऽ	री	ग	सां	ऽ	सां	ध	ऽ	म	ग	ऽ
सा	ग	साग	मध	म	ध	सां	सां	ध	ध	म	ग
साऽ	वऽ	री	गो	री	भो	री	ले	गु	ला	लऽ	ऽ
६साऽ	ऽऽ	व	री	ऽ	ऽ	ऽ	गोऽ	री	भो	री	ले
मध	मध	सां	ध	म	ग	म	साग	म	ग	सा	सां
७सा	व	री	गो	री	भो	री	ले	गु	ला	ल	ले
म	ध	सां	म	ध	सां	सां	ग	सां	ध	म	ग
सा	हे	अ	ज	मा	ऽ	प	र	ब	ऽ	सौ	ऽ
ग	म	सा	ग	म	ध	सां	ध	म	ऽ	ग	म

८साऽ वऽ री गो री भो री ले गु ला लऽ ९ साऽ
 साऽ () सो () म ग सा ऽ ऽ म ग ध म म ध
 ध सा ऽ सा ग मे ग सा ऽ ध सा ध सा
 साऽ वऽ री गो री भो री ले गु ला लऽ ९ लेऽ
 ९ ध म ग सा ध म ग सा ध मे ग सा ध
 गग गम मग मध मम धध मम धसा म ध ग म साग
 १० साऽ वऽ री ग मे ममे ग मेग सा ऽ सा मध गम
 गम धसा ऽ गम धसा ग गम धसा मे मेग सा गसा ध
 म धम ग मग सा म ग सा सासा सा सासा सा सासा
 साऽ वऽ री गो री भो री ले गु ला लऽ ९ लेऽ

राग-हिंडोल

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

फूली बन टेसू बहार आई । नरनारी मिलके करी आनौंद ॥ धृ०
 हमरे कंथ सौतन बस कीनो । आली आली निसदिन करी आदेसू ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा ऽ ध म ग म ध सा ऽ ऽ ऽ सा धसा म
 ब हा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र आ ऽ ई ऽ ऽ ऽ न
 सा सा ऽ ध म ग ऽ म ग ऽ सा ऽ ऽ ऽ सा

ना ऽ री ऽ मि ल के ऽ क री ऽ आ नौं ऽ द ऽ
 म ऽ ग ऽ म ध सां ऽ सां ग ऽ सां सां ध सां म
 ऽ फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ध सां ऽ ध म ग म ध सां ऽ ऽ ऽ सां धसां म ध

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ह म रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो ऽ
 म म ध सां ऽ सां सां ऽ सां सां सां सां गं ऽ सां ऽ
 आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ली आ ऽ ली ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सां ऽ ध ऽ म ऽ ग मं गं ऽ सां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 नि स दी ऽ न क री ऽ ऽ आ ऽ दे सू ऽ ऽ ऽ
 सा सा म ऽ ग म ध सां ऽ गं ऽ सां सां ध सां म
 ऽ फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ध सां ऽ ध म ग म ध सां ऽ ऽ ऽ सां धसां म ध

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १ ऽ फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ साग मध सां मध
 २ ऽ फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ सासा गग मम धध
 ३ सां फू ऽ लि ब न टे ऽ मू ऽ ऽ सासा गग मम धधसांसां
 ४ गं फू ऽ लि ब न टे ऽ सू मम गग धध मम सांसां धधसांसां
 ५ गंसां फू ऽ लि ब न साग मध मग सा साग मध सांध मग सा साग

६ मध फू ऽ लि ब न साग मग गम धम मध साध मध साधसासा
 ७ ऽ फू ऽ लि ब न सासा धध मम गग सा गग सासा धध मम
 ८ सा फू ऽ लि ब न टे ऽ साग मग मध मध साध मध सासा
 सासाधध मधसासा धध मम गग सासासाग मध मग सा साग मध साध
 ९ सा फू ऽ लि ब न टे ऽ फू ऽ लि ऽ ब ऽ न ऽ टे ऽ सू ऽ ऽ
 सासागग मम धध सासा गग मम
 १० सा फू ' ऽ लि ब न टे ऽ फू ऽ ऽ लि ऽ ऽ ऽ ब ऽ ऽ
 साधसाध साध साध सा मग मग
 ऽ ऽ ऽ टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ ब ऽ हा ऽ र आ ऽ ऽ ऽ ई
 साध सा धसा साध धध गम म मम मग सा सासा साध धम मग सा
 ११ ऽ फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सागसाग मध सासा धध सासागग सासा गग मम गग सासा धसासाधसासा
 ग गम धनी मध साानी धमगसानीनी धम गसा धनी मध धनी मध धनी
 सा फू ऽ लि ब न टे ऽ सू ऽ ऽ ऽ

अंतरेकी ताने

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 ह म रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो
 १ ह म रे कं ऽ थ सासा धध मम गग सा सासा गग मम धध
 २ ह म रे कं ऽ थ साग साग म गम मध मध सासा धसा ध
 ह म रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो

३ सा सा ध ध सा सा ध ध ध ध म म ध ध म म ग ग म ग ग ग सा सा ग ग सा
 ४ ह म रे कं ऽ थ सा ग म ध म ग ग म ध नी ध म म ध सा ग सा ध सा
 ५ ह म रे कं ऽ थ सा ग ग म ध ध सा ध सा म ध ग म सा ग म ग सा
 ६ ह म रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो ऽ
 सा ग म ध नी सा ग सा ध म ग सा सा ग म ध सा सा ग म ध सा सा ग म ध सा
 ७ हम रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 म ग सा सा ध सा ग सा सा ध सा ध सा ध ध म ग ऽ म ग ग सा
 ८ हम ऽ रे कं थ सौ ऽ त न ब स की ऽ ऽ नो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा ग ऽ म ग सा ध सा सा ध म ग सा ग म ग म ग सा ग म ग सा ग म ग सा
 ह म रे कं ऽ थ सौ ऽ त न ब स की ऽ नो ऽ
 ९ सा सा सा ध ध म म म ग ग सा ग ग सा सा सा ध ध म म म ग ग सा सा सा सा ग ग म म म ध ध सा
 १० सा ग म ध ग म ध नी म ध नी सा सा ग म ग म ग म ग सा सा सा सा ध सा ध म ग म ग सा सा

राग—हिंडोल

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

धान नगरी शुभ आज महरत । सब मिल गावो बधावन बसौं तकी मुबा-
 रकी ॥ धृ० ॥ जीवहू जागहूं कोटबर । सदरौंग मौमदसा गुनिजनके गुन
 पारखी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 धा ऽ न ग री ऽ शु म आ ऽ ज म हू ऽ र त
 म ऽ ग सा सा ध म ध सा ऽ सा सा सा ऽ सा सा

स ब म ल गा बोऽऽ ब धा ऽ व न ब सौ ऽ
 सा सा ग ग ग गम धम म ग ऽ ग म ग सा ऽ
 की ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ मु बा ऽ र
 म ग ध म नी ध सा ऽ ध म ग म ग ऽ सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 जीऽ व हूं ऽ ऽ जा ऽ ग हूं ऽ ऽ को ऽ ट व
 मध म ध सा ऽ सा ऽ सा सा ऽ ऽ सा ऽ सा सा
 स दा ऽ रौं ऽ ग मौं ऽ म ऽ ऽ द सा ऽ ऽ
 सा ग ऽ सा ऽ सा सा ध म ग ऽ म ग सा ऽ
 गु नि ज न के ऽ गु न ऽ पा ऽ रं खी ऽ ऽ
 सा सा ग ग म ध सा ध ऽ म ग म ग सा ऽ

राग-हिंडोल

तराना, ताल—त्रिताल (मध्यलय)

द्रेद्रेद्रेद्रे तननन देरेना तदरे दानी । द्रेद्रे दानी तद्रेदानी द्रेदानी द्रेद
 दानी तद्रेदानी । रेदानीत द्रेद्रेद्रेद्रे तननन तदारे नितारे तनारे तद्रेदानी ॥१॥
 नादिर दिर दिर दिर दिर तननननन । धाकिट तक् धिरकिट तक् नग तिरकि
 तिरकिट तक् । तननननन दिर दिर दिर तनन दृतन दृतन । तदरे तदरे तदेद
 तदेदानी । धाकिट तक् धुमकिट तक् गिगनग धा गदिगन धा । दिर दिर दि
 दिर धा नादिर दिर दिर धा तक् घिडान् घिड नक् तिरकिट । नग् तिरकि
 तक् धा नग् तिरकिट तक् धा नग् तिरकिट तक् धा ॥ १ ॥

१५१
आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
० १ + ३

द्रे द्रे द्रे द्रे त न न न दे रे ना त द रे दा नी
सा सा ध म ग ग सा सा सा ग सा सा ध म सा सा
द्रे द्रे दा नी त द्रे दा नी द्रे दा नी द्रे दा नी दा नी
सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा ग ग ग ग
त द्रे दा नी रे दा नी त द्रे द्रे द्रे द्रे त न न न
म ग सा सा सा ध म ग ग ग म ध सा सा सा सा
त दा ऽ रे निऽ ताऽ ऽ रे तऽ ना ऽ रे त द्रे दा नी
सा ग ऽ सा धम नीध सा ध मग म ग म ग सा सा सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
० १ + ३

ना द्रिर द्रिर द्रिर द्रिर द्रिर त न
ग ग ग ग म म ध म
नऽ न न न धा किट तक् धिर किट तक् नग तिर किट तिर किट तक्
धसा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा सा
त न न न न न द्रिर द्रिर द्रिर त न न दृ त न दृ
सा ध ध म म ग ग ग ग म ग सा सा सा सा ग
त न त द रे त द रे त दे दा नी त दे दा नी
ग ग ग ग ग म म म म म ध ध म म ग ग
धा किट तक् धुम किट तक् गिग नग धा गदि गन धा द्रिर द्रिर द्रिर द्रिर
सा सा सा ग ग ग ग ग म मध मध सा सा सा ध ध

धा ना दिर दिर दिर धा ऽ तकघिडा ऽन् घिड नक् तिर किट नग
 ... म म म म म ग ऽ म ग ऽम ग सा ग ग म
 ... किट तक् धा ऽ नग तिर किट तक् धा ऽ नग तिर किट तक् धा
 मध मध सा ऽ सा सा ध ध ध म ग म ग सा सा

राग—ललत

इस रागमें रिषभ, यह स्वर कोमल है. गंधार और निषाद यह तीव्र लगते हैं. मध्यम और धैवत यह स्वर कोमल और तीव्र दोनो तरहसे लगते हैं. परंतु वक्र तरहसे लगते हैं. पंचम स्वर वर्जित है. प्रातःकालमें यह गाया जाता है. करुण और भक्तिरस प्रधान यह राग है.

आरोह—नी रे ग म ध नी सा

अवरोह—सा नी ध म म् ग म ग रे सा

मुख्य अंग—नी रे ग म् म म् ग म ध नी ध म ध् म म् ग ऽ म ग रे सा

जाती—षाडव षाडव

वादी—मध्यम कोमल

संवादी—षड्ज

सुरावट, ताल—झपताल

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
नी	रे	ग	ऽ	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ
नी	रे	ग	म्	म	मम्	ऽ	ग	ऽ	ऽ
ग	म	ध	म	ध	म	म्	ऽ	ऽ	ग
ऽ	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ ॥
ग	म	ध	म	नी	ध	म	म्	ऽ	ग
ग	म	ध	म	धनी	सा	नी	रे	सा	ऽ
रे	नी	ध	म	ध्	ऽ	म	म्	ऽ	ग
ऽ	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ ॥

राग-ललत

ताल-एकताल (मध्यलय)

रैनका सपना मैं कासे कहूं री आलीरी मैं पिया ॥ धृ० ॥

सोवतसोवत आंखें खोलीं । जबहूं न पायोरी अपना न वे या ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

रैऽऽन काऽसप

रैगमग नीरैगम्

ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ मै काऽ सेऽऽक हूं री

म मम्म् ऽऽ ऽऽ गम्म् मम्म् ग ग गम धधमध सा सा

आ ऽऽऽली रीऽऽऽ ऽऽ मैऽ ऽऽपि या ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ रैऽऽन काऽसप

सा नीरैनी धधम मऽ गम् गम् म मम्म् मम्गरे गऽ रैगमग नीरैगम्

ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ मै

म मम्म् ऽऽ ऽऽ गम्म्ःमम्म् ग ग

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 ० + ४ ० १ २

सोऽ वऽऽत सोऽ वत

गम धनीसासासा नी रैसा

आ खेऽ खोऽ लीऽ जऽबऽहूंऽऽऽ ऽ न पा योऽऽऽ री ऽ

सा नीरै गैरै साऽनी रैनीधधमधम् ग ग मधनीसा सा ऽ

आऽ ऽऽपऽ नाऽऽऽ ऽन वे ऽऽऽया ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ रैऽऽन काऽऽ
 साऽनी रेऽनीध धूमधम मम् म् गम् म म मम् मम् ग रेगमग नीरे

आस्ताई का बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

१ ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ नी रे ग मग रेऽ सा रैऽऽन काऽऽ
 २ ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ नी रे ग म मम् ग रैऽऽन काऽऽ
 ३ ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ग म धम म् मम् ग रेग रैऽऽन काऽऽ
 ४ ना ऽऽऽ नीरे म् मम् ग गम धम धूमम् ग रैऽऽन काऽऽ
 ५ ना ऽऽऽ गम नीध् म म् ग रेग मग रेसा सा रैऽऽन काऽऽ
 ६ ना ऽऽऽ ग रेग रेगम ग रेसा गम नीध्म ममम् नीरेग रैऽऽन काऽऽ
 ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ रैऽ नऽका सप ना ऽऽऽ

७ गम धमम् गम् म मम्
 ऽ ऽऽ ऽ मैऽ ऽ काऽ सेक हूंऽ रीऽऽ ऽऽ रैऽऽन काऽऽ

ग मध नी गम ध मध नीध मध धमम् मम्
 ८ नाऽ ऽऽ मैऽ ऽऽ काऽ सेऽ ऽऽकऽहूंऽरीऽऽऽ ऽऽ रैऽऽन काऽऽ

ग रे म्ग धम नीध धम मम् गम् धमधमनीधमम् म्ग
 ९ ना ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ नीरे गम् मम् ग गम धम नीधमम् म्ग

ग रे ग रेसा नीरे नीध् मम् सा रेसा गम ग रे साऽ रैऽऽन काऽऽ
 १० ना मम् गऽ नीऽधम म् ग गम धनी साऽ धमम् रैऽऽन काऽऽ

अंतरेका विलंपद

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
								सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
१ धुम	म्	गरू	गऽ	गम	धुम	सां	सां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
२ धुम	नीधुम	मूऽ	गऽ	गम	धुम	सां	नीरूँसां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
३ मग	रूँसा	धुम	मूग	सांनी	रूँसां	धुम	सां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
४ नीध	मम्	गम	धनी	सां	मध	नीरूँ	गंरूँसां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
५ मध	मध	सांऽ	सांरूँ	सां	नीरूँ	गंरूँ	गंरूँसां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
६ आं	खेऽ	खोऽ	लीऽ	गंरूँ	सां	गम	धसां	नीरूँ	गंरूँ	नीरूँ	नीधूँ
म	म्	मूग	ऽऽ	गम	सां	गम	सां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
७ आं	खेऽ	खोऽ	लीऽ	नीरूँ	नीध	मध	सां	सांनी	रूँसां	गंऽ	ऽरूँ
मग	रूँसां	नीऽ	रूँनी	धुम	म्	ग	मधसां	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
८ आंऽ	खे	खोऽ	लीऽऽ	जब	हूँन	पाऽ	योरी	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
नीरूँ	गं	नीरूँ	नीधुम	मूग	सांसां	मूग	सांसां				
९ सोऽ	वऽऽ	तऽ	ऽऽऽ	सोऽ	वऽऽ	तऽ	ऽऽ	आंऽ	खेऽ	खोऽ	ऽऽ
नीरूँ	नीधम	मधू	ममूम्	गम	गरूँसा	नीरूँ	गम्	गम	धसां	नीरूँ	गंरूँ
ली	ऽ	जब	ऽऽऽऽ	हूँ	न	पाऽ	योरी	सोऽ	वऽऽत	सोऽ	वत
सां	ऽ	रूँसां	नीधमध	सां	सां	नीरूँ	सांसां				

१० ग मग रेसा नी रे गम मम ग रे ग रे साऽ रे
नी रे नीधू मधू म म गम धनीसा सोऽ वऽऽत सोऽ

राग-ललत

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

भावेदा यारदा जोबन दूजे नजर नहीं आवेदा ॥ धृ० ॥ अलफ मीम
बिच फरक न कोई । अलफ मीम बन आवेदा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१			+					३				
भा	वें	दा	ऽ	या	र	दा	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	ऽ	न
ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	रे	ग	मधू	मधू	म	मम	म	ग
ऽ	दू	जे	न	ज	ऽ	र	ऽ	ऽ	न	ही	आ	ऽ	वें	दा	ऽ
ऽ	ग	म	ध	सा	ऽ	सा	ऽ	ऽ	रे	नी	धू	धू	म	मम	ऽ
भा	वें	दा	ऽ	या	र	दा	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	ऽ	न
ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	रे	ग	मधू	मधू	म	मम	म	ग

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१			+					३				
अ	ल	फ	मी	ऽ	ऽ	म	बि	च	फ	र	क	न	को	ऽ	ई
म	धू	म	धनी	सा	सा	सा	सा	रे	नी	धू	म	मधू	म	म	ऽ

अ ल फ मीऽ ऽ म ब नऽ आ ऽ ऽ वै दाऽ ऽ ऽ ऽ
 म ध् म धनी सा सा रे नीध् ध् म ध् म म् म् ग ऽ

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

१भा वै दा ऽ या र दा ऽ नीरे गम् गरे सा नीरे गरे सा ऽ
 २भा वै दा ऽ या र दा ऽ मधनीरे गम् गरे नीरे गम् म् म्
 ३भा वै दा ऽ या र दा ऽ म म् गम् गरे गरे गम् गरे सा
 ४भा वै दा ऽ या र दा ऽ नीरे गम् धम् धम् म् ग रे ग म् रे सा
 ५भा वै दा ऽ या र दा ऽ नीरे गम् धनी सा नी धम् म् ग म् ग रे सा
 ६भा वै दा ऽ या र दा ऽ जोऽ ऽऽ ऽऽ ऽ बऽ ऽ न ऽ
 ७नीरे गम् गरे सा नीरे गम् म् म् गम् धम् धम् धनी धम् गम् गरे सा
 ८नीरे गम् धम् म् गम् धनी धम् म् गम् धनी सा नी धम् गम् गरे सा ऽ
 ९भा वै दा ऽ या र दा ऽ भाऽ वैऽ ऽ दा याऽ ऽऽ रऽ दाऽ ऽऽ
 नीरे गम् म् म् गम् धम् नीध् म् म्
 १०भा वै दा ऽ या र दा ऽ भाऽ वैऽ दाऽ ऽऽ याऽ रऽ दाऽ ऽऽ
 नीरे गम् धनी सा नी धम् गम् गरे सा सा
 ११भा वै दा ऽ या र दा ऽ जोऽ ऽऽ ऽऽ ऽ बऽ ऽ न ऽ
 १२नीरे गम् म् म् गम् धम् धम् म् गम् धनी सा नी धम् धम् म् गम् गरे सा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
० १ + ३

१ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च नीरे गम धनी सा नीध मध सा

२ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च नीरे गम धनी रेनी धूम गम गरे

३ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च नीरे गम धूम गम धनी रेग रेसा

४ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च रे नीध मध मम गम गम गरे

५ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च गम धनी रेग रेसा रेसा नीध मध

अ ल फ मीऽ ऽ म बि च फ र क न कोऽ ऽ ई

६ नीरे गम धनी रेग रेसा नीध मध मम गम धनी सा गम धनी सा गम

७ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च नीरे गम ग रे नीरे नीध मध मम

८ अ ल फ मीऽ ऽ म बि च फऽ रऽ कऽ न कोऽ ऽ ई

गग मम धध सा सानी धम सा

९ अऽ लऽ फऽ ऽऽ मीऽ मऽ बिऽ च फऽ रऽ कऽ नऽ कोऽ ऽ ई

नीनी रेरे गग मम मम मम ग नीरे नीध मनी धम मग मम म

१० गम धनी रेग मग रेसा नीध मनी धम मग गम गरे गम गरे गम गरे

राग—ललत

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

पिया पिया करत पपियरा, उडरी कोयलिया, कवन देस मोहे पियाको
मिलन वा कब-होवे ॥ धृ० ॥ झिंगार झिंगार दादर बोले, मुरवा बोले बन बन
में आवन सुनी, पितम मनरंगकी, मगन भये सब घरके लुगवा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+					३			
पि	या	पि	या	क	र	तऽ	प	पि	ऽ	ऽ	य	राऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	रे	ग	म	ग	रे	सानी	सा	म्	ऽ	ऽ	म	मम्	म्	ऽ	ऽ
उ	ड	रि	को	य	लि	या	ऽ	कऽ	व	नऽ	देऽ	ऽ	स	मो	हे
म	ध	म	ध	सां	सां	सां	ऽ	सानी	रे	नीध	धुम	धू	म	म्	म्
पि	या	को	मि	ल	न	वा	ऽ	कऽ	ब	हो	ऽ	वेऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	ध	म	ध	सां	सां	सां	ऽ	सानी	रे	नी	ध	धुम	धू	म	म्

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+					३			
झि	गा	र	झि	गा	ऽ	र	ऽ	दा	ऽ	द	र	बो	ऽ	ले	ऽ
म	ध	म	ध	सां	ऽ	सां	ऽ	सां	ऽ	सां	रे	सां	ऽ	सां	ऽ
मु	र	वा	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	ब	न	ब	न	मे	ऽ	ऽ	ऽ
सां	सां	सां	ऽ	नी	रे	नी	धू	धू	म	धू	म	म्	ऽ	ऽ	ऽ
आ	व	न	सु	नी	ऽ	पी	ऽ	त	म	म	न	रं	ग	की	ऽ
म्	म	म्	म	म्	ऽ	म्	ऽ	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	ऽ

[१६०]

म ग न भ ये ऽ स ब घ र के ऽ लु ग वा
म ध् म घ सा ऽ सा सा रे नी ध म ध् म म्

राग—ललत

तराना, ताल—एकताल, जलदलय

दारा दानि तदारा दीम् दारा दिर दिर दारा दिर दिर दिर दिर,
दिर नादिर दिरना, तदरे नितारे तारेदानि ॥ धृ० ॥ तन नादिर दिर
दिर तुंदिर दिर तुंदिर दिर, तन नितान देरेना, तन देरेना, तन देरेना,
देरेना धितर किट नगि तिठ धागि तिठ धीगड गदिगन धा, धीगड गदिगन
धा, धीगड गदिगन धा तदरे नितरे तारेदानी ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	धीं
				दा	रा	ऽ	दा	नि	त	दा	रा
				म	ग	ऽ	रे	सा	रे	नी	रा
दीं	ऽम	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	रा
म्	ऽम्	म्	ग	ग	म	ध्	म	नी	नी	ध	रा
दिर	दिर	ना	दिर	दिर	ना	त	दा	रे	नि	ता	रा
ग	म	ध	म	ध	सा	रे	नी	ध	नी	ध	रा
ता	रे	दा	नि	दा	रा	ऽ	दा	नि	त	दा	रा
ग	म्	ग	रे	म	ग	ऽ	रे	सा	रे	नी	रा

[१६१]

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
त	न	ना	दिर	दिर	तुं	दिर	दिर	तुं	दिर	दिर	तुं
म्	ग	म्	नी	ध	म	ध	नी	सा	सा	सा	सा
दिर	दिर	त	न	नि	ता	ऽ	न	दे	रे	ना	ऽ
सा	सा	सा	नी	सा	सा	ऽ	म	ग	रे	सा	ऽ
त	न	दे	रे	ना	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त
रे	नी	ध	म	म्	ऽ	म्	ग	म्	नी	ध	म
न	दे	रे	ना	धि	तर	किट	नगि	तिट	धागि	तिट	ऽ
ध	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	ऽ
धी	गड	गदि	गन	धा	ऽ	धी	गड	गदि	गन	धा	ऽ
सा	सा	सा	सा	सा	ध	ध	ध	ध	ध	ध	म
धी	गड	गदि	गन	धा	ऽ	त	द	रे	नि	त	रे
म	म	म	म्	म्	ऽ	रे	नी	ध	नी	ध	म
ता	रे	दा	नि								
ग	म्	ग	रे								

राग-तोडी

इस रागमें ऋषभ, गंधार और धैवत यह स्वर कोमल लगते हैं। मध्यम और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। यह राग दिनके प्रथम प्रहरसे दूसरे प्रहर तक गाया जाता है। यह राग करुणरस प्रधान है।

रा.सं.(३)११

[१६२]

आरोह—सा रे ग म प ध नी सा

अवरोह—सा नी ध प म ग रे सा

मुख्य अंग—ध नी सा रे ग, ग रे सा, म ग, रे ग रे, नी ध सा

जाती—संपूर्ण
वादी—गंधार
संवादी—धैवत

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना ती ती ना ना धी धी ना ना धी धी ना ना धी धी ना
० १ + ३
ग ग रे सा ऽ रे नी सा ध ऽ प म ग रे सा ऽ
रे ग म ग रे ग रे ऽ ध नी सा रे ग रे ग रे
सा रे ग म प ध नी सा नी ध प म ग रे सा ऽ
प ऽ प ध म ग म ध म ध नी ध सा ऽ सा सा
ग ग रे सा रे रे नी ध नी ध प म ग रे सा सा

राग—तोडी

ताल—तिलवाडा (मध्यलय)

बाजोरे “ मोमदसा ” घरवा आनंद बधावरा । पूजीले मन काई क
॥ धृ० ॥ तनमन धन पाईला आईला बनरा सदा रंगीला मोरा काजोरे ॥

आस्ताई

धा धा धी धी धा तुक धी धी धा धा ती ती ता तुक धी
१ + ३ ०
बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा घ रऽऽऽ वा ऽ आ नं द
ध नी सा रे गमप मग रे सा सा नी सा रे सा नी ध ध नी सा
धा ऽ व रा ऽ पू जी ले ऽ ऽ मऽऽ नऽ का ई काऽ ऽ
सा नी ध ध प सा रे म रे ग गमप मग प ध म रे ग

[१६३]

अंतरा.

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं
 १ + ३ ०
 तन मन धन पा ई ऽ लाऽऽ ऽ आऽ ऽ ई ला ऽ बऽनऽ रा ऽ
 पधू पप मगू प धू नी धूनीसा ऽ नीधू ऽ नी सा ऽ सांरैसाऽनी धू
 स दा ऽऽ रं गी ऽऽऽऽ ला ऽ ऽऽऽऽऽमोऽऽऽराऽकाऽ ऽऽ जोऽरेऽ
 नी सां रैगू रै सांनीसांरैसांनी धू धूनीसांरैगू रैसांनीसांनीधूमधू मगू रैगूरैसां

आस्ताईका बिलंपद

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं
 १ + ३ ०
 बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा धरऽऽऽवा ऽ आ नं द ऽ
 १बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा धू नी धू सा नी रे धू सा
 २बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा धू नी धू सा नी रे सा रे
 गू ऽ रे ऽ गू रे सा ऽ नी सा रे ऽ सा नी सा ऽ
 ३बा जो रे ऽ सा नी रे सा गू रे म गू मरे गू रे सा
 ४बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा गुगू रैरे मम गुगू रे गू रे म
 गू ऽ प ऽ म ऽ धू ऽ प ऽ म गू रे गू रे सा
 बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा धरऽऽऽवा ऽ आ नं द ऽ
 ५सा रे गू म गू म प धू धू पम गू रे म गुरे ऽ सा

[१६४]

६सा रे गु प म ध् नीध् प मध्प म गु मम गुगुरे
 बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा धरऽऽऽवा ऽ आ नं द
 ७सा रे गु रे रे गु म गु गु म प म म प ध्
 नी ध् प म ध् प म गु प म गु रे म गु रे
 ८बा जो रे ऽ मो ऽ मऽ द सा ऽऽऽऽ ऽ घ रऽ वाऽ
 ध् नी सा रे गु रे गुरे सा म गुरेगुरे सा नी ध्म गुरे
 ९बा जोरे मोऽ मऽ द साऽ ऽऽ घऽ रऽ वाऽ ऽऽऽऽ ऽऽ आऽ नंऽ दऽ
 सा रेसा नीध्सासा रेरे गुगु रेरे गुगु पम पध् पम पध् ध्नी ध्प मगुरे
 १०बा जो रे ऽ मोऽऽ मऽ द सा रे मगु ध्म नीध् नी सा नी
 नी ध् नी सा नी ध् मगु गुम पध्नीसा नीध्नीध् पम गुरेसा

अंतरेका बिलंपद

धा धा धीं धीं धा तुक् धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक् धीं
 १ + ३ ०
 तन मन धन पा ई ऽ लाऽऽ ऽ आ ऽ ई ला ऽ बऽनऽरा
 १तन मन धन पा ई ऽ लाऽऽ ऽ म ध् नी सा ध् नी सा
 ध् नी ध् ऽ सा नीध् नी ध् पध् पम गु ऽ मध् नी नीध्
 २तन मन धन पा ई ऽ लाऽऽ ऽ नीध्नीध्नीध्पम नीध् ध्नी सा रे नी
 म गु गुम मध् ध्नी नीध् म ध् प म गु म ध्नी रे ध्
 तन मन धन पा ई ऽ लाऽऽ ऽ आ ऽ ई ला ऽ बऽनऽरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग-तोडी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

कान मुरलिया बाजेरी श्रवन सुनत मेरो मन वश कर लीनो ॥ धू०
किरीट मुकुट पुरवराजस कुंडल । धनुख हाथ कर डोरी । श्रवन सुनत मेरो
वश कर लीनो ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	
०			१				+				३				
का	ऽ	ऽन	मु	र	लि	या	ऽ	ऽ	बा	ऽ	जे	ऽ	री	ऽ	ऽ
सा	ध्	ऽध्	नी	ध्	प	म	ध्	प	म	ग्	प	ऽ	ध्	ऽ	ऽ
श्र	व	न	सु	न	त	मे	रो	म	न	व	श	क	र	ली	
ध्	म	ग्	म	ग्	रे	सा	सा	सा	रे	ग्	ग्	रे	रे	सा	

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	
०			१				+				३				
कि	री	ऽट	मु	कु	ट	पु	ख	रा	ऽ	ऽ	ज	स	कुं	ऽ	ड
गुरे	ग्	ऽग्	ग्	म	म	ध्	ध्	धुनी	सा	सा	सा	नी	सा	सा	
ध	नु	ख	हा	ऽ	थ	क	र	डो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	ग्	रे	सा	ऽ	नी	ध्	प	मग्	ग्	प	म	ध्	ऽ	ऽ	
श्र	व	न	सु	न	त	मे	रो	म	न	व	श	क	र	ली	
ध्	म	ग्	म	ग्	रे	सा	सा	सा	रे	ग्	ग्	रे	रे	सा	

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ बा ऽ जे ऽ री ऽ ऽ ऽ
 १का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ पम गुरे सा पध् पम गुरे सा ऽ
 २का ऽ ऽन मु र लि धुनी सारे गम गुरे सा गम पम गुरे सा ऽ
 ३का ऽ ऽन ऽ धुनी सारे गग् रेसा मम गुरे ध्व् पम गम ध्व् मग् रेसा
 ४का ऽ ऽन ऽ धुनी सारे सानीध्व् मप धुनी ध्व् मप ध्व् मग् रेसा ऽ
 का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ बा ऽ जे ऽ री ऽ ऽ ऽ
 ५धुनी सारे गुरे मग् ध्म नीध् सा नीध् पम गुरे गम पध् पम गुरे सारे सा
 ६मध् नीध् प म ग् ऽ गम गम ध् ऽ मम गग् रेरे गग् रेरे सा
 ७का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ बाऽ ऽऽ जेऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 सा ध् ऽध् नी ध् प म्प ध्व् रेग् गुरे गम मग् मध् ध्म धुनी सा
 ८का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ बा जे रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 सा ध् ऽध् नी ध् प गम धुनी ध्व् मग् म ध् नीनी ध्व् मग् रेसा
 का ऽ ऽन मु र लि याऽ ऽऽ बा ऽ जे ऽ री ऽ ऽ ऽ
 ९सारे गुरे ग् ऽ रेग् मग् म ऽ गम ध्व् ध् ऽ मध् नीध् नी सा
 १०काऽऽन मुऽ रऽ लिऽ ऽऽ याऽ ऽऽ बाऽ ऽ जेऽ ऽ रीऽ ऽ ऽऽ ऽ
 रेग् गुरे गम मग् मध् ध्म धुनी नीध् धुनी सा धुनी सा नीध् नी ध्व् ध्

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं

० १ + ३

कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽ ज स कुं ऽ ड

१ कि री ऽट मु कु ट पु ख धुनी सां रे सां नी धुप धुध पम गुरे सां

२ कि री ऽट मु कु ट पु ख नीनी धुनी सां नी धुप मगु रे सां मधुनी

कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽ ज स कुं ऽ ड

३ सां रे गुम रेगु मधु गुम धुनी मधु नी सां नी धुप नीधु पम धुप मगु मगु

४ धुनी सां रे गुरे गुरे सां मगु मगु रे सां नीधु नीधु पम ग् गुम धुनी सां

५ कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽऽ ऽऽ जऽ सऽ कुंऽ डऽ

म ग् ऽगु ग् म म ध् ध् गुम पधु नी सां सां रे सां नी धुप मगु

६ कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ जऽ ऽऽ ऽऽ

म ग् ऽगु ग् म म ध् ध् सां नी धुप पम गुरे रे रे सां नी धुप

कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽ ज स कुं ऽ ड

७ सां रे गुरे रेगु मगु गुम धुम मधु नीधु धुनी सां नीधु नीधु गुम धुम रेगु

८ कि री ऽट मु कु ट पुऽ खऽ राऽ ऽऽ जऽ सऽ कुंऽ ऽऽ डऽ

म ग् ऽगु ग् म मे नीनी धुम धुनी सां रे गुरे रे सां धुनी सां रे

कि री ऽट मु कु ट पु ख राऽ ऽ ज स कुं ऽ ड

९ गुम धुनी सां रे सां नीधुनी सां रे गुरे रे सां गुरे रे सां नीधु नीनी धुप मगु मगु

१० सां नीधु मगु रे सां ग् रे सां नीधु पम गुम धुनी मधु नी रे धुनी सां रे

राग-तोडी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

पतिया पतगवा मोरे पियासन मोरा संदेसा बेगलिया ॥ धृ० ॥

घडि घडि पल पल छिन छिन मैका । जुगत बितत बेगलिया । सिरि हो
छतिया ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३			०				१				+				
ऽ	ऽ	पऽ	तिऽ	या	ऽ	ऽ	प	त	ग	वा	ऽ	मोऽ	रे	ऽ	पि
ऽ	ऽ	पम	धुप	म	गु	ऽ	म	गु	रे	सा	ऽ	सारे	गु	ऽ	प
याऽ	ऽऽ	स	न	मोऽ	रा	ऽ	सं	दे	ऽ	सा	ऽ	बेऽ	ऽ	ग	लि
मप	धुप	म	गु	पम	धु	ऽ	म	रे	गु	रे	सा	मप	धु	प	धु
याऽ	ऽ	पऽ	तिऽ	या	ऽ	ऽ	प	त	ग	वा	ऽ	मोऽ	रे	ऽ	ऽ
पम	गु	पम	धुप	म	गु	ऽ	म	गु	रे	सा	ऽ	सारे	गु	ऽ	ऽ

अंतरा

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
३			०				१				+				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	घ	डि	घ	डि	प	ल	प	ल	छि	न	छि	न
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	रे	गु	गु	म	म	धु	धु	सा	सा	सा	सा
मैऽ	ऽ	का	ऽ	जु	ग	त	बि	त	त	बे	ऽ	गऽ	ऽ	ऽ	लि
नीसा	रे	सा	ऽ	सा	रे	गु	रे	सा	सा	नी	धु	धुनी	सा	ऽ	नी
या	ऽ	ऽ	ऽ	सि	री	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छऽ	ऽ	ऽ	ति
धु	ऽ	प	ऽ	म	म	धुनी	सा	रे	धुनी	सा	ऽ	धुनी	सा	ऽ	नी

या ऽ प ऽ ति ऽ या ऽ ऽ प त ग वा ऽ मो ऽ रे ऽ
 ध् प पम् ध् म ग् ऽ म ग् रे सा ऽ सा रे ग् ऽ

राग-तोड़ी

ताल-त्रिताल (जलदलय)

बर सरसतीस मागत हूं । बिद्या अदके सरस निरसन कीजे ।
 जगतके गुनिजनको दीजे ॥ धृ० ॥ लाग डाट और रागसेहत है ।
 दीजे देवी दया दयानी । अपने कर सरसतीस मागत हूं ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
ब	र	स	र	स	ती	ऽ	स	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ग	त	हूं
सा	रे	ग्	ग्	रे	सा	ऽ	रे	सा	नी	ध्	ऽ	ऽ	सा	रे	ग्
बि	ऽ	द्या	ऽ	अ	द	के	स	र	स	नि	र	स	न	की	ऽ
म	ऽ	ध्	ऽ	म	ध्	नी	ध्	प	प	प	ध्	म	ग्	रे	ऽ
जे	ऽ	स	ब	ज	ग	त	के	गु	नि	ज	न	को	दी	ऽ	
रे	सा	सा	रे	ग्	म	प	ध्	म	ग्	म	प	ध्	म	ग्	ऽ
ब	र	स	र	स	ती	ऽ	स	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ग	त	हूं
सा	रे	ग्	ग्	रे	सा	ऽ	रे	सा	नी	ध्	ऽ	ऽ	सा	रे	ग्

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
ब	र	स	र	स	ती	ऽ	स	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ग	डा	ऽ	ट औ
सा	रे	ग्	ग्	रे	सा	ऽ	रे	सा	म	ग्	ऽ	म	ध्	सा	सा

राऽ ग से ह त हैऽ ऽ ऽ ब क स दी ऽ जे ऽ
 रे सा सा रे रे सा सा ऽ नी ध् म् ग् रे सा ऽ
 दे ऽ वी ऽ द या ऽ द या ऽ नी ऽ अ प ने ऽ
 सा ऽ ग् ऽ रे ग् ऽ म् ग् रे सा ऽ ध् नी ध् म्
 क र स र स ती ऽ सऽ मा ऽ ऽ ऽ ग त हूं ऽ
 ग् रे ग् ग् रे सा ऽ रे सा नी ध् ऽ ऽ सा रे ग् ऽ

राग—तोड़ी

ताल—तिलवाडा (मध्यलय)

बिन बजावे माईरी गावे नीकी तान ॥ धृ० ॥ अबये बाबू कहा छो

हरवा तान आये ॥ १ ॥

आस्ताई

धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं

+

३

०

१

बी ऽन्ब

नी सासासा

जा ऽ ऽ वेऽ ऽ मा ऽ ई री ऽ ऽ ऽऽ गा ऽ वे 'ऽ
 प ऽ ऽ मरे ग् म ऽ ग् रे ऽ सा नीसा नी ध् रे नी
 नी ऽ की ऽ ऽ ऽ ताऽ ऽ ऽ न ऽ ऽ बी ऽन्ब
 रे सा प ऽ प ध् मग् म रे ग् रे सा नी सा नी सासासा
 जा ऽ ऽ वेऽ ऽ मा ऽ ई
 प ऽ ऽ मरे ग् म ऽ ग्

अंतरा

धा तुकु धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुकु धीं धीं धा धा धीं

+ ३ ० १

अ ब ये ऽ ऽ ऽ बा
म ग् प ऽ म ध् 'नी

बू ऽ क हा ऽ ऽ ऽ छो ऽ ह र वा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

ध् प प प ऽ पध् म ग् म ग् रे ऽ सा रे नीसा

ऽ ऽ नऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ धे ऽ ऽ ऽ बी

ध् ध् नीसा नीध् मग् रे सा म ध् मरे ग् रे गुरे सा ऽ नी

जा ऽ ऽ वेऽ ऽ मा ऽ ई री ऽ ऽ ऽ

प ऽ ऽ मरे ग् म ऽ ग् रे ऽ सा नीसा

राग-तोड़ी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

लंगरका करियो जीन मारो मोरे । अंगवा लग जाये ॥ धृ० ॥ सुन

मोरि सास ननदिया । दोर दोर गर लागे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं

१ + ३ ०

लं ग र का ऽ क रि यो ऽ जी न माऽ ऽ ऽ रो

म ग् म ध् ऽ नी ध् प ऽ प ध् मप ध्प म

ऽ मो ऽ रे अं ग वा ऽ ऽ ऽ ल ग जाऽ ऽ ऽ धे

रे ग् रे सा सा सा ध् ऽ ध्प प प ध् मप ध्प म

५ लं ग र
५ म ग् म

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 सु न पा ५ वे ५ मो रि सा ५ ५ स न न दि या ५
 रे रे ग् ५ म ५ ध् ध् धुनी सा सा सा सा रे सा ५
 दो ५ र दो ५ र ग र ला ५ ५ ने ५ ५ लं ग र
 सा रे ग् रे सा ५ सा नी ध् धुनी सा नी ध् प म ग् म

राग-तोडी

रूयाल, ताल—त्रिताल (मध्यलय)

गरवा मैसन लागे । लागे मीत पिहरवा । अनंद भईलवा मोरे मंदरवा
 ॥ धृ० ॥ सगरी रैन मोहे तरपत बीती भोर भई भर पाईला । फुलवन सेज
 सवारो मोरे अंगना रहेस रहेस गरे डारो हरवा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 गर वा ५ मै ५ स न ला ५ ५ ५ ने ५ ५ ५
 सा रे ग् ५ रे सा सा रे सा ५ ५ रे सा रे ग् ५ ५
 ला ५ ने ५ ५ ५ ५ मी ५ ५ त पि ह र वा ५
 गुम प म ग् प म ध् ५ ध्म ग् ५ गु म ग् रे सा ५

अऽ नं द भ ई ल वा ऽ मोऽ ऽ रे मं द र वा
 नीधू नी सा रे गू रे सा ऽ सारे गू रे गू रे रे सा
 ऽ गर वा ऽ मै ऽ स न ला ऽ ऽ ऽ गोऽ ऽ ऽ
 ऽ सारे गू ऽ रे ऽ सा रे सा ऽ ऽ रे सारे गू ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 स ग री रे ऽ न मो हे त र प त बीऽ ऽ ती
 धू नी धू प ऽ प म गू गू म धू धू धूनी सा सा
 मो ऽ र भ ई ऽ भ र पा ऽ ई ऽ ऽऽ ऽऽ ला
 नी धू नी धू नी सा रे सा नी सा नी सा नी सा रे सा नी
 फु ल व न सेऽ ऽऽ ज स वा रो मो रे अं ग ना
 धू नी धू प पधू पप म गू म म धू धू नी नी सा
 रऽ हे स रऽ हे स ग रे डा ऽ रोऽ ऽ ह र वा
 सारे गू रे सा नी धू नी धू प म गू सारे गू गू रे सा

राग-तोडी

तराना, ताल-त्रिताल (जलद)

तदानि दानि तौ तननन देरेना तननन तनन देरेना उदानि
 तदानि दानि तौ तननन देरेना ॥ धू० ॥ देरेनोमें देरेनोमें नादेरे देरे
 दिर दिर दिर दिर ताना दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर
 धेतर किट तक् नक् तक् धा कडांधा किड धां धा कत्तिना कडां ताड्ता धा

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १

त दा नि दा नि
 रे नी सा गु म
 त न न न त
 नी ध म गु रे गु रे सा S S गु रे रे सा रे
 न न देS रे ना S उ दा नि दा नि त दा नि दा नि
 नी सा रेसा सा नी ध ध नी रे गु गु गु म म ध ध
 तींS S त न त न दे रे ना S S त दा नि दा नि
 धनीसा नी ध म गु गु रे सा S S रे नी सा गु म

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 दे रे नो में दे रे नो में ना दे रे दे रे त न न
 म म ध ध म म गु गु ध नी ध नी नी सा सा सा
 दिर दिर दिर दिर ता ना दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर
 रे गु रे नी ध नी ध ध ध म ध गु म रे गु गु
 धे तर किट तक् नक् तक् धा S कडां S धा S किड धा S धा
 रे रे गु गु म ध सा S गु S रे S ध नी S ध
 क ति ना कडां S ता Sड ता धा S S त दा नि दा नि
 ध प प ध S प Sप ध ध म गु रे नी सा गु म

राग—असावरी (कोमल रिषमकी)

इस रागमें रिषम, गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल लगते हैं। असावरीमें तीव्र रिषम लगाकर गानेकी प्रथा है। इसलिये जीवनपुरी रागमें और असावरीमें बहोत साम्यता मालूम होती है। परंतु कोमल रिषम लगनेसे जीवनपुरी रागसे ये राग अलग होता है। और इसका चलनभी जीवनपुरी रागसे बिल्कूल अलग है। बहोत रसीला राग है। दिनके दूसरे प्रहर इसको गाते हैं। करुण और भक्तिसप्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे म् प निध् सा

अवरोह—सा नि ध् म् प ध् म् ग् रे ऽ सा

मुख्य अंग—सा रे म् प निध् म् प निध् सा नि ध् म् प निध् नि ध् म् ऽ

ऽ रे ऽ सा

जाती—ओढव-वक्र संज्ञा

वादी—मध्यम

संवादी—निषाद

सुरावट, ताल—झपताल

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
रे	नि	सा	रे	म्	मग्	ऽ	रे	सा	ऽ
रे	नि	सा	रे	निध्	ऽ	ऽ	म्	प	निध्
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सा	गुरे	म्	प	निध्
नि	ध्	म्	मग्	ऽ	रे	ऽ	सा	ऽ	ऽ ॥
म्	प	ध्	म्	प	ध्	नि	ध्	ऽ	म्
म्	प	निध्	सा	ऽ	ग्	रे	नि	ध्	म्
प	ध्	नि	ध्	म्	मग्	रे	ऽ	सा	ऽ ॥

[१७७]

राग—आसावरी

(कोमल रिषभकी) ताल—झुमरा (मध्यलय)

रामजे मन भावे नमू नारायण एकनको दे सब काज सवारो ॥ धृ० ॥

हम ग्वालनी तुम ग्वाल गुसाई, जनम जनमके रखवाल हमारे कबहुं तो पार
उतार चढावोंगे ऐसो प्रभु हमारे ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं ऽधा त्रक धीं धीं धागे त्रक तीं ऽता त्रक धीं धीं धागे त्रक
+ ३ ० १

जेऽ ऽऽ ऽ मऽऽनऽ भाऽ ऽवे नमू ऽ नाऽऽऽ राऽ य ण एऽ कन
निध् निध् प पध्पपम् गुरे म्म् म्प ऽ म्पध्प म्ग् रे सा रेनि सारे
को ऽ देऽ ऽऽ सब काऽ ऽऽ ज सऽऽऽ बाऽ ऽ रो ऽरा ऽम
म ऽ म्ग् म्ग् म्प धम् पऽ प म्पध्प म्ग् रे सा ऽरे म्प
जेऽ ऽऽ ऽ मऽऽनऽ भाऽ ऽवे नमू ऽ नाऽऽऽ राऽ य ण ऽरा ऽम
निध् निध् प पध्पपम् गुरे म्म् म्प ऽ म्पध्प म्ग् रे सा ऽरे म्प

अंतरा

धीं ऽधा त्रक धीं धीं धागे त्रक तीं ऽता त्रक धीं धीं धागे त्रक
+ ३ ० १

जेऽ ऽऽ ऽ मऽऽनऽ भाऽ ऽवे नमू ऽ नाऽऽऽ राऽ य णह मग्वाऽ ऽऽल
निध् निध् प पध्पपम् गुरे म्म् म्प ऽ म्पध्प म्ग् रे साम् पनिध्निध्
रा.सं.(३)१२

नी ऽ तुम ग्वा लऽगुऽसाऽ ईऽ जन मज नम केऽ रखवाऽऽऽ
 सा ऽ सानि सा साऽ रे सानि ध् ध् पप पप पप ध् म् म्प म्पध्
 मा रे कब हुंऽतो पा रउ ताऽ रच ढाऽ ऽऽऽऽ वो ऽ गेऽ
 रे सा म्प निध् सा सानि रेऽ सानि साऽ निसा रे सानि ध् ध्
 रे सोऽ ऽऽ प्र मू ऽऽ ऽह मा ऽऽऽ ऽऽ रे ऽ ऽरा
 ग् रे नि साऽ रे नि ध् म् ऽम् प ध् नि ध् म्ग रे सा ऽरे

आस्ताईका बिलंपद

धीं ऽधा तुक धीं धीं धागे तुक तीं ऽता त्रक धीं धीं धागे
 + ३ ० १

१ जेऽ ऽऽ ऽ म् ग् गुरे गुरे सा रे नि सा ऽ
 २ जेऽ ऽऽ ऽ म् ग् रे म् ऽ म्ग गुरे सा ऽ
 ३ जेऽ ऽऽ ऽ म् प म् गुरे रे नि निध् सा ऽ
 ४ जेऽ ऽऽ ऽ मऽऽनऽभाऽ ऽवे म् ग् रे सा रे नि
 म् प निध् सा गुरे गुरे सा ऽ नि रे सा ऽ
 ५ जेऽ ऽऽ ऽ मऽऽनऽभाऽ ऽवे म् प निध् म् ग् गुरे सा
 गुरे सा म् ग् गुरे ध् म् ग् गुरे सा म्ग रे सा
 ६ जेऽ ऽऽ ऽ म् प म्प निध् म् म्प ध् म् गुरे सा

७जेऽऽ ऽ मऽऽनऽभाऽ ऽवे नमू ऽ नाऽऽऽ राऽ य ण रे नि
 ८निधुसा नि रे सा निधु मग्गुरे सारे मप ध्म गुरे सारा ऽम
 ९जेऽऽ ऽ ध् म मप ध्नि ध् मग्गुरे सा ऽरा ऽम
 १०जेऽऽ ऽ ध्म प मप निधु म् मग्गुरे सा गुरे म् प
 निधुसा नि निधु म् ध्म गुरे म् मग्गुरे सा ऽ ऽरा ऽम
 ११जेऽऽ म नऽ भा वे नमू ना राऽ यऽ णऽ ऽ ऽरा ऽम
 ध्म मग्ग म् मग्गुरे सा निधु म् मप ध्म गुरे सा
 १२जेऽऽ म न भाऽ वे नऽ मू नाऽ राऽ य ण ऽरा ऽम
 ध्म पध् नि ध् ध्म प गुरे म् मग्गुरे रे सा

अंतरेका विलंपद

धीं ऽधात्रक धीं धीं धागेत्रक तीं ऽतात्रक धीं धीं धागेत्रक
 + ३ ० १

जेऽऽ ऽ मऽऽनऽभाऽ ऽवे नमू ऽ नाऽऽऽ राऽ य णह मग्वाऽ ऽऽल
 १ नी ऽ नि निधु म् मग्गुरे म् प ध् म् म्मह मग्वाऽ ऽऽल
 २ नी ऽ निधु सा नि निधु म् प ध्म गुरे सा ऽह मग्वाऽ ऽऽल
 ३ नी ऽ सा नि रे नि ध्म प मग्गुरे सा ऽह मग्वाऽ ऽऽल
 ४ नी ऽ निधु म् मप मपध्निध्म सा निधु म्प ध्म ऽह मग्वाऽ ऽऽल
 ५ नी रेनि सा गुरे नि ध्म प ध्म पध् निधु सा ऽह मग्वाऽ ऽऽल
 ६ नी रेनि सा गुरे निधु ध्म मप निधु सा मप निधुसाह मग्वाऽ ऽऽल

७ नी S हम ग्वा ल नीS तुम ग्वा लगु साSSS ई Sह मग्वाS S
 रेनि ध् म् पध् निध् म् पध् म्मग्ग् रे साहमग्वाS S
 नी S तुम ग्वा लSगुS साS ईS S S S S Sह मग्वाS S
 ८ नी S तुम ग्वा S SS लS गुS साS इS S Sह मग्वाSS
 रेनि सा रे गुरे निध् म्प ध्म पध् सा S
 ९ नी S म्प निध् सा सांरे म्ग् रे सा रेनि निध् म् प
 पध् सां सांनि रे सा गुरे निध् सा म्प निध् सा Sह मग्वाSS
 १० नी S म् प निध् सा सांरे म् ग् रेनि सा नि रे
 म् प निध् सा सांनि रेसां म्ग् रे नि रेरेसा S Sह मग्वाSS

राग—असावरी

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

इस रागमें त्रिताले बहोत कमती मिलते है, कोई गायक इस चित्र तीव्र रिषभ लगाके गाते है. यह चीज हमको कोमल रिषभमें बतलाई गई है.

परीये वाके पाय न सजनी, जो नामानें गुनीयनकी सीख ॥ धू
जो काहुंकी सीख ना मानें, ऐसे मानसके पास न जैये, दरस कहे ना सो डरीये ॥

आस्ताई

ना ती ती ना ना धी धी ना ना धी धी ना ना धी धी
 ० १ + ३
 पS री ये S वा SS के S पाS SS य न स ज नीS
 म्प ध् म् ग् रे गुरे सा S रेरे सांनि सा रे म् म् म्प

जो ऽ ना ऽ मा ऽ ने ऽ गुऽ नी य न की सी ऽ ख
 म् ऽ म् ऽ प ऽ ध् म् धुप नि ध् म् ग् रे सा सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

जो ऽ का ऽ हुं ऽ कीऽ ऽ सी ऽ ख न मा ऽ ने ऽ
 म् ऽ म् ऽ प ऽ निध् ऽ सा ऽ सा सा सा ऽ सा ऽ
 रे ऽ से मा ऽ न स के पाऽ ऽ स न जैऽ ऽ ये ऽ
 नि ध् ध् सा ऽ सा सा सा सा रे ग् रे नि नि सा रे सा नि ध्
 दऽ र स क हे ऽ ना ऽ सो ऽ ऽ ऽ ऽ ड री ये ऽ
 निध् ध् म् प ध् नि ध् म् प ध् म् ग् रे सा ऽ

आस्ताईकी तानें .

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

पऽ री ये ऽ वा ऽऽ के ऽ पाऽ ऽऽ य न स ज नीऽ ऽऽ
 १ पऽ री ये ऽ वा ऽऽ के ऽ रेरेसानि सारे म् ग् रेरे सा सा
 २ पऽ री ये ऽ वा ऽऽ के ऽ सारे म् प ध् म् ग् रेरे सा सा
 ३ पऽ री ये ऽ वा ऽऽ के ऽ सारे म् प नि नि ध् म् ग् रेरे सा
 पऽ री ये ऽ वा ऽऽ के ऽ पाऽ ऽऽ य न स ज नीऽ ऽऽ
 ४ ध् म् ग् रेरे नि नि ध् म् ग् रेरे म् प ध् म् ग् रेरे सा
 ५ ध् म् प सा सा नि नि ध् नि नि ध् म् ग् रेरे म् प ध् म् ग् रेरे

अंतरेकी तानें

जो ऽ का ऽ हुं ऽ कीऽ ऽ सी ऽ ख न मा ऽ ने ऽ
४ रेरे सा नि सा रे रे गुं रेरे नि नि ध् ध् म् म् गं गं रेरे रे नि नि नि ध् ध् म् म् गं गं रेरे रे
५ जो ऽ ऽ का ऽ हुं की ऽ ऽ सी ऽ ख ऽ न मा ऽ ऽ ऽ ऽ ने ऽ
रेरे सा नि सा रे रे म् गुं रेरे नि रेरे नि नि ध् ध् म् म् पध् सा सा ऽ

ताल-चौताल

आयो र जीतही राजा रामचंद्र लंका नगर ॥ धृ० ॥ जिथ तिथ सुनी
छत्रदेस भजत भजत राजाको हो आनंद भयो है घर घर ॥ १ ॥ जब
चढावत हनुमान कर धर जात जाको जब थरथरात, रावन मार डारो
को दीनो राज ॥ २ ॥

आस्ताई

धा धा धीं ता किट धा धीं ता तिट कत गदि गन
 धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

आऽ ऽयोऽर

रेसा ऽरेम्प

जीऽ तही राऽजा ऽऽऽऽ राऽऽम चंऽ ऽऽऽऽद्रऽ लं काऽऽऽ नऽगरऽआऽ ऽयोऽर
 निष् ध्प ध्म्प म्पध्म् म्गरेरेसाऽनिसारेसानिष्सा रेम्पध् म्गरेसाऽरेसा ऽरेम्प

अंतरा

धा धा धीं ता किट धा धीं ता तिट कत गदि गन
 धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

जीऽ तही राऽजा ऽऽऽऽ राऽऽमचंऽ ऽऽऽऽ द्रऽ लं काऽऽऽ नऽगरऽजियऽतियसु
 निष् ध्प ध्म्प म्पध्म् म्गरेरेसाऽनिसारेसानिष्सा रेम्पध् म्गरेसाऽम्पऽनिष्ध्
 नी वेक छत्र देस भऽ ज तभ ऽजऽ ऽऽत राऽ जाऽऽऽ कोऽऽ
 सा सासा रेनि सासा रेनि सा रेनि ध्निष् निष्प ध्म् म्पध्म् म्गरे
 होऽऽआनं ऽद भऽ योऽऽ है घऽऽरऽऽ घऽ ऽऽऽ रऽआऽ ऽयोऽर
 ग्रेम्प ऽप निष् ग्रेरेसा सा ध्म्पध्निष् म्ग रेरेसाऽरेसाऽरेम्प

संचारी

धा	धा	धीं	ता	किट	धा	धीं	ता	तिट	कत	गदि
धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं
+		०	४	०		१			२	
ज	बऽ	को	पच	ढाऽ	वत	हऽ	नुऽ	माऽ	नऽ	कर
सा	निध्	ध्	पप	निध्	धप	धम्	पध्	मग्	रेऽ	गुरे
जाऽ	ऽऽऽऽ	त	ऽ	जा	को	जब	थर	थरा	ऽत	राऽव
रेम्	पऽध्म	प	ऽ	म्	प	निध्	ध्सा	सासा	ऽसा	निध्सा
माऽ	ऽर	डाऽ	रो	बभी	खन	कोऽऽदीनो	राऽ	जऽ	ऽऽआऽ	ऽयो
रेन्	सासा	निध्	प	पध्	धप	धम्प	धम्	गुरे	रेसा	ऽऽरेसा

राग-देशी

इस रागमें रिषभ और धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं। गंधार, गंधार और निषाद यह स्वर कोमल लगते हैं। कोमल धैवत लगाके देशी राग गाने प्रचार बहोत है। शृंगार और भक्तिरस प्रधान यह राग है। दिनके दूसरे अर्ध यह राग गाया जाता है।

आरोह—सा रे म् प ध सा नि सा

अवरोह—सा नि सा प ध म् प रे ग् रे सा रे सा ऽ

मुख्य अंग—प ध सा नि सा रे म् प रे ग् रे सा

रे सा ऽ प ध सा नि सा प ध म् प रे ग् रे सा रे सा ऽ

जाती—पाडव, वक्र सा

वादी—पंचम

संवादी—रिषभ

[१८५]

सुरावट, ताल-त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 सा रे म् प रे ग् रे सा रे नि सा ऽ प ध सानि सा
 रे म् प ध म् प रे ग् सारे ग् रे ग् रेसा रे सा ऽ ॥
 म् प प ध सानि सानि सा ऽ सा रे सारे ग् रेसा रे सा ऽ
 रे नि सा ऽ प ध सानि सा प ध म् प रे ग् रेसा रेसा ॥

राग-देशी

ताल-अपताल (मध्यलय)

निरौजन कीजे मलमुक्त मेरे परताब सो अहं मद जूँके ॥ धृ० ॥

तूहि नूर तूहि भूप तेरोहि गुन गाउं, सेवा करे सर्व जिय जंतु तेरे परताबसो अहंमद
 जूँके ॥ १ ॥ एकनको दीनी माल मुख तख्त, एकनको दीनी माया धनेरी,
 दरसदास तोसे येही मांगत है, मेरी मुक्तमें करनाही देरी परताबसो अहंमद
 जूँके ॥ १ ॥

आस्ताई

धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना
 + ३ ० १
 नि
 रे
 रैं ऽ ज ऽ न की ऽ ऽ जे ऽ ऽ
 नि सा सा ऽ रे सानि सानि ध प ऽ
 - - - - -

म	ल	मुऽ	ऽ	क्तऽ	मेऽ	ऽ	रे	ऽ
प	घ	सान्नि	सा	पध	पम्	प	ग्	ऽ
प	र	ता	ऽ	ब	सोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
म्	गू	रे	ऽ	सा	मूरे	पम्	धप	नि
हं	म	ऽ	दऽऽ	जू	ऽऽ	ऽऽऽ	के	ऽ
प	गू	रे	रेग्म्	गू	रेग्	रेसारे	सा	ऽ
रौ	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ
नि	सा	सा	ऽ	रे	सान्नि	सान्नि	ध	प

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी
+		३			०		१	
तं	हि	नूऽ	ऽ	र	तूं	हि	भू	ऽ
प	ध	सान्नि	सा	सा	सा	सा	सा	ऽ
तेऽ	ऽऽ	रो	ऽ	ही	गुऽ	नऽ	गा	ऽ
सांरै	मूग्	रै	सा	रै	सान्नि	सान्नि	ध	प
सेऽ	ऽ	वा	ऽ	क	रे	ऽ	सऽ	ऽ
सान्नि	ऽ	ध	म्	म्	प	ध	सान्नि	सा
जि	य	जं	ऽ	तुऽऽ	तेऽ	ऽ	रे	ऽ
प	ध	प	म्	म्पध	पम्	प	ग्	ऽ
प	र	ता	ऽ	ब	सोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
म्	गू	रे	ऽ	सा	मूरे	पम्	धप	नि

म	ऽ	दऽऽ	जूं	ऽऽ	ऽऽऽ	के	ऽ	नि
गू	रे	रेगम्	गू	रेगू	रेसारे	सा	ऽ	रे
ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ
सा	सा	ऽ	रे	सान्ति	सान्ति	ध	प	ऽ

संचारी

ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
३				०		१		
क	न	ऽ	को	दीऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ
म्	प	ऽ	न्ति	पम्	प	गू	ऽ	रे
ऽ	ल	ऽ	मु	लुऽ	ख	त	ऽ	ख्त
ऽ	म्	ऽ	घ	पम्	प	गू	ऽ	रे
क	न	ऽ	कोऽ	दी	ऽऽ	ऽऽऽ	नी	ऽ
रे	सा	ऽ	रेप	गू	रेगू	रेसारे	सा	ऽ
ऽ	या	ऽ	ध	नेऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
रे	म्	ऽ	घ	पम्	प	गू	ऽ	रे
ऽ	द	र	स	दाऽ	ऽ	स	तो	से
ऽ	म्	प	ध	सान्ति	सा	सा	सा	सा
ऽ	ही	ऽ	मां	गऽ	तऽ	है	ऽ	ऽ
गू	रे	सा	रे	सान्ति	सान्ति	ध	प	ध

[१८८]

मेऽ	ऽ	री	ऽ	मु	क	त	मेंऽ	ऽ
सांनि	ऽ	घ	ऽ	म्	प	ध	सांनि	सां
क	र	ना	ऽ	हीऽ	देऽ	ऽ	री	ऽ
प	ध	प	म्	पध	पम्	प	ग्	ऽ
प	र	ता	ऽ	ब	सोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
म्	ग्	रे	ऽ	सा	मूरे	पम्	धप	नि
हं	म	ऽ	दऽऽ	जूं	ऽऽ	ऽऽऽ	के	ऽ
प	ग्	रे	रेग्म्	ग्	रेग्	रेसारे	सा	ऽ
रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ
नि	सा	सा	ऽ	रे	सानि	सानि	ध	प

आस्ताईका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी
+		३			०		१	
रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ
१ प	ध	प	म्	प	ध	सानि	सा	ऽ
रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ
२ प	ध	सानि	सा	ऽ	रे	नि	सा	प
३ रैं	ऽ	ज	ऽ	न	सारेग्	रेग्	रेसारे	सा
रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ

४	सा	रे	म्	ग्	रे	ग्	रेसा	रे	सा	नि
	रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ
५	सा	मुरे	पम्	प	ध	म्	प	रे	ग्	रेसा
	रे	सा	ऽ	प	रे	ग्	रेसा	रे	सा	नि
६	रैं	ऽ	ज	ऽ	न	प	ध	म्	प	रे
	ग्	सा	रे	नि	सा	प	ध	सान्ति	सा	नि
७	रैंऽ	जऽ	न	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जेऽ	ऽ	ऽ
	मुरे	पम्	प	मुरे	पम्	धप	ध	पम्	प	रे
	ऽ	मऽ	ल	मु	ऽ	क्तऽ	मेऽ	रीऽ	ऽ	नि
	ग्	रेसा	रे	सा	ऽ	रेप	रेग्	रेसा	सा	
८	रैंऽ	जऽ	नऽ	की	ऽ	जेऽ	ऽ	म	ल	मु
	मुरे	पम्	धप	प	ध	सान्ति	सा	प	ध	म्
	क्त	मे	री	पऽ	र	ता	ऽ	ब	ऽ	नि
	प	रे	ग्	रेसा	रे	सा	ऽ	सा	ऽ	
	रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ
९	ध	प	ऽ	पध	म्	प	रे	पम्	प	ऽ
	रे	पम्	प	रे	प	रे	ग्	रेसा	रे	सान्ति
	रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ
१०	सा	प	ध	म्	प	रे	ग्	सा	रे	नि
	सा	रे	प	रे	ग्	सा	रे	नि	सा	नि
	रैं	ऽ	ज	ऽ	न	कीऽ	ऽऽ	जे	ऽ	

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी
+		३			०			१
तं	हि	नुऽ	ऽ	र	तूं	हि	भू	ऽ
१ प	ध	सांनि	सां	ऽ	ध	पम्	पध	सांनि
२ ध	प	धम्	प	ध	सांनि	सांनि	सां	ऽ
३ प	ध	सांनि	सां	ऽ	सां	रें	सांरेंगं	रेंसांरें
४ सा	मुरे	पम्	धम्	पध	सांनि	सां	मंगं	रें
तूं	हि	नुऽ	ऽ	र	तूं	हि	भू	ऽ
५ तूं	हि	नुऽ	ऽ	र	ध	प	ध	म
रेम्	पधं	पम्	प	ध	सांनि	सां	पध	सांनि
६ तूंऽ	हिऽ	नु	ऽ	रऽ	तूंऽ	हिऽ	भूऽ	ऽऽ
सांनि	सांप	प	ध	पम्	धध	पम्	पध	सांनि
७ तूंऽऽ	हिऽ	नुऽऽ	र	ऽ	तूं	हिऽ	भूऽ	ऽऽ
सांरेंगं	रेंगं	रेंसांरें	सां	ऽ	ध	पम्	गुरे	पम्
तूं	हि	नुऽ	ऽ	र	तूं	हि	भू	ऽ
८ सां	रें	मं	गं	रें	गं	रेंसां	रें	सां
रेंनि	सां	म	धप	ध	सांनि	सां	ऽ	ऽ
९ तूं	हि	नुऽ	ऽ	र	मं	गुरें	गं	रेंसां
सांनि	सां	पध	पम्	पप	धध	निनि	सां	ऽ
१० तूं	हि	नुऽ	ऽ	र	रेंनि	सां	प	ध
सां	ऽ	सां	रें	मंमं	गुरें	गं	रेंसां	रें

राग—देशी

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

म्हारे डेरे आवो आवोजी महाराजा जेठा, हुंतो थारी टेर करेशा जेठा

॥ धृ० ॥ अगली बात तुम हमसे ना करो, सदारौंग रुढी रुढी बीन बजावो

जेठा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+				३				
म्हाऽ	रेऽ	ऽ	डे	रे	आ	ऽ	ऽ	ऽऽ	बो	ऽ	आ	बोऽ			
(	रेप	(	गुरे	गु	रे	सा	रे	ऽ	ऽ	सान्नि	सा	ऽ	सा	मुरे	(
जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मऽ	हाऽ	ऽ	रा	ऽ	जाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
म	प	ऽ	ऽ	रेम्	पध	प	पध	पम्	प	गु	रे	रेम्	प	गुरे	गु
जेऽ	ऽ	ठा	म्हाऽ	रेऽ	ऽ	डे	रे	आ	ऽ	ऽ	ऽऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽ
रेसा	रे	सा	रेप	गुरे	गु	रे	सा	रे	ऽ	ऽ	सान्नि	सा	ऽ	ऽ	ऽ
(			(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(
हुं	तो	था	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	टेऽ	ऽ	र	क	रेऽ	ऽ	शाऽ	ऽ
म	प	ध	निध	सा	ऽ	नि	रे	सान्नि	सा	प	ध	पम्	प	गुरे	गु
जेऽ	ऽ	ठा	म्हाऽ	रेऽ	ऽ	डे	रे	आ	ऽ	ऽ	ऽऽ	बो	ऽ	ऽ	ऽ
रेसा	रे	सा	रेप	गुरे	गु	रे	सा	रे	ऽ	ऽ	सान्नि	सा	ऽ	ऽ	ऽ
(			(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+				३				
अ	ग	ली	बाऽ	ऽ	त	तु	म	ह	म	से	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	ध	निध	सा	सा	सा	सा	ध	ध	सा	ऽ	सा	रे	गु	रे
(			(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(	(

कऽ स रो स ऽऽ स स स दा स स स रैं स ग
 रेसा रे सा स निसा रे स सा नि स सा स प स प
 रु ढी रु ढीऽ स स स बिऽ स न ब जाऽ स वोऽ
 म् प ध निध सा स नि रे सानि सा प ध पम् प गुरे
 जेऽ स ठा म्हाऽ रेऽ स डे रे आ स स ऽऽ वो स
 रेसा रे सा रेप गुरे ग् रे सा रे स स सानि सा स

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ० १ + ३
 १ म्हाऽ रेऽ स डे रे आ स स ऽऽ वो स सारे
 २ गुरे ग् रेसा म्हाऽ रेऽ स डे रे आ स स ऽऽ वो सारे पम्
 ३ ग् रेसा रेसा म्हाऽ रेऽ स डे रे सारे म्प धध पम् पम् गुरे म्प
 ४ ग् रेसा रेसा म्हाऽ रेऽ स डे रे रेरे सानि सारे म्प धध पम् पधनि
 ५ पध पम् गुरे म्हाऽ रेऽ स डे रे सासा मुरे पम् धध पम् पध निसा
 पम् पध निसा म्हाऽ रेऽ स डे रे आ स स ऽऽ वो स स
 ६ सारे म्प धध पम् पध निसा पध पम् गुरे म्प धध पम् गुरे ग् रेसा
 ७ सानि सा स म्हाऽ रेऽ स डे रे आऽ ऽऽ ऽऽ वोऽ जीऽ आऽ वोऽ जीऽ
 रेम् पध पम् पसा निसा पध पम्
 ऽऽ ऽऽ ऽऽ म्हाऽ रेऽ स डे रे आ स स ऽऽ वो स स
 गुग् रेसा रेसा

[१९३]

८ म्हाऽऽऽ रेऽ डेऽ ऽऽ रेऽ आऽ वोऽ जीऽ ऽऽ ऽऽ मऽ ऽऽ हाऽ राऽ जा
 सारे म्ग्गुरे म्प धध पम् पध निसा पध पम् गुरे म्प धध पम् गुरे ग्
 ९ जेऽ ऽ ठा म्हाऽ रेऽ ऽ डे रे पध सान्नि सा रेम् पध पम् पध सान्नि
 रेसा रे सा

१० सान्निमानिसाम्हाऽ रेऽ ऽ डे रे सासा मुरे पम् धध पध सान्नि सा पप
 धध सान्नि सा म्हाऽ रेऽ ऽ डे रे आ ऽ ऽ ऽऽ वो ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

०

१

+

३

१ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म सान्नि सा पध पम् पध सान्नि सा ऽ
 २ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म रैरै सान्नि सा पध पम् पध सान्नि सा
 ३ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म सारै ग् रै ग् रैसा रै सान्नि सा
 ४ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म ग् रैसा निसा पध पम् पध निसा ऽ
 अ ग ली बाऽ ऽ त तु म ह म से ऽ नाऽ ऽ ऽ ऽ
 ५ कऽ ऽ रो ऽ सारै म् गुरे ग् रैसा रै सान्नि सा प धध पम् गुरे
 ६ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म अगऽ ली बाऽ त तुम हम सेना करो
 सासाऽ रै सान्नि सा धध पम् पध निसा
 ७ अ ग ली बाऽ ऽ त तु म हऽ मऽ सेऽ नाऽ कऽ रोऽ सदा रैग
 सारै म्ग् रैसा निसा पध पम् पध निसा
 अ ग ली बाऽ ऽ त तु म ह म से ऽ नाऽ ऽ ऽ ऽ

रा.सं. (३) १३

[१९४]

८कऽ ऽ रो ऽ साँरै मूँ रेसाँ निसाँ पध पम् गुरे रेम् पध पम् पध
 अ ग ली बाऽ ऽ त तु म ह म से ऽ नाऽ ऽ ऽ
 ९कऽ ऽ रो ऽ मूम् पप धध साँनि साँ पप धध साँनि साँ साँनि साँ
 १० अ ग ली बाऽ ऽ त तु म पप धध साँनि साँ साँरै मूँ रेसाँ
 साँ ऽ साँरे मूँ रेसाँ रे साँ ऽ रेम् पध पम् पध निसाँ पध साँनि

राग—देशी

प्रकार २ रा, ताल—धमार (मध्यलय)

(इस चीजमें तीव्र धैवतके साथ कोमल धैवतभी लगता है.)

कगवा बोले मोरे अंगन, मोरे घर आये पियरा ॥ धृ० ॥ खीर
 भोजन दूंगी, और डारु गले हारवा ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	कि	ट	कि	ट	धा	ऽ	ता	कि	ट	कि	ट	ता
+					३		०			१		
							क	ग	बाऽ	बोऽ	ऽऽ	ते
							मू	गू	रेसाँ	सानिँसानिँ	सानिँसानिँ	प
मो	ऽ	रे	अँऽ	ऽ	ग	न	मो	ऽ	रे	घ	र	अ
प	ऽ	ध	सानिँ	सा	सा	सा	सा	ऽ	रे	मू	मू	प
येऽ	ऽ	ऽ	पि	यऽ	ऽ	रा						
पम्	प	रे	गू	रेसाँ	रे	सा						

[१९५]

अंतरा

धा	कि	ट	कि	ट	धा	ऽ	ता	कि	ट	कि	ट	ता	ऽ
+					३		०			१			
							खी	र	श	कऽ	र	का	ऽ
							म	प	ध	सांनि	सां	सां	ऽ
मो	ज	न	दूँ	ऽऽ	गी	ऽ	औ	ऽ	र	डा	रुऽ	ऽ	ग
नि	सां	सां	नि	सांनि	ध	प	प	ध्	प	ध्	पम्	प	म्
ले	हा	ऽ	र	वाऽ	ऽ	ऽ							
प	ग्	रे	ग्	रेसा	रे	सा							

राग—मुलतानी

इस रागमें ऋषभ, गंधार, धैवत यह स्वर कोमल है। मध्यम और निषाद यह स्वर तीव्र है। ऋषभ, धैवत आरोहमें वर्जित है। और अवरोहमें संपूर्ण लगते हैं। यह राग दिनके चौथे प्रहरमें गाया जाता है। यह राग करुण और भक्तिसप्रधान है।

आरोह—नी सा ग् म प नी सां
अवरोह—सां नी ध् प म ग् रे सा

जाती—ओडव-संपूर्ण

वादी—पंचम

संवादी—षड्ज

मुख्य अंग—नी सा म ग् प म प म ग् म ग् रे सा

सुरावट, ताल—झपताल

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+									
		३			०		१		
म	ग्	म	प	प	म	ग्	रे	सा	सा
नी	सा	म	ग्	ग्	म	ग्	म	प	प

[१९६]

प	नी	ध्	प	प	म	ग्	मग्	रे	सा ॥
प	म	ग्	म	प	नी	नी	सा	S	सा
नी	सा	गुरे	सा	सा	नी	सा	नी	ध्	प
सा	नी	ध्	प	प	म	ग्	मग्	रे	सा ॥

राग-मुलतानी

ताल-एकताल (मध्यलय)

गोकुल गांवको छोरा रे । “ बरसानेकौ नार ॥ धृ० ॥ इन दोऊन
मोह लई रे । भई “ सदारौंग ”ने हार ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं
+		०		४		०		१		२

गोऽ

मग्

गां	S	S	Sव	को	S	छोऽ	राऽ	रे	S	बऽऽऽ
सा	S	नी	सारे	रे	सा	नीसा	मग्	प	S	पध्मप

ने	S	की	S	नाऽऽऽ	ऽऽ	र	S	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	गोऽ
प	सा	सा	S	पध्मप	मग्	म	ग्	साऽमग्	पमध्मप	मग्

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं
+		०		४		०		१		२

इऽनऽ दोऽऽऊं न

पध्मप मग्मप सा

ल ऽ मो हल ईऽ ऽऽऽ रेऽ ऽऽऽ मऽईऽ सऽदा ऽ ऽऽ
 सा ऽ नी साऽरे रेऽ सानीसा नीधू धूप मगूमप धपसा ऽ नीसा
 रैऽऽ ग नेऽऽ ऽऽ हाऽऽऽ ऽऽ र ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ गोऽ कुल
 गुरैऽरे सा पनीसा नीधू पधूमप मग् म ग् साऽमग् पमधूप मग् रेसा

आस्ताई का बिलंपद

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
										गोऽ	कुल
१	सा	ऽ	ऽ	ऽसा	सा	ऽ	नी	सा	गुरे	ऽ	सा
	सा	नी	धू	प	म	प	नी	सा	मग्	म	गोऽ
											कुल
२	नी	सा	गुरे	सासा	नी	सा	म	ग्	म	ग्	मग्
	म	ग्	म	प	म	ग्	रे	सा	मग्	प	गोऽ
											कुल
३	रे	सानी	सा	ऽसा	नीसा	मग्	म	ग्	गूम	प	मम
	सा	मग्	म	प	म	ग्	रे	सा	गूमप	ऽ	गोऽ
											कुल
४	सा	मग्	प	ऽप	धूधू	पम	प	मग्	गूम	प	मग्
	नी	मग्	पम	धूप	नीधू	पम	म	ग्	गूम	पम	गोऽ
											कुल
५	प	ऽ	ऽ	ऽप	मग्	पम	मगूपम	धूपनी	ऽनीसा	नीधूप	गोऽ
											कुल
६	गांऽ	ऽऽ	ऽ	ऽव	कोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	छोऽराऽ	रेऽऽऽ	गोऽ
	नीसा	मग्	प	ऽप	नीसा	मग्	प	प	धूधूपम	पऽमग्	मग्
											रेसा

७ गां	डा	डा	डा	को	डा	डा	डा	छो	डा	रा
सा	डा	डा	डा	म	प	मगु	म	प	नी	नीध
बर	सा	ने	की	ना	डा	र	डा	डा	डा	गो
पधु	प	मगु	म	गुम	प	मगु	म	गु	रेसा	मगु
८ सा	पधु	प	डा	प	नीसा	नीध	प	धुधुपम	प	गो
९ गां	डा	को	डा	छो	डा	रा	डा	डा	डा	गो
पसा	नीध	पधु	पम	गुम	गुरे	सा	डा	नीसा	प	मगु
१० गां	डा	को	डा	छो	रा	रे	डा	बर	साने	गो
नीसा	मगु	पम	धुप	सा	नीध	प	मगु	पधु	पम	मगु

अंतरेका बिलंपद

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी
+		०	०४			०		१		२

१ सा	नीध	पम	गुरे	नीसा	गुम	पनी	सा	इडा	दोडा	ऊं न
२ सा	डा	सा	नीध	प	मगु	म	गु	सा	गुम	प
म	मप	नी	डा	पनी	सांनी	धुप	प	इडा	दोडा	ऊं न
३ सा	डा	सांनी	धुप	मगु	रेसा	नी	धुप	मगु	रेसा	प
मगु	रेसा	म	गुरे	सा	नी	मगु	प	इडा	दोडा	ऊं न
४ साम	गु	पधु	प	नीसा	नी	सागुरे	सांनी	नीध	पडा	मगु
धुप	सा	नी	धुप	नीनी	धुप	धुप	गुमप	इडा	दोडा	ऊं न

५ गुम (पनी) (सांम) ग् रैसा (पम) गुम धुप (मगु) पम धुप (सांनी)
 ध् प (मगु) (मगु) (मगु) रैसासा रैसा ऽ इऽनऽ दोऽऽऊं न (मिल)
 ६ नीसा (नीसा) (मगु) रैसा (नीध्) पम (गुरे) नीसा इऽनऽ दोऽऽऊं न (मि)
 ल ऽ मो हल ईऽ ऽऽऽ रेऽ ऽऽऽ मऽईऽ सऽदा ऽ ऽऽ
 ७ सा ऽ ऽ ऽ गम (पनी) (सांम) रैसा रै सांनी धुप (मगु)
 म ग् गुम (पसा) ऽ ऽ गम (पसा) इऽनऽ दोऽऽऊं न (मि)
 ८ सा ऽ ऽ ऽ गम (पनी) सा ऽ नीसा (मगु) रै सा
 नी सा (गुरे) सा नी सा नीध् पम इऽनऽ दोऽऽऊं न (मि)
 ल ऽ मो हल ईऽ ऽऽऽ रेऽ ऽऽऽ मऽईऽ सऽदा ऽ ऽऽ
 ९ इन दोऽ ऊंन मिल मोह लई रेऽ ऽऽ इऽनऽ दोऽऽऊं न ऽ
 नीसा (मगु) मप नीसा नीसा (मगु) रैसा नीध् पध्मप मगुमप सा ऽ
 १० मिऽ लऽ मोऽ हऽ लऽ ईऽ रेऽ ऽऽऽऽ इऽनऽ दोऽऽऊं न (मि)
 सांम रैसा (मगु) मप (मगु) रैसा नीसा नीध्पप पध्मप मगुमप सा सा

राग—मुलतानी

ताल—त्रिताल (मध्यलय) .

सुन्दर सुरजन मतवाला । जिन पियो प्रेम रस प्याला ॥ धृ० ॥ प्रथम
 पदम दामिनि सी दमके । गुरु हिरनकी खानि । जगमग ज्योत महेलके भीतर
 देखे दरस दिवानी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
३ ० १ +

ॐ द र सु र ज न म त वा ॐ
मप धूप म ग् म ग् रे सा नी सा प ॐ
ला जि न पि यो ॐ प्रे ॐ म र स प्या ॐ
म ग् ग् म प नी सा नी सा रे सा नी ध् प प ॐ
ला सुं ॐ द र सु र ज न म त वा ॐ
म ग् प ॐ म ग् म ग् रे सा नी सा प ॐ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
० १ + ३

प्र थ म प द म दा ॐ मि नि ॐ सी द म के
प ध् प ध् प म ग् म प नी ॐ नी सा रे सा
गु रु हि ॐ र न की ॐ खा ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नि
नी नी नी ॐ नी नी सा ग् रे सा ॐ नी पनी सानी ध्
ज ग म ग ज्यो ॐ त म हे ल के ॐ भी ॐ त
प म प ध् प ॐ म ग् म प नी ॐ सा ॐ सा
दे ॐ खे ॐ द र स दि वा ॐ ॐ ॐ नी ॐ सुं
ग् ॐ रे सा नी नी सा रे सा ॐ नी ध् प म ग्
द र सु र ज न म त वा ॐ ॐ ॐ ला ॐ सुं
म ग् म ग् रे सा नी सा प ॐ मप धूप म ग्

आस्ताईकी तानें

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

३

०

१

+

५ ५ सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त वा ५' ५ ५ ५

१ ला ५ सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त धु धु पम पप मगु

२ मगु रेसा सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त मगु पम धुप नीनी

३ धुप मगु सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त गम पधु ग प

धु धु पम प मगु मम ५ म ग ५ सा मगु पम धुप सा मगु मप धुप

४ म ग सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त नीसा गम पनी सांनी

धुप मगु रेसा नीसा मगु प सु र ज न म त वा ५ ५ ५ ५

५ ला ५ सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न नीसा नीधु पम गम पप मगु

मम पप सासा मगु मम पप सु र ज न म त वा ५ ५ ५ ५

६ ला ५ सुं ५ ५ ५ द र नीसा गम पनी सा रेसा नी धुप मगु रेसा सासा गम

७ पनी सा सुं ५ ५ ५ द र सु र ज ५ न ५ म ५ त ५ ५ ५ ५ वाळा ५ जि न पि ५ वो

धुप प म ग मगु पम धुप सांनी रेसा रेसा नीसा ५ नी धुनी ५ धु

प्रेम ५ र ५ स प्याळा ५ ५ ५ ५ सुं द र सु र ज न म त वा ५ ५ ५ ५

पधु ५ प ५ म पम गम पनी सा प मगु मगु रेसा नीसा प ५ मप धुप

८ ला ५ सुं ५ ५ ५ द र सु र ज न म त वा ५ ५ ५ ५ ला ५

म ग मप धुप म ग म ग रे सा नी सा गम पनी सा ग रेसा

नीधु पम गम पनी सांनी धुप मगु गम पनी धुप मगु गम पम मगु रेसा ५

१ गुम पनी सुंऽ ऽऽ द र सु र ज न म त वा ला गुम
 सोम गुरे सोनी धुप रेसा नीधु पम सोनी धुप मगु नीधु पम गुरे सा धुप
 २० मप सा सुंऽ ऽ द र सु र ज न म त वाऽ ऽऽ ऽऽ
 धुप प म गु गु म प नी सा म गुरे सोनी धुप
 रेसा गुम पनी धुप मगु गुम पनी सोनी धुप मगु गुम पनी सोगु रेसा नीधु
 गुरे सा सुंऽ ऽऽ द र सु र ज न म त वा ऽ ऽऽ

अंतरेकी ताने

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 प्र थ म प द म दा ऽ मि नि ऽ सी द म के ऽ
 १ प्र थ म प द म दा ऽ मि नि ऽ पधु पम गुम पनी सा
 २ प्र थ म प द म गु म सोनी धुप मगु रेसा मगु पम धुप सा
 ३ प्र थ म प द म गुम पनी सोगु रेसा नी रेसा नी धुप धुप मगु
 ४ प्र थ म प द म प मगु रेसा नी धुप रे सोनी धुप मगु
 प्र थ म प द म दा ऽ मि नि ऽ सी द म के ऽ
 ५ सो रे नी सो पधु मप गुम गु सा रे नी सा गुम पम गुम पनी सा गुम पनी सा
 ६ गुम पनी पनी सो रे सोनी धुप नी धुप मगु म गुरे सा नी सा गुम पनी सा
 ७ प्र थ म प द म दा ऽ मि नि ऽ सी सो नी पनी सो रे सोनी
 धुप नीधु पम गुम पम गुम गुरे सा गुम गुम पनी पनी सा गुम पनी सा
 ८ प्र थ म प द म दाऽ ऽऽ ऽऽ मिऽ निऽ सीऽ दऽ मऽ केऽ
 मगु मगु रेसा नीधु नीधु पम सो रे सोनी पनी

१ प्र थ म प द म दा ऽ सा मगु पम गुम पनी सा पनी सागु
 रेसा नी रेसा नी पनी सा नीधु पम गुरे सा पनी सा नीधु पम गुरे सा रेसा
 १० प्र थ म प द म दा ऽ मि नि ऽ सी गुगु रेसा रेरे सा नी
 सासा नीधनी नी धुप धुधु पम पम गुम गुरे सा नीसासाम गुप मधु पनी धुसा

राग—सुलतानी

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

गोविंद सो प्रीत कीनी । तबही मन हटकी ॥ धृ० ॥ अबतो बात फैल
 गई । जैसी ब्रिज बटकी ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
गोऽ	ऽ	बिं	द	सोऽ	ऽ	प्री	ऽ	त	की	ऽ	नी
गुम	प	म	गू	गुम	प	म	गू	रे	सा	ऽ	सा
त	ब	ही	ऽ	म	न	ह	ट	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
म	म	प	ऽ	म	ध्	प	म	मगु	पम	धुप	नी

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
अ	ब	तोऽ	बा	ऽ	त	फै	ऽ	ल	ग	ईऽ	ऽ
प	प	धुप	म	गू	म	प	नी	सा	रे	रेसा	ऽ

जै ऽ सी ऽ त्रि ज ब ट कीऽ ऽऽ ऽऽ
 नी ऽ सा रे सा नी धू प मगु पम धूप

राग-मुलतानी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

सुंदर सुरजन वा साईरे । साईरे मन भाईरे ॥ धृ० ॥ निसदिन
ध्यान धरत है । आन मिले रब साईरे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ सुंऽ ऽऽ द र सु र ज न वा ऽ सा ऽ ईऽ
 ऽ ऽ मप धूप म ग् म ग् रे सा सा ऽ नी सा गु
 रे ऽ ऽ सा ऽ ई ऽ रेऽ ऽऽ मऽ न भाऽ ऽऽ
 म ग् ऽ ऽ प ऽ प ऽ मप धूप मगु म गुम पनी सा
 रेऽ ऽ सुंऽ ऽऽ द र सु र ज न वा ऽ सा ऽ ईऽ
 पम ग् मप धूप म ग् म ग् रे सा सा ऽ नी सा गु
 रे ऽ ऽ
 म ग् ऽ ऽ

अंतरा

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ ऽ ऽ नि स दि न तु म रो ऽ घ्या ऽ न
 ऽ ऽ ऽ ऽ प प प प प म ग् म प नी नी

र त है ऽ आ ऽ न मि ले ऽ र ब सा ऽ ई ऽ ऽ
 सा सा सा ऽ नी ऽ नी नी सा ऽ सा रे सा ऽ नी ध्रु प
 रे ऽ सुं ऽ ऽ द र सु र ज न वा ऽ सा ऽ ई ऽ ऽ
 म ग् मप ध्रुप म ग् म ग् रे सा सा ऽ नी सा गुं प
 रे ऽ ऽ ऽ
 म ग् ऽ ऽ

राग—मुलतानी

ताल—एकताल, तराना (जलदलय)

दीं तदीं तों तनन दिर दिर तदि यनरे । तदि यनरे देरेना दीं तदीं
 तों तन नेते तन देरेना दीं तदीं । देरेना देरेना दिर दिर तदानी ॥ ध्रु० ॥
 ओदानाते तेले ताना तुं दिर तदीं दीं । तनन देरेना दीं तदीं तन देरेना ।
 तदियनरे दीं तदानी । धित् धिना धुमकिट तक् नक् तिरकिट तक् धागि
 तिरकिट तक् ष्णान् तक् ष्णान् तक् धा ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
०	०	०	४	०	१	१	२	२	२	२	२
दीं	ॽ	तऽ	दीं	ॽ	तों	ॽ	त	न	न	दिर	दिर
प	ॽ	ध्रुप	म	ग्	रे	सा	रे	नी	सा	गुगु	मम
त	दि	य	नऽ	रे	ॽ	त	दीं	य	न	रे	ॽ
प	सा	नी	ध्रुप	म	ग्	ग्	म	ग्	रे	सा	ॽ
दे	रे	ना	दीं	ॽ	त	दीं	ॽ	तों	ॽ	तऽ	न
नी	सा	ग्	रे	सा	रे	सा	ॽ	नी	सा	मग्	म

[२०६]

ने	ते	त	न	दे	रे	ना	दीं	ऽ	त	दींऽ
प	म	ग्	म	प	नी	सा	रै	सा	नी	धुप
द्वे	ऽ	ना	द्वेऽ	ऽ	ना	दिर	दिर	त	दा	ऽ
सा	ऽ	नी	धुप	प	म	गुग्	मम	गु	रै	सा

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं
+		०		४		०		१		२
दीं	ऽ	तऽ	दीं	ऽ	ऽ	ओ	दा	ना	ते	ते
प	ऽ	धुप	म	ग्	ऽ	प	म	ग्	म	प
त	ना	तुं	दिर	त	दीं	ऽ	दीं	ऽ	त	न
ग्	म	प	नीनी	नी	सा	ऽ	सा	ऽ	रै	सा
दे	रे	ना	ऽ	ऽ	दीं	ऽ	त	दीं	ऽ	त
ध्	प	म	ग्	ऽ	रै	सा	म	ग्	ऽ	नी
देऽ	रे	ना	त	दी	य	न	रे	दींऽ	ऽ	त
मेग्	म	प	म	ग्	रै	सा	सा	धुप	प	प
ऽऽ	नीऽ	धित्	धीं	ना	धुम	किट	तक्	नक्	तिर	किट
धुप	मग्	सासा	नी	सा	मग्	मम	पप	पप	सासा	नीनी
धागि	तिर	किट	तक्	ध्वां	ऽन्	तक्	ध्वांऽ	ऽन्	तक्	धा
पप	धुध्	मम	पप	सा	ऽसा	नीनी	धुप	ऽप	पप	म

राग-पूर्वी

इस रागमें ऋषभ, धैवत यह स्वर कोमल लगते हैं । गन्धार, मध्यम और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं । मध्यम कोमल होकर अवरोहमें वक्र तरहसे लगता है । यह राग दिनके चौथे प्रहरमें गाया जाता है । यह राग श्रृंगार रसप्रधान है ।

आरोह—सा रे ग म प ध् नी सा

अवरोह—सा नी ध् प म ग म् ग रे सा ।

मुख्य अंग—ग रे ग, म प ध् प म प, ग म् ग, रे ग, म ध् म ग रे ग रे सा

| जाती—संपूर्ण

| वादी—गंधार

| संवादी—निषाद

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

०	१	+	३
सा नी सा ग रे ग म ध् म ऽ प म ग म् ग ऽ			
ग ग म ध् नी ध् प म ग म ग रे ग रे सा ऽ ॥			
म म ध् ध् म म ध् ध् सा ऽ सा रे सा ऽ सा सा			
नी रे ग् रे नी रे नी ध् प ऽ प म ग म् ग ग			
नी नी ध् प ध् ध् प म ग म ग रे ग रे सा सा ॥			

राग-पूर्वी

ताल—तिलवाडा (मध्यलय)

सल हे कार्कुजा मन खराब कुजा ॥ ध्र० ॥ बूबी तफावत रे । अस्तुजा
अस्ताब कुजा ॥ १ ॥

[२०८]

आस्ताई

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं

१ + ३ ०
 S S सल Sहे का S S कुं जा S S म न S S S S
 S S रेग मरे ग S S रे सा S S सासानीनी S S
 S S S S बकु जा S S S S S S S S S S
 मरे गरे गमप पध प S S S धू म ग मू ग S S
 S S सल Sहे का S S कुं जा S S S S S S S S
 रे सा रेग मरे ग S S रे सा S S S सानी रे सा S

अंतरा

धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं ता तुक धीं धीं

१ + ३ ०
 S S सल Sहे का S S कुं जा S S S बू बी S S
 S S रेग मरे ग S S रे सा S S S म ग S S
 फा S S S S वत रे S S S S S अ स्तु जा S S S
 मधनीसा S S सारे सा S S S S S नी धू नी S S
 स्ता S S S बकु जा S S S S S S S S S S
 धू नी धनी रे नी धू प S S S धू म ग मू ग S S
 S S S सल Sहे का S S कुं जा S S S
 गरे सा रेग मरे ग S S रे सा S S S

आस्ताईका बिलंपद

घा	धा	धीं	धीं	धा	तुक	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता	तुक	धीं	धीं
१			+			३						०			
१	१	सल	डहे	का	१	१	कुं	जा	१	१	म	न	१	ख	रा
१	१	सल	डहे	का	१	१	कुं	जा	१	१	१	नी	१	रे	१
ग	१	१	म	रे	१	ग	१	ग	१	१	रे	सा	१	१	१
२	१	सल	डहे	का	१	१	कुं	नी	रे	धु	नी	रे	ग	१	१
ग	१	रे	१	ग	१	१	म	ग	१	रे	१	ग	रे	सा	१
३	१	सल	डहे	का	१	१	कुं	नी	रे	ग	म	ग	१	१	रे
ग	१	म	१	ग	१	१	१	रे	ग	रे	म	ग	१	१	१
४	१	सल	डहे	ग	रे	म	१	ग	१	१	१	म	रे	नी	रे
५	ग	रे	सल	डहे	का	१	१	कुं	जा	१	नी	धु	नी	रे	नी
प	१	१	१	म	धु	नी	रे	धु	नी	रे	ग	ग	रे	सा	१
६	१	सल	डहे	ग	म	प	धु	म	प	म	प	म	प	ग	म
ग	ग	ग	रे	ग	म	धु	म	ग	रे	ग	१	१	रे	सा	१
७	१	सल	डहे	ग	म	प	धु	प	मे	ग	रे	ग	म	प	धु
म	प	म	प	म	ग	म	१	ग	म	प	धु	प	म	ग	म
८	ग	१	सल	डहे	ग	म	धु	नी	धु	१	प	१	म	धु	प
ग	१	ग	म	ग	रे	म	ग	प	म	धु	म	ग	रे	ग	म
९	ग	१	सल	डहे	का	१	१	कुं	जा	१	म	न	ख	रा	१
नी	रे	रे	म	रे	प	धु	प	धु	नी	धु	नी	नी	धु	नी	प
रा.सं.	(३)	१४													

१० ऽ ऽ सल ऽहे का ऽ ऽ कुं जा ऽ ऽ ऽ ग रे धू
 म धू नी धू नी नी धू धू प प म म ग ग रे
 म धू प म ग म धू नी धू प मप पम ग म गम
 ११ ऽ ऽ सल ऽहे का ऽ ऽ कुं जा ऽ ऽ ऽ सऽ लऽ ऽऽ हे
 (गम) (रेग) (रेम)

का ऽ ऽऽऽऽऽऽ ऽ ऽकुं जा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽम नऽऽ ऽख रा
 म प धूधूपम पम ग ऽम ग ऽ म धू नी रेनी धूपप मग म

कुऽ जा

मरे ग

१२ ऽ ऽ सल ऽहे का ऽ ऽ कुं जा ऽ ऽ ऽ सऽ ल ऽहे
 (रेग) (मरे) ग ऽ ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ मधू नी नीधू
 ऽकुं जा ऽम न ऽ ऽ ऽ ख ऽ राऽ ऽ ब कु जाऽ ऽऽ
 ऽधू नी रेनी धू नी धू प म धू नीधू नी म धू नीधू नी
 ऽऽऽऽऽ सल ऽहे का ऽ ऽ कुं जा ऽ ऽ ऽ
 पमगम ग रेग मरे ग ऽ ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ

अंतरेका बिलंपद

ता तुक धीं धीं धा धा धीं धीं धा तुक धीं धीं धा धा तीं तीं
 ० १ + ३
 बूँ बी ऽ त फाऽऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 १ बूँ बी ऽ त फाऽऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ म ऽ ग
 म ऽ धू ऽ प ऽ म धू नी धू धूनी सा नी धू सा

२ बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ नी रे सा ऽ
 नी धू नी रे नी धू प ऽ म धू नी रे धू रे सा ऽ
 ३ बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ ऽ वत रे नी धू प म धू नी रे
 ग रे सा ऽ नी रे सा ऽ म धू नी रे म धू नी सा
 ४ बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ नी रे ग रे नी रे धू नी धू रे
 नी धू प म ग म धू नी रे धू नी धू नी धू सा ऽ
 बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ५ ग रे रे सा सा नी नी धू धू प प म म ग म ग
 रे ग रे म ग धू धूप नी धू सा नी रे सा ग रे सा
 ६ म धू नी रे नी धू प प धू पम ग म धू नी रे ग
 ७ बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ ग धू प म
 ग म ग ऽ म नी धू प धू म प म ग म ग ऽ
 धू रे नी धू नी धू प म धू म प म ग म ग ऽ
 बू बी ऽ त फाऽऽऽ ऽ ऽ वत रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 ८ नी ऽ धू ऽ ग ऽ रे ऽ म ऽ ग ऽ ग रे ग ऽ
 ग रे सा नी रे ग रे ग रे सा नी रे सा ऽ नी धू नी रे सा
 ९ रे नी धू धू प म ऽ प धू धू पम प म ग नी धू नी
 रे सा नी रे ग ग रे सा ग म ग रे सा नी धू पम ग म ग
 १० बू बी ऽ ऽ त फा ऽ ऽ ऽ ऽ व त रे ऽ ऽ
 धू नी धू रे नी नी धू ऽ नी रे ग रे ग रे ऽ सा ऽ

११ बुँ बी ऽ ऽ त फा ऽ ऽ ऽ व त ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ
 रे ग रे म ग रे सा नी धू नी धू प ऽ म धू नी रे सा सा

राग-पूर्वी

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

मथुरा न जाओ मोरा कान्ह । मना करें गोपियां ॥ धृ० ॥ गोकुल के
 मथुरा तेरी । ब्रज में मची धूम धाम ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं
०			१				+				३			
म	थु	रा	न	जा	ओ	मो	रा	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	रे	नी	रे	ग	म	पधू	मप	ऽ	म	ग	म	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ना	क	रे	गो	ऽ	ऽ	पि	यां	ऽ	ऽ
म	रे	ग	ऽ	धू	म	ग	रे	ग	ऽ	ऽ	रे	सा	ऽ	ऽ
म	थु	रा	न	जा	ओ	मो	रा	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	ग	रे	नी	रे	ग	म	पधू	मप	ऽ	म	ग	म	ग

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं
०			१				+				३			
गो	ऽ	कु	ल	ते	ऽ	रा	ऽ	म	थु	रा	ऽ	ते	ऽ	री
म	धू	सा	सा	नी	रे	सा	ऽ	धू	नी	धूनी	नी	धू	ऽ	प
ब्र	ज	ऽ	में	ऽ	म	ची	ऽ	ऽ	धू	ऽ	म	घा	ऽ	म
प	धूप	म	ग	ग	म	धू	ऽ	धूनी	रे	नी	धू	प	ऽ	प

ऽ ऽ ऽ ऽ म ना क रे गो ऽ ऽ पि यां ऽ ऽ ऽ
 ध् म ग ऽ ध् म ग रे ग ऽ ऽ रे सा ऽ ऽ ऽ
 म थु रा न जा ओ मो रा का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न्ह ऽ
 म ग रे नी रे ग म पध् मप ऽ म ग म् ग ऽ

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 म थु रा न जा ओ मो रा का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न्ह ऽ
 १ म थु रा न जा ओ मो रा नीरे गम पम पम ग म् ग रे ग
 २ म थु रा न जा ओ मो रा नीरे गम पध् पम गम पम गम् ग
 ३ म थु रा न जा ओ मो रा नीरे गम रेग मप गम पध् पध् मप
 ४ म थु रा न जा ओ मो रा ध्नी सारे गम पध् नीध् पम गम् ग
 म थु रा न जा ओ मो रा का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न्ह ऽ
 ५ ध्नी सारे गम पध् नीसा नीध् पम ग रे ध्नी सारे गम पध् नीसा नीध् पम ग रे
 ६ म थु रा न ध्नी सारे गम पध् नीसा नीध् पम ग रे नीरे गम पध् नीसा
 ७ म थु रा न नीरे गम पध् पध् पध् ऽप मप ऽप गम् गम् गम् ग
 ८ म थु रा न नीरे गम पध् नीसा नीध् पम ग रे गम पध् पध् मप मप
 ९ म थु ऽ रा ऽ न जा ऽ ऽ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ ऽ ऽ मो ऽ ऽ ऽ रा
 पध् पम गम् ग नीरे गम ध्नी सा नीध् पम ग रे सा ध् पम गम् ग
 म थु रा न जा ओ मो रा का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ न्ह ऽ

१० मऽ थुऽ राऽ नऽ जाऽ ओऽ मोऽ राऽ काऽ न्हऽ मऽ नाऽ कऽ रेऽ गोपि
 रेग गरे गम मग मप पम मध धप धनी नीध पध धप मप मप गम

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ म थु राऽ ऽ ते ऽ री ऽ

१ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ धप मग मध नीरै सा नीधप मग मग

२ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ सा नीधप मग रेसा नीरेगम पध नीध

३ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ धप मग नीध पम धनी सा रे धनी सा

४ गो ऽ कु ल तेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ रा तेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ रा

पध पम गम धनी सा रे सा पध पम गम धनी सा रे सा

गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ म थु राऽ ऽ ते ऽ री ऽ

५ नीरे गम पध पम गम पध पध पम गम धनी धनी धप मध नीसा नीध प

६ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ नीरै गम पध नीसा रेग गरे सा सा

७ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ नीरे गम धनी रेग रेसा नीधप मग

सा नीध पम ग नी धप मग ध पम गम ग मम रेग मध नीरै सा

गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ म थु राऽ ऽ ते ऽ री ऽ

८ धप पम पम गम ग नीरे गम गम ग नीरे गम पध नीध नीध पम प

९ गो ऽ कु ल ते ऽ रा ऽ गम धनी रेग रेग मग रेसा नीरै सा

१० ध पम पम गम ग सा नीध पम गम ग ग रेसा नीध पम गम

नीरे गम धनी सा नीरे गम धनी रेग नीरे गम धनी रेग मग रेसा नीध

११ गोऽ ऽऽ कुऽ ल तेऽ ऽऽ ऽऽ रा मथु रा तेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ री
 गम धुनी रेसा नीधु सा नीधु पम गम् ग नीरे ग रेसा नीधु पम गम् ग
 १२ गो कुऽ लऽ तेऽ राऽ ऽऽ ऽ म थुऽ राऽ ऽऽ ते रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 ग रेसा नीधु पम गम् ग रे सा म ग रेसा नी धुप सा नीधु पम ग रे सा

राग-पूर्वी

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

कगथा बोले मोरे अटरिया । अटरिया सगन भईलवा ॥ सखेरी दुज भुज
 पलखन वारो ॥ धृ० ॥ अवन करो तुम मोरे पिहरवा । डारे गले फुलनके
 हरवा । सखेरी दुज भुज पलखन वारो ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 क ग वाऽ ऽऽ बो ऽ ले ऽ मोऽ ऽ रे अ ट रि या ऽ
 ग ग गम् पम् ग रे ग म गम् प प म ग म् ग ऽ
 अ ऽ ट रि या ऽ ऽऽ ऽ स ग ऽन म ई ल वा ऽ
 रे ग म ध् म ग मरे ग रे सा ऽसा सा नी रे सा ऽ
 स खेऽऽ ऽ री दु ज भु ज प ल ख न वाऽ ऽऽ रो ऽ
 रे रेसानी ऽ रे ग म प प प ध् प ध् पम गम् ग ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 अ व न क रोऽऽ तु म मोऽऽ रे पि ह र वा ऽ
 ग ग ग ग धूमऽ ध् म धुनी सा सा सा नी रे सा ऽ
 डा ऽ र ग ले ऽ कऽ ल न केऽऽ ह र वा ऽ
 नी ऽ नी नी नी ध् नी ध् नी नी धुनी रे नी ध् प ऽ
 सऽ खे ऽ री दु ज भु ज प ल ख न वाऽऽऽ रो
 धुप म ऽ ग म म ध् ध् रे नी ध् नी धुप मग म ग

राग-पूर्वी

तराना, ताल—एकताल (जलदलय)

ना दिर दानी तन देरेना तों तदानी । तन देरेना तन देरेना देरेना
 दी । तदी तनन देरे तदारे तदी तान देरे तदारे तदारे दानी ॥ धृ० ॥ ना
 दिर दिर दानी तदानी तों तननननन । देरेना देरेना दी तदी तान देरे तन
 देरे । तदारे तदी तननन तदी तननन तदी तनन ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 ना दिर दा नी त न दे रे ना तों ऽ त
 नी रेरे ग ग म् ग म् रे ग प ऽ ध्

राग-मारवा

इस रागमें रिषभ कोमल लगता है और गंधार, मध्यम, धैवत, निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। धैवत तीव्रतर अर्थात् तीव्रसे चढ़ी है। इसीलीये राग पुरियासे अलग रहेता है। इस रागमें पंचम स्वर वर्ज है। शामके समय यह राग गाया जाता है। गंभीर रसप्रधान यह राग है।

आरोह—नी रे ग म ध नी सा

अवरोह—सा नी ध म ध म ग रे सा

मुख्य अंग—नी रे ग म ध म ध ऽ म ग रे ऽ ग म ग रे सा

जाती—षाडव-षाडव

वादी—धैवत

संवादी—रिषभ

सुरावट, ताल—एकताल (मध्यलय)

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	:
म	म	ध	म	म	ध	म	ग	रे	ऽ	ग	म
ध	म	ग	रे	सा	ऽ	रे	रे	रे	ध	ध	ध
ग	ग	ग	रे	रे	ग	म	ध	म	ग	रे	सा ।
म	ध	म	ध	सा	ऽ	सा	ऽ	नी	नी	रे	ऽ
रे	रे	रे	ध	ध	ध	ग	ग	ग	रे	रे	रे
नी	ऽ	रे	ऽ	नी	ध	म	ग	रे	ऽ	ग	म
ध	म	ध	ऽ	म	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा ॥

राग-मारवा

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

काहे चितवन है शाम हमरी और बार बार मुसे कहत है मुख मोर ॥ धृ० ॥ तुमसे सगर एकहुं नाहीं हमसे लाख करोर ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म ह म री ऽ
 ध नी सा ग रे ग रे ऽ सा ऽ ऽ सा नी नी रे ऽ
 औ ऽ ऽ र बा ऽ ऽ र बा ऽ ऽ र मु से ऽ क
 सा ऽ ऽ सा सानी नी ऽ रे ग ऽ ऽ म ध नी ऽ म
 ह त है ऽ ऽ ऽ मु ख मो ऽ ऽ र मो ऽ ऽ र
 म ध ग ऽ ऽ ऽ धम ध ग म रे रे सा ऽ ऽ सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 तु म से ऽ स ग ऽ र ए क हूं ऽ ना ऽ ही ऽ
 सा नी ध ऽ म ग ऽ रे सा सा सा ऽ सा रे सा ऽ
 ह म से ऽ ला ऽ ऽ ख क रो ऽ ऽ ऽ ऽ र
 सा सा ग ऽ म ध नी रे नी ध म ग रे सा रे ग

आस्ताईका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म नी ध नी रे
 ऽ ऽ ग रे ऽ ऽ नी रे नी ध धम ध सा ऽ ऽ ऽ
 २का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म धम ध नी रे
 नी ध नी रे ग रे ऽ ऽ ग म ग रे सा ऽ ऽ ऽ

३का हे चि त व न है ऽ ग ऽ ऽ रे नी ऽ रे ऽ
 धम ध नी रे नीध सा रे ऽ ग ऽ रे ऽ ग रे सा
 ४का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म रे नी रे
 ग ऽ ग रे ग म ग रे ग म ध म ध म ग
 ५का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म ध म ध
 म ध म म ग रे ऽ नी ऽ रे ऽ गम ध धम रे ग रे सा
 ६का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म नी ऽ रे
 ध म ध ऽ म ऽ ध ऽ म ग रे ग रे ऽ सा
 ७का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म ऽ ह ऽ म री
 सानी रे ग रे ग म धम ध धम ध म ग रे गम ग रे सा
 का हे चि त व न है ऽ शा ऽ ऽ म ह म री
 ८का हे चि त व न शा ऽ म ऽ ह ऽ म ऽ शी
 धम ध म ध म ध म ग रे ग रे नी रे नी रे नीध धम नीध सानी रे

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 तु म से ऽ स ग ऽ र ए क हूं ऽ ना ऽ ही
 १ग ऽ रे ऽ ग म ध म ध म ध ऽ म नीध सा
 २नी रे ग म ध म ध ऽ म नी ध म ग रे सा
 ३ग म ध ऽ म ध नी रे नी ध म ध मं ग रे सा
 ४तु म से ऽ स ग ऽ र ग ऽ म ध म ध नी
 ऽ नी रे ऽ नी रे नीध म ग रे धम ध म ग रे ऽ ग रे सा
 तु म से ऽ स ग ऽ र ए क हूं ऽ ना ऽ ही

५ ग म ध नी रे S नी ध म ध म ध नी रे सा S
 ६ तु म से S सा S नी ध म ध मध मग मध मग मध नी रे
 तु म से S स ग S र ए क हूं S ना S ही S
 ७ तु म से S स S S S S ग S र ए S S क S हूं ना S ही
 सा नी ध S धम ध मनी धम ग रे सा धम ध रे नी रे ग रे सा
 ८ तु म से S स S S S ग S S र S S ए S क S हूं ना S ही S S S S
 म ध नी रे नी रे नी ध धम ध मध मग मध नी रे नी ध मग धम ग रे सा

राग-मारवा

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

कास कुंवरवा जागिल हमरो मोरे निंदयन नाय न घर कर वाररे ॥धृ०॥
 मौमद सा पिया सदा रंगिले प्रेम पिहरवा नायन अपरम उपर तुमपर वाररे ॥१॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 S का S स कुं व र वा S जा S गि ल ह म रो S
 S ध S म ध म ग रे सा सा S रे ध नी रे रे सा सा
 S S S S S S S S S मो S रे नि द य न
 नी रे नी ध म ध म ग S नी S रे ग ग म म
 ना S S य न घ र क र वा S S र रे S S S S
 धनी रे नी ध म ध म ग रे ग S रे गम धम ध S

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ मौं म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ऽ ग ग ग म ऽ ध ध सा सा ऽ सा नी रे सा ऽ
 ग्रे ऽ ऽम पि ह र वा ऽ ना ऽ य न अ प र म
 नी रे ऽ रे रे नी ध म ध म ध म ध म ग रे सा
 छ ऽ प र तु म प र वा ऽ ऽ र रे ऽ ऽ ऽ
 नी ऽ रे रे ग ग म म रे ऽ ऽ रे गम धम ध ऽ

आस्ताईकीं तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल ह म रो ऽ
 १ ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ नीरे गम धम गरे नी रे सा ऽ
 २ ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ नीरे गम धम धम गरे गम गरे सा
 ३ ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ मध नीरे गम धनी धम गरे नी रे
 ४ ऽ का ऽस कुं व र गम धम धम ध धम गरे गम धम गरे नी
 ५ रे का ऽस कुं व र नीरे गम धनी सा नी धम गरे गम धम धम ध
 ऽ का ऽस कुं व र गम धम धम गरे गम धनी धम गरे गम धम
 ६ ध का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल नीरे गम धनी सा नी
 धम गरे सा ध मध मग रे सा नी धध मध मग रे सा गम धम ध ध
 ७ ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल नीरे गम धनी रे

नीध मग रेसा सा नी धम गरे सा ध मग रेसा सा गम धनी धम गरे
 रे का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल ह म रो ऽ
 ८ गग रेरे गम धध धध मग रेरे रे नीनी धध धध मम गग रेरे गम धम
 ९ गरे का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ ऽस ऽस गि ऽ ल ऽ ह ऽ म ऽ रो ऽ
 गम धनी रेरे नीध मध मग रेसा धम
 १० ध का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल ह ऽ म ऽ रो ऽ ऽस
 रेरे गग मम धध
 ऽस ऽस ऽस ऽस का ऽस कुं व र वा जा ऽ गि ल ह म रो ऽ ऽस ऽस ऽ
 मम धध नीनी रेरे नी रे नी नी नी ध ध मध मग रे रे गम धम गरे सा
 ऽ का ऽस कुं व र वा ऽ जा ऽ गि ल ह म रो ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ मौं म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 १ ऽ मौं म द सा ऽ पि या नीरे गम धनी रे नीध मग रेसा नीरे
 २ ऽ मौं म द सा ऽ पि या गम धनी रे नीरे नीध मग धम गरे
 ३ सा मौं म द सा ऽ पि या नीरे गम धनी रेग रे नी रे मध मग
 रेसा मौं म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ४ ऽ मौं म द सा ऽ मध नीरे नीध मग रेसा ग रेसा नीध मग रेसा
 ५ ऽ मौं म द सा ऽ मध नीरे गरे नीध मग रेसा गम धनी रे नीरे
 ऽ मौं म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ

६ नी नी रे नी रे नी ध म ध म ध म ग रे रे ग म ध ग म ध नी म ध नी रे नी
 ५ मौ म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ७ ध म ध नी रे ग रे नी रे नी ध म ध म ग रे रे ग ग म ध ध नी नी रे म ध
 रे रे ग ग म ध ध ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ८ मौ ऽ म द सा पि या ऽ स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ ऽ ऽ मौ म द सा
 नी ऽ रे नी ध म ध म ध म ग रे रे ग ऽ म ग रे सा सा ग ध ध ध ध
 ५ मौ म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ९ मौ ऽ म द सा ऽ पि या ऽ स ऽ ऽ ऽ दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ ऽ
 सा सा रे रे नी ध नी नी ध ध ध म ध नी रे ग रे सा नी रे नी रे नी ध म ध नी रे
 ५ मौ म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 १० ऽ म ध नी रे ग म ग रे सा सा नी रे रे रे नी ध म ध ध ध म ग रे
 रे ध ध म ध नी रे ग म ध नी रे ग म ध नी नी रे ग म ध नी रे ध नी रे
 ५ मौ म द सा ऽ पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले ऽ
 ११ ऽ मौ म द मौ म द सा पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले स दा ऽ रं गी ऽ ले
 म ग ग म ध ध सा सा ऽ सा नी रे सा सा सा ऽ सा नी रे सा
 स दा ऽ रं गी ऽ ले मौ म द सा पि या स दा ऽ रं गी ऽ ले
 सा सा ऽ सा नी रे सा म ग ग म ध ध सा सा ऽ सा नी रे सा

राग—मारवा

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

पिया बिन जियरा निकसो जात मै कैसे कहूं अपने मनकी बात ॥ धृ० ॥

रैत दिना मोहे कलन परत है । सगरो सुख तो गयो उनके साथ ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
पि	या	बि	न	जि	य	रा	ऽ	नि	क	सो	जा	ऽ	त	मै	ऽ
सा	ध	म	ध	म	ग	रे	ऽ	ग	रे	सा	सा	ऽ	रे	ध	नी
कै	ऽ	से	क	हूं	ऽ	अ	प	ने	ऽ	ऽ	म	न	ऽ	की	बा
सा	ऽ	सा	रे	रे	ऽ	नी	रे	ग	म	ध	ध	म	ग	रे	सा
															ऽ

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
रै	ऽ	न	दि	ना	ऽ	मो	हे	क	ल	न	प	र	ऽ	त	है
ग	ऽ	ग	ग	म	ऽ	ध	ध	सा	सा	सा	सा	सा	नी	रे	सा
स	ग	रो	ऽ	सु	ख	तो	ऽ	ग	यो	उ	न	के	ऽ	सा	ऽ
नी	नी	रे	ऽ	नी	ध	म	ध	म	ग	म	ध	म	ग	रे	सा
															सा

राग—मारवा

ताल—धमार, होरी (मध्यलय)

आज मद माती आये होरी खिलनको हमसे करत बरजोरी ॥ धृ० ॥

बैतु बजावत और मुसकावत अबिर लिये भरजोरी ॥ १ ॥

प.सं.(३)१५

आस्ताई

घा	कि	ट	कि	ट	घा	ऽ	ता	कि	ट	कि	ट	ता	ऽ
+			३				०			१			
								आ	ऽ	ज	म		
								सा	ऽ	ध	म		
मा	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	हो	ऽ
घ	म	ग	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	रे	सा	ऽ	नी	ऽ
री	ऽ	खि	ल	न	को	ऽ	ह	म	से	क	र	त	ऽ
ग	ऽ	म	ग	रे	सा	ऽ	म	ध	सा	सा	सा	नी	ऽ
ब	र	ऽ	जो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ज	म	ऽ
ग	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ध	म	ऽ

अंतरा

घा	कि	ट	कि	ट	घा	ऽ	ता	कि	ट	कि	ट	ता	ऽ
+			३				०			१			
वेऽ	नु	ब	जा	ऽ	व	त	औ	र	ऽ	मु	स	का	ऽ
मघ	सा	सा	सा	ऽ	सा	सा	सा	नी	रे	नी	ध	म	ऽ
व	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	बि	र	लि	ऽ	ये	ऽ
घ	घ	म	ग	रे	ऽ	ऽ	रे	रे	रे	रे	ऽ	ग	ऽ
भ	र	ऽ	झो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ज	म	ऽ
ग	ग	म	ग	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ध	म	ऽ

राग-मारवा

तराना, ताल-त्रिताल (जलदलय)

उदतन देरेना तदारे तदेर्ना तदियनरे तदारे तद्रेदानी तदी दी तदी दी
 तन देरेना तदारे दानी ॥ धृ० ॥ तदी दी तदी दी तन देरेना तदेर्ना तदेर्ना
 तदेर्ना तनदेरे तारेदानी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धी	धी	ना	ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
३			०				१				+				
	उ	द	त	न	दे	रे	ना	त	दा	रे	त	दे	५	नी	
	सा	ध	म	ध	म	ग	रे	सा	नी	रे	ध	म	५	ध	
त	दि	य	न	रे	त	दा	रे	त	द्रे	दा	५	नी	५	त	दी
म	ग	रे	ग	ध	म	ग	रे	सा	सा	नी	रे	नी	ध	म	ध
५	दी	५	त	दी	५	दी	५	त	न	दे	रे	ना	त	दा	रे
५	सा	५	सा	सा	५	सा	५	म	ग	रे	ग	म	ध	म	ग
दा	नी	उ	द	त	न	दे	रे	ना	त	दा	रे				
रे	सा	सा	ध	म	ध	म	ग	रे	सा	नी	रे				

अंतरा

ना	धी	धी	ना	ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
३			०				१				+				
												त	दी	५	दी
												मं	ध	५	सा
५	त	दी	५	दी	५	त	न	दे	रे	ना	५	त	दे	५	नी
५	सा	सा	५	सा	५	ग	मं	ग	रे	सा	५	रे	नी	रे	नी
५	त	दे	५	नी	५	त	दे	५	नी	त	न	दे	रे	ता	रे
ध	ध	म	ध	म	ग	म	म	५	ध	म	म	ध	ध	रे	नी

दा नी उ द त न दे रे ना त दा रे त दे ऽ नी
ध म सा ध म ध म ग रे सा नी रे ध म ऽ ध

राग-देस

इस रागमें ऋषभ, गंधार और धैवत यह स्वर तीव्र हैं। मध्यम यह स्वर कोमल है, निषाद आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल इस तरह दोनों प्रकार का लगता है। आरोहमें गंधार और धैवत वर्जित है। परंतु मिठासके लिये गंधार और धैवत कभी कभी लेते हैं। यह राग रातके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। यह राग श्रृंगार रस प्रधान है।

आरोह—सा रे म् प नी सा

अवरोह—सा नि ध प म् ग रे ग नी सा

मुख्य अंग—रे म् प ध म् ग रे रे ग नी सा

जाती—ओडव संपूर्ण

वादी—पंचम

संवादी—ऋषभ

सुरावट, ताल—त्रिताल

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

०	१	+	३
सा रे म् प नी नी सा	ऽ सा नि ध प ध म् ग रे		
रे ग रे प म् ग रे रे रे ग रे ग नी	ऽ सा		
नी सा रे म् म् ग रे	ऽ रे म् प नि ध प ध		
सा रे म् प नी नी सा	ऽ म् म् प प नी नी सा		
नी सा	ऽ रे नि ध प	ऽ म् प नी सा	रे रे रे
ग रे ग नी नी सा सा	प नी सा	ऽ प नी सा	रे नि रे
ध प रे म् प सा नि ध प	रे म् प ध रे	प म् ग	

राग-देस

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

चतुर त्रिज नारी रे । येरी प्यारी चितवनमें । मन बस कर लिनो, ईतनि
 सुंदर प्यारी ॥ धृ० ॥ चंद्र बदन चित चोरत मृग लोचन सारी । चली जात
 मुसेकात शामसे, पायल तोरी जनन कारी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
 च तु र त्रि ज नाऽऽ रीऽ रेऽऽऽ
 म् ग रे नी सा रेग पम् ग रे रेऽऽऽ
 येऽऽ री प्याऽ रीऽ चि त व न मेऽऽ म न
 म् रेऽऽ म् पऽ पऽ प ध प ध पम् म् ग रे
 व स क र लीऽ नोऽ इ त नि सुं द र प्याऽऽ
 म् रे म् प नीऽ साऽ सा रे सा नि ध प धप ध
 रीऽऽ च तु र त्रि ज
 म् ग रे म् ग रे नी सा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
 चंऽ द्र ब द न चि त
 म्ऽ म् म् प प नी नी
 चोऽ र त म् ग लोऽ च न साऽ रीऽऽऽ
 नीऽ नी नी नी सा नी सा नी सा नी साऽऽऽ

च ली ऽ जा ऽ त मु से का ऽ त र्या ऽ म से ऽ
 नी सा ऽ सा ऽ रे नि नि ध ऽ प प ऽ नि ध प
 पा ऽ य ल तो ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ ऽ झ न न का ऽ ऽ
 प ध प ध पम् म् ग रे ऽ ऽ ऽ रे ग रे गम् पम्
 री ऽ ऽ च तु र बि ज
 ग रे ऽ म् ग रे नी सा

आस्ताइका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 च तु र बि ज ना ऽ ऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ
 १ नी सा रे म् ग रे ऽ ऽ म् ग रे ऽ ऽ ऽ रे ग
 नी ऽ सा च तु र बि ज ना ऽ ऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ
 २ नी ऽ सा ऽ रे म् म् ग रे ऽ ऽ ऽ प म् ग रे
 ३ नी सा ऽ च तु र बि ज म् रे पम् प ध म् ग रे म्
 ग रे ऽ च तु र बि ज ना ऽ ऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ
 ४ नी सा रे म् म् ग रे ऽ ऽ रे म् प नी प ध म् ग
 ५ रे ऽ ऽ च तु र बि ज ना ऽ ऽ ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ
 म् रे पम् ध प नी नी ऽ ऽ ऽ
 रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 नी सा प ध म् ग रे ऽ ग रे प म् ग रे ग नी
 ६ सा ऽ ऽ च तु र बि ज ना ऽ ऽ ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ
 म् रे पम् ध प ध म् ग रे ऽ

[२३१]

येऽ री प्या री चि त व न मेऽ ऽ म न ब स क र
 (मूरे) म् प नी नी सा नि ध धप ध म् ग ग रे प म्
 ली नो ऽ च तु र त्रि ज नाऽ ऽऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ
 ग रे ऽ
 ७ नी सा रे म् ग रे ऽ ऽ रे म् प ध म् प सा ऽ
 म् प सा च तु र त्रि ज नाऽ ऽऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ
 ८ म् ग रे नि ध प म् प नी ऽ सा ऽ निध प म् ग रे
 प म् ग रे ऽ च तु र त्रि ज नाऽ ऽऽ री ऽ रे ऽ ऽ ऽ

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 चं ऽ द्र ब द न चि त
 चो ऽ र त मृ ग लो ऽ च न सा ऽ री ऽ ऽ ऽ
 १ प ध म् प नी ऽ नी ऽ प ध म् प सा ऽ सा ऽ
 म् प नी ऽ म् प सा ऽ चं ऽ द्र ब द न चि त
 २ चो ऽ र त नी सा प ध म् ग रे ऽ रे म् प नी
 रे म् प सा रे म् प नी सा रे चं ऽ द्र ब द न चि त
 ३ चो ऽ र त सा रे सा नि ध प प नि ध प नि ध
 प म् ग रे सा नि ध प चं ऽ द्र ब द न चि त
 ४ चो ऽ र त प नी सा रे सा रे नि ध प ऽ ऽ ऽ सा नि ध प ध प म् ग
 रे म् प नी सा रे नि ध प चं ऽ द्र ब द न चि त
 ५ चो ऽ र त मृ ग लो ऽ ऽऽ च न सा ऽ री ऽ ऽ ऽ
 नी सा रे म् म् ग न रे रे न रे सा नी ऽ ऽ

SS S S S SS SS S S चं S द्र ब द न चि त
 सोनीसा S S धप म्प सा S
 चो S र त मृ ग लो S च न सा S री S S S
 ६चं S द्र ब द S न चि S त S चो S रं त मृ S ग S लो S च S न
 प नी सा रे निध प मरे पम् धप नी सा नीपसा नी रेसा रे
 सा S S S री S SS S S चं S द्र ब द न चि त
 प नी सा रे पनीसा रे नी सा
 ७सा S प S रे S ग रे S रे म् ग रे म् ग रे म्
 ग रे नी सा नी सा नी सा चं S द्र ब द न चि त
 ८नी सा रे पम् ग रे म् ग रे ग नी सा म् प नी सा
 मरे पम् धप नी सा रेम् पनी सा चं S द्र ब द न चि त

राग-देस

इस चीजमें कोमल गंधारभी लगता हैं ।

ताल—एकताल (मध्यलय)

पिया करधर देखो घडकत है मोरी छतिया । कैसो ही रतिया । कारी
पीरी अतिहिं डरावे । अतिहिं अचानक हा तनमें घेर लीनी ॥ धृ० ॥ तुम तो
सरस रसिया । अपने रसके गाहक । हूं तो काहूकी एक न माने । पिया अबहिं
सुनत मोरी निकसत बतिया ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २
 पि या
 म रे

क	र	घ	र	दे	खो	ध	ड	क	त	है	ऽ
म	प	सा	नि	ध	प	प	ध	म	प	मू	ग
मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	कै	ऽ
(गो)	रे	ऽ	मू	ऽ	मू	प	ऽ	प	ऽ	रे	मू
(सोऽ)	ऽऽ	ऽऽ	ही	ऽ	र	तिऽ	ऽऽ	या	ऽ	का	री
(रेमू)	(पध)	(सांनि)	ध	प	प	(मप)	(धप)	मू	ऽ	ग	रे
(पी)	(रीऽ)	(अ)	ति	ही	ड	(रा)	(ऽऽ)	वे	ऽ	अ	ति
प	(मग)	रे	गू	रे	सा	रे	सानी	सा	ऽ	रे	गू
ही	(अ)	चा	ऽ	न	क	हा	ऽ	त	न	में	ऽ
रे	सा	रे	नी	सा	सा	रे	ऽ	मू	मू	प	ऽ
वे	र	ली	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	पि	या
ध	ध	ध	ऽ	नि	ध	नि	ध	नि	सांनि	ध	प

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+	र	०	म	४	स	०	स	१	सि	२	ऽ
क	प	तु	मू	तो	नी	र	नी	र	नी	या	ऽ
मू	प	मू	ऽऽ	प	स	नी	ऽ	सा	नी	सा	ऽ
अ	प	ने	(मगू)	र	सा	के	रें	गाऽ	ऽ	ह	कः
नी	सा	रें	हू	रें	ए	सा	न	(रेंसा)	नी	सा	ऽ
हूं	तो	का	नि	की	ध	क	सां	(माऽ)	ऽऽ	ने	ऽ
ध	नि	ध	ब	ध	हिं	नि	त	(धसा)	(निध)	प	ऽ
पि	या	अ	र	सां	सां	न	नी	(मो)	री	नि	कः
प	मू	प		रें	रें	नी		सां	सां		ध

स त व ति या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ पि या
 नि ध नि ध नि ध नि ध धनि सानि ध प

आस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
क	र	ध	र	दे	खो	ध	ड	क	त	है	या
१ मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	नीसा	रेम्
रे	ऽ	रेम्	पनि	ध	प	धप	मृग	रे	ऽ	गरे	नीसा
मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
२ नीसा	रेम्	सारे	मृप	निध	प	पध	मृप	धप	मृग	रे	ऽ
३ मृग	रेम्	गरे	गरे	नी	सा	मृग	रे	ऽ	निध	प	ऽ
४ रेग	रेप	मृग	रे	निध	निध	निध	प	धप	धप	धप	मृग
५ मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	रेम्	पध
मृप	नी	सा	ऽ	रेम्	पध	मृप	नी	सा	ऽ	मृप	सा
मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	पि	या
६ क	र	ध	र	दे	खो	नीसा	रेम्	पनी	सानि	धप	मृग
७ मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	नीसा	रेम्
पनी	सा	नीसा	रेम्	पनि	धप	नीसा	रेप	मृग	रे	मृग	रे
मोऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
८ पिऽ	याऽ	कऽ	रऽ	धऽ	रऽ	देऽ	खो	धऽ	ड	कऽ	त
रेम्	मृरे	मृप	पम्	पध	धप	धसा	नि	धप	ध	पम्	प

हैऽ (मे)	ऽऽ (पध)	ऽऽ (मूप)	ऽऽ (धनि)	ऽऽ (पध)	ऽऽ (निऽसा)	ऽऽ (निध)	ऽ (नि)	ऽऽ (धप)	ऽ (ध)	पि	या
१ क	र	ध	र	दे	खो	धऽ (पनी)	ऽऽ (सांरै)	डऽ (सांनि)	कऽ (धप)	तऽ (मूग)	हे
० मोऽ (मो)	ऽ	ऽ	री	ऽ	छ	ति	ऽ	या	ऽ	पि	या
क	ऽ	रऽ (निध)	ऽऽ (पम)	ऽऽ (गरे)	ऽ (सा)	धं (रै)	ऽ	रऽ (सांनि)	देऽ (धप)	खोऽ (मूग)	प
सां	ऽ	निध	पम	गरे	सा	रै	ऽ	सांनि	धप	मूग	रेसा

अंतरेक्री तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
क	र	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	ऽ
१ सारे (नी)	मूप (सां)	नीसां (तु)	रै (म)	सांनि (तो)	धप (स)	मूग (र)	रेसा (सं)	सारे (र)	मूप (सि)	नी	ऽ
२ सारे (मू)	मूप (प)	नीसां (तु)	रेसां (म)	रेसां (तो)	निध (स)	पम (र)	गरे (स)	सारे (र)	मूप (सि)	सां	ऽ
३ मूग (नीसां)	रेग (रै)	नी (तु)	सा (म)	निध (तो)	पध (स)	मू (र)	प (स)	रैरै (र)	सांरै (सि)	नी	सां
४ पनी (पनी)	सांरै (सां)	सांनि (तु)	धप (म)	मूग (तो)	रेग (स)	नी (र)	सा (स)	रे (र)	मू (सि)	प	नी
										या	ऽ

५ नीसा	रेम्	पनि	धप	मूप	नीसा	रैग	रैग	नी	सा	५	नी
रे	५	मूप	सा	५	मूप	नि	५	मूप	ध	५	मूप
रे	५	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५
६ रैग	रैसा	नीसा	रैरे	सा	धप	मूप	नीसा	रैसा	निध	पम्	गो
सारे	मूप	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५
७ ५	५	तु	म	तो	स	र	स	नीसा	रैग	मूग	रैग
निध	पम्	गरे	पम्	गरे	रेम्	पध	मूप	नीसा	पनी	सारे	सारे
धप	मूग	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५
८ तु ५	म	तो ५	५ ५	५ ५	५ ५	५ ५	५	स ५	र ५	स ५	र ५
नीनी	सा	सा नि	निध	धप	पम्	मूग	रे	म नि	ध नि	धप	ध
सि ५	या	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५
मूग	रे	म्	म्	प	नी	नी	नी	सा	नी	सा	५
९ तु ५	म	तो ५	५ ५	५ ५	स	र ५	स ५	र	५ सि	या ५	५ ५
सा नी	रै	सा नि	धप	मूप	सा	निध	पम्	सा	५ रै	सा नि	ध
५ ५	५	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५
मूप	सा	म्	म्	प	नी	नी	नी	सा	नी	सा	५
१० सारे	मूप	धप	मूप	नी	५	सारे	मूप	धप	मूप	सा	५
सारे	मूप	धप	मूप	नीसा	रै	५	सारे	मूप	धप	मूप	नी
रैम्	गरे	तु	म	तो	स	र	स	र	सि	या	५

राग—देस

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

पनिया भरन मैं कैसे जाऊं घरसो । मग रोके ठाढो मुसे करत बर जोरी
 कान मारी झटक चुनरि सिरसो ॥ धृ० ॥ परत पैयां लेऊं बलैया । बिनति
 करत मैं हारी । ऐसो धीट मोरी झटक चुनरी सिरसो ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 प नि या भऽ र न मै ऽ कैऽ ऽ सेऽ जा ऽ ऊंऽ घ र
 प नी सां सां रे नि नि ध प पध नि धप म् ऽ गरे नी सा
 सोऽ ऽ ऽ ऽ म ग रो के ठा ढोऽ मु से क र त बर
 रेग म् ग रे ग रे प म् म् गरे नी सा रे म् रे म्
 जो री का न मा री झ ट क चु न रि सीऽ र सोऽ ऽ
 प प नी नी सां सां प नी सां रे नि ध पध प म्ग रे

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 प र त पै या ऽ ले ऽ ऊं ब लै ऽ या ऽ ऽ ऽ
 म् म् म् म् प ऽ नी ऽ नी नी सां नी सां ऽ ऽ ऽ
 वि न ति क र त मैं ऽ हाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ री ऽ ऽ ऽ
 प नी सां रे नि ध प ऽ पध सां नि धप म्ग रे ऽ ऽ ऽ
 ऐ सो धी ट मोऽ रीऽ झ ट क चु न रि सिऽ र सोऽ ऽ
 सा रे म् प निध पम् प नी सां रे नि ध पध प म्ग रे

राग—देस

ताल—दादरा (मध्यलय)

पकर कर अधर लंगर निठूर निडर डगरमें रोके री ॥ धृ० ॥ नाचत
कुदत आरत करत नजर पियाने, धीर धरत सावली सूरत, मोहनी मूरत, ब्रिज-
नारी सब घेरी इतवित हो, री सखी ॥ १ ॥ जमुना तीर, भरत नीर जात,
अहिरन ही पीर लियो, चीरनही धरत, मैतो नीर छोड आई, गुंया, चीर
खोंके री सखि ॥ २ ॥

आस्ताई

धा	गे	ना	धा	तीं	ना	धा	गे	ना	धा	तीं	ना
+		३		०		+		३		०	
प	क	र	कऽ	ऽऽ	र	अ	धऽ	रऽ	लं	ग	र
रे	ग	रे	(रेम्)	(पध)	म्	ग	(पम्)	(गरे)	म्	ग	रे
नि	ठू	र	नि	ड	र	ड	ग	र	मे	ऽ	ऽ
रे	ग	रे	सा	नी	सा	म्	ग	रे	सा	नी	सा
रोऽ	ऽऽ	के	ऽ	री	ऽ	ना	च	त	कु	द	त
(रेग)	(पम्)	ग	रे	ग	रे	रे	ग	रे	सा	नी	सा
आ	र	त	क	र	त	न	ज	र	पि	या	ऽ
रे	म्	रे	म्	प	प	रे	म्	प	नि	ध	प
ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धी	ऽ	र	ध	र	त
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्	ऽ	म्	प	नी	नी
साऽ	व	ली	सू	र	त	मोऽ	ह	नी	मू	र	त
(नीप)	प	प	नी	नी	नी	(नीप)	प	प	नी	नी	नी
ब्रि	ज	ना	री	स	ब	(घेऽ)	ऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
नी	नी	सा	सा	सा	रे	(सांरे)	(सांनि)	ध	प	ऽ	ऽ

इ त वि त होऽ ऽ रीऽ ऽ ऽ स खी ऽ
 ध नि ध प ध पम् म ऽ ग रे ऽ

अंतरा

धा	गे	ना	धा	तीं	ना	धा	गे	ना	धा	तीं	ना
+		३		०	+		३		०		
ज	मु	ना	ऽ	ती	र	भ	र	त	नी	ऽ	र
म्	म्	म्	ऽ	प	प	नी	नी	नी	नी	ऽ	नी
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	हि	र	न	ही	ऽ
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सां	नी	नी	सां	सां	सां	रै
पीऽ	ऽ	रऽ	लि	यो	ऽ	ची	ऽ	र	न	हीऽ	ऽ
सांनि	नि	धप	ध	प	ऽ	सां	ऽ	सां	रै	निध	प
ध	र	त	मै	ऽ	तो	नीऽ	ऽ	रऽ	छो	ऽ	ड
प	ध	प	म्	ऽ	ग	रेग	म्	मृग	सा	नी	सा
आऽ	ऽऽ	ई	ऽ	गुं	या	चीऽ	ऽ	रऽ	खो	ऽ	के
रेग	पम्	ग	रे	ग	रे	रेग	म्	मृग	सा	नी	सा
रीऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	स	खि	प	क	र	कऽ	ऽऽ	र
रेग	पम्	ग	रे	ग	रे	रे	ग	रे	रेम्	पध	म्

राग-देस

तराना, ताल—त्रिताल (जलदलय)

दिर दिर दिर तुं दिर दिर दिर दिर तानों तनननन तदीं तदीं तन
 देना तदरे दानी धेत्लांग तनननन धेत्लांग तनननन ॥ धृ० ॥ नादिर दिर
 तुं दिर दिर तुं दिर दीं दीं तनन । तादीं दीं तनन तों तनननन । ताकिट

किट थुंग नुंग नुंग धिरकिट धा कडान् धिडनक् तिरकिट तक धा कडान्
धिडनक् तिरकिट तक । तक धुमकिट धिरकिट तक धा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
० १ + ३

दिर दिर दिर तुं दिर दिर दिर दिर ता नों ऽ त न न न न
रे रे ग सा रे म् प ध नि ध प ध प म् म् ग
त दीं ऽ त दीं ऽ त न दे रे ना त द रे दा नि
प सां ऽ नी सां ऽ नी सां रे ग् रे सां नि ध प म्
धेतुं छां ग् त न न न न धेतुं छां ग् त न न न न
प सां सां रे सां नि ध प म् नि नि ध प म् ग रे

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
० १ + ३

ना दिर दिर तुं दिर दिर तुं दिर दीं ऽ ऽ दीं ऽ त न न
म् म् म् प नी प नी नी सां ऽ ऽ सां ऽ सां सां सां
त दीं ऽ दीं ऽ त न न तों ऽ ऽ त न न न न
प रे ऽ रे ऽ सां सां रे नी सां ऽ रे सां नि ध प
ता किट किट थुंग नुंग नुंग धिर किट धा कडा न् धिड नक् तिर किट तक
प रे सां रे रे सां रे नी सां सां रे सां नि ध नि
धा कडा न् धिड नक् तिर किट तक तक धुम किट धिर किट तक धा ऽ
नि ध ध नि प ध नी सां नि ध प ध प म् ग रे

[' वंदे मातरम् ' हमारा राष्ट्रगीत है, जो सामूहिक रूपसे गाया जाना चाहिये; सब नरनारी उसे एक सुरमें गाँय । यह स्वर रचना उसी दृष्टिसे बनायी गयी है । अिमी ढंगसे यह गीत सहस्रों लोगोंके कंठसे एकसाथ गाया गया है । यह ढंग सबको बहुत पसंद आया है । समाजों, पाठशालाओंमें अिसी ढंगसे राष्ट्रगीत गाया जाता है । अिस की ध्वनिमुद्राओं भी बनी हैं ।]

त्रिजोटी रागमेसे **वंदेमातरम् गीत की स्वरयोजना** ताल—त्रिताल

वंदे मातरम् । सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलां ॥ सस्यशामलां मातरम् ॥
 शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम् । फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् । सुहासिनीम्,
 सुमधुर भाषिणीम् । सुखदाम्, वरदाम्, मातरम् ॥ वंदे मातरम् ॥

त्रिंशत्कोटि कंठ कलकल निनाद कराले द्वित्रिंशत्कोटि भुजैर्धृत खर करवाले
 के बोले मा तुमि अबले ? बहुबल धारिणीं नमामितारिणीं रिपुदलवारिणीं
 मातरम् वंदे ०

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहुते
 तुमि मा शक्ति हृदये तुमि मा भक्ति तोमारई प्रतिमा गढी मन्दिरे मन्दिरे । वंदे ०
 त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी कमला कमलदल विहारिणी वाणी विद्यादायिनी
 नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम् वंदे ०
 श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां धरणीं भरणीं मातरम् ॥

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+					३			
वं	५	दे	५	मा	५	त	५	र	५	५	म्	सु	ज	ला	म्
रे	५	सा	५	रे	५	सा	रे	५	५	रे	रे	सा	रे	रे	
सु	फ	ला	म्	म	ल	य	ज	शी	५	५	त	ला	५	५	म्
ग	रे	ग	ग	ग	म्	प	म्	ग	रे	ग	म्	ग	५	५	ग

स ऽ स्य शा ऽ म ला ऽ म् मा ऽ त र ऽ ऽ म्
 प ऽ ध प ऽ ध प ऽ प म् ग रे सा ऽ ऽ सा
 वं ऽ दे ऽ ऽ मा ऽ त र ऽ ऽ म्
 रे ऽ सा ऽ ऽ रे ऽ सा रे ऽ ऽ रे

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

ऽ शु ऽ भ्र ज्यो ऽ त्ना ऽ पु ल कि त या ऽ ऽ मि नी
 ऽ म् ऽ म् म् ऽ म् ऽ ग म् ग रे सारे ग रे ग
 म् फु ऽ छ कु सु मि त द्रु म द ल शो ऽ मि नी
 ग प ऽ प प प प प प ध प प ग सा ग प
 सु हा ऽ सि नी ऽ म् सु म धु र भा ऽ ऽ षि णी म्
 म् म् ऽ म् म् ऽ म् म् ग म् ग गारे सा रे ग ग
 सु ख दा ऽ ऽ म् व र दा ऽ म् मा ऽ त र म्
 प म् प ऽ ऽ प म् ग म् ऽ म् म् ग रे सा सा
 वं ऽ दे ऽ ऽ मा ऽ त र ऽ ऽ म् ऽ ऽ ऽ
 रे ऽ सा ऽ ऽ रे ऽ सा रे ऽ ऽ रे ऽ ऽ
 वं ऽ दे ऽ ऽ ऽ ऽ

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३

त्रिं ऽ श ऽ त्को ऽ टि
 प ऽ प ऽ प ऽ प

कं	ऽ	ठ	क	ल	क	ल	नि	ना	ऽ	द	क	रा	ऽ	ले	ऽ
प	ऽ	प	प	म्	म्	म्	म्	ग	ऽ	ग	ग	रे	म्	ग	ऽ
द्वि	ऽ	त्रि	ऽ	श	ऽ	त्को	ऽ	टि	मु	जै	ऽ	धृ	त	ख	र
म्	ऽ	म्	ऽ	म्	ऽ	म्	ऽ	म्	म्	म्	ग	ग	ग	ग	ग
क	र	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	के	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	मा	ऽ
ग	ग	रे	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ
तु	मि	अ	ब	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ब	हु	ब	ल	धा	ऽ	ऽ	रि
म्	ग	रे	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	रे	ग	ग	ग	ऽ	ऽ	म्
णी	ऽ	ऽ	ऽ	न	मा	ऽ	मि	ता	ऽ	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	प	म्	प	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ
रि	पु	द	ल	वा	ऽ	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	र	म्
प	ध	प	म्	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	रे	सा	सा
वं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शुद्धिपत्रक

पान	पंक्ति	अक्षर	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१६	२४	स	सी
१७	५	६	ऽ	ड
१८	११	७	सा	सा
२२	१९	३	ये	य
२५	१५	११	मु	मुं
३१	४	८	सा	सा
३१	७	४	ग	ग
३५	१३	११	ला	ना
५०	८	१८	जं	जूं
५६	१६	२	सा	सा
५९	२०	८	दी	दी
६५	२	१७	ऽ	सा
६७	१	१८	सा	सा
६७	१३	१९/२०	सार	साँ
६८	१९	१८	सा	साँ
७०	१०	१	सा	सा
७२	४	१६	प	म
७३	४	१२	ध्	ध
७३	१२	१४	नि	नि
७८	२१	२	म	म
८३	१७	१४	म	म
८४	७	२	सा	सा
८४	९	१९/२०	निसा	निसाँ

८५	४	२५/२६	—	५५
८५	५	५	नि	(नि
८५	१०	४	न	ना
८७	३	१५	आ	अ
८७	६	१३	आ	अ
८७	१६	१२	म्	म्
९१	८	११	सा	सा
९९	५	२	सो	सा
१०३	१६	२१	ल	लु
१०६	१	१५/१६	धी, धी	ती, ती
१०६	११	१६	सा	सा
१०७	४	३	ग	ग
१०९	१५	१७	नि	नि
११०	६	१६	रे	रे
११०	८	५	ग	ग
११०	१०	१	ग	ग
१११	१६	१६	ऽ	ड
१११	१९	२२	सो	सा
११२	१२	४	म्	म्
११४	१५	१२	रे	रे
११६	१९	९	रे	रे
११९	२	२१	रे	रे
११९	१५	१५	रे	रे
११९	१५	१७	ध	ध
१२०	१	२२	ध	ध
१२०	७	९	ना	नी
१२१	१६	५	२	रे
१२६	१४	५	नि	नि

[२४६]

१२७	७	११	वी बोलतान है.	
१२८	६	३	ध	ध
१४१	१३	१३	म्	म
१४२	१५	१३	३	२
१४५	१४	१६	सां	सा
१४५	२०	१	सा	सा
१५४	२०	१८	ध	ध
१५५	१६	४	ध	ध
१६१	६	११	सां	सा
१६१	११	५	द	दि
१६२	१७	५	ग	ग
१६४	८	३०	रे	रे
१६४	१६	२८	र	र
१८१	१६	१२	रे	रे
१९३	११	१४	ग	ग
१९३	१८	४	ग	ग
१९८	९	७	ध	ध
१९९	११	२१	म्	म
२००	१९	९	बा	बां
२०२	१५	१४	नी	नी
२०३	५	५	प्री	प्री
२०३	९	४	बि	बि
२०५	९	७	ता	त
२०७	१३	३	ग	ग
२१४	१३	१०	रे	रे
२१४	२०	२९	ध्	ध
२२४	१७	१५	सा	सा
२३१	१८	२	मू	म

संगीतकलानिधि
मास्टर कृष्णराव



यांच्या अगदीं अलीकडील ध्वनिमुद्रिका

GE 8429 } तुझीये निढळीं कोटी चंद्र प्रकाशे
कृष्ण माझी माता

GE 17512 } सबको अपनाही धर्म प्यारा
वन्दे मातरम् । (झिजोटी)

याविना मास्टर कृष्णरावांइतकेच महाराष्ट्राला प्रिय असलेले शास्त्रीय
संगीताचे अन्य गायक मर्हूम प्रो. अब्दुल करीमखां,
ओंकारनाथ ठाकूर, प्रिन्सि. रातांजनकर, बडे गुलाम
अलीखां, बाई मोगुबाई कुर्डीकर, सौ. हिराबाई
बडोदेकर, प्रो. सुरेशबाबू माने 'आदींच्या ध्वनि-
मुद्रिका कोलंबियावरच मिळतात.

कोलंबिया ग्राफोफोन कंपनी, लि.

कलकत्ता मुंबई लखनऊ

महाराष्ट्राचे आवडते " मास्तर "

संगीत कलानिधि

मास्तर कृष्णराव

यांचा खालील रेकॉर्ड हिज मास्टर्स व्हाईसवर ऐका

P	}	ललना मना—	ना. ' एकच प्याला '
4732		लपविला लाल	,, ' स्वयंवर '

या विना अन्य नामवंत गायक-गायिकांच्या रेकॉर्डसाठी

' हिज मास्तर व्हाइस ' चा

समग्र कॅटलाग पहा.



The Hallmark of Quality

' हिज मास्टर्स व्हाइस '

कलकत्ता

मुंबई

मद्रास

दिल्ली

स्थापना १८७८

संगीत साधनें मिळण्याचें सर्वांत जुनें दुकान

एच. व्ही. मेहेंदळे अँड सन्स



सर्व तऱ्हेचीं वाद्ये, हार्मोनियमस् व फ्ल्यूटस् ऑर्डर-
प्रमाणें तयार करून दिलीं जातील व विकत
मिळतील. व त्यास लागणारें सामानहि
भिळेल.

तसेंच संगीत अभ्यास-क्रमास लागणारीं पुस्तकेंहि
विकत मिळतील.

२४ बुधवार, आप्पाबळवंत चौक, पुणे २

सं. क. नि. मास्टर कृष्णरावजीकी प्रकाशित नोटेशनकी किताबें

राग संग्रह भाग १ ला	किं. १ रु.
राग-संग्रह भाग २ रा	किं. २ रु.
हिंदी चीजोंके नोटेशन आलाप तानोंके सहित	
संगीत मोहनमाळ मराठी नोटेशन - -	किं. ८ आना
संगीत रुक्मिणी स्वयंवर नोटेशन - -	किं. १० आना
संगीत सावित्री नोटेशन - - . . .	किं. ८ आना
संगीत कान्होपात्रा नोटेशन . . .	किं. ८ आना
संगीत अमृतसिद्धि (मिराबाई) नोटेशन . . .	किं. ८ आना
भक्तीचा मळा (मराठी) और माली (हिंदी)	किं. १० आना
अमर संगीत--अभंग, भजन और गौलनके नोटेशन	किं. १ रु.
गृह-संगीत--समूह गानके लिखे तथा वृंदवादनके लिखे	किं. १ रु.

प्रकाशित होनेवाली किताबें—

खानदानी चिजोंका राग-संग्रह भाग ४ और ५
(आलाप और तानोंके सहित).

मोहनमाळ (मराठी) भाग २ रा

किताबें मिलनेकी ठिकानें:—

बालकृष्ण लक्ष्मण पाठक, बुकसेलर, मोतीबझार, मुंबई नं. २

भारत गायन समाज, सदाशिव पेठ, पूना नं. २

मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकार, टिल्कवाडी, २५३-१० पूना २

हार्मोनियम-प्रवेश भाग १ ला तथा २ रा मू. २ रु.

ले. दि. गो. दातार, प्राप्तिस्थान—भारत गायन समाज,

८६१ सदाशिव पेठ, पूना २

S.S.C. परीक्षाके अभ्यासक्रमकेलिये उपयुक्त

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग-संग्रह



भाग २ रा



लेखक

संगीत कलानिधि

मास्टर कृष्णराव

स्व. गायनाचार्य गुरुवर्य पं. भास्करबुवा बखले से

स. १९११ में संस्थापित संगीत-शिक्षा-संस्था

पुणे भारत गायन समाज

यह संस्था सरकार-मान्य है। जिसमें गायन तथा वादन की शास्त्रशुद्ध शिक्षा मिलती है।

उसी तरह किसी भी संगीत-विद्यालयके विद्यार्थी तथा संगीत-प्रेमी सज्जन हमारे विद्यालयकी परीक्षा दे सकते हैं; जिस सुविधाका अवश्य उपयोग किया जाय।

विशेष जानकारी नीचे दिये हुये पतेसे प्राप्त होगी।

पता—पुणे भारत गायन समाज,

बाजीरावपथ, पूना २

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग — संग्रह



हिंदी चिजोंका स्वरबद्ध, तालबद्ध, विलंपद और तानोंके साहित
स्वर लेखन

भाग २ रा

लेखक

संगीत कलानिधी

मास्टर कृष्णराव

इस पुस्तकके सब हक ग्रंथकारने अपने स्वाधीन रखे है।

किंमत ३ रुपिया

Available at—
RAMCHANDRA SANGHATAYA
Music Sellers & Publishers
474-601-(INDIA)

मुद्रकः—श्री. स. रा. सरदेसाई, बी.ए., एल.एल.बी.,
' वेद-विद्या मुद्रणालय, ' ४१ बुधवार, पुणे २.

—♦♦♦—
प्रकाशक—मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर,
गणेश भुवन, टिळकवाडी, पुणे २.

प्रस्तावना

मेरे परमपूज्य गुरु गायनाचार्य स्व. भास्करबुवा बखले की कृपासे 'राग-संग्रह' का दूसरा भाग जनता के चरणों में अर्पण करते हुवे अतीव हर्ष होता है। पहले भाग की अपेक्षा जिस में रागों, चीजों, आलापों, तानों तथा पलटियों को अधिक संख्यामें रखा है। घराने की गायन पद्धति का डौल, ढंग तथा बंधान को सुरक्षित रखने की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। किसी राग की बांधी हुई चीज की अस्तावी या अंतरा ठीक गुरुजी के कहने के अनुसार गाया जाय तो गुरु घराने के गाने के ढंग का पता चल जाता है, जिससे उसीके अनुसार चीजों का बंधान लिखने का यत्न किया गया है। नयी चीजों के साथ पुरानी चीजों को भी रखनेसे नये पुराने का संगम कर दिया गया है, जिससे गुरु घराने की पुरानी चीजों की ओर अनायास ध्यान जायगा।

धन्यवाद

श्री. ग. र. वैशंपायनजीने हिंदी भाषा की दृष्टिसे मेरी सहायता की है, और वेदविद्या मुद्रणालयके स्वामी श्री. स. रा. सरदेसाजीजीने अन्य कामोंकी भीड़ होते हुअे भी, यह पुस्तक ठीक समय पर बनवा दी है। मैं दोनों संजनोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ।

गान सेवक

मास्टर कृष्णराव

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग		पृष्ठ
१	पूरिया		१
२	बिहाग		११
३	दुर्गा		२१
४	तिलक-कामोद		२९
५	मालकंस		३९
६	अल्हैया-बिलावल		५१
७	देसकार		६०
८	सारंग		६९
९	पटदीप	...	७८
१०	तिलंग	...	९०

स्व. गुरुवर्य गायनाचार्य
पं. भास्करबुवा बखले



अर्पण—पत्रिका

—०—

जिनकी शिक्षाके कारन तथा आशीर्वाद के वलसे
संगीत शिक्षाकी सेवा लगभग पचास बरस तक
करपाया उन गुरुदेव गायनाचार्य
स्व. पं. भास्करबुवा बखले
के चरणों में यह मेरी कृति
अर्पित करता हूं ।

-मास्टर कृष्णराव

संगीत कलाके विषयमें कुछ विचार और उसके नियम

(१) इस नानाविध कलाओंसे परिपूर्ण जगतमें संगीत गायनकलाको अग्रस्थान दिया जाता है. संगीतहीमें गायन वादन तथा नृत्यका समावेश होता है. किन्तु नृत्यसे गायनका दर्जा उच्च है. इसका कारन गायनमें उच्चार अर्थात् शब्दबोधकी विशेषता है. 'उत्तम गाना, मध्यम वजाना, कनिष्ठ नाचना, और विकट बतांना' या 'गला तो वादशहा है' आदि पुरानी लोकोक्तिमें गायन की श्रेष्ठताकाही समर्थन करती है ।

(२) गायनमें निष्णात होनेकी अभिलाषा रखनेवाले सज्जनोंको चाहिये कि वे योगियोंकी भाँती कड़े नियमोंका पालन करें. जिसका निभाना कठिन नहीं ऐसे नियमोंपर चलकर अक्षय कीर्तीको प्राप्त करनेवाले अनेक महानुभाव इस भारतवर्षमें हो चुके हैं. जिनके गायन चातुरीकी प्रशंसा भारतमे हो गयी ऐसे महान् गायक स्व. खॉ. फैजमहंमद खॉ. (बडोदे दरवार गवई), स्व. खॉ. नथ्यन खॉ (म्हासूर दरवार गवई), स्व. खॉ. अह्मदिया खॉ. (कोल्हापूर दरवार गवई) इन महान् गुरुके पट्टाशीष्य माननीय गुरुवर्य गायनाचार्य स्व. पं. भास्करबुवा बखले यह हमारी गायन परंपरा है.

(३) गायकोंके पालने योग्य कुछ नियम—

दुर्व्यसनो से दूर रहना गायकके लिये अवश्य है. व्यसन नाना प्रकारके होते हैं, पान खानातक व्यसनमेंही दाखल है. इस छिये जिसके सेवनसे स्वास्थ्य नष्ट हो जानेकी आशंका है ऐसे मादक पदार्थोंका सेवन करना कदापि उचित नहीं. घूम्रपान हानीकर है. ब्रह्मचर्यका महत्त्व गायक के लिये विशेष है. गृहस्थाश्रमी गायक व्यवस्थित रहें तो ब्रह्मचारी जैसा तो नहीं, पर सुदृढ रह सकता है इसमें संदेह नहीं गाना समाप्त होतेही जलपान करना बहुत बुरा है. पानीके स्थान पर दूध पीना चाहिये क्योंकि गानेके बाद दुग्धपान करना लाभदायक है.

(४) गाने और जागने का संबंध अटूट है। रातका दिन बनाना गाने या बजानेवालोंके बाँयें हाथका खेल है। प्रातःकालमें या दोपहरमेंही कभी कभी गानेका योग आता है। किन्तु रात्रीके शान्त निरामय समयमें गानेका जो आनंद आता है, अच्छे गायक और रसिक श्रोता की एकतानता होती है, गानेकी शान्ती रहती है। वह बात दिनमें कहां ? सचमुच रातकाही समय गायनके लिये अनुकूल होता है। गानेके परिश्रमों के साथ साथ जागरण का भी सामना करना पड़ने के कारन निजी स्वास्थ्य के ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता श्रोतासे बढ़कर गायक को होती है किन्तु दुर्भाग्यवश अनेक गायक निजी स्वास्थ्य की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते। चाय जैसे हानीकर पेय को जागरणमें सहायक समझकर बड़ेही चाबसे लेते हैं और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खो बैठते हैं। मैं गत २९ वर्षोंसे चाय कॉफी, कोको न पीनेवाला गवैया हूँ। मैं नहीं मानता की गाने के लिये चाय एक आवश्यक चीज है।

(५) गायन के लिये आवश्यक व्यायाम—गायनमें प्राणायाम अनयासही होता है। गानेसे फेफड़े मजबूत होते हैं, इसमें संदेह नहीं किन्तु शरीर के दूसरे स्नायुओंको व्यायाम नहीं मिल सकता क्योंकि बैठक के गानोंमें बैठके ही गाना पड़ता है। रंगमंचपर कभी खड़े रहकर गानेका योग आता है। पर बहुत बार बैठक के ही गाने होते हैं अर्थात् शरीर निकोप रखनेसे उद्देशसे प्रत्येक गायकने तैरना, पैदल चलना, दौड़ लगाना, नमस्कार आदि व्यायाम के साधनों में से जो उचित मालूम हो उस पद्धतीसे व्यायाम लेना चाहिये।

(६) गाते समय पद्मासन तथा वीरासन योग्य है। महफिल छोटी बड़ी जैसी हो उसी के अनुसार गायककोभी अपना आसन जमाना ठीक होगा।

(७) गायनको तंबूरेकी ही संगत होनी चाहिये। आज कल सुधारकी हवा चल रही है उसीके परिणाम स्वरूप तंबूरेके स्थान पर हार्मोनियम, ऑर्गन, डिलरना, फिडल आदिके संगतकी भरमार हो रही है किन्तु सबही संगतके लिये उपयुक्त सिद्ध नहीं होते। हार्मोनियम तथा—ऑर्गनका साधारण रूपसे उपयोग होता

है. ऑर्गनके स्वर मृदु होते हैं और उसमें मंद्रादि स्वरभी रहनेसे ऑर्गनकी संगत हमॉनियमसे अच्छी होती है. संगतके लिये सारंगीकी बराबरी दिलख्वा, फिल्ल नही कर सकते. आरंभमे हमॉनियमके संगतपर अभ्यास करनेवालोंको तंबूरेके संगतपर गानेमें कठनायी माह्दम होगी. किन्तु आरम्भ तंबूरेके संगतसे किया जानेपर हमॉनियम ऑर्गन या अन्य किसीभी वाद्यकी संगत होनेपर गायक उसीके अनुसार बेखटके गा सकता है इस लिये तंबूरेके संगत पर ही आरंभमे अभ्यास करना उचित है. जहाँ कभी विद्यार्थियों को अेक साथ सिखाना पडा हो वहाँ तंबूरेकी अपेक्षा हमॉनियम का उपयोग अधिक होता है.

(८) गाना शुरू करनेसे पहले जिनके पास अध्ययन किया हो उन गुरुजीका या जिन्हें दिलसे माना हो उनका स्मरण अंतःकरणपूर्वक करना चाहिये.

(९) गाते समय मुद्रा प्रसन्न रखनी चाहिये. शब्दोच्चार सुस्पष्ट और परिणामकारक होने चाहिये. जिस रागमे गीत गाया जा रहा हो उस रागका शुद्ध स्वरूप कायम रखना अवश्यक है. गायनमें स्वरका प्राधान्य उसी प्रकार है जिस प्रकार शरीरमें आत्माका, अर्थात् गानेमें स्वरका महत्त्व बहुत है.

गीत भिन्न भिन्न प्रकारोंसे गाये जाते हैं उनके नाम निम्न लिखित हैं.

(१०) आलाप—(बिलंपद) स्वरोंके क्रमके अनुसार धीरेसे गाते हुये उनका विस्तार करना.

(११) मींड—एक स्वरोसे दूसरे स्वर की “ आस ” टूटने न देते हुये संधी जमाना. खड तानने पर पतला होता हुआ लंबा हो जाता है पर दोनों स्वरों का संबंध अटूट ही रहता है वही बात मींड मे हुआ करती है.

(१२) मुरकी—यह तानका ही एक प्रकार है. इसमें दो से लेकर ३।४।५ स्वरोंको समाविष्ट करके उन्हें जल्द मरोड लेना. गाते समय मुरकी के लेनेसे गायन का सौंदर्य बढ जाता है.

(१३) खटका—गायन में सुरकीकी जितनी अश्वकता है उतनी ही खटकेकी भी है. एकसे बढ़कर और चार से कम स्वर पर आवात पहुँचाते हुये उसमें चमक पैदा करनेका नाम खटका है.

(१४) तान—सुरावट अर्थात् स्वराविस्तार दुगुन या चौगुनी में (जल्दी) करना और गिनी आवाजके ढंगसे पहिले सप्तकसे लेकर तीसरे सप्तक तक अन्य अक्षरोंका उच्चार किये बिनाही आकार एकार या इकारको प्रयोगमें लाना, इसीका नाम तान है.

(१५) बोलतान—यह तान का दूसरा प्रकार है. अकारके साथ अक्षरो-च्चार भी करना पड़ता है आकार तथा अक्षर दोनोंके गुंथनेको बोलतान कहते हैं.

गायनमें उपयुक्तताके कारन जिन अंगोंका समावेश हुआ है उनका वर्णन करनेका मैंने यह प्रयत्न किया है; इसके सिवा अन्यभी अंग हैं; किन्तु ऊपर बत-लाये हुये प्रकार समझमें आकर उनका अभ्यास होनेपर रहे हुये अंगो से परिचय हो जाना कठिन नहीं.

स्वरोंके सांकेतिक चिन्ह

१ मंद्र सप्तककी निशानी—(—) जैसे नी ध प _ _

२ मध्य सप्तककी निशानी नहीं—जैसे—ग, म, प

३ तार सप्तककी निशानी—(') जैसे सा रे, ग

४ कोमल स्वरकी निशानी—(~) जैसे रे, ग, म

५ तीव्र स्वरकी निशानी नहीं जैसे—रे, ग, म

तालके चिन्ह

६ सम पहचाननेकी निशानी—(+)

७ काल पहचाननेकी निशानी—(०)

८ मात्रांके अंक जैसे—१, २, ३, ४

९ एकसे अधिक मात्रा स्वर लम्बाना हो तो उसकी निशानी (S) जैसे गS
मSS पSSS

१० एक मात्रामें दो अथवा अधिक स्वर आ जाय तो उसकी निशानी (~)
जैसे—गम गमप गमपघ
~ ~ ~

सूचना—जहाँ विलंपद तथा तान के उठाव प्रारंभसे हों वहाँ उसके
पहले चीज की पांक्ति लिखी है. और जहाँ वह नहीं लिखी वहाँ वह पांक्ति गायी जाय.

ती ती ना	धी ना	धी ना
+	१	२

संगीत में तालकी आवश्यकता

इसमें संदेह नहीं कि संगीतमें स्वरको प्राधान्य है। साथही साथ तालका अधिकार भी कम नहीं, यह बात होनहार गायकने ध्यानमें रखना आवश्यक है। बहुतसे लोक तो गाना सुनसुनकर गवय्ये बन बैठते हैं; और कुछ तो किसीके गानेका ढंग अपनानेमें या उसकी नकल डूबडू करनेमें सिद्धहस्त होते हैं, यह स्वाभाविक गुण ईश्वरी देन है। किन्तु ऐसे गायकोंमें तालके स्थानपर स्वरही गानेवालोंकी संख्या बड़ी हुई होती है। ऐसे गायक असली गवय्ये नहीं कहला सकते। उन्हें असली गायक कहलाना हो तो तालका अभ्यास परिश्रमपूर्वक का ताल तथा सुरकी सजावट सप्रमाण बांधनेका ज्ञान संपादन करना चाहिये। स्वयं समूह स्वाभाविक है; उसी प्रकार ताल भी स्वाभाविक है किन्तु उसके पहचाननेका अभ्यास होना चाहिये; उपेक्षा करनेसे काम नहीं चल सकता।

(१) ताल—हिसाबसे गानेकी गिनती करना इसीका नाम ताल है।

(२) मात्रा—ठेकेके हिस्सेको सप्रमाण विभक्त करनेको मात्रा कहते हैं।

(३) किसीभी प्रकारका ठेका लगानेपर उसके बोल ज्ञान रहना आवश्यक है। स्वयं लगाया हुआ ठेका बजा सकते हों तो अत्युत्तम। मुखसे बोल, हाथसे ठेका अर्थात् ताली और उंगलीसे मात्रा ऐसा उपयोग करनेकी प्रथा है।

मेरे गुरुदेव श्री. भास्करबुवा बखले मुझसे कहा करते थे कि स्वर तथा ताल रगरगमें समा जाना चाहिये। इसका आशय अभ्यास बढ़ाकर स्वर तथा तालका परिचय दृढ़ कर लेना चाहिये यही था, और इस हेतू, कीं पूर्तीकी इच्छासे उपरोक्त पद्धतिसे मुझे स्वयं अभ्यास करना पडा है, इससे मुझे जो लाभ या जिस आनंदकी प्राप्ति हुई वह लिख नहीं सकता। संगीतमें एकतानता होनेका एक मात्र साधन स्वर तथा तालका समन्वय है, इतना बतलाना पर्याप्त होगा। माता तथा पिता हमारे जनक हैं उसी प्रकार संगीतके जनक स्वर तथा ताल है। अर्थात्

तथा तालका संगीतसे समवाय संबंध है। इसके सिवा तालसे गानेमें एक-
 प्रकारका वजन आनेसे संतुलन कायम रहता है यह तालकी विशेषता है।

आजकल ध्रुवपदी गानेके साथसाथ उसके जोड़के मृदंगी बाजके बोलभी
 हो जा रहें हैं यह बड़ेही दुःखकी बात है। इस पद्धतिके गायकोंकी संख्या
 अलियों पर गिनने योग्य थोड़ी रह गयी है। ऐसे गायकोंसे निजी शिष्यशाखा
 प्रकार ध्रुवपदी गान तथा मृदंगी बाज कायम रखनेका यत्न करना यही सविनय
 अनुरोध है। साथ ही साथ ख्यालके गानेवाले बढ़ रहे हैं इस पद्धतिके गवय्योंकाभी
 अनुरोध है कि वे निजी शिष्य संप्रदाय बढ़ानेकी चेष्टा करें। प्राचीन और शुद्ध
 संगीत पद्धतिकी शिक्षाका प्रबंध करना आचार्यका प्रधान कर्तव्य है। उसी प्रकार
 गायन और हितकर गानप्रणालीका अनुसंधान करना और उससे लाभ उठाना
 होना गायकोंका प्रधान कर्तव्य है।

आजकल गायन का शौक भारतीय नवयुवकोंमें खूब बढ़ा हुआ दिखायी
 दे रहा है यह बड़ेही हर्ष की बात है। किन्तु खेद इस बातका है कि परिश्रमसे
 जो गेड़े हुये होनेके कारण अच्छे गायकोंका गाना सुन सुन कर स्वयं गुनगुनाते
 हैं जो आ गया उसी पर समाधान माननेवालों का बाहुल्य है। सुरेली आवाजमें
 गीत, रंगीले गीत गानेपर उन्हें चाहनेवाले पैदा होही जाते हैं। उनके प्रबंधसे
 जो दो गानेके कार्यक्रम हुये, जल्दोंमें वाहवाका नारा बुलंद हुआ, थिएटर घोर
 गलत ध्वनीसे निनादित हुआ और आप प्रसिद्धी के पीछे सोटा दुपट्टा लेकर पड़
 गये, बट रेडियो, ग्रामोफोन, सिनेमा आदि यांत्रिक चुंबकोंमें अपना मन आकर्षित
 कर और थोड़ेही दिनोंमें नाम विख्यात हो गया।

ऐसी वायुकी अनुकूलता पर निर्भर होनेवाली प्रसिद्धि हवाके बगोलेकी भाँति
 आकाशमंडलमें मंडराती हुयी दिखाई देते देर नहीं लगती। और प्रातिकूल झंझाके
 लहरोंके धपेड़में नामशेष होनेभी देर नहीं लगती। होनहार गायक अपना नाम
 प्रकाशसे कीर्ति—मंदिरमें लिखवानेकी महत्वाकांक्षा अवश्य रखे किन्तु स्वसंपादित
 सत्यार्थके बल पर; दूसरोंकी कृपाके सहारे नहीं।

(१४)

शुद्धि-पत्रक

पान	ओळ	अक्षर	अशुद्ध	शुद्ध
१९	७	३	सा	सा
२१	२	९	द	प
२१	१२	३	ग	ग
२४	१८	१४	म	मू
२५	९	२०	दे	सा
२५	९	२२	खे	सा
२५	१०	२०, २१	सोमू	सोमू
२९	८	१२	सो	सा
३१	१९	११	सा	सा
३६	९	३	धू	ध
३७	३	२२	हे	ये
५१	२	१३	१	धू
७५	१२	७	३	३

त्रिजोटी रागके वंदेमातरम् गीत की स्वरयोजना ताल—त्रिताल

वंदे मातरम् । सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलां ॥ सस्यशामलां मातरम् ॥

पुष्पोज्ज्वला पुलकित यामिनीम् । फुल्लकुडुमित द्रुमदल शोभिनीम् । सुहासिनीम्,
सुगंधुर भाषिणीम् । सुखदाम्, वरदाम्, मातरम् ॥ वंदे मातरम् ॥

त्रिशत्कोटि कंठ कलकल निनाद कराले द्वित्रिशत्कोटि भुजैर्धृत खर
ज्वालके के बोले मा तुमि अबले ? बहुबल धारिणी नमामितारिणी रिपुदल-
धारिणी मातरम् वंदे०

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहुते
तुमि मा शक्ति हृदये तुमि मा भक्ति तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे मन्दिरे ।
दे० त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी कमला कमलदल विहारिणी वाणी
विषादायिनी नमामि त्वाम् नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम्
दे० श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां धरणीं भरणीं मातरम् वंदे मातरम् ॥

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना		
				१			+					३					
१	५	दे	५	५	मा	५	त	र	५	५	म्	सु	ज	ला	म्		
२	५	सा	५	५	रे	५	सा	रे	५	५	रे	रे	सा	रे	रे		
३	५	फ	ला	म्	म	ल	य	ज	शी	५	५	त	ला	५	५	म्	
४	५	रे	ग	ग	ग	म्	प	म्	ग	रे	ग	म्	ग	५	५	ग	
५	५	स्य	शा	५	म	ला	५	म्	मा	५	त	र	५	५	म्	म्	
६	५	घ	प	५	घ	प	५	प	म्	ग	रे	सा	५	५	सा	सा	
७	५	दे	५	५	मा	५	त	र	५	५	म्						
८	५	सा	५	५	रे	५	सा	रे	५	५	रे						
९	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	
					१			+				३					
१०	५	शु	५	भ	ज्यो	५	त्सना	५	पु	ल	कि	त	या	५	५	मि	नी
११	५	म्	५	म्	म्	५	म्	५	ग	म्	ग	रे	सारे	ग	रे	ग	ग

(१६)

म्	फु	ऽ	ल	कु	सु	मि	त	द्रु	म	द	ल	शो	ऽ	मि	नी
ग	प	ऽ	प	प	प	प	प	प	ध	प	प	ग	सा	ग	प
सु	हा	ऽ	सि	नी	ऽ	म्	सु	म	धु	र	भा	ऽ	बि	णी	म्
म्	म्	ऽ	म्	म्	ऽ	म्	म्	ग	म्	ग	गरे	सा	रे	ग	ग
सु	ख	दा	ऽ	ऽ	म्	व	र	दा	ऽ	म्	मा	ऽ	त	र	म्
प	म्	प	ऽ	ऽ	प	म्	ग	म्	ऽ	म्	म्	ग	रे	सा	सा
वं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	ऽ	सा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	सा	रे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
वं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ					ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
०				१				+				३			
								त्रि	ऽ	श	ऽ	त्को	ऽ	टि	ऽ
								प	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	प	ऽ
कं	ऽ	ठ	क	ल	क	ल	नि	ना	ऽ	द	क	रा	ऽ	ले	ऽ
प	ऽ	प	प	म्	म्	म्	म्	ग	ऽ	ग	ग	रे	ऽ	म	ग
द्वि	ऽ	त्रि	ऽ	श	ऽ	त्को	ऽ	टि	भु	जै	ऽ	धृ	ऽ	त	ख
म्	ऽ	म्	ऽ	म्	ऽ	म्	ऽ	म्	म्	म्	ग	ग	ऽ	ग	ग
क	र	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	के	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	मा	ऽ
ग	ग	रे	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ
तु	मि	अ	ब	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ब	हु	ब	ल	धा	ऽ	ऽ	रि
म्	ग	रे	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	सा	रे	ग	ग	ग	ऽ	ऽ	म्
णी	ऽ	ऽ	ऽ	न	मा	ऽ	मि	ता	ऽ	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	प	म्	द	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ
रि	पु	द	ल	वा	ऽ	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	रे	सा
प	ध	प	म्	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	ऽ	ऽ	म्	ग	ऽ	ऽ	ऽ
वं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	म्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग-संग्रह

भाग दूसरा

राग-पूरिया

इस रागमें ऋषभ कोमल हैं। गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह तीव्र लगते हैं। पंचम स्वर वर्जित है। यह राग रातके प्रथम प्रहरमें गाया जाता है। शांतरस प्रधान यह राग है।

आरोह—नी रे ग म ध नी सा
अवरोह—सा नी ध म ग रे सा

वादी—गंधार
संवादी—निषाद

मुख्य अंग—ना रे म ऽ ग ऽ म ग रे सा ग म ध नी म ध ग म ग रे सा

सुरावट, ताल—त्रिताल

ती	ती	ना	ना	धीं	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धीं	धीं	ना
		१				+						३		
म	ग	रे	सा	रे	नी	ध	सा	ऽ	ऽ	नी	ध	नी	रे	सा
ध	नी	रे	ऽ	सा	ग	ग	म	ध	नी	ध	म	ग	रे	ग
रे	ग	ग	म	ग	म	नी	म	ध	म	ग	नी	रे	ऽ	सा ॥
ग	म	म	ध	ध	म	ध	नी	सा	ऽ	सा	नी	रे	सा	ऽ
रे	म	ग	नी	रे	सा	नी	म	ध	ग	म	ग	रे	सा	ऽ

राग-पूरिया

ताल-त्रिताल, मध्यलय

कैपा मोह परे, संसार सागरमें गोता खाये ॥ धृ० ॥ ये दुनिया
अजब तमाशा । देखके नर भूले ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+					३		
कै	५	सा	५	मो	५	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
म	५	गरे	सा	सा	रे	नी	सा	नी	ध	नी	५	५	५	नी	ध
कै	५	सा	५	मो	५	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
म	५	गरे	सा	सा	रे	नी	सा	नी	ध	नी	५	५	५	नी	ध
सा	५	र	सा	५	ग	र	में	गो	५	५	ता	५	खा	५	ये
नी	५	नी	रे	५	ग	ग	ग	गम	ध	ग	म	ग	नी	रे	सा

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+					३		
ये	५	दु	नि	५	या	५	का	५	अ	ज	ब	त	मा	५	शा
म	ग	ग	ध	म	ध	नी	सा	सा	५	सा	सा	सा	सा	नी	रे
दे	५	ख	के	५	न	र	भू	५	ले	५	५	५	५	५	५
नी	ध	नी	रे	५	नी	ध	म	ध	गम	५	५	ग	सा	नी	रे

आस्ताईका बिलंपद

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
१	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	ग	रे	म	ग
२	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	रे	ग	म	रे	मग
३	कै	५	सा	५	५	ग	म	ध	ग	म	रे	ग	रे	म	म
४	कै	५	सा	५	५	म	म	म	ग	म	ध	ग	म	रे	ग
५	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	नी	नी	म	म	५
६	नी	रे	ग	५	रे	५	म	५	ग	५	५	५	म	ग	रे
७	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
८	धनी	रे	सा	५	ग	म	ध	ग	म	ग	म	नी	ध	म	ध
९	ग	५	५	ग	रे	रे	म	ध	म	ग	ग	म	ध	नी	ध
१०	नी	रे	ग	म	ध	नी	म	ध	ग	म	रे	ग	रे	म	ध
११	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
१२	नी	मग	ध	म	नी	म	ध	ग	म	५	५	ग	रे	ग	५
१३	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५
१४	नी	रे	म	ग	म	नी	ध	म	ग	५	५	म	ध	म	ग
१५	मो	ह	प	रे	मो	ह	प	रे	मो	ह	प	रे	५	५	५
१६	म	ग	रे	सा	म	ग	रे	सा	म	ग	रे	सा	५	५	५
१७	कै	५	सा	५	मो	५	५	ह	प	रे	५	५	५	५	५

अंतरेका विलंपद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(५)

गं रे सां नी ध नी धम ध ग धम मग रे सा S S S
 गग गम मम मम मनीनीनीधनी रेगं मे गं रे सां नी रे S सां
 रे S दु नि या S का S अज S बत मा S शा अज S बत मा S S S शा S अज S बत मा S S S शा
 धम मधनी रे नी धम मग S गम ग रे सा मग S गम मधनी धनी ध मग S गम गम ग रे सा
 रे S दु नि या S का S अज ज S S ब S त S मा S शा S S
 म ग म ध नी रे गं S मम ग रे नी ध मग मग धम नी ध सां

राग-पूरिया

ताल-त्रिताल, मध्यम्य

शाम सुंदर रे । बिनति करत हूं, पैया परत हूं ॥ धृ० ॥ नाहक तुमनें
 मचई । फेकत अबीर गुलाल लाल चहुं ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना
 १ + ३
 सा S म सुं S द S S र रे S S S S S S S
 ग S ग म S सानी S रे सा S S S नी रे सा S
 बि न ति क र त हूं S पै S या प र त हूं S
 नी रे ग म ध नी म ध म S ग म ग रे सा S

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना
 १ + ३
 ना S ह क तु म S ने S S धू S म म चा S ई S
 ग S ग म धम धनी सा सा S सा रे सा S सा S

(६)

फे ऽ क त अ बि र गु ला ऽ ल ला ऽ ल च
नी ध नी रे नी ध म ध म ऽ ग म ऽ ग रे

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
१शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ ऽ	नीरे गम गरे
२शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ नीरे	गम धनी मध गम
३शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ गम धनी	धम गरे नीरे
४शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे नीरे गम धनी	सानी धम गरे
५शा ऽ म सुं	ऽ दऽ र गम	गरे सा गम धनी	मध गम गरे
६शा ऽ म सुं	ऽ दऽ र गम	धनी सानी नीध धम	मग मग रेसा
७शा ऽ ऽ म	नीरे गम धनी सा	नीध मध नी धम	गम धम मग रेसा
८शा ऽ ऽ म	गम गरे धनी धम	नी रे नीध मनी धम	नी नीधम गरे
९शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ ऽ	नीरे गम धनी
नीरे गम ध नीनी	नीरे गम रेग म	गग रेसामम गग	नीनी धध मम गग
शा ऽ म सुं	ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
१० शाऽ मऽ सुंऽ दर	बिऽ नऽ तीऽ कऽ	र ऽ त हुंऽ पै	या ऽ प रत हुं
साग गरे गम मग	मध धम धनी नीध	म ऽ नी धम ग	ग ऽ म गरे
शा ऽ म सुं	ऽ ऽ दऽ ऽ र	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
११ नीरे गम धनी रेग	गरे नीरे रे ध नीनी	मध धग मम रेग	गम नीध मग रेसा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	+	३	
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	धू ऽ म म चा ऽ ई ऽ		
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	नी रे नीध मग रेसा	नी रे गम धनी रेसा	
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	मध नी रे ग रे नी रे	नीध मग रेसा रेसा	
ना ऽ ह क तु मऽ मध नी रे	ग रे ग रे रे नी नीध	धम मग सानी नीध	
मग मग नीध धम मग धम मग ग रे	सा नी रे गम रेग	मध गम धनी मध	
ना ऽ ह क गम धनी रेग ऽ रे	सा नीध मग रेसा	नी धम ग रे सा	
ध मग मग नीध नीध नीध रे नी रे नी	रे नी धनी धनी मध	मध गम गम ग	
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	धू ऽ ऽ म गम धनी रेग म		
मग मध नी रे ग मग मध नी सा सा	रेग मध नीध नी	नी रे गम धनी नी	
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	धू ऽ म म चा ऽ ई ऽ		
नी रे गम धनी रेग मम ग रे सा नी धम	ग रे सा ग रे रे सा	नीध मग रेसा सा	
ना ऽ हऽ ऽऽ कऽ तुऽ मऽ नेऽ	ऽऽ ऽऽ धूऽ मऽ मऽ चाऽ ऽ ई		
म ग मध नी रे नीध मग नी नी धम	ग रे सा सा मग धम	नीध सानी रे सा	
ना ऽऽऽ ऽऽ हऽ कऽ ऽऽ ऽ तु	मऽ नेऽ ऽऽ धू मम चाऽ ऽऽ ई		
मग धनी रेग रे नी धम ग रे सा सा	नीध मग रेसा नी	धम गम ग रे सा	
ना ऽ ह क तु मऽ नेऽ ऽ	धू ऽ म म चा ऽ ई ऽ		
मग मग मम मम धध धध नी नी नी नी सा सा नी नी धम मम	मम गग रे रे सा		

(८)

राग-पूरिया ख्याल

ताल-एकताल, ठायलय

फूलनके हरवा गूँथ लावूरी मालनिया । मैं दाहू बनेके गरवा ॥ धृ० ॥
 मोर मुकुट सीस सेहेरा बिराजे । बनरीके गजरे मख तूला ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

फऽऽलनऽऽजे

मऽऽगसानीरेनी

हऽऽ ऽऽ र ऽऽ वा ऽ ऽऽऽऽ गूँथ लाऽ वूरी माऽ लनी
 धमम नीध सा नीरे सा ऽ सारेसासानीध सानी रेसा मग रेसा
 याऽऽ मैऽ दाऽ रुब ने ऽ केऽऽऽ ऽऽ गऽरऽ वा
 रेसासानीध नीरे गरे ग ऽ मऽधग मग गमगरे सा

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक तू ना क ता धागे त्रक धीं ना
 + ० ४ ० १ २

मोऽरऽ सुकुट

मधसाऽऽसासासा

सीऽ ऽस सहेऽऽ राबि राऽऽ जेऽ ऽऽ ऽऽ बन री के गज
 सानी रेसा सारेसासानीध साधनी धम धग मग नीरे ग ग गग
 रेऽ ऽऽ ऽऽ मख तू ऽऽ ऽऽ ऽऽ ला ऽ
 धम नीध नीरे नीध म धग मग नीरे सा ऽ

(९)

राग—पूरिया तराना

ताल—त्रिताल, जलदलय

तों तनन तनन तन देरेना । तन देरेना तनना देरे देरे तनन निततन
 निततन देरेना तननन देरेना देरेना दीं तना दीं दीं तनन ता दीं दीं दीं तनन
 दी तननन न देरेना देरेना देरेना दीं तना दीं दीं तनन दिर दिर दिर दिर
 दानी ॥ धृ० ॥ ना दिर दिर धितिलाना दीं तननन दीं तननन नितनन
 नितारे तन नितारे तन ना दिर दिर तुं दिर दिर धितलान् तुं दिर दिर धित-
 लान् तुं दिर दिर धितलान् तुं दिर दिर दिर दिर दिर दिर दानी ॥ १ ॥

अस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
				०				१				+			
५	५	तों	५	त	न	न	त	न	त	त	न	दे	रे	ना	५
५	५	म	५	ग	म	ग	रे	सा	रे	सा	सा	नी	रे	सा	५
५	५	त	न	दे	रे	ना	५	५	५	त	न	ना	दे	रे	दे
५	५	सा	सा	रे	सा	नी	५	धु	५	सा	नी	रे	ग	रे	ग
५	५	त	न	न	नि	त	त	न	नि	त	त	न	दे	रे	ना
५	५	सा	सा	सा	रे	सा	सा	सा	रे	सा	सा	सा	नी	नी	नी
५	५	न	न	न	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दीं	५	त	ना	५
५	५	नी	नी	धु	धु	धु	म	धु	सा	नी	रे	सा	५	ग	रे
५	५	त	न	न	त	दीं	५	दीं	दीं	५	त	न	ना	दीं	५
५	५	रे	सा	सा	नी	नी	५	नी	रे	५	ग	ग	म	ध	५
५	५	न	न	न	दे	रे	ना	५	दे	रे	ना	५	दे	रे	ना
५	५	म	ग	ग	नी	नी	रे	५	ग	ग	म	५	म	म	नी

(१०)

ऽ त नाः ऽ दी ऽ दी ऽ त न न ऽ
 ऽ ध म ग म ऽ म ऽ म ग ग ऽ
 दा नी
 सा सा

दिर दिर दिर दिर
 म म ग

अंतरा

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १

ना धीं धीं ना
 +

ति ला ना ऽ दी ऽ त न न न दीं ऽ
 म ध ध म ध सा सा सा सा सा सा ऽ
 नि त त न नि त त न नि ता ऽ रे
 नी रे नी ध म नी ध म ग ग ऽ म
 ऽ रे त न ना दिर दिर तुं दिर दिर धे त्तां
 ऽ म ग रे ग ग ग म म म म ध
 धे त्तां ऽ तुं दिर दिर धे त्तां ऽ तुं दिर दिर
 म ध ऽ म ग ग ग म ऽ म ग म
 दा नी
 सा सा

ना दिर दिर धि
 ग ग ग
 त न न न
 सा सा सा सा
 त न नि ता
 ग रे ग ग
 ऽ तुं दिर दिर
 नी ध म म
 दिर दिर दिर दिर
 ग रे सा सा

राग—बिहाग

इस रागमें ऋषभ, गंधार, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र लगते हैं। ऋषभ स्वर कोमल तथा तीव्र लेने की प्रथा है, आरोहमें ऋषभ और धैवत नीत है। यह राग रातके प्रथम प्रहरमें गाया जाता है। यह राग शृंगार प्रधान है।

आरोह—नी सा ग म् प नी सा
अवरोह—सा नी ध प म ग म् ग रे सा

वादी—गंधार
संवादी—निषाद

मुख्य अंग—नी सा म् ग प प म ग म् ग ऽ रे सा

सुरावट, ताल—त्रिताल

धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	
नी सा म्	ग ऽ ऽ ऽ	नी सा म् म्	ग म् ग प ऽ
१ ऽ ग म्	प म् ग रे	सा नी सा म्	ग रे सा ऽ ॥
१ म् प नी	ध प ग म्	प नी सा ऽ	प नी सा ऽ ॥
३ नी प नी	सा ग रे सा	नी ध प म	ग म् ग रे सा ॥

राग—बिहाग

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

तेरो गुननको देखके मेरो मन तुम पर बस गयो रे ॥ धृ० ॥ तेरो देखके मेरी सुध बिसर गई रे । तेरो दरसन पर तन, मन, धन, मैं किये ॥ १ ॥

अस्ताई

तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	+	३	
रो ऽ गु	न ऽ न ऽ को ऽ	दे ऽ ऽ ख	के ऽ ऽ ऽ
सा ऽ ग	ग म् प ध ग म्	ग ऽ ऽ म्	ग ऽ रे सा सा

(१२)

मे रो म न तु म प र ब स ऽ गऽ यो ऽ रे
 सा सा नी नी सा सा ग म् म् ग ऽ पम् ग रे सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ते ऽ रो ऽ	मु ख को ऽ	देऽ ऽऽ ऽ	ख के ऽ ऽ
ग म् ग म्	प प नी ऽ	नीध पम ग म्	ग ऽ ऽ
मो री सु ध	बि स र ग	ई ऽ ऽऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ
ग म् प नो	प नी सा रे	सा ऽ नीध पप	सा ऽ ऽ
ते रो द र	स न प र	त न म न	धऽऽ न मै
नी नी सा सा	ग ग ग म्	ग रे सा नी	धपप प प
ऽऽ ऽऽ अ र	प न ऽ कि	यो ऽ ऽऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ
नीध पप प ध	प प ऽ म	ग ऽ गम् पम्	ग रे सा

अस्ताईका विलंपद

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ते रो ऽ गु	नऽ नऽ को ऽ	दे ऽ ऽ ख	के ऽ ऽऽ
ते रो ऽ गु	नऽ नऽ को ऽ	सा ऽ म् ग	प ऽ ऽ
ग ऽ ऽ म्	ग ऽ ऽ ऽ	म् ऽ ग रे	सा ऽ ऽ
ते रो ऽ गु	नऽ नऽ को ऽ	प ऽ नी सा	ग ऽ सा
म् ऽ ऽ ग	सा ऽ म् ग	ग म् ग म्	ग रे सारेती

ते रो ऽ गु नऽ नऽ को ऽ दे ऽ ऽ ख सा रे नी सा
 ग ऽ म् प ऽ ग म् ग ऽ ऽ प म् ग रे सा
 ते रो ऽ ऽ नी सा ग म् ध ऽ ऽ प ऽ म ग म्
 ग ऽ म् ग ऽ ऽ ग रे सा नी म् ग रे सा नी
 ते रो ऽ गु नऽ नऽ को ऽ दे ऽ ऽ ख के ऽ ऽ ऽ
 सा ग म् प नी ऽ ऽ ध पध मप ग म् नी ध प ऽ.
 ऽ म ग म् सा ऽ म् ग म् ग प ध नी सा म् ग
 म् ग सा नीं ऽ ध ग म् ध ऽ ऽ ग ऽ म् ग ऽ.
 म ऽ नी ध प ऽ म प ऽ म ग म् ग ग सा सा
 ते रो ऽ गु न न को ऽ ऽ दे ऽ ऽ ख के ऽ ऽ ऽ
 प सा ऽ सा सा म् ग म् ग प नी ध नी पध मप ग
 ऽ म् ग प म नी म प नी प म म् ग ऽ रे सा
 ते रो ऽ गु नऽ नऽ को ऽ दे खऽ के ऽ मे रो म न तु.
 सा म् ग म् ग प म ध प सा.
 मऽ प रऽ ब स ऽ ऽ गऽ यो ऽ ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ.
 मऽ प पम म् ग ऽ ध पम ग म् ग पम धप ध ग म् ग रे सा.
 ते रो ऽ गु नऽ नऽ को ऽ ग ऽ नी ऽ ग ऽ सा ऽ.
 म ऽ प ऽ नी ग ऽ ध ग ऽ म् पम् ग ऽ ग रे सा.
 ते रो ऽ प ऽ सा ऽ ग ऽ प ऽ नी धप म नी धप
 म ध पम ग ऽ म् पम् ग म् प सा ऽ ग पम् ग रे सा

अंतरेका विलंपद

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ते ऽ रो ऽ	मु ख को ऽ	देऽ ऽऽ ऽ ख	के ऽ ऽ
३ म् ग प ऽ	नी ऽ प ऽ	नी ऽ नी ऽ	नी रैसा सा
२ ते ऽ रो ऽ	मु ख को ऽ	ग ऽ ऽ पम्	गं ऽ ऽ
प ऽ ऽ रैसा	नी ध प ऽ	ग म् प नी	सा रै सां
३ ते ऽ रो ऽ	मु ख को ऽ	सां नी नी ध	प म म
प म् ग ग	नी ध प प	रै सा नी ध	पध पप सां
४ ते ऽ रो ऽ	सा ऽ प म्	ग ऽ ऽ म्	प नी सां
नी ऽ सां ऽ	नी नी नी नी	ध ध ध ध	प म प
ग ऽ म् प	सां ऽ ऽ ऽ	प ऽ ग म्	ग ऽ नी
५ ते ऽ रो ऽ	सां नीं ऽ नी	पध प मप म	गम् ग नीसां
धनी ध पध प	मप म् गम् ग	नीसां नी ध प	पनी ऽ ध प
म् ऽ ग प	ऽ म नी ऽ	ध नी ऽ सां	ऽ गं सां
ते ऽ रो ऽ	मु ख को ऽ	देऽ ऽऽ ऽ ख	के ऽ ऽ
६ ग ऽ म् ऽ	प ऽ नी सां	प ऽ नी ऽ	सां ऽ गं
गं रैसां नी ऽ	प ऽ रै सां	नी नी ध ध	प प सां
प ऽ रै सां	प ऽ गं रै	सां ऽ म् गं	रैसां सां नी
७ ते ऽ रो ऽ	ऽ ऽ मु ख कोऽऽ ऽ ऽ	दे ऽ ख	नी ऽ सां
ग म् ग म्	प नी सां गं	रैसां सां ऽ ऽ ऽ	नी ऽ सां
ऽ नीध प ग	म् प नी प	नी सां गं नी	सां गम् गं

ते रोऽऽऽ S S S S सु ख कोऽऽ दे S S ख कोऽ
 सा नीध पध ग म् प नी सा रे सा रे सा सा म् ग म् ग रे
 सा S S नी S रे सा S नी S रे सा S नी S सा ग सा S
 नी नीध प S ग ग रे सा S म् म् ग ग ग रे सा नी धप म
 १० पप सा सा ग S प म् ग रे सा नी S धप म S पम गम् ग

राग—बिहाग

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

धिरज धरो मनमें पिया रे । आजके दिनवा रहो मंदरमें । इतनि बिनति
 मेरी मानरे ॥ धृ० ॥ बहुत दिननसे आन मिले । काहे जाते अब छोड के ॥१॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 १ + ३
 धि र ज ध रोऽऽ म नऽ में S S पि या S रे S
 पु नी सा म् ग रेसा ग म् ग प S ग म् ग रे सा S
 आ ज के S दि न वाऽऽ र हो S मं द र में S
 सा सा सा म् ग सा गम् पध प प S म ग म् ग S
 र त नि बि न ति मो री माऽ S S न रे S S S
 प नी ध सा नी ध प प पप ध ग म् ग रे सा S

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ब डु त दि	न न से ऽ	आ ऽ नऽ मि	ले ऽ ऽ ऽ
ग म् प नी	सां रे सां ऽ	नी ऽ रेसां सां	नी ध प ऽ
का हे जाऽ ऽऽ	तेऽ ऽ अ ब छोऽ ऽ ऽ	ड के ऽ ऽ ऽ	
प नी नीसां रेसां	नीध प प ध	पप ध ग म्	ग रे सा ऽ

अस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
धी र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में ऽ ऽ पि	या ऽ रे ऽ
१धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में ऽ ऽ ऽ	नीसा गगरेसानीसा
२धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में ऽ ऽ गम्	पम् गम् गरेसासा
३धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में गम् पनीसां नी	धप म्ग रेसानीसा
४धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में सां रे सां नीधप	म्ग पम् गरे सानी
५धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	पप सां नीधप म्ग	रेसानीसा गम्पनी
६धि र ज ध	रो ऽऽ पम् गरे	सा सां रेसां नीपध	मप गम् गरे सा
७धि र ज पप	नीसा गगरेसासानीसा	पम गम् गरेनीनी	धप गम् गरे सा
धि र ज ध	रो ऽऽ म नऽ	में ऽ ऽ पि	या ऽ रे ऽ
८नीसासासाम्ग म्ग	गम् पप पध धप	मप पम ग म्ग	गम् ग म्ग रेसा
९धि र ज ध	रो ऽऽ नीसा म्ग	पम धपसां नीसाध	नीप धम पग म्ग

१० नीसा गम् पध गम् पनीसा नीधप गम् पनीधप मप धध पम गम् गरे सा
 ११ धी र ज ध रो ऽऽ म नऽ ऽऽ ऽऽ में पिऽ याऽ रेऽ ऽऽ ऽऽ
 ध पम पम गम् ग नीध नीध पम गम् पग
 १२ धीऽ रऽ जऽ ऽऽ धऽ ऽऽ रोऽ ऽ म नऽ मेऽ ऽ म नऽ मेऽ ऽ
 सानीसाम् गरे नीसा गम पध पम ग सानीध पम ग प गम् गरे सा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 व हु त दि न न से ऽ आ ऽ नऽ मि ले ऽ ऽ ऽ
 १ व हु त हि न न से ऽ पनीसा नीधप मप गम् पनीसा रैनीसा
 २ व हु त दि न न से ऽ गम् पनीसा ग रैसा नीध पम गम् ग
 ३ व हु त दि न न से सा नीध प नीनीधप म धध पम ग
 ४ व हु त दि न न रैसा सानी नीध धप धप पम गम् पम गम् ग
 ५ व हु त ऽ गम् पनी पनीनीसा सानी धप नीध पप धप मप गम् ग
 व हु त दि न न से ऽ आ ऽ नऽ मि ले ऽ ऽ ऽ
 ६ सा गम् पनी साग रैसा नीध पम पसा नीध पप पनी धप मप गम् गरे सा
 ७ व हु त दि न सा रैनीसा धनी पध मप गम् गरे सा गम् पनी सा
 सा नीध पम गम् गरे सा ध मप मप गम् गम् नीध पम् पम् गरे सा
 ८ व हु त दि नऽ नऽ सेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
 साम् गरे सानी धप मप गम् गरे सा गम् पनी साग रैसा

९ बऽ हुऽ तऽ दिऽ नऽ नऽ ऽऽ से आ नऽ मिऽ ले ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
 सा॑नी रे॑सा॑नीध नीध पध पम गम् ग सा॑नीध मप सा॑ नीध पम म् ग
 १० गम् पनीसा॑गनीसा॑ म्ग रे॑सा॑नीध पम रे॑सा॑रे॑सा॑ नीध पम नीध नीध पम धप
 धप पम पम गम् पसा॑ ऽनी धप पनी ऽध पम गम् ध पम गप म्ग रेसा॑

राग-बिहाग

ताल—एकताल (ठायलय)

कैसे सुख सोवे नीदरिया शाम मूरत चित चढीवे ॥ धृ० ॥ सोच सोच
 सदारंग उकलावत या भेदन अत बढीवे ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
										कैसे	ऽऽसुख
										सा॑नी	सा॑गम्
सो	ऽऽ	ऽऽ	वे	ऽऽऽ	नी॑ऽ	ऽऽ	दरियाऽ	ऽ	ऽ	शाम	मूऽऽ
प	पम	गम्	ग	गम्ध	पम	गम्	पम्गरे	सा	ऽ	साम्	गम्गम्
त	ऽ	चित	चऽऽ	ढी	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वेऽऽ	ऽ		
प	ऽ	पप	धनीध	प	धम	पम	गम्	गरेसा	ऽ		

अंतरा

धीं धीं धागे ऋक तू ना क ता धागे ऋक धीं ना
 ० ४ ० १ २
 सोच सोच
 (पनी सीसा)
 दाऽऽऽ रंऽ गऽऽऽ उक लाऽऽ व त याऽभेऽऽद न ऽ
 नीसारैसा नीध पऽगम् पम् गरेना सा सा साम्गम्गम् प ऽ
 त बऽऽ ढी ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ वेऽऽ ऽ
 प धनीध प धम पम गम् ग गरेसा ऽ

राग—बिहाग

ताल—त्रिताल (मध्यम्य)

राजनके राजा महाराजा । गरिब निवाजा देत दान । गुनियनमें सब
 फल गावो ॥ धृ० ॥ चरन तक आये मन भाये फल पाये । तुम विन कौन खबर
 ले सिर ताजा ॥ १ ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 राऽऽ ज न केऽ रा ऽ जा म ऽऽ हा ऽ रा ऽ जा ऽ
 गम् पध ग म् गरे सा नी सा नी ऽध प ऽ नी सा सा ऽ
 ग रि ब नि वा ऽ जा ऽ देऽ ऽ ऽ त दा ऽऽ न ऽ
 सा ग ग म् ग ऽ ग म् गम प ग म् ग रेसा सा ऽ

गु नि य न मेंऽऽ स ब मि ल गाऽऽ वो ऽ ऽ
 प म् ग रे सा रे सा सा ग म् प सा नीध पम ग म् ग

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 राऽऽ ज न केऽ रा ऽ जा च र न त क आऽ ऽ
 गम् पध ग म् गरे सा नी सा ग म् प नी ध नीसाऽ
 म नऽभाऽ ऽ ये ऽ फ ल पाऽऽ ये ऽ तु म वि
 नी रेसा नीध प ग म् प म् गरे सा सा ऽ सा सा म्
 कौ ऽ न ख ब र लेऽऽ सि र ताऽऽ जा ऽ ऽ
 प ऽ नी ध नी सा नीध प प ध पध पम म म् ग

राग—बिहाग तराना

ताल—त्रिताल (जलदलय)

ना दिर दिर दानी तदानी तों तनन तोंतोंतननननन देरेनादेरेना दी
 तदी तानदेरे तदरे तद्रेदानी ना दिर दिर तनननन तुं दिर दिर दिर दिर दि
 दानि ॥धृ०॥ ना दिर दिर दिर धेत्तेलाना दी तननन दी दी तनननन
 तदारे तद्रेदानी तक् धिडान् धिङ् नक् तिरकिट तक् तक् धिडान तक् धा तक्
 धिडान् तक् धा तक् धिडान् तक् धा तदारे दानी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ना दिर दिर दा नि त दा नि तों ऽ ऽ त न न तों ऽ
 सा म् ग प प ध प प सा ऽ ऽ नी ध नी प ऽ

(२१)

५	त	न	न	न	न	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दी	५	
५	ग	म्	ग	रे	ग	म्	द	ध	ग	म्	ग	रे	सा	५
दी	५	ता	५	न	दे	रे	त	दा	५	रे	त	द्रे	दा	नि
सा	५	प	५	रे	नी	सा	म्	ग	५	म्	ग	रे	सा	सा
दिर	दिर	त	न	न	न	न	तुं	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	नि
नी	सा	रे	सा	नी	ध	प	ग	म्	ग	रे	सा	रे	नी	सा

अंतरा

तीं	तीं	ना	ना	धीं	धी	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
			१				+				३			
दिर	दिर	दिर	धे	ते	छा	ना	दीं	५	त	न	न	न	दीं	५
प	नी	नी	सा	सा	सा	सा	सा	५	सा	सा	सा	सा	ग	५
५	त	न	न	न	न	न	त	दा	५	रे	त	द्रे	दा	नि
५	ग	रे	सा	नी	ध	प	म्	ग	५	म्	ग	रे	सा	नी
घिडां	५न्	घिड	नक्	त्तिर	किट	तक्	तक्	घिडां	५न्	तक्	धा	५	तक्	घिडां
५न्	ग	ग	रे	प	म्	ग	सा	ग	५न्	रे	सा	५	प	प
तक्	धा	५	तक्	घिडां	५न्	तक्	धा	५	५	त	द	रे	दा	नि
रे	सा	५	प	प	५प	ध	ग	५	५	म्	ग	रे	सा	नी

राग-दुर्गा

इस रागमें ऋषभ और धैवत यह स्वर तीव्र है। मध्यम यह स्वर मूल है। गांधार और निषाद, यह स्वर वर्जित है। यह राग रातके दूसरे सें गाया जाता है। यह राग शृंगार रस प्रधान है।

आरोह—सा रे म् प ध सा
अवरोह—सा ध प म् रे सा ध सा

वादी—मध्यम
संवादी—षड्ज
जाती—ओडव-ओडव

मुख्य अंग—सा रे ध सा म् रे म् प ध प ध म् रे ध सा

(२२)

सुरावट, ताल—झपताल

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
ध प	ध म् रे	सा रे	ध सा सा
रे रे	म् प म्	ध म्	रे ध सा ॥
म् म्	प ध म्	प ध	सा रे सा
म् रे	सा ध सा	ध म्	रे ध सा ॥

राग—दुर्गा

त्रिताल (मध्यलय)

कुंजबनमें गोपी करत विहार । रंग रंगके फूल चुनके डारे गले हार
॥ धृ० ॥ शाम सुंदरकी मूरत देखे होत अनंद अपार ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना	धीं धीं ना ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
कुं ज ब न	में ऽ गो ऽ पी ऽ	क र त बि	हा ऽ ऽ र
म् रे सा ध	सा ऽ रे म् प ध	म् म् रे सा	ध सा ऽ सा
रे ऽ ऽ ग	रे ऽ ग के	फु ऽ ऽ ल	चु न के ऽ ऽ
म् रे म् प म्	म् रे ध सा	म् रे म् प ध	म् रे सा ध सा
डा ऽ रे ग	ले ऽ ऽ ऽ	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र
प ध प ध	म् रे म् प	म् रे म् सा	रे सा ध सा

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	
शा ऽ म सुं	द र की ऽ	मू ऽ र त	दे ऽ खे ऽ
म् ऽ ध ध	सां सां सां ऽ	ध म् ध ध	सां ऽ सां ऽ
हो ऽ त अ	नं ऽ दं अं	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र
सां ऽ सां सां	ध ऽ म् म्	प रे म् सा	रे साधु सा सां

अस्ताईका विलंपद

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	
कुं ज ब न में ऽ गोऽपीऽ	क र त वि हाऽ	ऽ ऽ र	
१ कुं ज ब न में ऽ ऽ ऽ रेधु सा म् म्	रे रे सा धुसा		
२ कुं ज ब न में ऽ म् सा रे धु सा धु सा	ऽ म् रे		
३ कुं ज ब न में ऽ रेधु सा म् रे साधु धु सा	म् रे पम् ध ऽ		
४ कुं ज ब न साधु रे रे ऽ रेसा म् म् रे	रेम् सारे धु सा		
कुं ज ब न में ऽ गोऽपीऽ	क र त वि हाऽ	ऽ ऽ र	
५ म् ऽ म् रे म् ऽ म् प म् प ध म् रे	धप म् रे साधु सा		
६ साधु रेसा म् रे पम् म् प धप ध म् रे ध म्	रे ऽ म् सां		
७ सासा धु रेरे धु म् म् रे धध म् ध सां सां सां ध धध म् म् म्	रे		
साधु सा म् ध सां ध ऽ म् ऽ रे ऽ सा	ऽ धु रेसा ऽ		
८ कुं ज ब न में ऽ ऽ ऽ ध ऽ म् रे ध ऽ म् म् रेरे			
सां धध ऽ म् म् म् म् ऽ रे रे रेरे ऽ सा धु रे धु म् ध ध ऽ			
कुं ज ब न में ऽ गोऽपीऽ	क र त वि हाऽ	ऽ ऽ र	

९ कुं जऽ बऽ नऽ मेंऽ ऽ ऽ ऽ गोऽ ऽ पीऽ ऽऽ क रऽ त ऽ
 सा मूरे पम् धप साध सा ऽ ऽ साध सा धसा धप मू धप ध ऽ
 वि हाऽ ऽ रऽ ऽ ऽ गोऽपीऽ क र त वि हाऽ ऽ ऽ र
 ध मूम् रे मूरे ध सा रेम् पध मू मू रे सा धसा ऽ ऽ सा
 १० सा रेऽम् सा ऽ रेम् ऽध मू मू मूधऽसा ध ध साधऽसा ध मू
 धप ऽध मू रे मूरेऽम् सा सा मू रेसा ध मू रे सा धध सा

अंतरका विलंपद

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १

शा ऽ म सुं द र की ऽ मू ऽ र त दे ऽ खे ऽ
 १ सा ध मू ध रे मू सा रे मू ध मू ध सा ध सा ऽ
 र ध रे सा ध मू ऽ रेम् ध ध ध धरेऽरे सा रे ध सा
 ३ शा ऽ म सुं द र की ऽ सासाधसाऽसाधसा धध मू मध ऽध
 मूसाऽसा मूरेऽरे रेरे सा साधसाध साध मू रे मूप धसा रे साध मू
 ४ शा ऽ म सुं द र की ऽ ध मू रेरे सा सा ध मूम् रे
 सा रे सा धध मू रे रे सा मू रे सासा ध मू रे सा ऽ
 शा ऽ म सुं द र की ऽ मू ऽ र त दे ऽ खे ऽ
 ५ मूम् रेरे धध सा ध सा रेसा धमू ध मूधसाधसाध मूधमूध मू रेमरेमू सा
 ६ शाऽ मऽ सुंऽ दऽ रऽऽ कीऽ म रऽतऽ दे खेऽ मू रऽत देऽऽ खेऽ देऽऽ खेऽ
 मूरे मूरे साध धसा धसाधसा रेसासा रेरेसा ध धमू ध धरेसा रेमसाधसा धसाधरेध

७ शा ऽ म सुं द र की ऽ मू ऽ र त म् रे सा ध
 म् रेसा ध सा रे सा ध म् सा ध म् रे धम् रेसा ध सा
 ८ शा ऽ म सुं द र की ऽ मू ऽ र त म् रे म्सा रेसा रेध
 म्प पध धसा सा रे रेम् सा रेधसा म्ध रेम् सा रेम्पधसा सा रेम्पधसा रे म्
 ९ शा ऽ म सुं द र की ऽ मू ऽ र त दे ऽ खे ऽ
 सासा सासा धध धध रेरे रेरे धध धध रेरे म्ध म्म धसा म् सासा ऽध ध
 म् सासा म्म धध धसा सासा धध म्म सा रेसा धधसा धम् म् धध म्म रे रे ऽपम् रेसा
 सा रेम्पधशा ऽ म सुं द र की शा ऽ म सुं द र की म्मू ऽ र त दे ऽ खे ऽ
 म ऽ धध सासा सा म्म धध सासा सा धम् ध ध दे ऽ खे ऽ
 १० ध ऽ धरे रेसा सा ध ऽ सा ऽ साम् म् रे रे सा ध सा साम् रे म् रे सा सा
 ध ऽ सा रेसा ध सा धसा धम् ध म्धप म् रे ऽ रेम्प रे रे म्सा सा

राग—हुर्गा

त्रिताल (मध्यलय)

ए हो रंग भरके झोरी । सुंदर गुलाल और अबिरनकी थाल । केसर रंग भर
 के होरी ॥ धृ० ॥ फूल चमेली मोतियन गजरा । गुँथत गुँथत आयो बनवारी ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 १ + ३
 ऽ हो ऽ रं ग म र के ऽ ऽ ऽ झो ऽ री ऽ
 ऽ पम् म् रे सा म् रे प ऽ ऽ ऽ ध पम् प ऽ

सुं	द	र	गु	लाल	और	अ	बि	र	न	की	थाऽ	ऽ
म्	म्	ध	ध	सां	सां	सां	सां	रैं	म्	रैं	सां	सां
के	स	र	रं	ऽ	ग	भ	र	खे	ऽ	लेऽ	ऽऽ	हो
ध	ध	सां	ध	ऽ	म्	प	प	ध	ऽ	धसां	रैंसां	ध
												पम्

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+				३			
फ़	ऽ	ल	च	मे	ऽ	ली	ऽ	मो	ति	य	न	ग	ज	राऽ	ऽ
म्	ऽ	ध	ध	सां	ऽ	सां	ऽ	सां	रैं	म्	रैं	सां	सां	धप	म्
गुं	ऽ	य	त	गुं	ऽ	य	त	आ	योऽ	ऽऽ	ब	न	वाऽ	ऽ	री
म्	ऽ	प	प	म्प	ध	ध	ध	ध	धसां	रैंसां	ध	ध	धप	म्	प

अस्ताईकी तानें

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+				३			
ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	भ	र	के	ऽ	ऽ	ऽ	झो	ऽऽ	री	ऽ
१	ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	भ	र	के	ऽ	ऽ	म्	म्	रैंसां	रैं
२	ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	भ	र	के	ऽ	सां	म्प	धसां	धध	म्
३	ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	भ	र	म्	रे	सारे	म्पधम्	म्प	धसां	धध
४	ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	सारे	म्प	धप	म्पध	सां	रैंसां	धप	म्	रैंसां
५	म्	म्	रैं	पप	म्	म्	धध	म्	म्	सां	सां	धध	धध	म्	रैं
६	ए	ऽ	होऽ	ऽ	रं	ग	भ	र	सां	रे	म्	रे	सां	ध	धप
७	ध	रैं	सां	सां	धप	ध	सां	धप	म्	म्	म्	रे	सां	ध	ध

७ ए ऽ होऽ ऽ रं ग भ र के ऽ ऽ ऽ सासा रेरे म्म पप
 धधसासा म्म पप धध रेरे म्म पप रेरे म्म रेरे पप
 ए ऽ होऽ ऽ रं ग भ र के ऽ ऽ ऽ झो ऽऽ सी ऽ
 ८ सारे म्म धप म्मरे सारे म्म धसा धप म्मरे सारे म्म धसा रेसा धप म्मरे सा
 ९ ए ऽ होऽ ऽ रंऽ गऽ भऽ रऽ केऽ ऽऽ ऽऽ झोऽ ऽऽ ऽऽ राऽ ऽऽ
 म्म रेसा धसा धसा धप म्मरेसासासा धप म्म रेसा धसा
 ए ऽ होऽ ऽ रं ग भ र के ऽ ऽ ऽ झो ऽऽ री ऽ
 १० ए ऽऽ होऽ ऽऽ रंऽ गऽ भ र के ऽऽ ऽऽ ऽ झो ऽऽ रीऽ ऽऽ
 रेम्मरे म्म पम् पध धप म्म सा धपम्म म्म म्म धप म्म रेसा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ५ ऽ ल च मे ऽ ली ऽ मो ति य न ग ज राऽ ऽ
 १ ५ ऽ ल च मे ऽ ली ऽ सासा धप म्मरे सा सारे म्म धसा रेसा
 २ ५ ऽ ल च मे ऽ ली ऽ सासा धप म्म धप म्म रेसा रेसा रे
 ३ ५ ऽ ल च मे ली सारेसासा धध म्म सारेसासा धध म्म रेरे सासा
 ४ पध साप धसा पध सासा धप म्म रेसा रेसा म्मरे पम् धप साध रेसा पध साध
 ५ ५ ऽ ल च मेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ लीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 सारे म्म रेम् पध म्म धसा धप म्म रेम् पध साध सा
 ६ ५ ऽ ल च मेऽ ऽ ऽऽ ऽ लीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
 सारे धसा म्म रे सारे धसा म्म रे म्मरे पम् धप ध

७ फ़ ड ल च ड मे ली ड ड मो ड ती य न ड ग ड ज ड रा ड ड ड ड ड
 सा ध सा ध प ध प म् प म् म् रे सा म् रे प म् ध प सा ध रे सा म् रे
 ८ फ़ ड ल च मे ड ली ड मो ति य ड न ड ग ड ज ड रा ड ड ड ड ड
 म् म् रे सा सा सा ध प म् म् रे सा सा ध प म् म् रे
 ग ड ज ड रा ड ड ग ड ज ड रा ड ड फ़ ल च मे ली फ़ ल च मे ली
 म् म् प प ध ध सा ध ध सा सा रे रे सा म् ध ध सा सा म् ध ध सा सा
 ९ फ़ ड ल च मे ड ली ड म् ध सा रे म् म् रे सा ध प म् म्
 म् ध सा रे रे रे सा सा ध प म् म् म् प म् प ध प ध सा म् प ध रे म् प सा रे
 १० फ़ ड ल च मे ली ध सा रे रे सा सा ध सा सा ध सा सा सा म् प ध सा रे
 सा रे म् प ध सा सा म् प ध सा रे सा रे ध सा रे रे रे सा म् रे सा ध प म्
 फ़ ड ल च मे ड ली ड मो ति य न ग ज रा ड ड

राग-दुर्गा

ताल—त्रिताल (मंध्यलय)

तू जिन बोलरी प्यारी तेरो । रंग चुई परे गो ॥ ४० ॥ लाशरिक मानले
 निलजरी तेरो । अदके जिया चरे गो ॥ १ ॥

अस्ताई

१ ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना
 + ३ ०
 तू ड जिन बो ड ड ड ल री ड ड ड प्या ड ड री ड
 प म् प ध प म् म् ड म् रे रे प ड ड ड म् प ध म् रे

तेऽ S रो S रं गऽ S S चु ईऽ S S S प रे S S S
 साध सा सा S सा मुरे प S साध सा S धसा रे ध म रे
 गोऽ S
 साध सा

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना
 १ + ३ ०
 लाश रिक मा S न ले S निल ज रीऽ S S S S S S
 म् ध सा S सा सा S साध सा धसा रे ध S म रे
 तेऽ S रो S अद केऽ S S जि याऽ S S S S च रे S S S
 साध सा सा S सासा मुरे प S साध सा S धसा रे ध म रे
 गोऽ S
 साध सा

राग-तिलक-कामोद

इस रागमें ऋषभ, गंधार, धैवत यह स्वर तीव्र है। और मध्यम यह स्वर कोमल है। निषाद यह स्वर आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लगता है। यह राग रातके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। यह राग शृंगार रस प्रधान है।

आरोह—सा रे म् प ध म् प सा

अवरोह—सा नि ध प ध म् ग सा रे ग सा

वादी—षड्ज

संवादी—पंचम

जाती—ओडव-संपूर्ण

मुख्य अंग—प्र नी सा रे ग सा, रे म् ग S सा, प ध म् ग सा

सुरावट, ताल—झपताल

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
प नी	सा रे रे	ग सा	म ग सा
रे रे	म प प	ध म	प सा प
ध म	ग रे प	म ग	रे सा नी ॥
म म	प ध म	प नी	सा ऽ सा
सा रे	ग सा सा	म ग	सा ऽ प
नि ध	प म ग	रे सा	रे ग सा ॥

राग—निलक-कामोद

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

जब हरि मोरे घरमें आये । पतितनके घर पावन किये ॥ धृ०॥ हरि
मुखसे शब्द निकल गये । अमरुत धारासे मन भाये ॥ १ ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ज ब हऽ रि	मो ऽ रे ऽ	घ र में ऽ	आऽ ऽ ये ऽ
रे म पम म	ग ऽ सा ऽ	म रे म प	पसा ऽ सा ऽ
प ति त न	के ऽऽ घ र	पा ऽ वऽ न	की ऽ येऽ
प नी सा रे	सा पध म ग	रे म पध म	ग ऽ रेसा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	+	३	
ह रि के ऽ	मु ख से ऽ	श ब द नि	क ल गऽ ये
म् रे म् प	सां सां सां ऽ	प नी सां रे	रे ग रेसां सां
व म रु त	धाऽ ऽ रा ऽ	से ऽ म नऽ	मा ऽ येऽ ऽ
सां सां प ध	पम् ऽ ग ऽ	सा ऽ रे पम्	ग ऽ रेसां सा

अस्ताईका बिलंपद

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	+	३	
ज ब ह रि	मो ऽ रे ऽ	घ र में ऽ	आऽ ऽ ये ऽ
१प नी सा रे	ग ऽ सा ऽ	रे ऽ म् ऽ	ग ऽ सा ऽ
१नी ऽ पु ऽ	नी ऽ सा ऽ	रे ऽ प म्	ग ऽ सा ऽ
१ज व ह रि	मो ऽ रे ऽ	रे रे म् प	रे ऽ म् प
म् धप ध ऽ	म् ऽ ग ऽ	नी सा नी ऽ	सा नी पु ऽ
नी ऽ सा ऽ	सा रे ग सा	रे ऽ ग ऽ	सा रे म् प
१ज ब ह रि	मो ऽ रे ऽ	रे प म् ग	सा रे म् प
रे म् प ध	म् प सां प	ध म् ग ऽ	रे पम् धप ध
१ज व ह रि	मो ऽ रे ऽ	घ र में ऽ	न्धिप म् ग
रे म् रे म्	प ऽ धप रे	म् प ध ऽ	म् ऽ ग ऽ
सा रे ग सा	रे ऽ म् प	नी ऽ सा ऽ	धप म् ग सा

६ज ब ह रि मो ऽ रे ऽ घ र में ऽ प नी सा
 प ध म् प सा ऽ प सा नि ध प म् ऽ ग ऽ सा
 मुरे ऽ म् ऽ धप ऽ प सा प सा ऽ ऽ धप धप म्
 ७ज ऽब ह रि मो ऽऽ रेऽऽ ऽ घ र में ऽ आ ऽऽ येऽऽ
 ग ऽप म् ग नि धप गप म् ग सा प ध म् नि धप म्
 ८ज ब ह रि ग ऽ सारे सासा सा ऽ प ऽ धप म्
 सा मुरे पम् धप सा पध म् ग सानिधपपम् ग रे पम्
 ९ज बऽ ह ऽ रिऽऽऽ ऽ मो रेऽऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा पम् ग ऽ सारे सासा ऽ ऽ म् निध धप म् ग ऽ
 घऽ र में ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ आ ऽऽ ऽ येऽऽ
 म्प सा प धप म् पम् ग ऽ रे पम् ग ऽ सारे ग
 १० रे म्प ध म् सा रेग सा ऽ सा धप म् ग ऽ सा रे
 नी ऽ सा ऽ प ऽ सारे सासा पध पप म् ग सा रे

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ह रि के ऽ मु ख से ऽ श ब द नि क ल ग
 १ सा ऽ प ऽ पम् म् ग ऽ नि ऽ ध प पम् म् ग
 प ऽ म् ऽ पम् ग ऽ सा ऽ रे ग गारे सा
 २ ह रि के ऽ मु ख से ऽ प सा प ध म् प ग
 सा ग सा रे प म् सा रे ध प सा रे सा प म्

ह	रि	के	ऽ	मु	ख	से	ऽ	सा	ऽ	प	सा	ऽ	प	ध	ऽ
मू	प	ऽ	ग	ग	ऽ	सा	ऽ	प	ऽ	मू	ध	मू	ऽ	मू	प
ध	मू	ऽ	मू	प	ऽ	सा	ऽ	मू	प	सा	ऽ	मू	प	सा	ऽ
ह	रि	के	ऽ	सा	रै	ऽ	ग	सा	ऽ	प	सा	ऽ	ग	सा	ऽ
प	सा	ऽ	सा	प	ध	ऽ	ध	मू	प	ऽ	प	ग	सा	रे	ग
ह	रि	के	ऽ	पध	पप	सा	ऽ	सा	रै	सा	ग	ग	सा	ऽ	सा
सा	प	ध	रे	मू	प	सा	रे	मू	प	सा	रे	मू	प	सा	ऽ
ह	रि	के	ऽ	मु	ख	से	ऽ	श	ब	द	नि	क	ल	ग	ये
प	रै	ऽ	सा	ग	ऽ	सा	ऽ	सा	मू	ग	सा	ऽ	सा	सा	ऽ
प	नी	ऽ	नी	सा	ऽ	सा	ग	सा	रै	सा	प	ध	मू	प	सा
ह	रि	के	ऽ	मु	ख	से	ऽ	मू	ग	सा	सा	ध	प	मू	ग
ग	ग	सा	सा	प	प	मू	मू	मू	मू	ग	ग	ग	ग	सा	मू
मू	सा	प	प	ध	मू	मू	प	सा	रै	ऽ	सा	ऽ	रै	सा	ऽ
ह	रि	के	ऽ	मु	ख	से	ऽ	श	ब	ऽ	द	नि	क	ऽ	ल
रे	मू	पध	प	सा	रै	सा	ऽ	प	सा	ऽ	सा	प	ध	मू	प
ग	ये	ऽ	नि	क	ऽ	ल	ग	ये	ऽ	नि	क	ऽ	ल	ग	ये
सा	सा	ऽ	प	ध	मू	प	सा	सा	ऽ	प	ध	मू	प	सा	सा
ह	रि	के	ऽ	मु	ख	से	ऽ	श	ब	द	नि	क	ल	ग	ये
सा	मू	ग	ग	सा	सा	प	प	सा	सा	सा	सा	प	ध	मू	मू
मू	ग	ऽ	सा	प	मू	ऽ	मू	सा	प	ऽ	मू	रै	सा	ग	सा
सा	सा	ऽ	सा	सा	मू	ग	मू	सा	ऽ	प	मू	रै	सा	प	रै
ऽ	रै	सा	सा	प	सा	ऽ	सा	प	रै	सा	प	ध	प	मू	ग
सा	ऽ	प	ग	ध	प	प	रै	सा	मू	नि	ध	प	मू	ग	सा

राग—तिलक-कामोद

ताल—एकताल (मध्यलय)

मनमें मोहन बिराजे । चंचल चाल मनारे । गिरिधरके ध्यान धरे ॥ १ ॥
 सुमिरन कोई करे । भजन करत सावधान । सुख दुख समान समझे ॥ १ ॥

अस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
म	न	में	ऽ	मो	ऽ	ह	न	बि	रा	ऽ	वे
ग	ग	सा	ऽ	ग	ऽ	प	म्	ग	सा	ऽ	सा
चं	ऽ	च	ल	चाऽ	ऽऽ	ल	म	ना	ऽ	रे	ऽ
प	नी	साँ	रै	सँरै	साँसाँ	प	ध	म्	ऽ	ग	ऽ
गि	रि	ध	र	केऽ	ऽ	ध्या	ऽऽ	नऽ	ध	रे	ऽ
रे	म्	प	साँ	धप	ध	ग	पम्	गरे	ग	सा	ऽ

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
सु	मि	र	न	कोऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ	ऽ	क	रे	ऽ
प	नी	साँ	रै	सँरै	साँसाँ	पध	प	म्	प	साँ	ऽ
भ	ज	न	क	रऽ	त	साऽ	ऽऽ	व	धा	ऽ	व
प	नी	साँ	ग	रैसाँ	साँ	पध	निध	प	म्	ऽ	म
सु	ख	दु	ख	स	मा	ऽ	न	स	म	झे	ऽ
म्	म्	म्	म्	म्	प	ऽ	प	ग	सा	सा	ऽ

(३५)

अस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
न	न	में	S	मो	S	ह	न	बि	रा	S	जे
१म	न	में	S	मो	S	ह	न	सारे	पम्	गरे	सा
२म	न	में	S	मो	S	ह	न	नि	धप	मृग	रेसा
३म	न	में	S	सारे	गरे	सारे	मृप	धप	मृग	सारे	गसा
४म	न	में	S	मृग	रेसा	पम्	गरे	धप	मृग	निध	पम्
५म	न	में	S	सारे	मृप	सानि	धप	मृग	सारे	गग	सा
६म	न	में	S	मो	S	ह	न	बि	रा	S	जे
७म	सासा	रेम्	पध	रे	रेम्	पध	मृप	सा	धप	मृग	रेसा
८म	सारे	गग	गग	सा	रेम्	रेम्	पध	रेम्	पध	मृप	सा
९म	न	में	S	मो	S	ह	न	निनि	धप	मृग	रेसा
१०म	निध	पम्	गरे	सारे	गग	सारे	मृप	सा	सारे	मृप	सा
११म	न	में	S	मो	S	हS	SS	नS	SS	SS	SS
१२म						पनी	सारे	सानि	धप	मृग	रेसा
१३म	नS	मेंS	SS	मोS	SS	ह	न	बिS	राS	SS	जे
१४म	सारे	सानि	धप	गप	मृग	सा	सा	धप	मृग	गरे	सा
१५म	न	में	S	मृ	गरे	सारे	मृप	धप	मृप	नीसा	रे
१६म	सानि	धप	मृग	सारे	मृप	सा	सारे	मृप	सारे	मृप	सा

आस्ताईकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
सु	मि	र	न	कोऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ	ऽ	क	रे	ऽ
१ सांनि	धप	मृग	रेसा	सारे	ग	सा	सारे	ग	सा	सारे	ग
२ पुनी	सारे	गरे	सारे	मृप	धप	मृप	नीसा	पनी	सारे	गरे	सा
३ सु	मि	र	न	पनी	सारे	गरे	सानी	धप	सानी	धप	मृप
४ सु	मि	र	न	सासा	मरे	पम्	धप	सानी	रेसा	गरे	गसा
५ सु	मि	र	न	कोऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ	म्	गरे	सारे	गसा
सां	निधु	पम्	गरे	सारे	गसा	ग	रेसा	निधु	पम्	गरे	सारे
सु	मि	र	न	कोऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ	ऽ	क	रे	ऽ
६ पप	सानी	रेसा	गरे	म्	गरे	सानी	धप	पनि	धप	मृग	रेसा
७ सुऽ	मिऽ	रऽ	नऽ	ऽऽ	कोऽ	ईऽ	ऽऽ	कऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ
पध	सांनि	धप	मृग	रेसा	सारे	सानी	धप	पनि	धप	मृग	रेसा
८ सु	मिऽ	रऽ	नऽ	को	ईक	रेऽ	ऽऽ	कोऽ	ईक	रेऽ	ऽऽ
प	सानी	रेरे	सासा	म्	गरे	सानी	धप	सांनि	धप	मृग	रेसा
सु	मि	र	न	कोऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ	ऽ	क	रे	ऽ
९ सारे	मृप	सासा	पनी	सारे	गरे	सासा	पनी	साप	धनि	मृप	मरे
मृप	सारे	गसा	रेरे	मृम्	पप	सारे	सासा	रेरे	मृम्	पप	सा

राग-तिलक-कामोद

ताल-झपताल (मध्यलय)

सुद बिसरगई आज अपने गुननकी । जो चाहे ते पाहे आपने गुननकी
 ॥ १ ॥ मांडे मढैया छबनु लागे अखतर । पीर फकीर सबगुनी सबगुनी ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
सु	द	बि	स	र	ग	ई	आऽ	ऽ	ज
नी	प	नी	सा	सा	रे	ग	गरे	सा	सा
ब	प	नेऽ	ऽ	गु	न	न	की	ऽऽ	ऽ
रे	प	मृग	ग	सा	रे	ग	नी	रेसा	नी
बो	ऽ	चा	ऽ	हे	तेऽ	ऽऽ	पाऽ	ऽऽ	ये
ग	रे	म्	ऽ	प	पध	सासा	धसा	निध	प
ब	प	नेऽ	ऽ	गु	न	न	की	ऽऽ	ऽ
प	ध	मृग	ग	सा	रे	ग	नी	रेसा	नी

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
आऽ	ऽ	डे	ऽ	म	है	ऽ	या	ऽ	ऽ
रेग	रे	म्	ऽ	म्	प	ऽ	प	ऽ	ऽ
छ	ब	नु	लाऽ	गेऽ	अ	ख	तऽऽ	ऽ	र
रे	म्	म्	पध	पध	म्	ग	रेसासा	ऽ	सा

पी	५	र	५	फ	की	५	र५	५	५
नी	प	नी	५	नी	सा	५	रेग	सा	५
स	ब	गु	नी	५	स	ब	गु	नी५५	५
रे	म्	म्	प	ध	म्	ग	सा	सारेसा	नी

राग-तिल-कामोद

ताल-एकताल (मध्यलय)

दरसन कैसे पावूं मेरी आली कोन जतन करूं घडिपल छिन मोपे डारी
पिया बिन ॥ धृ० ॥ उनबिन बिरहा सनावे न भावे मुझे बिरहन को कछु न
सुहावे मोरी सजनी तरापततपपोतत सनद मोहे अब निसदिन ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
द	र	स	न	कै	से	पा	५५	बूं	५	मो	री
नी	सा	ग	रे	प	म्	ग	५रे	सा	५	रे	ग
आ	ली	५	को	न	ज	त	न	क	रूं	घ	हि
सा	नी	५	सा	नी	ध	प	प	नी	सा	रे	रे
प	ल	छि	न	मो	पे	डा	री	पि	या	बि	न
म	प	न्	ध	प	म्	ग	रे	सा	रे	ग	सा

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
द	र	स	न	उ	न	धि	न	बि	र	हा	५
नी	सा	ग	रे	प	म्	ग	रे	म्	प	सा	५

ता	ऽ	वे	न	भा	वे	मु	क्षे	बि	र	ह
सा	नी	सा	रे	गं	मं	पं	मं	गं	रे	सा
को	क	छु	न	सु	हा	वे	मो	री	स	ज
प	सा	सा	प	म	ग	रे	प	म	ग	रे
ऽ	त	रा	प	त	त	त	प	पी	ऽ	त
ऽ	रे	सा	सा	सा	रे	म	प	सा	ऽ	रे
स	न	द	मो	हे	अ	ब	नि	स	दि	न
नि	ध	प	ग	म	ग	रे	प	म	ग	रे

राग—मालकौंस

इस रागमें गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद, यह स्वर कोमल लगते हैं। ऋषभ और पंचम वर्जित है। यह राग रातके तीसरे प्रहरमें गाया जाता है। इस रागका गंभीर रस है।

आरोह—सा ग म ध नि सा

अवरोह—सा नि ध म ग सा

वादी—मध्यम

संवादी—षड्ज

जाती—ओडव

मुख्य अंग—ध नि सा म ग ऽ ध म ग ऽ म ग सा ऽ

सुरावट, ताल—एकताल

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
सा	ऽ	ध	नि	सा	ऽ	ध	नि	ध	म	ध	नि
धु	नि	सा	म	म	ग	म	ग	ग	म	ग	सा ॥
ए	म	ग	म	ध	ध	म	ऽ	म	ध	नि	सा
सा	सा	नि	ध	सा	ऽ	सा	ऽ	ग	म	ग	सा
सा	नि	ध	म	ग	नि	ध	म	ध	म	ग	सा ॥

राग-मालकौंस

ताल-रूपक (मध्यलय)

जीवन है प्रभुनाम । खाये पीये सब रस पाये । प्रभुके नाम समान और
मधुरस नहीं है ॥ धृ० ॥ जिसने मधुरस पान किये । ऐसे प्रभुके प्राण ।
ध्रुव, प्रल्लाद, बिभीखन और ऋषिमुनिजन । सबने पाये मोक्ष धाम ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना
१		२		+		
जीSSS	वन	है	प्रभु	ना	ऽम	ऽ
मधुनिधु	मग्	सा	सानि	सा	ऽसा	ऽ
खाये	ऽपी	ये	ऽ	सब	रस	पाऽ
सासा	ऽग्	सा	ऽ	साग्	मग्	सानि
ये	ऽ	प्रभु	केऽ	नाऽ	मस	माऽ
सा	ऽ	मग्	मग्	मधु	धुम्	धुनि
नऔ	ऽर	मधु	रस	नहीं	है	ऽऽऽऽ
धुम्	ऽग्	मग्	मग्	सानि	सा	साग्मधु
जीSSS	वन	है	प्रभु	ना	ऽम	ऽ
मधुनिधु	मग्	सा	सानि	सा	ऽसा	ऽ

धी १	ना	धी २	अंतरा ना	ती +	ती	ना
जिस (मम्) रे मा ध्रुव (सानि) बौर (सानि) पाऽ (मध्) जीऽऽऽ (मध्निध्)	नेऽ (मग्) सेऽ (सानि) प्र सा ऋषि (धुनि) येऽऽऽ (ध्निंसानि) वन (मग्)	मधु (गुम्) प्रभु (साग्) ल्हाऽ (साग्) मुनि (धम्) मो सा है सा	रस (ध्नि) केऽ (सानि) दबि (ग्) ज म् ऽक्ष (ऽनि) प्रभु (सानि)	पा सां प्राऽ (साध्) भीऽ (सानि) ऽन (ऽम्) धा ध् ना सा	नकि (सानि) ऽऽ (निध्) खन (धम्) सब (मम्) ऽम (ऽम्) ऽम (ऽसा)	ये सां ऽन (सांसा) ऽ ऽ ने ग् ऽऽऽऽ (साग्मध्) ऽ ऽ

आस्ताईका बिलंपद

धी १	ना	धी २	ना	ती +	ती	ना
जीऽऽऽ (सा) १ २ निध् (निध्)	वन (निध्) सा	है सा सानि (निध्)	प्रभु (नि) ग्	ना ग् सा	ऽम (सा) निसा (निध्)	ऽ ऽ ऽ

३	साग् (नि	ग् (ग्	सा (सा	ग् (म्	साग् (ग्सा (सानि	म् (नि	ग् (सा
४	जीऽऽऽ (निध् (म्	वन (सानि (ग्	है (सा (सा	प्रभु (सा (म्ग्	सानि (म्	ग्सा (ऽ	सा (म्
५	जीऽऽऽ (म्	वन (ऽ	है (म्ग्	प्रभु (सानि	निसा (ध्	ग् (सा	सा (नि
६	जीऽऽऽ (निग् (ग्	साग् (वन (सानि (ध्	है (म्	म्ध् (म्ध् (म्	ध्म् (म्ग् (म्	ग् (सा (ऽम्	सा (ऽ
७	जीऽऽऽ (ध्	वन (म्	है (ध्नि	ग्म् (ध्म् (म्	ग् (ध् (ग्	सासा (ग् (निध् (ध्म्	ध्म् (म्ग् (ग्
८	जीऽ (साग् (ऽऽ (साग् (	वन (ग्सा (ऽऽऽऽ (म्ध्म्ग् (	हैऽ (ग्म् (ऽ (सा	प्रभु (म्ग् (म (सा	नाऽ (ग्म् (नाऽऽऽ (म्ऽग्सा (	ऽऽऽऽ (ध्मिध्म् (ऽ (नि	ऽ (म (सा

१जीऽऽऽ	वन	है	प्रमु	जीऽ	ऽव	नऽ
				साम्	ऽम्	धम्
हैऽ	प्रऽऽ	मुऽऽ	ऽऽऽ	नाऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽम्
म्ग	ग्म्ग	मध्म्	ध्निध्	मध्म्	ग्म्ग	साग्सा
१०जीऽऽऽ	वन	साग्	मध्	सा	ऽ	साग्
मध्	निध्	सा	ऽ	धम्	सा	म्ग
सा	ध्	ध्नि	म्	मध्	ग्	ग्म्
सा	ध्	ऽम्	नि	ऽध्	म्ग	म्

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना
१ जिस	नेऽ	२ मधु	रस	+	नकि	ये
१ म्	ग्सा	ग्	म्	पा	निध्	नि
२ म्	ग्	सा	ऽ	ध्	म्	धम्
३ ध्	निध्	म्	सा	ग्	मध्	नि
३ ध्	नि	सानि	सा	म्ग	ध्	निध्
४ जिस	सा	म्ग	धम्	म्	सानि	सा
४ म्	नेऽ	मधु	रस	निध्	ऽ	निध्
५ ध्	ऽ	ध्	नि	ध्	ऽ	ऽ
	नि	ध्	नि	सा	निसा	निसा

५	जिस (ध् सा ऽम्	नेऽ (म् म् ध्	मधु (सा म् नि	रस (ग् ऽग् सा	ध् (म् म् नि	नि (ग् ध् ग्	सा (ध् म् सा
६	जिस (नि सा रे म् जिस (नि	ऽने (ऽनि (ऽसे (ऽग् (नेऽ (ऽग्	मधु (ध् नि प्रभु (म् ध् (मधु (सा	रस (म् ध् (केऽ (म् ध् (रस (नि ध्	पाऽ (नि ध् (प्राऽऽ (म् ध् म् (पा म् सा म् म् नि	नकि (म् ग् (ऽऽऽ (ध् नि ध् (नकि (ऽम् (ऽ सानि (ऽम् (ऽसा (ध् नि सा (ग् म् सासा	सा (ध् म् सा नेऽ (नि सा ध् म् सा ग् म् सा ग् म् सा नि (ध् नि सा (ग् म् सासा
७	नि (म् सानि (नि सा (ध् म् ग्	ऽग् (ध् सा ऽग् (नि (ऽ सानि (ऽम् (ग् नि नि	सा (नि ऽग् (सानि (ध् म् सा ध् म् सा सा ध्	सा (नि सा ध् म् ग् ऽग् ग् ध् नि नि म्	सा (नि सा ध् म् नि सा (नि सा (ऽध् (ध् ग्	सा (नि सा ध् म् सा नि सा (ग् म् सासा	सा (ध् म् सा नेऽ (नि सा ध् म् सा ग् म् सा नि (ध् नि सा (ग् म् सासा
८	नि (ध् म् ग्	ऽग् (नि (ऽ सानि (ऽम् (ग् नि नि	सा (नि ध् म् सा ध् म् सा सा ध्	सा (नि सा ध् म् ग् ऽग् ग् ध् नि नि म्	सा (नि सा ध् म् नि सा (नि सा (ऽध् (ध् ग्	सा (नि सा ध् म् सा नि सा (ग् म् सासा	सा (ध् म् सा नेऽ (नि सा ध् म् सा ग् म् सा नि (ध् नि सा (ग् म् सासा
९	सा (म् सा सा	ऽम् (ग् नि नि	सा (नि ध् म् सा सा ध्	सा (नि सा ध् म् ग् ऽग् ग् ध् नि नि म्	सा (नि सा ध् म् नि सा (नि सा (ऽध् (ध् ग्	सा (नि सा ध् म् सा नि सा (ग् म् सासा	सा (ध् म् सा नेऽ (नि सा ध् म् सा ग् म् सा नि (ध् नि सा (ग् म् सासा

जिस (सासा (निनि (गुगु (सानि (	नेऽ (गुगु (सा (सासा (गुसा (	मधु (मम (नि (मम (गमसा (	रऽस (मगुगु (सासा (गुगु (ऽ	पाऽ (धध (गुगु (सासा (गमसा (	नऽकि (निधध (सासा (सानि (ऽगुम (	येऽऽ (धनिसा (मम (गुसा (सा
--	--	--	---	--	---	---

राग-मालकौंस

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

नहिं आऊंगी तुम्हरे उधर । मोहें ना सतावो कन्हैयारे ॥ धृ० ॥ जब
म आवे तुम फोरी गगरीं । येहि रीत तोरी कन्हैया रे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धी	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०			१				+				३				
ऽ	ऽ	ऽ	न	हिं	आऽ	ऽऽ	ऊँ	गी	ऽ	ऽ	तु	म्ह	रेऽ	ऽ	उ
ऽ	ऽ	ऽ	सां	सां	धनि	सानि	ध	म	ऽ	ऽ	ग	ग	साग	म	ग
ध	ऽ	र	मो	हे	नाऽ	ऽ	स	ता	ऽ	वो	क	न्है	ऽ	याऽ	ऽ
सा	ऽ	सा	सा	सा	निध	ऽ	नि	सा	म	म	ग	ध	म	धनि	सां
रेऽ	ऽ	ऽ	न	हि	आऽ	ऽऽ	ऊँ	गी	ऽ	ऽ	तु	म्ह	रेऽ	ऽ	उ
धनि	सां	ऽ	सां	सां	धनि	सानि	ध	म	ऽ	ऽ	ग	ग	साग	म	ग
ध	ऽ	र													
सा	ऽ	सा													

(४६)

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ ऽ ऽ ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें तु म फोऽ ऽ रि
 ऽ ऽ ऽ म् म् म् ऽ म् धम् म् गु गु म् धुनि सा नि
 ग ग री ये हि री ऽ त तो ऽ री क न्है ऽ याऽ ऽ
 सा सा सा सा म् गु ऽ सा नि सा ध् म् नि ध् धुनि सा
 रेऽ ऽ ऽ न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ ऽ तु म्ह रेऽ ऽ उ
 धुनि सा ऽ सा सा धुनि सानिध् म् ऽ ऽ गु गु साग् म् ग
 ध ऽ र
 सा ऽ सा

अस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ऽ ऽ ऽ न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ ऽ तु म्ह रेऽ ऽ उ
 १ ध ऽ र न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ ऽ ऽ नि सा गुम् धुनि सा नि
 २ धुम् गुसा सा न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ ऽ ऽ नि सा गुम् धुम् गुम्
 ३ धुनि धुम् गुम् न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ साग् म् धुम् गुम् धुनि म् धुनि सा
 ४ निधुम् गु . सा न हि आऽ ऽऽ ऊं नि सा गुसा धुम् गुम् धुनि धुम् गुम् गुसा
 ५ नि साम् गु म् न हि आऽ ऽऽ ऊं सासा गुम् म् गुम् म् धुम् म् धुम्
 नि नि सा सा न हि आऽ ऽऽ ऊं गी ऽ ऽ तु म्ह रेऽ ऽ उ

सा॒सा॒नि॒ध॒नि॒नि॒ध॒म् गु॒म् ध॒न्नि॒ सा॒ गु॒म्

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३

ध ऽ र ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें तु न फोऽ ऽ री

१ ग ग री ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें ऽ निध् मग् सानि धुनि

२ साग्मध्निसा ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें ऽ निध् मग् सानिसाधा

३ सानिध्मग्सा ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें सानिसानि ध्मग् मग् मग्

४ साग् मध् मग् ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें नि सा निध् मग् नि

सा ग्सा निध् ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें तु म फोऽ ऽ री

५ ग ग री ज ब ह ऽ म सानिसासासासा निध् धु निनिनिनि धु

गुग्मग्मग् गुग् सासा गुग् गुग्सासा गुग् ध्मग् गुग् तु म फोऽ ऽ री

६ ग ग री ज ब ह ऽ म सानिसानिसानिध्नि ध्मग् मग् धुनि गग्

धुनिसानिध्निसानि ध्मग् गुगानिसागग् धुनि ध्मग् ग् तु म फोऽ ऽ री

ग ग री ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वे तु म फोऽ ऽ री

७ ग ग री ऽ सानिध्मग् सानिसा ग्मग् ध् निनिसा ग्मग् धुनि सा निधा

गुग्धुनि साग् ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें तु म फोऽ ऽ री

८ ग ग री ऽ सासा गुग्निनिसासा धुध निनिमग्धुध गुग् मग् सासा ग्

सासा गुग् म् सासा गुग्मग् ध् सासा गुग्मग् धुध नि सासा गुग् मग् धुध

निनि सा ऽ ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वें तु म फोऽ ऽ री

१ गऽ गऽ रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ जऽ बऽ हऽ मऽ आऽ ऽऽ वैऽ ऽ
 सागसाग्निधुनि सागं भगसाग्निधुम् गुसा गुम् मग् मधु धुम् धुनि निधुनिसा सा
 तुऽ मऽ फोऽ रीऽ गऽ गऽ रीऽ ऽ गऽ गऽ रीऽ ऽ गऽ गऽ रीऽ ऽ
 सागसाग्नि धुनि धुम् धुनिधुनिधुनि सा धुनिधुनिसानि सा धुनि धुनि साग्नि सा
 ऽऽ ऽऽ ऽ ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वै तु म फोऽ ऽ री
 सानिसागं सा

१ ग ग री ऽ साग सागुमग् मधु मधुनिधुनिसा निसा गुसा गुम् गुसा गुसा
 निसानिधु निधु मधु मग् मग्साग सा गुम् धुनिसागं म् गुम् धुनिसागं न्
 गुम् धुनि सानि सा गुम् धुनि नि ऽ साग मधु धु ऽ निसा मग् म् ऽ
 धुनि साधु निसा ज ब ह ऽ म आऽ ऽ वै तु म फोऽ ऽ री
 ग ग री

राग-मालकौंस

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

कृष्ण माधो राम निरंजन । ए गोविंद गोपाल ॥ धृ० ॥ इतनि बिनति
 पेरी सुनलियो भगवान । तूही करोगे परी काम ॥ १ ॥

अस्ताई

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना
 + ३ ०
 कृष्णऽऽमाऽधोऽ रा ऽ ऽ म नि रंऽ ऽऽ ऽ ज ऽ न ऽ
 सागसाग्निधुनि सा ऽ ऽ सा सा मग् साग म् ग् सा ऽ ऽ
 रा.धं. (२) ४

(५०)

कृष्णऽऽमाऽधोऽ रा ऽ ऽ म ए गो वि ऽद गोऽऽऽ पा ऽ
 साग्मग्सानिधुनि सा ऽ ऽ सा म् म् म् ऽग् साम्ग् म् ग् ऽसा

अंतरा

ना धीं धीं ना धीं धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना
 १ + ३ ०
 इत् निऽऽबिनति मो ऽऽ री ऽ सुन लीऽ योऽ ऽ म ग वा ऽन
 ग्मनिधुऽनिसानि सासानि सा ऽ सानि गुसा ध् ध् नि ध् म् ऽम
 त् ऽ ही ऽ क रो गे ऽ प रो ऽऽ ऽ का ऽ ऽ ऽ
 नि ध् म् ऽ ध् म् म् ऽ ग् सा म्ग् म् ग् सा ऽ ऽ

राग—मालकौंस

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

मुख मोर मोर मुसकात जात । अत छबिली नार करपथ सुमात ॥ १ ॥
 काहूँ की अखिया रसीली मन भाई । यां बिधना सुंदर उपजाई । चली जात
 सब सखीरी साथ ॥ १ ॥

अस्ताई

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ३ ० १ +
 ऽ ऽ मु ख मोऽ ऽ र मो ऽ रऽ मु स का ऽ त
 ऽ ऽ ग् सा म्ग् म् ग् सा नि गुसा ध् नि सा ऽ म्

(५१)

ऽ त अ त छ बिऽ ली ना ऽ रऽ क र प थ सु मा
 ऽ म् म् ग् म् निऽ ध् नि सां ऽ सां नि २ म् नि ध् म् म्
 ऽ त मु ख
 ऽ ग् ग् सा

अंतरा

ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ +
 का हूं की अ खि या र सी लीऽ ऽ म न
 म् ग् ग् म् ध् म् ध् नि ध् नि सां सां नि
 ऽ ई ऽ या ऽ बि ध ना ऽ सुं ऽ द र उ प
 नि सां ऽ सां नि सां ग् सां नि ध् म् म् ध् नि सां
 ऽ ई ऽ चऽ लीऽ ऽ जा ऽ त स ब स खी री सा
 निऽ म् म् ऽ सां ग् ग् म् ऽ ग् सां सां सां नि ध् नि ध् म्
 ऽ थ मु ख
 ऽ ग् ग् सा

राग-अल्हैया बिलावल

इस रागमें ऋषभ, गंधार और धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं। मध्यम
 यह स्वर कोमल है। निषाद स्वर आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लगता
 है। कोमल निषाद वक्र लेनेकी प्रथा है। यह राग दिनके प्रथम प्रहरमें गाया
 जाता है। भक्तिरस और करुणरस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे ग प ध नी सां

अवरोह—सां नी ध नि ध प म् ग रे सा

वादी—धैवत

संवादी—गंधार

जाती—वाडव संपूर्ण

मुख्य अंग—सा रे ग प म् ग ऽ रे ग प ध नि ध प म् ग ऽ ग ऽ रे सा

(५२)

सुरावट, ताल—रूपक

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२	
ध	प	म्	ग	ऽ	प	म्
ग	ऽ	रे	सा	रे	ग	प
ध	नी	सा	ध	नि	ध	प
प	म्	ग	ग	ऽ	रे	सा
ग	प	नी	ध	नी	सा	सा
ग	म्	रे	सा	सा	ध	प
ध	नि	ध	प	ध	नी	सा
ग	प	म्	ग	ग	रे	सा ॥ १०

राग—अल्हैया बिलावल

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

गोविंदके चरन धरिये । जसोदाके सुपूत ऐसे जग बंदे उनसे ॥ १० ॥
 प्रात समयमें ध्यान धरके । गावो मंगल नाम मुखसे । कृपा करो हम भगत-
 पर । येहि माँग उनसे ॥ १ ॥

अस्ताई

ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
+			३				०		१		
गो	वि	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ	च	र	न	ध
ग	म्	नि	ऽ	ध	प	म्	ग	ऽ	रे	म्	प
ज	सो	दा	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	सु	पू	ऽ	त
ग	ग	ग	रे	ग	प	ऽ	ऽ	प	प	ध	नि

अंतरा

अस्ताईका विलंपद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

६ गोऽ विं ऽ द के ऽ ऽ ऽ धुनी सारे सा ऽ रेग प ऽ ऽ
 धप धप म् ग नि ध प ऽ म् ग रे ग रे म रे सा
 ७ गोऽ विं ऽ द के ऽ ऽ ऽ च र न ऽ गप ध नी ऽ
 ध ऽ नी ऽ धनि धप म् ग रे ग प सा ग रे म प ध नि धप
 ८ गोऽ ऽ विं द केऽ ऽ ऽ च रऽ नऽ ऽ धऽ रिऽ येऽ ऽ
 ग रे ग प ध प ध नि ध प नि धप म् ग रेग पप नी ध धनी सा
 गोऽ विं ऽ द के ऽ ऽ च र न ध रि ऽ ये ऽ
 ९ गो ऽ विंऽ द केऽ ऽ चऽ र नऽ ऽ धऽ रिऽ ये ऽ ऽ ऽ
 ग प नि ध प धप म् ग रेग प धनी सा सा नी ध नि ध प म् प म्
 गोऽ विं ऽ द के ऽ ऽ च र न ध रि ऽ ये ऽ
 १० सा ग रे ग प प नी ध नी सा ध ध नि ध प ध ग रे प
 प प म् म् ग ग रे ग ऽ रे ऽ सा सा नि ध प ऽ

अंतरेका विलंपद

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
 + ३ ० १
 प्रा ऽ त स म य में ऽ ध्या ऽ ऽ न ध र के ऽ
 १ सा ऽ ध नि ध प ध ग प म् ग ऽ प नी ध सा
 २ प ऽ नी ध सा ऽ ऽ नी ध सा ऽ ऽ ध नि धप नी ध सा
 ध नी सा ऽ ध नी सा ग रे सा ध नी रे सा ध नि
 ३ धप म् ग धप म् ग नी ध नी ध नी सा सा ध रे सा नी सा ध ध
 नि ध धप प म् म् ग रे ग प नी ध नी सा ध नी रे सा रे सा सा

४ प्रा ऽ त स म य में ऽ प नीध सा गेरे ने ऽ ऽ रे
 सा धनी गेरे सा ऽ धनी रे सा ऽ धनी सा ऽ पप धनी ऽ नी ऽ
 नी ध सा ग प नी ध सा सानी निध धप पम् म्ग गरे ग प
 ५ प्रा ऽ त स म य में ऽ सा ऽ धप म्ग नि धप म्ग रे
 पम् ग ऽ ऽ रे सा ऽ रे ग प नी ध सा ऽ ग रे सा
 ऽ नी ध नि धध ऽप प प म् म्ग ऽ ग ग रे रेग पप धनी सा
 ६ प्रा ऽ त स म य में ऽ ग रे सा ऽ ध नी ध नी
 सा ऽ सा ग पम् गे ऽ ऽ रे सा ऽ धप म् ग रे ग
 ७ प्रा ऽ त स ऽ ऽ म य में ऽ ऽ ऽ ध्या ऽ ऽ न ऽ ध ऽ र ऽ के ऽ
 म्ग प प सानी धनी सा सा गेरे रे रे सा सा धनी सा सा धप निध पम् गरे
 ८ प्रा ऽ त ऽ स म य ऽ में ध्या ऽ न ऽ ध ऽ र के ऽ ऽ
 सा गेरे सा ऽ प नि धप प प ध ग रे गग पप नी धनी सा
 प्रा ऽ त स म य में ऽ ध्या ऽ ऽ न ध र के ऽ
 ९ सा गेरे गे पम् गे रे पम् गे रे सा सा गेरे सा पप ऽ रे सा
 पप ऽ नि ध प म्प ऽ म्ग ऽ प नीध सा धनी धनी धनी सा धनी सा
 १० प नी ध सा सा गे रे प म् गे रे सा गे रे सा ऽ
 रे सा नी ध नि ध प म् ग रे सा रे ग प धनी सा

राग—अल्हाया बिलावल

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

त्रिजके हो तुम राज । हम त्रिजवासी तुम्हरे दास ॥ धृ० ॥ प्यास लगी
तुम्हरे दरसनकी । पूरन करो गरीब निवाज ॥ १ ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
त्रि ज के ऽ	होऽ ऽ तु म	रा ऽ ऽ ज	ऽ ऽ ऽ ऽ
प नि ध प	मृग ग प म्	ग रे सा सा	रे ग प ऽ
ह म त्रि ज	वा ऽ सी ऽ	तु म्ह रे ऽ	दाऽ ऽऽ ऽ स
रे ग प म्	ग रे सा ऽ	प नि ध प	पम् गरे ग ग

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
प्या ऽ स ल	गी ऽ तु म्ह	रेऽ ऽ द र	स न की ऽ
ग ऽ प प	प ऽ नी ध	धनी सा सा सा	सा रे सा ऽ
पू र न क	रो ऽ ऽ ऽ	ग रि ब नि	वा ऽ ऽ ज
नी सा ध नि	ध प ऽ ऽ	प प प ध	ग म् ग ग

अस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
त्रि ज के ऽ	होऽ ऽ तु म	रा ऽ ऽ ज	ऽ ऽ ऽ ऽ
१ त्रि ज के ऽ	होऽ ऽ तु म	सारे गप पम् गरे	गप धनि धप म्ग
२ त्रि ज के ऽ	होऽ ऽ तु म	गरे गप धनी सोनी	धनि धप म्ग सो

३ त्रि ज के ऽ होऽ ऽ नीसा रेग मृग रेग पप धनि धप नीनी धनि धप
 ४ त्रि ज के ऽ होऽ ऽ गप मृग रेग पध नीसा नीध पम् गरे पम् गरे
 ५ त्रि ज के ऽ गग रेसा सा पम् गरे सा गप धनी सा धनि धप धनीसा
 त्रि ज के ऽ होऽ ऽ तु म रा ऽ ऽ ज ऽ ऽ ऽ ऽ
 ६ सा रेग पप मृग रेग पप धनी सा गग पप धध नीनी सासा धध निनि धप
 ७ धनीसा रेसा रेप मृग धनि धप मृग गग पप पा धनी नीध नीनी धनी सा
 ८ सा पम् गरे गग पप निध पध पमृग धनीसा नी निध धप निध धप पम् मृग
 ९ त्रि ज के होऽ तुम रा ज हम त्रिज वाऽ सीऽ तुम रेऽ ऽऽ दाऽ सऽ ऽऽ
 मृनिऽ ध पम् गरे ग प धनी सा रे सा नी धप निध पम् गरे पम् गरे सासा
 १० त्रि ज के होऽ तुऽ मऽ राऽ ज हम त्रिज वाऽ सी तुम रेऽ दाऽ स
 सासा रे मृग पप नीध नीनी सासा सा पप गी नीनी सा पप नीध नीनी सा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १ ष्या ऽ स ल गी ऽ तु म्ह रेऽ ऽ द र स न की ऽ
 २ ष्या ऽ स ल गी ऽ तु म्ह रेऽ ऽ ऽ सा नी धप मृग रेसा
 ३ ष्या ऽ स ल गी ऽ तु म्ह रेऽ ऽ रे रे सा नी धनि धप मृग रेसा
 ४ ष्या ऽ स ल गी ऽ ऽ धनी सा नी धप मृग रेसा गप धनी सा
 ५ ष्या ऽ स ल गी ऽ ऽ धनी रेसा नीध सा नी धप निध पम् गरे
 ६ सा रे गरे गप गप धनी धनी धनी सा धनि धप मृग सा रे गप गप धनी सा
 ७ ष्या ऽ स ल गी ऽ तु म्ह रेऽ ऽ द र स न की ऽ

राग-बिलावल

ताल-चौताल (मध्यलय)

हो दिनानाथ दयाकर हो । दीनानाथ भवसागर ते पार करो मोहे हो

॥ घृ० ॥ प्रल्हाद नारद व्यास पुंडरीक । दिना रैन जपत रहत है तोहे हो ॥१॥

धा धा धीं ता किट धा धीं ता किट तक गदी गन

$$+ \quad \circ \quad \times \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ$$

होऽ ऽदी ऽऽ नाऽ

निध पग मृग पम्

ना ऽ थ ऽ दया ऽ क र हो ऽऽ दीऽ ना

ग ऽ ग ऽ गग रे सा सा ग मृग गप प

ना ऽ थ भ वसा ऽ ग र ते ऽ पा ऽ र्क रो ऽ

प ऽ प नि धप ऽ ध ग मग पनी धनी साऽ

मो	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	हो	ऽ	होऽ	ऽदी	ऽऽ	नाऽ
ध	नि	ध	प	ध	ग	म्	ग	निध	पग	म्ग	पम्
ना	ऽ	थ	ऽ	दया	ऽ	क	र	हो	ऽऽ	दीऽ	ना
ग	ऽ	ग	ऽ	गग	रे	सा	सा	ग	म्ग	गप	प

अंतरा

धा	धा	धीं	ता	किट	धा	धीं	ता	किट	तक	गदी	गन
+		०		४		०		१		२	
प्र	ल्हा	द	ना	र	ऽ	द	व्या	ऽस	पूं	ढरी	ऽक
ग	प	प	नी	ध	ऽ	नी	सा	ऽसा	सा	रैसा	ऽसा
दी	ना	ऽ	रै	ऽन	ज	प	त	रह	तऽ	हैऽ	ऽऽ
नी	ध	ऽ	नी	सासा	सा	ध	नि	धप	ऽप	साध	निध
तो	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	हो	ऽ	होऽ	ऽदी	ऽऽ	नाऽ
प	ऽ	ऽ	ध	ग	म्	ग	ऽ	निध	पग	म्ग	पम्

राग—बिलावल

ताल—एकताल (मध्यलय)

सुमिरन कर भज राम नामको । जो कुछ भला होवे तेरा बंदे ॥ धृ० ॥
 एक दिन वा घर जाना होगा । सोच समझ अपने ग्यान ध्यानमें ॥ १ ॥

अस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+		३						
सु	म	र	न	क	र	भ	ज	राऽ	ऽ	म	नाऽ	ऽऽ	म	को	ऽ
नि	ध	प	म्	ग	ग	प	म्	गरे	सा	सा	रेग	म्प	म्	ग	ऽ

जो ऽ कु ल म ला हो ऽ वे ते ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ बं ऽ दे ऽ ऽ
 ग ऽ प प नी ध धनी सा धनी सरि सा नी ध नि धप म् ग ग

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना ना धीं धी ना
 ० १ + ३
 'ए क दि न वा ऽ ध र जा ऽ ऽ ना ऽ हो ऽ ऽ गा ऽ
 ग ग प प प ऽ नी ध धनी सा सा ऽ सा सा रे सा ऽ
 सो ऽ ऽ च स म झ अ प ने ग्या ऽ ऽ न ध्या ऽ ऽ न ऽ
 सा सा रे रे सा सा सा सा रे सा नि ध प प प ध नि ध प म् ग

राग-देसकार

इस रागमें ऋषभ, गंधार और धैवत यह स्वर तीव्र लगते हैं। मध्यम और निषाद वर्जित हैं। यह राग दिनके प्रथमप्रहर में गाया जाता है। यह राग गंभीर रस प्रधान है। इस रागमें धैवत यह स्वर वादी होनेसे भूप रागसे अलग होता है।

आरोह—सा रे ग प ध सा

अवरोह—सा ध प ध ऽ प ग रे सा

वादी—धैवत

संवादी—गंधार

जाती—ओढ़व

मुख्य अंग—ग प ध ऽ ध ग प ग ऽ रे सा ऽ सा रे ग प ध ऽ ध सा

धपप

सुरावट, ताल—एकताल

धीं धीं धागे त्रक	तू ना क ता	धागे त्रक धीं ना
+ ०	४ ०	१ २
ध प ध ग	प प ग ऽ	रे सा ऽ सा
ग प ध ध	प ध ध प	ग रे सा सा ॥

(६१)

प प प ध ध प ध सा ऽ सा सा सा
 रे सा सा धसा प ध ग प ग रे सा॥१॥

राग-देसकार

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

घर आये घर आये गुनिजन मिलके आजके दिनवाँ अपने गुननको
 दिखाये ॥ धृ० ॥ प्रात समयमें उठकर गुनिजन देसकारको गाये ॥ १ ॥

आस्ताई

ना ती ती ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ध र आ ऽ ये ऽ घ र आऽऽ ऽ ये ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा सा ध ऽ ध ऽ ध सा धपप ऽ प ऽ ध ग प ऽ
 गु नि ज न मि ल के ऽ आ ज के ऽ दि न वा ऽ
 ग प ध प ग रे सा ऽ सा सा प ग प प प ऽ
 अ प ने गु नऽऽ न को ऽ ऽ ऽ ऽ दिऽ खा ऽ ये ऽ
 प प ध सा धपप प ध ग प ऽ ऽ धप ग रे सा ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 प्रा ऽ त स म य में ऽ उ ठ क र गु निऽ जऽ न
 प ऽ ध ध सा सा सा ऽ सा ध सा सा सा रेसा धप फ
 दे ऽ स का ऽ र कोऽ ऽ गाऽऽ ऽ ये ऽ ऽ ऽ ऽ
 प ऽ प ध ऽ ध साध सा धपप ऽ प ऽ ध ग प ऽ

आस्ताईका बिलंपद

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	आऽऽ ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
१ घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	आऽऽ ऽ येऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
		धप प गप धप	ग रे सा ऽ
२ घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	आऽऽ ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
		धपप प ध ग	प ध ग प
३ घ र आ ऽ	ये ऽ साप ध	ग प गप धप	ग प प ध
४ घ र आ ऽ	ये ऽ ध ग	प ग धप ग	रे सा पग प
५ घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	सा सा ध ध	प प ध ग
प ऽ ऽ ऽ	प ग ऽ रे	सा ऽ ध सा	प ध ध सा
६ घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	प ग प ध	साध सा प ऽ
ध साध प ऽ	ध ग प ऽ	सा रे ग प	ग प ऽ ऽ
घ र आ ऽ	ये ऽ घ र	आऽऽ ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
७ ध प ग रे	सा ऽ सा ध	प ग प धप	ग रे सा ऽ
८ सा धसा प ऽ	सा ऽ गप धप	ग रे सा ऽ	सा धसा प ऽ
प धसा प ऽ	प धसाधपप ऽ	ग ऽ रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
९ सा प ध साध	प ऽ ऽ ऽ	ग धप ग रे	सा ऽ ध ऽ
सा ऽ सा ऽ	ग प प ध	ध सा प ध	ग प धप गो

१० ध र आ ऽ ये ऽ धप ग रे सा सारे सा ध सा प सा ग
 प ध सा रे ग प ध सा ध सा ध सा ध धप ग धप ग रे सा
 ११ ध ऽ ऽ ऽ र ऽ ऽ आ ऽ ऽ ये ऽ ऽ गु ऽ नी ऽ ज ऽ न मि : ल ऽ के ऽ ऽ
 गप धप ग रे सा सा ध सा प ध ग प प ध धप ध सा सा सा ध सा प ध ग प

अंतरेका विलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 प्रा ऽ त स म य में ऽ उ ठ क र गु नि ऽ ज ऽ न
 १ प्रा ऽ त स म य में ऽ सा ऽ प ध ध ध सा प ध सा ध सा
 २ प्रा ऽ त स म य में ऽ सा ऽ ध सा रें सा धप गप प ध ध सा
 ३ प्रा ऽ त ऽ प ऽ ध सा रें सा ध सा धप प सा ध सा प सा
 ४ प्रा ऽ त ऽ सा ध सा प प ध गप प ध सा रें सा रें सा सा ध सा रें सा ध सा
 प्रा ऽ त स म य में ऽ उ ठ क र गु नि ऽ ज ऽ न
 ५ सा सा गग प गग पप ध पप ध ध सा ऽ पप ध ध ग प प ध सा धप
 ६ प ध ध ग प ध प ग रे रे सा सा गप ऽ ऽ सा प ध
 ऽ ऽ सा ध सा ऽ ऽ सा ध सा प प ध पग प ग प ध सा रें सा रें सा रें सा
 ७ प्रा ऽ त स ऽ म ऽ ऽ य ऽ मे ऽ ऽ उ ठ क र गु नि ऽ ऽ न ऽ ऽ न ऽ ऽ ऽ
 प ध सा सा रें ग रें सा ध सा धप प ध सा रें सा ध सा रें सा रें सा रें सा
 ८ प्रा ऽ ऽ ऽ त ऽ ऽ ऽ स म ऽ ऽ ऽ य मे ऽ ऽ
 सा सा ध सा ध सा ध प ध ग पग प प धप धप धप ग रे ग रे सा

उ ठ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ क ऽ र गु नि ऽ ज न ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 प ध ध ग प सा ध सा सा ध प प सा ग रै सा सा ग रै सा सा ध सा ग प ध
 ९ प्रा ऽ त स म य में ऽ उ ठ क र सा ध प ग ध
 ग रे सा रे ग प ग प ध सा ऽ रै सा ग प न रै सा
 १० प्रा ऽ त स म य में ऽ उ ठ क र ग प रै सा
 ध सा ध प प ध प ग रे सा सा ध प ध सा ध सा रै सा ध सा
 ध सा ध सा ध सा प ध ध ग प ध ध सा प ध सा प ध सा प ध सा

राग-देसकार

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

ये मन पापी अपार प्रभु रे । इससे मुक्त करो, तुम प्रभु हम दासके
 दास रे ॥ धृ० ॥ गये जनमके यही जनमके । अगणित हुवे पाप हमारे ॥ १ ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ये ऽ म ऽ न पा ऽ पी अ पा ऽ र प्र भु रे ऽ
 सा ध सा ध प प प ध ध ध ध सा ध प
 इ स स से मु ऽ क्त क रो ऽ ऽ तु म प्र भु
 ग प ध प ग ऽ रे सा सा ऽ ऽ प ग प
 ह म दा ऽ स न के ऽ दा ऽ स रे ऽ
 प प ध ऽ ध सा ध प ध ग प प ध ऽ

(६५)

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	१	+	३
ये ऽ ज	न म के ऽ	ये ऽ ही ज	न म के ऽ
ध ऽ ध	सां सां सां ऽ	सां ऽ सां रे	सां सां सां ऽ
ग णि त	हु ऽ ये ऽ	पा ऽ प ह	मा ऽ रे ऽ
सां रे सां	ध ऽ प ऽ	प ऽ ध ग	प ऽ ध ऽ

अस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	१	+	३
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी अ	पा ऽ ऽ र	प्र मु रे ऽ ऽ
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी अ	पा ऽ ऽ र	ध सां ध प ध ग प
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी अ	पा ऽ र ध सां	ध प ग रे सा सा ध
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी ऽ	सारे ग प ध ऽ	ध सां ध प ग रे सा
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी ऽ	प ध सां सां प प ध	ग ग प ध प ध
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी ऽ	प प ध ध प प ध ध	ध सां प ध ग प ध प
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	प प ग रे सा ग प	ध सां सां ध प ग प	ध प ग रे सा ऽ
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	प प ध ध प प सां सां	ध ध सां सां ध सां ध सां	प ध प ध ग प प ध
ये ऽ ऽ म ऽ ऽ न	पा ऽ पी अ	पा ऽ ऽ र	प्र मु रे ऽ ऽ
प प सां प ध सां प ध	ग प ग प ध ध ध	ग प ध प ग रे सारे	ग प ध सां प ऽ
सारे ग प ध सां ध प	प ध सारे सां सां ध सां	ध प प ध सां ध सां	ध ध सारे ग प ध

ग.सं. (२) ५

१० सासारेरे गग पप धध सासाधधसासा पप धध गग पप धसासा ध सा
 ११ ध ऽ गप धप गरे सा सा ऽ धसा रसा धप प ध ध धसा ध
 गप धप गरे सा ध ध गप धप गरे सा ध ध गप धप गरे सा
 १२ येऽऽ मऽ नऽ ऽऽ पाऽ पीऽ अऽ पाऽ ऽऽ र ऽ प्र भूऽ रेऽ
 सासाधध पप धध सासाधधसासा धध सासा पप ध ग प धप गरे सा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ग ये ऽ ज न म के ऽ ये ऽ हि ज न म के ऽ
 १ ग ये ऽ ज न म के ऽ सासा धप धध पप पध पध सासा धप
 २ ग ये ऽ ज न म के ऽ धसा पध गप धप गरे सारे गप धप
 ३ ग ये ऽ ज न म धसा रसा धसा धप पध सासा धसा पध सासा धप
 ४ ग ये ऽ ज न म गप धसा रेग रेसा धसा धप गप धप गरे सा
 ५ ग ये ऽ ऽ ध रे सासाधसा धप पग धप पग पग रे पग
 ग ये ऽ ज न म के ऽ ये ऽ हि ज न म के ऽ
 ६ सा ध पप गप गरे सा ध सा रसा धसाधप गप धप गरे सा
 ७ साध सासा पप धध सासागग पप धध सासासासारेरे गग पप धध पप धप
 ८ सासासाध धधसासा रेरे गरे सा धसा धप सा रे सा धसा धप गरे सा
 ९ गऽ येऽ ऽऽ जऽ नऽ ऽऽ मऽ के येऽ हीऽ जऽ नऽ मऽ ऽऽ केऽ
 पध सासा गप गरे गप धप गरे सा गरे सासाधसा धप गप धप गप धप

(६७)

राग-देसकार

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

हुँतो तोरे कारन जागली । आईला भईला मोरी ॥ धृ० ॥ सुमिरन कर
हीं अखियन मोरी लाग रही चौ ओर ॥ १ ॥

अस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
			हूँ तो तो रे
			प ध ध सा
काऽऽऽ	रऽऽऽऽ न	जाऽ ग ली	आ ई ला भ
धपऽ ग	ग प गपध प	ग रे सा सा	सा सा रे ग
ईऽ लाऽ	मोऽऽऽऽ रीऽऽऽऽ	हूँ तो तो रे	
पऽ धऽ	पध सासा धप गरे	गरे सासाऽऽ	प ध ध सा

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
काऽऽऽ	रऽऽऽऽ न	सु मि रऽ न	क रऽऽऽ
धपऽ ग	ग प गपध प	प प धसा सा	सा सा रे ध
र हीऽ	अ खि य न	मोऽ रीऽ	लाऽ ग र
सा सा साऽ	सा सा सा सा	धऽ पऽ	गऽ प प
हीऽ चौऽ	ओऽऽऽऽ रऽऽऽऽ		
सा पऽ	पध सासा धप गरे	गरे सासाऽऽ	

राग-देसकार

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

नत हरि नाम लेत मन मोहे । जैसे बढे तेरो ग्यान ॥ धृ० ॥ जा काल
रची सब रचना । सोच समज नादान ॥ १ ॥

अस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१

नाऽऽ म लें	ऽ त म न	मो ऽ हे ऽ	न त ह रि
धप प प ध	ग प ध प	ग रे सा ऽ	सा ध ध सा
ते ऽ रो ऽ	ग्या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ न	जै से ब ढे
प ऽ ध ऽ	ध ऽ प ऽ	ध ग प प	सा रे ग ग

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१

र न र ची	स ब र च	नाऽऽऽऽ	जा ऽ काऽऽ
सां सां सां सां	सां रे ग रे	सां ध सां ध प	प ऽ ध सां
सऽ मऽ ज ऽ	ना ऽ दा ऽ	ऽ ऽ ऽ न	सो ऽ ऽ च
सां ध सां ध प	ध ऽ प ऽ	ध ग प प	प ध ऽ सां

राग-सारंग

इस रागमें ऋषभ यह स्वर तीव्र है । मध्यम स्वर कोमल है । निषाद स्वर आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लगता है । गंधार और धैवत यह स्वर वर्जित है । यह राग दिनके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है । भक्तिरस प्रधान यह राग है ।

आरोह—सा रे म् प नी सा

अवरोह—सा नि प म् रे सा

वादी—पंचम

संवादी—ऋषभ

जाती—ओडव

मुख्य अंग—रे नी सा रे म् प, प नि म् प रे रे सा नी सा

सुरावट, ताल—एकताल

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
प	म्	रे	सा	ऽ	रे	नी	सा	रे	रे	सा	ऽ
म्	म्	प	प	नि	म्	प	रे	सा	रे	नी	सा ॥
								म्	ऽ	म्	प
ऽ	प	नी	नी	सा	ऽ	नी	सा	रे	सा	म्	म्
१	सा	नी	सा	नि	प	म्	रे	प	म्	रे	सा ॥

राग-सारंग

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

अंखिया लागीं प्रभुके रूप पै । और नहीं मैं देख सकत हूं । ऐसो आनंद कहींना मिले ॥ धृ० ॥ राजमहल और बाग बगीचें । ध्यान नहीं मेरा बनै ॥ १ ॥

अस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	धीं	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०					१		+				३				
खि	या	ऽ	ऽ	ला	ऽ	गीं	ऽ	प्र	मु	के	रू	ऽ	प	पै	ऽ
प	नि	पम्	प	रे	ऽ	सा	ऽ	सा	रे	सा	नि	प	नी	सा	रे

औ	र	न	हीं	मै	दे	ख	स	क	त	हैं	५	
रे	रे	म्	रे	सा	रे	म्	प	म्	रे	रे	सा	५
ऐ	सो	आ	नं	द	क	हीं	ना	५५	मि	ले	५	५
म्	नि	प	म्	प	म्	रे	रे	पम्	प	म्	रे	५
											सा	५

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+				३			
रा	५	ज	म	ह	ल	औ	र	बा	५	ग	ब	गी	५	चे	५
रे	म्	रे	म्	प	प	प	प	प	नि	प	नी	सा	५	सा	५
ध्या	५	न	न	हीं	५	मे	५५	रा	५	उ	न	पै	५५	५	५
रे	म्	रे	सा	नि	प	म्	नि	नि	५	प	म्	रे	पम्	रे	सा

अस्ताईका बिलंपद

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+				३			
अँ	खि	या	५	ला	५	गीं	५	प्र	मु	के	रु	५	प	पै	५
१	सा	५	नि	प	नीं	५	सा	५	५	५	सा	रे	सा	५	५
२	नी	५	सा	५	रे	मू	सा	नी	सा	रे	सा	म्	रे	सा	५
३	सा	५	५	रे	सा	५	५	५	रे	५	५	पम्	रे	५	५
	म्	५	रे	५	सा	५	म्	रे	म्	५	सा	रे	नी	५	५
४	अँ	खि	या	५	ला	५	गीं	५	म्	५	प	म्	रे	म्	५
	सा	रे	५	रे	सा	५	रे	५	म्	५	सा	५	प	रे	५
५	अँ	खि	या	५	ला	५	गीं	५	नी	५	सा	रे	५	म्	५
	मू	रे	५	रे	म्	५	म्	५	प	५	म्	५	प	५	५
	सा	५	प	म्	सा	५	म्	रे	सा	५	रे	सा	रे	सा	५

६ अँ खि याऽऽ	म् ऽ नि ऽ	नि ऽ प म्	रे ऽ प ऽ
प म् रे म्	सा रे नि प	प प म् म्	रे रे सा रे
७ अँ खि याऽऽ	सा म् रे पम् नि	म् प रे म्	नि पम् रे ऽ
प म् रे ऽ	सा रे रे म्	म् प नि म्	प प्प रे म्
८ अँ खि याऽऽ	ला ऽ गी ऽ	अँ ऽ खिऽऽ	यां ऽऽ लाऽ गी
		सा रे पम् रे	म् निपनिम् प
प्र ऽ मु ऽ	के ऽऽ ऽ ऽ	रु ऽप पै ऽ	रु ऽप पै ऽ
रे म् प नि	प सा नि प म्	म् ऽ नि प ऽ	म् ऽ नि प ऽ
९ अँ खिऽ याऽऽ	ला ऽ गीऽऽ	प्र मु के रुऽ	ऽ प पै ऽ
नि प्प पम् रे	नि ऽ पम् म्	सा नि नि प्प	म् म् प प
नी ऽ नी सा	प ऽ प नि	म् ऽ म् प	रे नि प म्
१० अँ खिऽ याऽऽ	ला ऽ गी ऽ	प्र मुऽ केऽ रु	ऽ पऽ पै ऽ
सा रे सा पम् प	सा ऽ नि ऽ	नि सा नि सा नि प	ऽ नि प प म्
म् पम् म् रे	रे म् रे म् रे प	म् नि प सा प नि म्	रे प रे प

अंतरेका बिलंपद

ना ती ती ना	ना धी धी ना	ना धी धी ना	ना धी धी ना
०	१	+	३
रा ऽ ज म	ह ल औ र	बा ऽ ग ब	गी ऽ चे ऽ
१ प नि प सा	नि प म् ऽ	म् ऽ नि प	नी नी सा ऽ
२ नी ऽ ऽ नी	सा ऽ नि ऽ	नि ऽ ऽ प	म् ऽ रे म्
प नि प सा	ऽ सा म् म्	ऽ म् रे रे	म् म् म् प नि

३ रा ऽ ज म	ह ल औ र	सा ऽ नि प	सा ऽ नी सा
प रे ऽ रे	सा रे नी ऽ	सा ऽ प नि	म प प नी
नी सा रे नि	सा प म निप	प सानि सा रे	सा रे सा ऽ
४ रा ऽ ज म	ह ल औ र	सा ऽ नि प ऽ म्	रे ऽ सा रे ऽ
रे ऽ प म् प	म ऽ नि म् प	प ऽ रे नी सा	प नि ऽ प सा ऽ
५ रा ऽ ज म	ह ल रे रे रे	म म् म् प प प	नि नि नि नि सा
नि नि नि नि प प	प प प म् म्	म म् म् रे रे	रे म् प नी सा
६ रा ऽ ज ऽ	म ह ऽ ल ऽ ऽ	औ ऽ र ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
म् प नी सा	रे सा नि प म् रे	म् नि प म् रे सा	नी सा रे ऽ
बा ऽ ऽ ग ऽ ऽ	ब गी ऽ चे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
म् रे म् रे प म् प	नी सानी सानी सा	म् म् प सा ऽ	म् म् प सा ऽ
७ रा ऽ ज म	ह ल औ र	सा सा ऽ ऽ	नि ऽ प म् रे सा
सा प ऽ ऽ	सा नि ऽ ऽ	सा सा ऽ ऽ	नि ऽ रे सा नि प
८ रा ऽ ऽ ज म	ह ल औ ऽ र	बा ऽ ग ऽ ब	गी ऽ चे ऽ
म् प प नी नी नी	सा ऽ सानी रे	रे म् म् रे रे	सा नी नी नी ऽ
सा रे सा नि	प ऽ रे ऽ	ऽ म् रे सा	नी नी सा ऽ
९ प रे रे सा	म् सा रे प	सा म् नि रे	रे नि रे सा
म् म् प नी	प नी सा रे म् ऽ रे	रे सा प ऽ नि	म् प नी सा रे ऽ
१० रा ऽ ज म	ह ल सा सा	सा सा रे रे	रे रे सा नि प म्
म् म् म् रे रे	रे रे नि नि	म् म् रे म् प	नी ऽ रे म् प
नी सा रे म् प	नी सा रे नी ऽ सा	रे सा रे ऽ म्	सा रे नी सा

राग—सारंग

ताल—एकताल (मध्यलय)

कृष्ण कन्हैया निकले कंस वधनको । अरि कंस वधनको । गोकुलकी
 मथुराकी नरनारी । आई मिलनको ॥ धृ० ॥ इतनि बिनति है तुमसे । गिरधर
 मानो । दुनियाके पाप हरो । शांति दो सबको ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
कृ	ऽ	ष्ण	क	न्है	ऽ	या	ऽऽ	नि	क	ले	ऽ
प	नि	प	नि	मू	प	पनी	सांनि	प	मू	प	ऽ
कं	ऽऽ	स	व	ध	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रि
प	नि	मू	रे	सा	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	मू
कं	ऽऽ	स	व	ध	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	नि	मू	रे	सा	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गो	ऽ	कु	ल	की	ऽ	म	थु	रा	ऽ	की	ऽ
मू	रे	मू	रे	सा	ऽ	नि	प	नि	मू	प	ऽ
न	र	ना	ऽऽ	री	ऽ	आ	ऽऽ	ई	मि	ल	न
सा	रै	सांनि	सांनि	प	ऽ	मू	नि	मू	रे	सा	रे
को	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रि	आ	ऽऽ	ई	मि	ल	न
प	ऽ	ऽ	ऽ	प	मू	मू	नि	मू	रे	सा	रे
आ	ऽऽ	ई	मि	ल	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मू	नि	मू	रे	सा	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
इ	त	नि	बि	न	ति	है	ऽ	तु	म	से	ऽ
प	प	प	नि	म	प	नी	सा	सा	रे	सा	ऽ
गि	रि	ध	र	मा	ऽ	नो	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	सा	सा	नि	सा	रे	सा	नि	प	ऽ
दु	नि	या	ऽ	के	ऽ	पा	ऽऽ	प	ह	रो	ऽ
प	रे	सा	रे	नी	सा	पनि	सानि	प	म	प	ऽ
शा	ऽऽ	ति	दो	स	ब	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मप	निप	म	रे	सा	रे	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

आस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	या	ऽऽ	नि	क	ले	ऽ
१ कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	या	ऽऽ	निनि	पम	रेसा	नीसा
२ कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	या	सानि	पम	निप	मुरे	सा
३ कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	सारे	मप	नीसा	निप	मुरे	सासा
४ कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	सारे	नीसा	मुरे	पम	निप	सा
५ कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽऽ	ऽऽ	या	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
				पनी	साप	नीसा	पनि	पनि	पम	रेसा	नीसा
कृ	ऽ	ष्ण	क	नहै	ऽ	या	ऽऽ	नि	क	ले	ऽ

६ रे	सासा	म्म्	रेप	पम्	पनि	निप	नीसा	सानि	पनि	पम्	रेसा
७ सारे	म्रे	म्प	म्प	निप	म्प	नीसा	रेसा	नीसा	निप	म्रे	सा
८ कृ	ऽ	ष्ण	क	न्है	ऽ	याऽ	ऽऽ	नीसा	रेम्	रेसा	रेम्
९ पनि	पम्	पनी	सानि	म्प	निप	रेम्	पम्	नीसा	रेप	म्रे	सा
१० कृऽ	ऽऽ	ष्णऽ	कऽ	न्हैऽ	ऽऽ	याऽ	ऽऽ	निऽ	कऽ	लेऽ	ऽऽ
११ पप	सासा	पप	निनि	म्म्	पप	रेरे	म्म्	पप	पम्	म्रे	रेसा
१२ सारे	म्म्	म्म्	रे	म्प	निनि	निनि	प	निनि	निनि	म्म्	पप

अंतरेकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
इ	त	नि	बि	न	ति	है	ऽ	तु	म	से	ऽ
१ इ	त	नि	बि	न	ति	सासा	निप	म्रे	सा	नीनी	सा
२ इ	त	नि	बि	न	ति	रेरे	सानि	पम्	रेसा	नीसा	रेम्
३ इ	त	नि	ऽ	पनि	पम्	पप	सांरे	सासा	निनि	पम्	रे
४ इ	त	नि	ऽ	परै	रेरे	नीसा	सासा	पनि	निनि	म्प	पप
इ	त	नि	बि	न	ति	है	ऽ	तु	म	से	ऽ
५ सारे	म्रे	म्प	म्प	निप	म्प	नीसा	रेसा	नीसा	निप	म्नि	पम्
६ सारे	म्प	रे	म्प	नीसा	प	पनी	सांरे	नीसा	निप	म्रे	सा
७ इ	त	नि	बि	न	ति	पनी	सांरे	नीसा	रेरे	सांरे	सानि
पनि	पम्	रेम्	रेसा	नीसा	रेम्	पनि	नीसा	रेम्	पनी	पनी	सा

८ इऽ	तऽ	निऽ	ऽऽ	ऽऽ	बिऽ	नऽ	तिऽ	हैऽ	तुम	सेऽ	ऽऽ
निन्	पम्	रेम्	पनि	पम्	पनी	सारे	सारे	सारे	सानि	पनि	ऽऽ
९ इऽ	तऽ	निऽ	ऽऽ	बिऽ	नऽ	तिऽ	ऽऽ	हैऽ	तुम	सेऽ	ऽऽ
निन्	पम्	पनी	सारे	मम्	रेसा	नीसा	नीसा	रैरै	सानि	पम्	ऽऽ
१० इ	त	नि	बि	न	ति	म्प	नीसा	रेम्	ऽरै	सानि	ऽऽ
रेसा	सां	रै	सानि	पम्	रेसा	सां	निप	मुरे	नि	पम्	ऽऽ

राग—सारंग

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

पिया बिदेस गवा कीनो कैसे भरये दिनुवा ॥ धृ० ॥ कतो गगनुवा
गरजे सुन मिन पियाबिन जियरा ललजे कलन परत छिनवा ॥ १ ॥

अस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
पि या ऽ बि	दे ऽ स ग	वा ऽ ऽ ऽ	की ऽ नो ऽ
रे रे म् रे	सा ऽ सा रे	सा ऽ ऽ ऽ	नी सा रे ऽ
कै ऽ से भ	ऽ रु ये ऽ	दि नु वा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा ऽ सां सा	ऽ रे सा ऽ	प म् रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
क तो ऽ ग	ग नु वा ऽ	ग र जे ऽ	ऽ ऽ सु न
म् म् ऽ म्	प प नि प	नी नी सां ऽ	ऽ ऽ सां सां

(७७)

पि ऽ त पि या ऽ बि न जि य रा ऽ ल ल जे ऽ
 नी नी सा ऽ सा सा सा रे सा ऽ नि नि प ऽ
 ल न प र ऽ त ऽ छि न वा ऽ ऽ ऽ ऽ
 म् म् म् प ऽ प ऽ प म् प म् रे ऽ सा ऽ

राग—सारंग

ताल—त्रिताल (मध्यलय)

ब्रिजमें दद बेचन जात सखीरी । बिचमें मिलगयो शाम सुंदर । मोसे
 छोरी करत बेगिआ ॥ धृ० ॥ ददकी मटकी फोरी, सगरि चुनरी फारी । छतिया
 नृत मोरी देखे सब ब्रिज नारी । फजित भये बेगिआ ॥ १ ॥

अस्ताई

षीं षीं ना ना तीं तीं ना ना षीं षीं ना ना षीं षीं ना
 ० १ +
 ऽ ऽ ब्रि ज में ऽ ऽ द ऽ द ऽ वे ऽ च न जा ऽ त स
 ऽ ऽ म् प म्प नि नि पम् पम् रे ऽ सा सा रे म् रे म्
 ऽ ऽ री ऽ बि ऽ च में मि ल ग यो शा ऽ म सुं
 ऽ ऽ प ऽ म् रे ऽ रे म् रे सा सा प नि प नी
 र मो से ठ ठो रि क र त वे गि आ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा नी सा रे म् रे म् प प म् प म्प नि नि पम् पम्
 ऽ
 रे सा

अंतरा

ना धीं धी ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
५ ५ ५ ५	द द की म	ट की फो रि	स ग रि
५ ५ ५ ५	रे म् रे म्	प प प प	प नि प
न रि फा रि	छ ति या छु	व त मो रि	दे खे स
सां सां सां सां	सां रे रे म्	रे सां नि प	म् प नि नि
त्रि ज ना रि	फ जि त म	ये ५ ५ बे गि	आ ५ ५ ५ ५
प म् रे सा	प रे सां रे	सां नि सां म् प	म् प नि नि पम् पम्
५ ५			
रे सा			

राग-पटदीप

इस रागमें ऋषभ, धैवत और निषाद, यह स्वर तीव्र लगते हैं। गंधार और मध्यम स्वर कोमल लगते हैं। आरोहमें ऋषभ और धैवत वर्जित हैं। यह राग दिनके तीसरे प्रहरमें गाया जाता है। भीमपलासके सदृश इस रागकाभी श्रृंगार रस हो सकताथा किंतु निषाद तीव्र लगनेसे यह राग गंभीर रस प्रवाप्त हो गया।

आरोह—सा, ग, म, प नी, सां

अवरोह—सां, नी, ध, प, म्, ग, रे सा

वादी-मध्यम
संवादी-षड्ज
जाती-ओडव संवादी

मुख्य अंग—म ग् रे सा नी ५ सा ग् रे सा, नी ध प म् प ग् ५
ग् रे सा

सुरावट, ताल—रूपक

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२	
नी	नी	ध	प	म्	प	सा
नी	ध	प	ग्	रे	सा	नी
म्	प	ग्	म्	प	नी	सा ॥
ग्	रे	नी	सा	ध	म्	प
म्	ग्	ग्	म्	म्	प	नी
सा	S	सा	सा	ग्	रे	सा
नी	सा	ध	प	सा	ग्	म्
ग्	रे	सा	नी	ध	म्	प ॥

राग—पटदीप

ताल—रूपक (मध्यलय)

होरी खेलत बहार । गोकुल नार फेंकत रंग कैसी दोबार ॥ धृ० ॥
 सबहिं नगरमें सबहिं घरमें । खेलत नंदकुमार ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना
१		२		+		
हो	SS	SS	SS	री	S	S
सा	मृग्	पम्	धप	नी	S	S
खेSSS	लS	तSS	बS	हा	S	र
पनीसानी	धप	पमग्	पम्	प	S	S

गो	ऽ	कु	ल	ना	ऽ	र
म्	ग	ग्	रे	सा	ऽ	सा
फें	ऽ	क	तऽ	रं	ऽ	ग
नी	ऽ	सा	मृग	रे	ऽ	सा
कैऽऽऽ	ऽ	सी	दो	बा	ऽ	ऽर
गम्पनी	ऽ	नी	सा	ध	प	मृग

अंतरा

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
+			१		२	
सब	हिऽ	न	ग	र	में	ऽ
गम्	पनी	नी	सा	सा	सा	ऽ
सब	हिऽ	ऽ	घ	र	में	ऽ
नीसा	गरे	सा	नी	सा	ध	प
खे	ल	त	नं	ऽ	दऽ	कुऽ
नी	नी	सा	ध	प	मृग	पम्
माऽऽ	ऽऽऽ	र	हो	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
पधप	म्पम्	ग्	सा	मृग	पम्	धप
री	ऽ	ऽ				
नी	ऽ	ऽ				

अस्ताईका विलंपद

धी	ना	धी	ना	ती	ती	ना
१		२		+		
हो	SS	SS	SS	री	S	S
नी	नी	सा	S	ग्	रे	सा
नी	नी	सा	म्	ग्	म्	ग्
रे	सा	नी	सा	म्ग्	रे	सा
सा	म्ग्	म्	प	प	म्	प
म्ग्	ग्	सा	म्ग्	म्ग्	रे	सा
हो	SS	SS	SS	री	S	ध
प	म्	धप	ग्	म्	प	सा
म्ग्	म्	प	सा	पम्	गुरे	सा
हो	SS	SS	SS	री	S	धप
म्ग्	म्	ग्	ग्	म्ग्	पम्	धप
नी	ध	प	म्	ग्	रे	सा
हो	SS	SS	SS	रीS	SS	SS
				नीनी	धध	पप
म्ग्	ग्ग्	म्ग्	म्सा	म्ग्	प	ग्
सा	म्ग्	साग्	साग्	म्	ग्	रेसा
होS	S	रीS	S	खेS	ल	तS
नीसा	ग्	साग्	म्	ग्म्	प	पम्

ग.सं. (२) ६

	बऽ (धप (होऽ (गुम् (छऽ (धध (होऽ (सा (गु (प (पम् (प (हो (सा (प (प (सा (गुम् (	हाऽ (मृगु (ऽऽ (पम् (त (प (ऽऽ (नी (सा (ऽ (धंप (मृप (ऽऽ (मृगु (नी (नी (प (मृ (	ऽऽ (मृगु (ऽऽ (पम् (ब (ध (ऽऽ (ध (मृ (मृगु (नी (मृध (ऽऽ (ऽमृ (धध (सांनी (मृ (मृ (	र (गु (ऽ (ध (हाऽ (पम् (ऽऽ (प (गुरे (पम् (ऽ (प (ऽऽ (प (नीध (धप (नी (गु (	बऽ (पम् (री (प (रऽ (मृप (री (मृ (सा (ध (धनी (मृगु (री (प (पम् (गु (ध (रेसा (	हाऽ (गुरे (ऽ (ऽ (ऽ (गु (ऽ (ध (मृगु (प (सांनी (पमृगु (ऽ (पम् (गु (मृ (प (नी (	ऽ (सासा (हे (नी (ऽऽ (मृप (ऽ (पम् (पम् (ऽ (ध (रेसा (ऽ (ऽध (मृ (प (मृप (सा (
--	---	--	---	---	--	--	--

अंतरेका बिलंपद

	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
	ती	हिऽ	न	१	र	२	ऽ
१	सब (सा	मृग (प	पमृ (नी	धप (धनी	नी (सा	नी (धनी	नी (सा
२	गुमृ (मृग (प	मृ (नी	प (प	नी (नी	धप (मृ	ग (नी	मृ (ऽ
३	सा (नी	धप (मृप (प	मृग (सा	रेसा (सा	ग (सा (नी	मृप (ध	सा (प
	मृ (मृ	प (प	नी (ऽ	सा (ऽ	नी (ऽ	नी (ऽऽ	सा (ऽऽ
४	सब (गुमृ (प	हिऽ (पसा (मृ	ऽ (ऽ	ऽ (धध (गुप (ग	सा (प	नीनी (मृ	धध (धध
	पप (सब (सा	मृ (मृ	नीनी (मृमृ (न	धध (ग	ऽमृ (र	ग (पनी	रेसा (गरे
५	ध (ध	हिऽ (नी	ध (सा (नी	प (ध	गुमृ (प	मैं (नीनी	सा (ध
	प (धध (पप (	प (मृग (पप (मृसा	पमृ (पप (ऽनी	धप (मृमृ (ध	सा (नी (गुमृ (प	सा (नी (मृमृ (मृग	धध (गुमृ (रेसा

६	सब (गुम्) ग (म्) रे	हिऽ (पसा) सा (ऽनी) नी (ग्) हि	न (ऽ) ऽम् (ऽनी) ध (म्प) न	ग (ऽ) ऽम् (सा) प (सा) ग	र (सोनी) (ग्) ग (ग्) र	में (धप) (ऽप) (रे) म्प (म्प) (में)	ऽ (म्प) (ऽप) (सा) सा (सा) ऽ
७	सब (गुम्) गुम् (धप) (म्ग)	हिऽ (पनी) पम् (सा) म्ग	न (सा) धप (नीनी) (रेसा)	गऽ (म्ग) (सा) म्ग (सा)	रऽ (रेसा) (सासा) (गुग्) (ऽसा)	मेंऽ (रेनी) (म्ग) (नीनी) (सा)	ऽ (सा) पम् (धप) (ऽसा)
८	सब (सांरे) (धप) (म्ग)	हिन (नीसा) (म्ग) (रेसा)	गर (धध) (म्) (ऽसा)	मेंऽ (पम्) (ग्) म्ग	ऽऽ (गुरे) (रेसा) (म्ग)	ऽ (सा) (ऽसा) (रेसा)	ऽ (नी) (सा) (ऽसा)
९	सब (गुम्) (गुम्) (नीध)	हिऽ (पसा) (पनी) (ऽप)	न (ऽ) (सां) (म्ग)	ग (ऽ) (म्) (म्प)	गम् (गुरे) (म्ग)	में (पनी) (ऽसा) (म्प)	ऽ (सां) (सा) (सांरे)

१० गुम्	पनी	सांग	मंग	रे	सा	ऽ
साग	मग	रे	सा	मंग	रे	सा
मग	रे	सा	रैनी	सा	रैनी	सा
सा	ऽनी	धप	मग	सा	ऽनी	धप
मग	पम्	सा	ऽनी	धप	गम्	मंगरेसा

राग-पटदीप

ताल-एकताल (मध्यलय)

ओ देखो कन्हैया । चरन पकर उसके । सखी चरन पकर उसके ॥ ४० ॥
 गोप गोपीया लेकर । जाय रहे जमुना पर । खेल गेंदका खिलने । सखी चरन
 पकर उसके ॥ १ ॥

अस्ताई

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
ओ	ऽ	दे	ऽ	खो	ऽ	ऽ	क	न्है	ऽ	या	ऽ
ग	म्	प	नी	पनी	सा	ऽ	नी	ध	ऽ	प	ऽ
चऽ	रऽ	न	प	क	र	उ	सऽ	के	ऽ	स	खी
गऽ	पम्	प	नी	ध	प	ग	पम्	प	ऽ	म्	प
चऽ	रऽ	न	प	क	र	उ	सऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ
गऽ	पम्	प	नी	ध	प	ग	पम्	प	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
गोऽ	ऽ	प	गो	ऽ	पि	या	ऽ	ले	ऽ	क	र
मृगु	मृ	प	नी	ऽ	नी	प	नी	सा	ऽ	सा	सा
जा	ऽ	य	र	हे	ऽ	ज	मुऽ	ना	ऽ	प	र
नी	ऽ	नी	नी	सा	ऽ	नी	सानी	ध	ऽ	प	प
खे	ऽ	ल	गें	ऽ	दऽ	का	ऽ	खिऽ	लऽ	ने	ऽ
नी	ऽ	नी	नी	ऽ	सानी	ध	प	मृगु	पमृ	प	ऽ
स	खी	चऽ	रऽ	न	प	क	र	उ	सऽ	के	ऽ
मृ	प	मृगु	पमृ	प	नी	ध	प	गु	पमृ	प	ऽ

अस्ताईकी तानें

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
ओ	ऽ	दे	ऽ	खोऽ	ऽ	ऽ	क	नहै	ऽ	या	ऽ
१ ओ	ऽ	दे	ऽ	खोऽ	ऽ	गुमृ	पनी	सानी	धप	मृगु	रेसा
२ ओ	ऽ	दे	ऽ	खोऽ	ऽ	सानी	सानी	धप	मृगु	मृगु	रेसा
ओ	ऽ	दे	ऽ	खोऽ	ऽ	ऽ	क	नहै	ऽ	या	ऽ
३ नीसा	गुमृ	पनी	सानी	धप	मृगु	रेसा	गुमृ	पनी	धप	मृगु	रेसा
४ गुमृ	पनी	सानी	धप	मृप	धध	पमृ	पमृ	गु	गु	मृगु	रेसा
५ गुगु	मृगु	रेसा	पप	मृगु	मृगु	रेसा	नीनी	धप	मृगु	गुमृ	गुमृ

६ ओ	५	दे	५	खो	५	५	५	सासा	मृग्	पम्	धप्
नीनी	धध	पप	मृम्	गुग्	मृम्	गुग्	रेरे	सासा	नीनी	धध	पप
७ ओ	५	दे	५	खो	५	५	५	मृग्	रेसा	पप	मृम्
धध	पम्	पम्	गम्	पनी	पनी	सांनी	धप	सांनी	धप	मृग्	रेसा
८ ओ	५	दे	५	खो	५	५	क	नहै	५	या	५
नीनी	नीनी	धप	मृग्	मृग्	रेसा	सांनी	सांनी	धप	गुम्	पनी	सा
९ ओ	५५	५	दे५	५५	खो५	५५	क	नहै	या५	५५	५५
गुम्	गुरे	सा	गुम्	पनी	सांनी	धप	नी	सांनी	धप	मृग्	रेसा
१० ओ	५५	दे५	५५	खो५	५५	५५	५५	५५	क५	नहै५	या५
साग्	म्प	गुम्	पनी	पनी	सांनी	धप	मृग्	रेसा	मृग्	पम्	धप
५५	५	क५	नहै५	या५	५५	५५	५	५५	५	५५	५
म्प	सा	नीनी	धनी	सांनी	धप	गुम्	प	गुम्	प	गुम्	प

अंतरेकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
गो	५	प	गो	५	पि	या	५	ले	५	क	र
१ सांनी	धनी	सांनी	धप	म्प	गुम्	गुरे	सा	गुम्	पनी	सा	५
२ गो	५	प	गो	५	पि	या	५	सा	नीध	पम्	प
मृग्	म्	गुरे	सा	गुम्	प	मृग्	म्	गुम्	गुम्	पनी	सा
३ गो	५	प	गो	५	पि	या५	५५	५५	५५	५५	५५
						पनी	सांरै	सांनी	धप	मृग्	रेसा

४	गो	ऽ	प	गो	ऽ	पि	या	ऽ	पनी	सांग्	रैसा	नीसा
	नीसा	नीध	पम्	पम्	गुम्	गुम्	पप	नीनी	नीनी	सासा	सासा	नीसा
५	गो	ऽ	प	गो	ऽ	पि	या	गु	रैसा	नीध	पम्	गु
	सा	नीध	पम्	गुरे	सानी	सागु	म्प	गुगु	म्प	म्प	पप	नीनी
	गो	ऽ	प	गो	ऽ	पि	या	ऽ	ले	ऽ	क	र
६	सासा	पप	पप	सानी	धप	म्प	रेसा	सासा	पप	पप	सासा	गु
	रैसा	नीध	पम्	गुरे	सा	प	म्प	रेसा	नी	धप	म्प	रेसा
७	गोऽ	ऽऽ	पऽ	ऽऽ	गोऽ	ऽऽ	ऽऽ	पिऽ	याऽ	लेऽ	कऽ	र
	सागु	म्प	म्प	रेसा	गुम्	पनी	सानी	धप	म्प	म्प	रेसा	सा
८	गोऽ	पऽ	गोऽ	पिऽ	या	लेऽ	ऽऽ	कऽ	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
	सासा	म्प	पम्	धप	सा	सानी	सांगु	रैसा	नीध	पम्	गुरे	सा
	गो	ऽ	प	गो	ऽ	पि	या	ऽ	ले	ऽ	क	र
९	साम्	ऽम्	गुप	ऽप	पनी	ऽनी	नीसा	ऽसा	सासा	ऽनी	नी	धप
	धध	ऽप	प	म्प	म्प	ऽगु	गु	रेसा	गुम्	पनी	सा	ऽ
१०	गुम्	पनी	सांगु	म्प	रैसा	नीध	पम्	गुरे	सा	गुम्	पनी	सांगु
	रैसा	नीध	पम्	गुरे	सा	गुगुम्	म्प	पप	नीनी	सासा	नीनी	धध
	पप	म्प	गुगु	रेरे	सा	गुम्	पनी	गुम्	पनी	गुम्	पनी	सा

राग-पटदीप

ताल-झपताल (मध्यल्य)

मेरी सुद लीजिये कृष्ण मुरारी । मेरे बनवारी ॥ धृ० ॥ नेम धरम तुमही
को दीनो । तुमहो नंद बिहारी । हां हां करत तोरे पैया परत हूं । मोर मुकुट
के नेवारी ॥ १॥

अस्ताई

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
							मे	रीऽऽ	सुद
							ध	पमग्	मग्
लि	ऽ	जि	ऽ	येऽ	ऽऽ	ऽ	कृ	ष्ण	ऽमु
रे	सा	म्	ग्	मूप	धम्	प	म्	प	ऽनी
रा	री	मे	रेऽ	बन	बा	ऽरी	मे	रीऽऽ	सुद
ध	प	ध	पम्	पप	ग्	ऽम्	ध	पमग्	मग्

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
नेऽ	मध	र	ऽ	म	तुम	हीको	दी	ऽऽ	नोऽ
ग्	पनी	सां	ऽ	सां	पनी	सां	रै	सांनी	धप
तुम	होऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नंऽ	द	ऽबि	हा	री
नीनी	धनी	सां	ध	प	धम्	प	ऽनी	ध	प

हांहां	ऽक	रत	तो	रे	पैया	ऽप	रत	हुंऽ	ऽ
मृग्	ऽम्	पप	नी	सा	नीसा	ऽग्	रसा	रैनी	सा
मोऽऽऽ	रमु	कुट	के	नेऽ	वा	री			
धनीसा	नीधप	धप	ग्	मृग्	रे	सा			

राग-तिलंग

इस रागमें गंधार तीव्र है मध्यम स्वर कोमल है। निषाद यह स्वर आरोहमें तीव्र और अवरोहमें कोमल लगता है। ऋषभ और धैवत यह स्वर वर्जित है। तथापि ऋषभ तार सप्तकमें लेनेकी प्रथा है। यह राग रातके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। शृंगार रसप्रधान यह राग है।

आरोह—सा ग म् प नी सा

अवरोह—सा नि प म् ग सा

वादी—गंधार

संवादी—निषाद

जाती—ओढव

मुख्य अंग—ग म् नि प ऽ म् ग ऽ नि नि प म् ग ऽ सा ऽ ग म् प ऽ
ग ऽ म् ऽ प नी सा ऽ ऽ नि प नि प म् ग म् ग ऽ

सुरावट, ताल—एकताल

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
ग	ग	म्	म्	नि	नि	प	म्	ग	म्	ग	सा
म्	प	म्	ग	ऽ	ग	म्	प	ग	म्	प	ऽ
नि	नि	प	नी	सा	प	नि	ऽ	प	म्	ग	म्॥
ग	म्	ग	म्	प	प	नि	प	नी	नी	सा	ऽ
प	नी	सा	रै	नी	सा	नि	प	सा	ग	म्	ग
सा	ऽ	नि	नि	प	म्	ग	म्	प	प	म्	प
नी	नी	सा	गं	सा	नि	प	नि	प	म्	ग	सा॥

राग-तिलंग

ताल- त्रिताल (मध्यलय)

ले चल गोकुल गाम । श्याम कन्हैया ॥ धृ० ॥ ब्रिंदावनकी कुंज गलित
 भों । कित छुप गयो तुम श्याम कन्हैया ॥ १ ॥

अस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+					३			
ले	ऽ	च	ल	गो	ऽ	ऽ	कु	ल	गा	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
ग	मू	प	सां	सां	नि	प	नि	ग	मू	ग	ऽ	ऽ	मू	ग	ऽ
श्या	ऽ	म	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	मू	प	नी	सां	ऽ	सां	रै	नी	सां	प	नि	प	मू	प	ग
ले	ऽ	च	ल	गो	ऽ	ऽ	कु	ल	गा	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
ग	मू	प	सां	सां	नि	प	नि	ग	मू	ग	ऽ	ऽ	मू	ग	ऽ

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	धीं	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+					३			
ब्रि	ऽ	दा	ऽ	ब	न	की	ऽ	कुं	ऽ	ज	ग	ली	न	मो	ऽ
ग	मू	प	नि	नी	सां	सां	ऽ	प	नी	सां	रै	नी	सां	नि	प
कि	त	छु	प	ग	यो	तु	म	श्या	ऽ	म	क	न्है	ऽ	या	ऽ
सा	मू	ग	मू	प	प	नि	प	प	नी	सां	रै	सां	नि	प	मू

आस्ताईका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
ले ऽ च ल गोऽऽ कु ल गा ऽ ऽ म ऽ ऽ ऽ ऽ

१ प नी सा ग सा ऽ नी सा नि प ग म् प नी सा ऽ

२ नी सा ग म् ग ऽ सा ग म् प म् ग सा नी सा ऽ

३ सा ग म् प ग म् नी सा प नी सा म् ग म् ग म्

४ ले ऽ च ल गोऽऽ कु ल गा ऽ ऽ म ग ऽ सा ऽ

म् ऽ ग ऽ सा ऽ प ऽ म् ऽ म् ऽ गम् सा गम् प

५ ले ऽ च ल गोऽऽ कु ल ग म् प नि पम् पम् ग ऽ

ग म्ग सा ऽ प म्प ग ऽ ग म् निप नि प म् ग सा

६ ले ऽ च ल गोऽऽ कु ल प म् प ग म् सा ग ग

म् म् प ग म् प म्प ग निपनि प म् सा निप प म्

ले ऽ च ल गोऽऽ कु ल गा ऽ ऽ म ऽ ऽ ऽ ऽ

७ ग म् गम् प ग म् गम् पनि ग म् पनी सा प नि पम् प

प म् म्ग ग म् ग सानी सा प म् नि प नी नी सानि पम्

८ ले ऽ चऽ लऽ गो ऽ कुऽ ऽ ल ऽ ऽ ऽ गा ऽ ऽ म

ग म् निप निप नी सा पम् गम् प नि पम् गम् म् प म्ग सा

९ लेऽ ऽ चऽ लऽ गोऽ ऽ कुऽ लऽ गाऽ ऽ मऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

गम् गम् पम् पम् निप निप सानी सानी पनि पनि म्प म्प सानि निप पम् म्ग

॥ सा ऽ गम् ग ग म् नि ऽ नि ऽ नि नि नि सा ऽ नि प म्
 म् ऽ ग ऽ सा ग ग म् म् नि प सा नि प रे सा नि
 प म् ग ऽ म् पनो सा नि प गम् नि नि प गम् पप म् गग सा

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

१

+

३

त्रि ऽ दा ऽ ऽ व न की ऽ कु ऽ ज ग ली न मों ऽ ऽऽः

नि प ग म् प नी प नी सोरें नी सा नि प प नी सोरें सोरें सा

रे ऽ सोरें सा नि प म् म् नि प सा प रे प नी सोरें रे सा सा ऽ

पम् नि प नी सा नी सा ऽ प नि प सा नि प नी सा गं गं सा

सा प नि म् प ग म् म् म् प प प प नी सा सा

त्रि ऽ दा ऽ ऽ व न की ऽ सा ऽ प सा ऽ सा नी सा नी रे ऽ सा

प नि प सा ऽ नि प नि म् नि ऽ प ग पम् ग सा सा नि पम् ग सा

त्रि ऽ दा ऽ ऽ व ऽ की ऽ प नी सा गं सा गं म् गं सा

मों सा नि प म् रे सा नि प म् ग सा नि म् ग सा म् ग सा नि पम् सा

त्रि ऽ दा ऽ ऽ ऽ ब ऽ न की ऽ ऽ कुं ऽ जग ली ऽ न ऽ मों ऽ ऽ

गम् पम् पम् ग म् सा नि सा नि प ऽ म् प गम् प नि नि प नी ऽ सा ऽ रे सा

त्रि ऽ दा ऽ ऽ ब न की ऽ ऽ कुं ऽ ज ऽ ग ली न मों ऽ ऽ

गे सा प नि प प ग म् गम् ग सा

प नि पम् नी सा नि प सो म् ग सा मां प नि ऽ म् प म् प ऽ ग म् म् प प नी नी सा

८ त्रि ऽ दा ऽ सा प म्ग सा ग नि पम् ग म् सा निप म्
 सा ऽप नि म् नि ऽम् प ग ग ऽप म् ग सा नि पम् ग सा
 ९ त्रि ऽ दा ऽ प निप निप नि म् नि ऽसा प ऽ नी सा नी सा नी सा प
 नी ऽनी सा ऽ सा ग सा म् ग सा प नी ऽरे सा ऽ प सा ऽप सा ऽ
 ३० त्रि ऽ दा ऽ ब न ऽ की ऽ कुं ज ग ली न ऽ मौ ऽ
 प ऽ सा नी सा ग पम् ग ऽ ग म् ग सा प नी सा नी सा
 ग रे रे सा सा नि निप पम् म्ग प सा प ग सा म् पम् ग सा निप म्

राग-तिलंग

ताल—एकताल (मध्यलय)

ढूँढत नगरीमें हम कृष्ण राज प्यारे । छुप छुप तुम कहाँ बैठे । नहीं
 दरसन तुम्हारे ॥ धृ० ॥ नंदजिके घर ढूँढे । गोकुलके बन ढूँढे । नर नारी
 व्याकुल भई । कहाँ श्याम दुलारे ॥ १ ॥

अस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
हुं ऽ	ऽऽ	ढ	त	न	ग	री ऽ	ऽ	में	ऽ	ह	म
गम्	पम्	ग	सा	ग	म्	गम्	प	प	ऽ	ग	म
कृ ऽ	ऽ	ण	रा ऽ	ऽ	ज ऽ	प्या ऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
पनी	सा	निप	पनी	सा	निप	गम्	पम्	ग	ऽ	सा	ऽ
छु	प	छु	प	तु	म	क	हा	बै	ऽ	ठे	ऽ
ग	म्	ग	म्	प	प	नी	नी	सा	ऽ	सा	सा

न	हि	द	र	स	न	तुऽ	म्हऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	सा	न्	प	प	पनी	सान्	प	ऽ	म्	ग

अंतरा

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
न	ऽ	द	जि	केऽ	ऽ	घ	र	ढूं	ऽ	हे	ऽ
ग	म्	ग	म्	पन्	प	नी	नी	सा	ऽ	सा	ऽ
गो	ऽ	कु	ल	केऽ	ऽ	ब	न	ढूंऽ	ऽऽ	हे	ऽ
सा	ऽ	सा	म्	गेरे	सा	सा	सा	पनी	सान्	प	ऽ
न	र	ना	ऽ	री	ऽऽ	व्या	ऽ	कु	ल	म	ई
ग	म्	ग	म्	प	निप	नी	ऽ	सा	सा	न्	प
क	हां	शा	ऽ	म	दुऽ	लाऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
य	म्	प	नी	सा	सान्	पनी	सान्	प	ऽ	म्	ग

आस्ताईकी तानें

धी	धी	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धी	ना
+		०		४		०		१		२	
१	ढूंऽ	ऽऽ	ढ	त	न	ग	रीऽ	ऽ	में	ऽ	ह
२	ढूंऽ	ऽऽ	ढ	त	न	ग	रीऽ	ऽ	नीसा	गम्	पन्
३	ढूंऽ	ऽऽ	ढ	त	न	ग	रीऽ	ऽ	न्	पम्	गम्
४	ढूंऽ	ऽऽ	ढ	त	नीसा	गम्	पन्	पम्	गम्	पम्	ग
	ढूंऽ	ऽऽ	ढ	त	नीसा	गम्	प	गम्	पन्	पम्	प

५	निन्	पनि	पम्	गम्	पनि	पम्	गम्	पम्	गम्	ग	गम्	प
६	पनी	सा	पनी	सानि	पनि	पम्	गम्	पम्	गम्	पनी	म्प	सा
७	साग	म्प	गम्	पनि	म्प	नीसा	सानि	पम्	निप	म्ग	पम्	गसा
	हूँ	ऽऽ	ढ	त	न	ग	रीऽ	ऽ	में	ऽ	ह	म
८	हूँ	ढऽ	तऽ	नऽ	गऽ	रीऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
	सासा	म्ग	पम्	निप	नीना	सासा	पप	निन्	म्म्	पप	गग	म्म्
९	हूँ	ऽऽ	ऽऽ	ढऽ	तऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽ	गऽ	रोऽ	मेंऽ
	नीसा	गम्	पनि	पम्	गम्	पनी	सानि	पम्	साँरै	सानि	पनि	पम्
	हऽ	ऽऽ	मऽ	ऽ	कूऽ	ऽऽ	ष्णऽ	ऽ	राऽ	जऽ	प्याऽ	रे
	गम्	पनी	सानी	सा	गम्	पनी	सानी	सा	नीसा	निप	म्ग	म्
१०	नीसा	गम्	गम्	पनि	पनी	साँरै	रैसा	सानि	निप	पम्	म्ग	गसा

अंतरेकी तानें

	धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
	+		०		४		०		१		२	
	नं	ऽ	द	जि	केऽ	ऽ	घ	र	हूँ	ऽ	ढे	ऽ
१	साँरै	नीसा	पनी	साँरै	नीसा	निन्	पनी	सानि	प	गम्	निप	सा
२	साँरै	नीसा	पनि	म्प	गम्	साग	नीसा	गसा	म्ग	पम्	निप	सा
३	सानि	सानि	पनि	पम्	गम्	गसा	निन्	पम्	गम्	गसा	गम्	पनि
४	साँरै	साँरै	साँरै	सानि	पनि	पनि	पनि	पम्	गम्	पनी	साग	ग
५	पप	म्म्	निन्	पप	सासा	निन्	रैरै	सासा	गग	सासा	रैरै	निन्
	सासा	पप	निन्	म्म्	पप	गग	म्म्	सासा	गग	म्म्	पप	नीती

(९७)

नं ऽ द जि केऽ ऽ पनी सारे सांनि पम् पम् गसा
 नं ऽ द जि केऽ ऽ पनी सांग रेसा नीसा निप म्ग
 नीसा गम् पनी सा गम् पनी सांग गम् पनी सांग म्ग सा
 नं ऽ द जि केऽ ऽ घ र पनी सांग म्ग सांनि
 सांनि पम् गसा नीसा सांनि पन् निप म्प पम् पन् निप नीसा
 सा गम् पनी सासा ऽसा सा सांनि पम् गसा सांनि पम् गसा
 नंऽ दऽ जिऽ केऽ घऽ रऽ ढूंऽ ढेऽ नंऽ ऽद जिऽ केऽ
 म्प निन् निन् पम् सासा रेरे सांनि सासा नीसा ऽरे सांनि पम्
 घऽ रऽ ढूंऽ ढेऽ नंऽ दऽ जिऽ केऽ घऽ रऽ ढूंऽ ढेऽ
 पसा ऽन् पम् गम् पप निप सांनि रेसा निप म्प सांनि सा
 नंऽ ऽऽ दऽ जिऽ केऽ ऽऽ घऽ रऽ ढूंऽ ऽऽ ढेऽ ऽऽ
 गम् पनी सांग म्ग म्ग सांनि पम् गसा गंग सांनि पम् गसा
 रेरे सांनि पम् गसा सांनि पम् गसा निन् पम् गम् पनी सांग

राग-तिलंग

ताल-त्रिताल (मध्यलय)

कैसे कटेगी सजनी बरन रतिया मोहे उन बिन घडि पल छिन व्याकुल
भई तुमबिन मोरी आली ॥ धृ० ॥ सनद पिया मोरि मानत नाही बारवार मुसे
किनी चतुराई मोरि ॥ १ ॥

अस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
कै ऽ से क	टें गी सऽ ज	नी ऽ ब रऽ	नऽ र ति या
ग ऽ सा म्	ग म् प नि प	ग म् प नी सा	निप ग म् ग
मो ऽ हे ऽ	उन बिन घडि पल	छिन व्या कुल भई	तुम बिन मोरि आली
नी ऽ सा ऽ	सोरे सा नि प नि पम्	गम् सा गम् पनी	सोरे सा नि प नि पम्
कै ऽ से क	टे गी सऽ ज	नी ऽ ब रऽ	नऽ र ति या
ग ऽ सा म्	ग म् प नि प	ग म् प नी सा	निप ग म् ग

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
स न द पि	या ऽ मो रि	मा ऽ न त	नाऽ ऽऽ हीं ऽ
ग म् प नी	सा ऽ सा सा	प नी सा रे	सोरे सा सा नि प
बा ऽ र बा	ऽ र मु से	की नीऽ चऽ तु	रा ईऽ मोऽ रि
ग ऽ सा ग	ऽ म् प नि	प नी सा रे सा नि	प गम् पम् ग
बा ऽ र बा	ऽ र मु से	की नी च तु	राऽ ई मो री
सा ग रे म्	ग रे सा सा	प नी सा रे	सा नि प ग म्

सं. क. नि. मास्टर कृष्णरावजीकी प्रकाशित नोटेशनकी किताबें

राग संग्रह भाग १ ला	किं. २॥ रु.
राग संग्रह भाग २ रा	किं. ३ रु.
राग संग्रह भाग ३ रा	किं. ५ रु.

खानदानी हिंदी चीजोंके नोटेशन आलाप तानोंके सहित

संगीत रुक्मिणी स्वयंवर नोटेशन किं. १० आना

संगीत कान्होपात्रा नोटेशन किं. ८ आना

भक्तीचा मळ (मराठी) और माली (हिंदी) किं. १० आना

अमर संगीत—अभंग, भजन और गौलनके नोटेशन किं. १ रु.

राष्ट्र-संगीत-समूह गानके लिये तथा वृंद वादनके लिये किं. १ रु.

शालेय-शिशु-संगीत भाग १, २, ३ प्रत्येकी किं. ८ आना

प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओंके अध्ययनके लिये, बम्बई
सरकारद्वारा मान्य टेक्स बुक

प्रकाशित होनेवाली किताबें—

खानदानी चीजोंका राग-संग्रह भाग ४, ५, ६, ७

(आलाप और तानोंके सहित).

किताबें मिलनेकी ठिकानें—

१ पुणे भारत गायन समाज, बाजीराव पथ, पूना २

२ मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर, टिळकवाडी, २५३-१० पूना २

३ एच्. व्ही. मेहेंदळे अँड सन्स, २४ बुधवार, आप्पाबळवंत
चौक, पूना २

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग-संग्रह



भाग १ ला



लेखक

संगीत कलानिधि

मास्टर कृष्णराव

स्व. गायनाचार्य गुरुवर्य प. भास्करबुवा बखले से

स. १९११ में संस्थापित संगीत-शिक्षा-संस्था

पुणे भारत गायन समाज

यह संस्था सरकार-मान्य है। जिसमें गायन तथा वादन की शास्त्रशुद्ध शिक्षा मिलती है।

उसी तरह किसी भी संगीत-विद्यालयके विद्यार्थी तथा संगीत-प्रेमी सज्जन हमारे विद्यालयकी परीक्षा दे सकते हैं; जिस सुविधाका अवश्य उपयोग किया जाय।

विशेष जानकारी नीचे दिये हुये पतेसे प्राप्त होगी।

पता—पुणे भारत गायन समाज,

शनिचेपाराजवळ, पूना २

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग - संग्रह



हिंदी चिजोंका स्वरबद्ध, तालबद्ध, विलंपद और तानोंकेसाहित

स्वर लेखन

भाग १ ल

लेखक

संगीत कलानिधी

मास्टर कृष्णराव

इस पुस्तकके सब हक ग्रंथकारने अपने स्वाधीन रखे है ।

किंमत २॥ रुपिया

Available at—
RAMCHANDRA SANGHETALAYA
Music Book Sellers & Publishers
GWALIOR-474-001-(INDIA)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग		पृष्ठ
१	मांड		१
२	यमन		६
३	भूप		१४
४	काफी		२२
५	बागेश्री		२६
६	खमाज		३४
७	पद्माडी		४२
८	भीमपलास		४७
९	धानी	...	५६
१०	भैरव	...	६१
११	जोगिया	...	६७
१२	जीवनपुरी	...	७२
१३	भैरवी	...	७९

दे. भ. बाबु पुरुषोत्तमदास टंडनजीका अभिप्राय

श्री. कृष्णाराव फुलंब्रीकर संनीत के अच्छे आचार्य हैं, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर पुनेमें आपसे भेट हुई और आपकी कलाका कुछ परिचय मिला। आपने मराठी भाषेमें संगीत सिखाने के लिये स्वर-लेखन की पुस्तकें बनायी हैं। अब आपने हिन्दी गान द्वारा संगीत सिखाने के लिये स्वर-लेखन की पुस्तकें लिखी हैं, मैं इस प्रयत्न का हृदय से स्वागत करता हूं। श्री. कृष्णारावजी में संगीत-विज्ञता के साथ सांस्कृतिक कल्पनाका सुन्दर मिश्रण है और वे दिन्ही भाषा के प्रेमी हैं। उन्हें अपने कार्य में सफलता मिले यह मेरी कामना है।

पुरुषोत्तमदास टंडन

२७-१२-४०

प्रस्तावना

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

स्वनामघन्य गायनाचार्य तथा मेरे परमपूज्य गुरुदेव कै. पं. भास्करबुआ बखलेजीके अनुग्रहहीका फल है कि आज रागसंग्रह नामक पुस्तकका प्रथम भाग पहेलेसे बढ़ा कर (पुराने चीजोंका समावेश करके) जनता जनार्दन की सेवामें उपस्थित करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हो रहा है। मैंने संगीत स्वयंवर, कान्होपात्रा, सावित्री, अमृतसिद्धि आदिनाटकके गीतोंपर नोटेशनकी मराठी पुस्तकें प्रकाशित की हैं, साथ साथ स्वतंत्र मोहन-ताल मराठी पुस्तक प्रकाशित किया है। रसिकवृंदने उन्हें प्रेमसे अपनाया।

जिसकी कृपासे हिंदुस्थानी गानकी सेवा मैं किया करताथा और अबही करता हूं उन गुरुदेवके कृपासे अब स्वतंत्र रूपमें सुरावट-लक्षणगीत, ख्याल, त्रिताल, तराने आदि प्रकारकी और रचना करके उन सबका संग्रह 'रागसंग्रह' के रूपमें रसिकोंके सन्मुख रख रहा हूं। प्रस्तुत पुस्तकमें निजी गुरुघरानेके गानपद्धतीके संबंधमें जानने योग्य तथा अपनाने योग्य सभी बातोंका समावेश करनेका मैंने यत्न किया है। हिंदुस्थानी गानपद्धतीपर प्रो. भातखंडेजीनेभी

अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं जो शास्त्रीय विवेचनसे परिपूर्ण हैं। मेरी इच्छा निजी घरानेके गानपद्धतीको स्थायीरूप प्राप्त होना यही होनेसे उसी पद्धतीके अनुसार स्वतंत्र रचना करके प्रस्तुत पुस्तकमें स्थान देना क्रम प्राप्त हुआ। जनतामें इस पद्धतीसे गानेका रिवाज पडनेपरही इसका मर्म ध्यानमें आवेगा और इस घरानेकी शास्त्रीय और ढंगदार गायकी सीखनेकी आवश्यकता प्रतीत होगी। और मुझेभी सिखलानेमें कठिनायी या निष्फल यत्न नहीं मालूम होगा। इस हेतुके पूर्तिके लिये मैंने दुसरा और तीसरा भाग इसी ढंगसे खानदानी चीजोंको बढाकर प्रकाशित किया हैं। आशा है, संगीतप्रेमी इस राग-संग्रह द्वितीय कौर तृतीय भागका पूर्ण स्वागत करेंगे।

इसमें संदेह नहीं कि संगीतका सच्चा ज्ञान गुरुबिना नहीं हो सकता ग्रंथतो आधारभूत हैं। भूली हुई बात याद दिलानेका या सत्यभागकी और अंगुली निर्देश करनेका काम ग्रंथ करेंगे किन्तु हाथ पकडकर इष्टस्थलपर पहुंचानेका उपकार गुरुबिना अन्य कोयी भी नहीं कर सकता।

ख्याल मध्य लयमें और दुसरी चीजभी मध्य लयमें लिखी हुई है तो भी ख्यालके लयसे दुसरे चीजकी लय अंशतः बढी हुई रखनेकी आवश्यकता है। विलंपद तथा तान पुस्तकमें मतलाया गया है उसी प्रकारसे लेनेसे इस पद्धतिकी महत्ता अनायासही ध्यानमें आवेगी। रचना सीधीसाधी और शब्द बोलचालके होनेसे सर्वसाधारणको अर्थ समझनेमें या गानेमें कठिनायी नहीं मालूम होगी।

अनेक चिन्होंके प्रयोगसे पाठकोंको संभ्रम होनेकी आशंका होनेसे परिमित और नोटेशनके पुस्तकोंके साथ साथ उपयुक्त हुये चिन्होंका प्रयोग प्रस्तुत पुस्तकमेंभी किया है। मराठी पुस्तकोंके प्रसारके लिये महाराष्ट्र जैसा परिमित क्षेत्र था. इस पुस्तकका भारत वर्षके हिन्दी भाषा भाषी सभी प्रान्तोंमें प्रसार होगा ऐसी आशा है।

वेदविद्या मुद्रणालयके स्वामी श्री. स. रा. सरदेसाजीजीने अन्य कामोंकी भीड होते हुअे भी, यह पुस्तक बनबा दी है। मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

गान सेवक
मास्टर कृष्णराव

स्व. गुरुवर्य गायनाचार्य
पं. भास्करबुवा बखले



अर्पण—पत्रिका

जिन की शिक्षा के कारण तथा आशीर्वाद के बलसे
संगीत विद्याकी सेवा लगभग ४८ वर्षोंतक
कर पाया उन गुरुदेव गायनाचार्य
स्व. पं. भास्करबुवा वखले
के चरणों में मेरी यह कृति
अर्पित करता हूँ

संगीत कलाके विषयमें कुछ विचार और उसके नियम

(१) इस नानाविध कलाओंसे परिपूर्ण जगतमें संगीत कलाको अग्रस्थान दिया जाता है. संगीतहीमें गायन वादन तथा नृत्यका समावेश होता है. किन्तु गायनका दर्जा उच्च है. इसका कारन गायनमें उच्चार अर्थात् शब्दबोधकी विशेषता है. ' उत्तम गाना, मध्यम बजाना, कनिष्ठ नाचनां, और बिकट बतांना ' या ' गला तो बादशहा है ' आदि पुरानी लोकोक्तियां गायन के श्रेष्ठताकाही समर्थन करती है ।

(२) गायनमें निष्णात होनेकी अभिलाषा रखनेवाले सज्जनोंको चाहिये कि वे योगियोंकी भाँती कड़े नियमोंका पालन करें. जिसका निभाना कठिन नहीं ऐसे नियमोंपर चलकर अक्षय कीर्तीको प्राप्त करनेवाले अनेक महानुभाव इस भारतवर्षमें हो चुके हैं. जिनके गायन चातुरीकी प्रशंसा भारतमे होगयी ऐसे महान् गायक स्व. खॉ. फैजमहंमद खॉ. (बडोदे दरबार गवई), स्व. खॉ. नथ्यन खॉ (म्हासूर दरबार गवई), स्व. खॉ. अल्लादिया खॉ. (कोल्हापूर दरबार गवई) इन महान् गुरुके पट्टाशिष्य माननीय गुरुवर्य गायनाचार्य स्व. पं. भास्करबुवा बखले यह हमारी गायन परंपरा है.

(३) गायकोंके पालने योग्य कुछ नियम—

दुर्व्यसनों से दूर रहना गायकके लिये अवश्यक है. व्यसन नाना प्रकारके होते हैं, जिसके सेवनसे स्वास्थ्य नष्ट हो जानेकी आशंका है ऐसे मादक पदार्थोंका सेवन करना कदापि उचित नहीं. धूम्रपान हानीकर है. हां तांबूल या पानका परिमित सेवन करनेसे हानी नहीं होती; पानी पीनेसे जिस प्रकार गला साफ और ताजा हो जाया करता है उसी प्रकार पानसेभी होता है. पानके द्रव्योंका प्रभाव कंठ पर अच्छा पड़ता है. ब्रह्मचर्यका महत्त्व गायक के लिये विशेष है. गृहस्थाश्रमी गायक व्यवस्थित रहें तो ब्रह्मचारी जैसा तो नहीं, पर सुदृढ़ रह सकता है इसमें संदेह नहीं गाना समाप्त होतेही जलपान करना बहुत बुरा है.

(७)
 गानेके स्थान पर दूध पीना चाहिये क्योंकि गानेके बाद दुग्धपान करना लाभदायक है।

(४) गाने और जागनेका संबंध अटूट है। रातका दिन बनाना गाने या बजाने वालोंके बाँये हाथका खेल है। प्रातःकालमें या दोपहरमेंही कभी कभी गानेका योग आता है। किन्तु रात्रीके शान्त निरामय समयमें गानेका आनंद आता है। अच्छे गायक और रसिक श्रोता की एकतानता होती है गानेकी शान्ति रहती है। सचमूच रातकाही समय गायनके लिये अनुकूल होता है गानेके परिश्रमों के साथ साथ जागरण का भी सामना करना पडने के कारन निजी स्वास्थ्य के ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता श्रोतासे बढ़कर गायक को होती है किन्तु दुर्भाग्यवश अनेक गायक निजी स्वास्थ्य की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते। चाय जैसे हानीकर पेय को जागरणमें सहायक समझकर बड़ेही चावसे लेते है और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खो बैठते हैं। मैं स्वानुभवसे कह सकता हूं कि जब कभीमैंने चाय पीली कुछ ही देर तक उत्तेजना रही। किन्तु गायनका कार्यक्रम समाप्त होने पर चाय की करतूतों के कारन पश्चाताप करनेकी ही नौबत आयी, अग्निमांद्य, निद्रानाश पित्तप्रकोप आदि दुष्परिणाम चायही के कारण भोगने पडे और मैंने चाय कॉफी, कोको तक पीना छोड दिया। इस बातको तीस वर्ष हो चुके मेरा अनुभव बतलाता है कि थकावट दूर करनेके लिये चाय के स्थानपर दूध लेना उत्तम है। आज मैं जितने समय तक गा सकता हूं उसके आधे समय तकभी गानेकी ताकद मुझमें न रहती।

(५) गायक के लिये अवश्यक व्यायाम—

गायनमें प्राणायाम अनयासही होता है। गानेसे फेपडे मजबूत होते हैं, इसमें संदेह नहीं किन्तु शरीर के दूसरे स्नायूओको व्यायाम नहीं मिल सकता क्योंकि बैठक के गानोंमें बैठके ही गाना पडता है। अर्थांत शरीर निकोप रखनेके उद्देशसे प्रत्येक गायकने तीरना, पैदल चलना, दौड लगाना नमस्कार आदि

कसरत के साधनों में से जो उचित माझन हो उस पद्धती से व्यायाम लेना चाहिये.

(६) गाते समय पचासन तथा वीरासन योग्य है. महफिल छोटी बड़ी जैसी हो उसी के अनुसार गायककोभी अपना आसन जनाना ठीक होगा. इस लिये साधारण तथा सबको ठीक दिखायी दे सके और विसंगत न हो ऐसे स्थानपर गायकको अपना आसन जमाना चाहिये.

(७) गायनको तंबूरेकी ही संगत होना चाहिये. आज कल सुधारकी हवा चल रही है उसीके परिणाम स्वरूप तंबूरेके स्थानपर हार्मोनियम, ऑर्गन, दिखरवा, फिडल आदिके संगतकी भरमार हो रही है किन्तु सबही संगतके लिये उपयुक्त सिद्ध नहीं होते. ऑर्गनके स्वर मृदु होते हैं और उसमें मंद्रादि स्वरभी रहनेसे ऑर्गनकी संगत हार्मोनियमसे अच्छी होती है. तंतुवाद्योंमें सारंगीको अप्रस्थान दिया जाता है संगतके लिये सारंगीकी बराबरी दिखरवा, फिडल नहीं कर सकते. आरंभमें हार्मोनियमके संगतमें अभ्यास करना बच्चोंके लिये ठीक रहता है. तंबूरेके संगतसे अभ्यास कियो जानेपर हार्मोनियम ऑर्गन या अन्य किसीभी वाद्यकी संगत होनेपर गायक उसीके अनुसार बे खटके गा सकता है इस लिये तंबूरेके संगत पर ही अभ्यास करना उचित है:

(८) गाना शुरू करनेसे पहले जिनके पास अध्ययन किया हो उन गुरुजीका या जिन्हें दिलसे माना हो उनका स्मरण अंतःकरणपूर्वक करना चाहिये.

(९) गाते समय मुद्रा प्रसन्न रखनी चाहिये. शब्दोच्चार सुस्पष्ट और परिणामकारक होने चाहिये. जिस रागमें गीत गाया जा रहा हो उस रागका शुद्ध स्वरूप कायम रखना अवश्यक है. गायनमें स्वरका प्राधान्य उसी प्रकार है जिस प्रकार शरीरमें आत्माका अर्थात् गानेमें स्वरका महत्त्व बहुत है.

गीत भिन्न भिन्न प्रकारोंसे गाये जाते हैं उनके नाम निम्न लिखित हैं.

(१०) आलाप—(बिलंपद) स्वरोंके क्रमके अनुसार धीरेसे गाते हुये उनका विस्तार करना.

(११) मींड—एक स्वरोसे दूसरे स्वर की “आस” टूटने न देते हुये संजी बनाता। रबड तानने पर पतला होता हुआ लंबा हो जाता है पर दोनों सिरों का संबंध अटूट ही रहता है वही बात मींड में हुआ करती है।

(१२) मुरकी—यह तानका ही एक प्रकार है। इसमें दो से लेकर ३।४।५ स्वरोंको समाविष्ट करके उन्हें जल्द मरोड लेना। गाते समय मुरकी के लेनेसे गायन का सौंदर्य बढ़ जाता है।

(१३) खटका—गायन में मुरकीकी जितनी आवश्यकता है उतनी ही खटकेकी भी है। एकसे बढ़कर और चार से कम स्वर पर आवृत्त पहुँचाते हुये उसमें चमक पैदा करनेका नाम खटका है।

(१४) तान—सुरावट अर्थात् स्वरविस्तार दुगुन या चौगुनी में (जल्दी) करना और गिनी आवाजके ढंगसे पहिले सप्तकसे लेकर तीसरे सप्तक तक अन्य अक्षरोंका उच्चार किये बिनाही आकार एकार या इकारको प्रयोगमें लाना, इसीका नाम तान है।

(१५) बोलतान—यह तान का दूसरा प्रकार है। अकारके साथ अक्षरो-च्चार भी करना पडता है आकार तथा अक्षर दोनोंके गुंथनेको बोलतान कहते हैं।

गायनमें उपयुक्तताके कारण जिन अंगोंका समावेश हुआ है उनका वर्णन करनेका मैंने यह प्रयत्न किया है इसके सिवा अन्यभी अंग हैं किन्तु ऊपर बतलाये हुये प्रकार समझमें आकर उनका अभ्यास होनेपर रहे हुये अंगो से परिचय हो जाना कठिन नहीं।

स्वरोँके सांकेतिक चिन्ह

- १ मंद्र सप्तककी यह निशानी-(-) जैसे नी ध प
- २ मध्य सप्तककी निशानी नहीं जैसे-ग, म, प
- ३ तार सप्तककी निशानी-(') जैसे सा रे, ग
- ४ कोमल स्वरकी निशानी-(~) जैसे रे, ग, म्
- ५ तीव्र स्वरकी निशानी नहीं जैसे-रे, ग, म

तालकी चिन्ह

६ सम पैहिचाननेकी निशानी-(+)

७ काल पैहिचाननेकी निशानी-(०)

८ मात्राँके अंक जैसे-१, २, ३, ४

९ एकसे अधिक मात्रा स्वर लम्बाना हो तो उसकी निशानी (S) जैसे

गS मSS पSSS

१० एक मात्रामें दो अथवा अधिक स्वर आजाय तो उसकी निशानी (~)

जैसे-गम गमप गमपध

सूचना--जहाँ विलंपद तथा तान के उठाव प्रारंभसे हों वहाँ उसके पहले चीज की पांक्ति लिखी है. और जहाँ वह नहीं लिखी वहाँ वह पंक्ति गायी जाय.

कोमल स्वरोंके अक्षरोंके नीचे जहाँ (.) दीख पड़े वहाँ उसे हलन्त (~) जानना चाहिये । जैसे-ग के स्थानपर ग् पढ़ना चाहिये ।

तबलेके ठेके और उसके चिन्ह

ताल-त्रिताल, मात्रा १६

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना
+ ३ ० १

इस ठेकेकेँ दुसरे प्रकारके बोल

ना धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ना धा धीं धीं धा
+ ३ ० १

ताल-एकताल, मात्रा १२

धीं धीं धागे तू ना क ता धागे धीं ना
+ ० ४ ० १ २

ताल-क्षपताल, मात्रा १०

धीं ना धीं धीं ना तीं ना धीं धीं ना
+ ३ ० १

ताल-दादरा, मात्रा ६

धा गे ना धा ती ना
+ ३ ०

ताल-कैरवा, मात्रा ४

धागे नति नक धीऽ
+ ०

संगीत में तालकी आवश्यकता

इसमें संदेह नहीं कि संगीतमें स्वरको प्राधान्य है। साथही साथ तालका अधिकार भी कम नहीं, यह बात होनहार गायकने ध्यानमें रखना आवश्यक है। बहुतसे लोक तो गाना सुनसुनकर गव्ये बन बैठते हैं; और कुछ तो किसीके गानेका ढंग अपनानेमें या उसकी नकल हूबहू करनेमें सिद्धहस्त होते हैं, यह स्वाभाविक गुण ईश्वरी देन है। किन्तु ऐसे गायकोंमें तालके स्थानपर स्वरहीमें गानेवालोंकी संख्या बड़ी हुई होती है। ऐसे गायक असली गव्ये नहीं कहला सकते। उन्हें असली गायक कहलाना हो तो तालका अभ्यास परिश्रमपूर्वक करके ताल तथा सुरकी सजावट सप्रमाण बांधनेका ज्ञान संपादन करना चाहिये स्वर-समूह स्वाभाविक है; उसी प्रकार ताल भी स्वाभाविक है किन्तु उसके पहचानेका अभ्यास होना चाहिये; उपेक्षा करनेसे काम नहीं चल सकता।

(१) ताल—हिसाबसे गानेकी गिनती करना इसीका नाम ताल है।

(२) मात्रा—ठेकेके हिस्सेको सप्रमाण विभक्त करनेको मात्रा कहते हैं।

(३) किसीभी प्रकारका ठेका लगानेपर उसके बोल ज्ञान रहना आवश्यक है। स्वयं लगाया हुआ ठेका बजा सकते हों तो अत्युत्तम। मुखसे बोल, हाथसे ठेका अर्थात् ताली और उंगलीसे मात्रा ऐसा उपयोग करनेकी प्रथा है।

मेरे गुरुदेव श्री. भास्करबुवा बखले मुझे कड़ा करते थे कि स्वर तथा ताल रगरगमें समा जाना चाहिये। इसका आशय अभ्यास बढ़ाकर स्वर तथा तालका परिचय दृढ़ कर लेना चाहिये यही था, और इस हेतू, कीं पूर्तीकी इच्छासे उपरोक्त पद्धतिसे मुझे स्वयं अभ्यास करना पडा है, इससे मुझे जो लाभ या जिस आनंदकी प्राप्ति हुई वह लिख नहीं सकता। संगीतमें एकतानता होनेका एक मात्र साधन स्वर तथा तालका समन्वय है, इतना बतलाना पर्याप्त होगा। माता तथा पिता हमारे जनक हैं उसी प्रकार संगीतके जनक स्वर तथा ताल हैं। अर्थात्

स्वर तथा तालका संगीतसे समवाय संबंध है। इसके सिवा तालसे गानेमें एक प्रकारका वजन आनेसे संतुलन कायम रहता है यह तालकी विशेषता है।

आजकल ध्रुवपदी गानेके साथसाथ उसके जोड़के मृदंगी बाजके बोलभी छुप्तप्राय हो जा रहे हैं यह बड़ेही दुःखकी बात है। इस पद्धतिके गायकोंकी संख्या अंगुलियों पर गिनने योग्य थोड़ी रह गयी है। ऐसे गायकोंसे निजी शिष्यशाखा बढ़ाकर ध्रुवपदी गान तथा मृदंगी बाज कायम रखनेका यत्न करना यही सविनय निवेदन है। साथ ही साथ ख्यालके गानेवाले बढ़ रहे हैं इस पद्धतिके गवयोंकाभी कर्तव्य है कि वे निजी शिष्य संप्रदाय बढ़ानेकी चेष्टा करें। प्राचीन और शुद्ध संगीत पद्धतिकी शिक्षाका प्रबंध करना आचार्यका प्रधान कर्तव्य है। उसी प्रकार सुगम और हितकर गानप्रणालीका अनुसंधान करना और उससे लाभ उठाना होनहार गायकोंका प्रधान कर्तव्य है।

आजकल गायन का शौक भारतीय नवयुवकोंमें खूब बढ़ा हुआ दिखायी दे रहा है यह बड़ेही हर्ष की बात है। किन्तु खेद इस बातका है कि परिश्रमसे मुंह मोड़े हुये होनेके कारण अच्छे गायकोंका गाना सुन सुन कर स्वयं गुनगुनाते हुये जो आ गया उसी पर समाधान माननेवालों का बाहुल्य है। सुरेली आवाजमें रसीले, रंगीले गीत गानेपर उन्हें चाहनेवाले पैदा होयी जाते हैं। उनके प्रबंधसे चार दो गानेके कार्यक्रम हुये, जत्सोंमें वाहवाका नारा बुलंद हुआ, थिएटर घोर करतल ध्वनीसे निनादित हुआ और आप प्रसिद्धी के पीछे सोटा दुपट्टा लेकर पड गये, झट रेडिओ, ग्रामोफोन, सिनेमा आदि यांत्रिक चुंबकोंमें अपना मन आकर्षित हुआ और थोड़ेही दिनोंमें नाम विख्यात हो गया।

ऐसी वायुकी अनुकूलता पर निर्भर होनेवाली प्रसिद्धि हवाके बगोलेकी भाँति आकाशमंडलमें मंडराती हुयी दिखाई देते देर नहीं लगती। और प्रतिकूल झंझाके एकही थपेड़में नामशेष होनेमा देर नहीं लगती। होनहार गायक अपना नाम सुवर्णाक्षरोसे कीर्ति-मंदिरमें लिखवानेकी महत्वाकांक्षा अवश्य रखे किन्तु स्वसंपादित लक्ष्यार्जित सत्यार्थके बल पर; दूसरोंकी कृपाके सहारे नहीं।

(१४)

जनतामें गायन तथा वादनकी अभिरुची बढी हुयी दिखायी पडतेही अनेक गायनशालाओं तथा संगीत विद्यालय खुल गये हैं. अभ्यासक्रम पूरा होने पर संगीत महाविद्यालये निकला हुआ छात्र प्रोफेसर कहलाता है फिर भी किसी गुरुके पास रहकर गान विद्यामें प्राविण्य संपादन करनेकी आवश्यकता है. गुरुदेवका पूर्ण-प्रशिक्षार्द मिलानेपर इस विद्याका प्रभाव दिखायी देगा.

शुद्धि-पत्रक

पान	ओळ	अक्षर	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	२१	कें	में
७	३	९	नी	नी
१०	६	१०	म	प
१०	१८	१२	सा	सा
११	१५	३	सा	सा
१३	२	११	सा	सा
२८	३	४	दै	है
२८	४	५	षा	ओ
२८	४	२३	ह	ष
२९	१६	८	ही	ऽ
३३	४	२४	निर्सा	निर्सा
३४	मुख्य अंग	१०	नि	नि
३७	मुख्य अंग	१८	ग	ग
३७	१५	५	म	म

(१५)

५१	२	४	नि	नि
५९	१६	१३	रे	रे
७०	७	४	रे	रे
७५	१०	१२	नि	नि
७५	१३	६	नि	नि
७८	११	११	सा	सा
८६	२०	७	सा	सा

मिजोटी रागके बंदेमातरम् गीत की स्वरयोजना ताल-त्रिताल
कहिं स्वरोमेसे

बंदे मातरम् । सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलां ॥ सस्यशामलां मातरम् ॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम् । फुलकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् । सुहासिनीम्,
सुमधुर भाषिणीम् । सुखदाम्, वरदाम्, मातरम् ॥ बंदे मातरम् ॥

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१			+				३				
०	५	दे	५	५	मा	५	त	र	५	५	म्	सु	ज	ला	म्
०	५	सा	५	५	रे	५	सा	रे	५	५	रे	रे	सा	रे	रे
०	५	फ	ला	म्	म	ल	य	ज	शी	५	५	त	ला	५	५
०	५	रे	ग	ग	ग	म्	प	म्	ग	रे	ग	म्	ग	५	५
०	५	स्य	शा	५	म	ला	५	म्	मा	५	त	र	५	५	म्
०	५	ध	प	५	ध	प	५	प	म्	ग	रे	सा	५	५	सा
०	५	दे	५	५	मा	५	त	र	५	५	म्	५	५	५	५
०	५	सा	५	५	रे	५	सा	रे	५	५	रे	५	५	५	५

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ऽ शु ऽ भ्र	ज्यो ऽ त्ना ऽ	पु ल कि त	याऽ ऽ मि नी
ऽ म् ऽ म्	म् ऽ म् ऽ	ग म् ग रे	साऽ ग रे ग
म् फु ऽ छ	कु सु मि त	हु म द ल	शो ऽ मि नीम्
ग प ऽ प	प प प प	प ध प प	ग सा ग प्पा
सु हा ऽ सि	नी ऽ म् सु	म धु र भाऽ	ऽ वि णी म्
म् म् ऽ म्	म् ऽ म् म्	ग म् ग गरे	सा रे ग ग
सु ख दा ऽ	ऽ म् व र	दा ऽ म् मा	ऽ त र म्
प म् प ऽ	ऽ प म् ग	म् ऽ म् म्	ग रे सा स
वं ऽ दे ऽ	ऽ मा ऽ त	र ऽ ऽ म्	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे ऽ सा ऽ	ऽ रे ऽ सा	रे ऽ ऽ रे	ऽ ऽ ऽ ऽ
वं ऽ दे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		

॥ श्रीगुरुदेव प्रसन्न ॥

राग-संग्रह

भाग १ ला

राग-माढ

इस रागमें रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र और प्रथम कोमल हैं. निषाद स्वर क्वचित कोमल लेनेली प्रथा है. यह राग किसीभी समय गाया जाता है. किन्तु रात्री के प्रथम प्रहरके बाद विशेषतः गाया जाता है. भक्तिरस प्रधान यह राग है.

आरोह-सा ऽ ग म् प ध नी सा
 अवरोह-सा नी ध प म् ग रे सा रे ग सा
 मुख्य अंग-ग म् प ध नी ऽ प ध सा ऽ

जाती-षाढव संपूर्ण
 वादी-षड्ज
 संवादी-मध्यम

सुराबट, ताल-त्रिताल, मात्रा १६

तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
	१	+	३
ऽ ग म्	प ध प ध	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
ऽ नी ध	प ध प म्	ग म् प ध	नी ऽ ऽ ऽ
ध प म्	ग रे सा ऽ	सा रे ग प म्	ग रे सा ऽ॥
म् ग म्	प ध प ध	नी ऽ प ध	सा ऽ ऽ ऽ
रे सा नी	ध प प ध	सा नी ध प	म् ग रे सा॥

राग-मांड

लक्षणगीत, ताल-त्रिताल, मात्रा १६ मध्यलय

मांड रागकी सुंदरता है । गायक गाती रात-दिननकें ॥ धृ० ॥ वादी
षड्ज, संकादी मध्यम । षाडव संपूर्ण जाती । भक्तिरससें खुलता है ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ०	ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३
मां ऽ ड रा	ऽ ग की ऽ	सुं ऽ ऽ द र	ता ऽ है ऽ
सां ऽ नी ध	प ध म् ऽ	गरे सा रे ग	रे ग सां ऽ
गा ऽ य क	गा ऽ ती ऽ	रा ऽ त दिऽ	न न मेऽ ऽ
ग म् ग म्	प ध नी ऽ	सां ऽ नी सां नी	ध ध धप म्

अंतरा

ना तीं तीं ना ०	ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३
वा ऽ दी ऽ	ष ऽ ऽ ड्ज	सं वा ऽ दी	म ऽ ध्य म
सां ऽ सां ऽ	सां ऽ ऽ सा	म् म् ऽ म्	म् ऽ म् म्
षां ऽ ड व	सं ऽ ऽ ऽ ऽ	पू ऽ ऽ ऽ ऽ	जां ऽ ती ऽ
ग म् ग म्	गम् पध नी ऽ	पध नी सां ऽ	सां ऽ सां ऽ
भ ऽ क्ति ऽ	र स से ऽ	खुं ल ता ऽ	है ऽ ऽ ऽ
सां नी ध ऽ	प ध म् ऽ	गरे सा रे ग	सां ऽ ऽ ऽ

(३)

राग-मांड

ताल--त्रिनाल, मात्रा १६, मध्यलय

करम दिया सबको तूं ने । उचानीचा तूं बनाया ॥ धृ० ॥ मेहेर
 तसें देख जनमभर । कृष्ण कहे कर पूरन-काज हमारा ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना
+	३	०	
र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	स व कोऽ ऽऽ	तूंऽ ऽ ने ऽ
म प सांनी	ध ऽ ऽ प	ग रे गम् पम्	गरे ऽ सा ऽ
ऽ चा ऽ	नी ऽ चा ऽ	तूं ऽ ऽ व	नाऽ ऽऽ याऽऽ
ऽ ग ऽ	म् ऽ प ऽ	ध ऽ ऽ प	धनीसांनी धप ध
र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ ऽ	
म प सांनी	ध ऽ ऽ प	ग सारे ऽ ऽ	

अंतरा

तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
१	+	३	
हे र न	ज रऽ से ऽ	दे ऽ ख ज	न म भऽ र
म प ध	सां नीध सां ऽ	सां ऽ सां सां	नी सां नीध ध
ऽ ण्ण क	हे ऽ क र	पूऽ ऽऽ रऽ न	का ऽ जऽ ह
ऽ नी ध	प ध म् म्	पध सां नीधप म्	ग ऽ पम् म्
ऽ रा ऽ	क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	स ब कोऽऽऽ
ऽ सा ऽ	ग म् प सांनी	ध ऽ ऽ प	ग रे गम् पम्

(४)

आस्ताईका बिलंपद

ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३	ना तीं तीं ना ०
१ क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	ग ऽ सा ऽ	गरे ग सा ऽ
२ क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	सा नीध प ध	ग म् गरे सा
३ क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	सा गम् पध नी	प ध पध सा
४ क र म दीऽ	या ऽ सा नीध	ध ऽ ग म्	रे ऽ सा ऽ

आस्ताईकी तानें

५ क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	गम् पध नीनी धप	मृग रेसा रे सा
६ क र म दीऽ	या ऽ ऽ ऽ	गम् पध नीनी पध	पध सा ऽ ऽ

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना ०	ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३
१ मे हे र न	ज रऽ से ऽ	ग म् प ध	सा ऽ ऽ ऽ
प ध प ध	रै ऽ सा ऽ	नी ध प ध	म् ऽ ऽ ऽ
२ मे हे र न	ज रऽ से ऽ	सा ऽ नी ध	प ध सा ऽ
प ध रै ऽ	सा ऽ प ध	सा रै ग ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
मे हे र न	ज रऽ से ऽ	दे ऽ ख ज	न म भऽ र
३ ध ऽ म् ऽ	सा नी ध ऽ	रै सा नीध सा	ग म् सा ऽ

अंतरेकी तानें

मे हे र न	ज रऽ से ऽ	दे ऽ ख ज	न म भऽ र
४ ग सा गम् पध	नीनी पध सा रै गरे	सानि धप धनी सानि धप धप	मृग रेसा

गम् पध सारि सानी धप सानी धप धनी धप म्ग रेसा गम् पध पध सानी सा
मे हे र न ज रऽ से ऽ सानी धप म्ग रेसा गम् पध सारि गसा

राग-मांड

ताल-दादरा, मात्रा ६, मध्यम

जसोदा नंद करके छंद । डार गयो मुपे रंग । कहां कहां घेरी गुंया ।
जीजगयी सगरो अंग ॥ धृ० ॥ अखमे मारे गुलाल । श्याम पियाने घेर लियो ।
खोल देत धुंगट मुख । निरखत सब अंग अंग ॥ १ ॥

आस्ताई

ग	ना	धा	तीं	ना	धा	गे	ना	धा	तीं	ना
३			०		+	३			०	
सो	दा	नं	ऽ	द	क	र	के	छ	ऽ	द
सा	सा	म्	ऽ	म्	प	ध	प	ध	सा	सा
ऽ	रऽ	ग	यो	ऽ	मु	ऽऽ	पे	रं	ऽ	ग
नी	धप	ध	म्	ऽ	ग	पम्	ग	सा	ऽ	सा
हां	ऽ	क	रूं	ऽ	ये	ऽऽ	रीऽ	गुं	या	ऽ
सा	ऽ	सा	सा	ऽ	नी	सानी	धप	ध	प	ऽ
ऽ	ज	ग	यो	ऽ	स	गऽ	रो	अं	ऽ	ग
ध	प	ध	म्	ऽ	ग	पम्	ग	सा	ऽ	सा

अंतरा

धा	गे	ना	घा	ती	ना
+	३		०		
अ	ख	मे	ऽ	मा	ऽ
ग	म्	ग	म्	प	ऽ
श्या	ऽ	म	पि	या	ने
सां	ऽ	सां	सां	सां	नां
खो	ऽ	ल	दे	ऽ	त
सां	ऽ	सां	सां	ऽ	नी
नि	र	ख	त	स	ब
प	ध	प	ध	म्	म्

धा	गे	ना	घा	ती	ना
+	३		०		
रेऽ	ऽ	गु	ला	ऽ	ल
पध	नी	ध	नी	प	प
घे	ऽ	र	लि	यो	ऽ
ध	ऽ	सां	सां	सां	ऽ
धुं	ग	ट	मुऽ	ख	ऽ
ध	सां	नी	नीध	प	ऽ
अं	ऽऽ	ग	अं	ऽ	ग
ग	पम्	ग	सा	ऽ	सा

राग-यमन

इस रागमें रिषभ, गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र हैं यह राग संपूर्ण है। रात्रीके प्रथम प्रहरमें यह राग गाया जाता हैं। शृंगार रस प्रधान यह राग है।

आरोह-सारे ग म प ध नी सां
अवरोह-सां नी ध प म ग रे सा

जाती-संपूर्ण
वादी-गंधार
संवादी-निषाद

मुख्य अंग-नी रे ग म ध नी म ध प म ग रे ग ऽ रे सा ऽ

(७)

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
नी ऽ ग रे	ग रे सा ऽ	नी ध नी ध	नी ध पु ऽ
पु ऽ ध ऽ	नी ऽ सा ऽ	नी ऽ ग रे	ग ऽ रे ऽ
प ऽ म ऽ	रे ऽ ग ऽ	प ऽ रे ऽ	ग रे सा ऽ॥
प ऽ म ग	ग म ध नी	म ध नी सा	सा ऽ ऽ ऽ
नी ऽ रे ऽ	ग रे सा ऽ	नी ध नी ध	प ऽ ऽ ऽ
म ऽ नी ध	प म ग रे	ग प रे ग	रे ऽ सा ऽ॥

राग—यमन

लक्षणगीत, ताल—एकताल, मात्रा १२, मध्यल्य

गावत गुनी राग यमन । ग, नी वादी संवादी । जाती है संपूरन

॥ धृ० ॥ प्रथम प्रहर निशिसगयीं । राग करत मन रंजन । शृंगार रसकी खान ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं धीं धागे त्रक	तू ना क ता	धागे त्रक धीं ना
+	४	१ २
०	०	
गा ऽ व त	गु नी रा ऽ	ग य म न
म ध नी ध	प म रे ग	रे सा सा सा
ग ऽ नी ऽ	वा ऽ दी सं	वा ऽ दी ऽ
ग ऽ नीं ऽ	म ध प म	ग रे ग ऽ
जा ऽ ती ऽ	है ऽ सं ऽ	पू ऽ र न
प ध प म	ग रे ग रे	सा ऽ सा सा

अंतरा

धीं धीं धागे (त्रक)

+	०
अ	थ
म	ध
रा	ऽ
नी	रे
शुं	ऽ
नी	सा

तू ना क ता

४	०
ह	र
नी	ध
र	त
सा	सा
र	र
प	म

धागे (त्रक) धीं ना

१	२
स	म
सा	सा
रं	ऽ
नी	ध
खा	ऽ
ग	ऽ

राग-यमन

ताल-झपताल, मात्रा १०, मध्यलय

दीयो दरस तुम । सेवा करत तेरि । दुनियामें कोई । तुमबीन नही
॥ धृ० ॥ तेरी चरनपे, ये सिर झुकत है । तूं ही दयावंत; गरिबनके वाली॥१॥

आस्ताई

धी ना

+	
दी	ऽ
ग	ऽ
से	ऽ
ग	ऽ
हु	नि
प	प

धी धी ना

३	
यो	ऽ
ग	ऽ
वा	ऽ
ग	रे
या	ऽ
धनी	ध

ती ना

०	
र	स
ग	रे
र	त
ग	रे
को	ऽ
पध	मप

धी धी ना

१	
तु	ऽ
सा	ऽ
ते	ऽ
गम	प
ई	ऽ
म	ग

(९)

तु	म	बी	ऽ	न	न	ऽ	ही	ऽ	ऽ
ग	रे	म	ग	प	ग	रे	सा	ऽ	ऽ
दी	ऽ	यो	ऽ	दऽ	र	स	तु	ऽ	म
ग	ऽ	ग	ऽ	पम	ग	रे	सा	ऽ	सा

अंतरा

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
ते ऽ	रीऽ ऽ च	र न	पेऽ ऽऽ ऽ
प ऽ	धनी ध नी	सा सा	सा रे नी सा ऽ
ये ऽ	सि र झु	क त	हैऽ ऽऽ ऽ
नी ध	नी सा सा	नी ध	पध मप ऽ
तुंऽ ऽऽ	ही ऽ द	या ऽ	बं ऽ त
पध पम	ग रे रे	ग म	ध नी ध
गऽ रिऽ	ब न के	वाऽ ऽ	ली ऽ ऽ
पम गरे	ग रे प	रेग रे	सा ऽ रे

आस्ताईका बिलंपद

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
दी ऽ	यो ऽ दऽ	र स	तु ऽ म
१ म ऽ	नी ऽ ध	नी रे	सा ऽ ऽ
२ म ऽ	नी ध रे	नी ग	रे ग ऽ

३ <u>दी</u> S	यो S द	र स	<u>तू</u> S म
<u>गरे</u> सा	<u>नी</u> रे ग	<u>नी</u> रे	<u>नीध</u> सा सा
४ <u>म</u> <u>नीध</u>	<u>नी</u> रे ग	रे म	म म रे
ग रे	<u>नी</u> रे ध	<u>नी</u> रे	<u>नीध</u> सा S
५ दी S	यो S द	र स	तु S म
ग रे	म ग म	ध नी	म ध म
<u>से</u> S S	वा S क	<u>र</u> S त	<u>ते</u> S रि
<u>मप</u> <u>धप</u>	म ग रे	<u>मग</u> प	<u>रेग</u> रे सा

अंतरेका विलंपद

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
ते S	<u>रि</u> S च	र न	<u>पे</u> S S S
६ म <u>नीध</u>	नी S ध	म <u>नीध</u>	सा S सा
७ म <u>नीध</u>	नी रे ग	नी रे	ध नी म
ध ग	म रे मंग	<u>धम</u> <u>नीध</u>	सा S सा
८ ते S	<u>री</u> S च	<u>र</u> S S S न	<u>पे</u> S S S S
प S	धनी ध सा	<u>सारंगे</u> रे सा	<u>नीध</u> <u>मप</u> <u>गप</u>
९ ते S	<u>री</u> S च S S S	<u>र</u> S S	<u>न</u> S S S पे S S
प S	<u>धनी</u> <u>सा</u> <u>नीधपप</u>	<u>धनी</u> सा	<u>नीधपप</u> ग रे सा

राग-यमन

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

जोगी जोगेलिया समझके । घरमें निकले बनमें बैठे । रामनाम जप-
 लिया ॥ धृ० ॥ धनदौलत कछु साथ न, आवे । भाईबंद और स्त्री धन इन-
 सबको छोड़ दिया ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + ३
 जोऽऽ गी ऽ जोऽऽ ग लि याऽऽ ऽ स म झ केऽऽ
 धनी सानी ध ऽ मध मप म ग मध पम ग रे ग रे सारे नीसा
 ष र से ऽ नि क ले ऽ व न मेऽऽ वै ऽ ठेऽऽ
 सा सा ग रे म ग प ऽ म ध मध नीसा नी ध मध मप
 राऽऽ म नाऽऽ म ज प लिऽऽ या ऽ ऽ ऽऽ ऽ
 धनी सानी ध मध मप प ष प मप धप म ग म ध मध नी
 जोऽऽ गी ऽ जोऽऽ ग लि याऽऽ ऽ स म झ केऽऽ
 धनी सानी ध ऽ मध मप म ग मध पम ग रे ग रे सारे नीसा

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना

० १ + १
 ष न दौऽऽ ल त क छु सा ऽ थ न आऽऽ वेऽऽ
 प प धनी सा सा सा सा सा ऽ नी ध धनी रे सारे नीसा

माऽ ऽ ई बं ऽ द औ र छीऽ ऽऽ ध न इ न स व
 नीरै ग रै सां ऽ सा नी ध धनी सां नी ध प प प नी सा
 को ऽ ऽ ऽ छोऽ ऽऽ ड दि या ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
 नी ध प ऽ मप धप म ग म ग म ध मध नीसा नी ध
 जोऽ ऽऽ गी ऽ जोऽ ऽऽ ग लि याऽ ऽऽ ऽ स म झ केऽ ऽऽ
 धनी सां नी ध ऽ मध मप म ग मध पम ग रे ग रे सारे नीसा

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
१ जोऽ ऽऽ गी ऽ	जोऽ ऽऽ ग लि	नीरे गम धनी सां नी धप मग	रेग रेसा
२ जोऽ ऽऽ गी ऽ	जोऽ ऽऽ ग लि	गम धनी मध नीसा नी ध	पम गम
३ जोऽ ऽऽ गी ऽ	जोऽ ऽऽ ग लि	नीरे गम रे गम पध ग	गम धनी
४ जोऽ ऽऽ गी ऽ	जोऽ ऽऽ ग लि	नी गरे मग धम नीध सां नीध नीध	मध
५ जोऽ ऽऽ गी ऽ	जोऽ ऽऽ ग लि	याऽ ऽऽ ऽ स म झ केऽ ऽऽ	गम धनी
रैसा नीध पम गरे	गरे गम धम नीध	मध नीसा नीध पम	गरे गरे नीरे सा

अंतरेकी ताने

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ध न दौऽ ऽ	ल त क छु	सा ऽ थ न आऽ ऽ वेऽ ऽऽ	
धनी धनी सां नीध पम	गरे गम धनी मध	नीसा धनी धनी रै	नी रै नी सा

(१३)

न दौऽ ऽ ल त क छु सा निध पम गरे प मग ग रेसा
 न दौऽ ऽ ल त क छु साऽ ऽऽ यऽ नऽ आऽ ऽऽ वे ऽ
 धनी रेग रेसा नीध मध नीरे ध सा
 न दौऽ ऽ ल त मध नीरे गरे गमे गरे सानी धप मग रेग रेसा
 न दौऽ ऽ ल त क छु सा ऽ थ न आऽ ऽ वेऽऽऽ
 १० पमगरे सा सा सा नीधप मग रेसा गरे सानी धप मग रेसा नीरेगमधनी

राग-यमन

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

एरी आली पिया बिन । सखी कलन परत मोहे घडी पल छिनदिन
 ॥ धृ० ॥ जबसे पिया सोतन बस कीनो । रतिया कटत मोहे तारे
 गिनगिन ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
एऽऽऽ री ऽ	ऽ आ ऽ ली	पि या बि न	ऽ ऽ स खी
पधनीध प ऽ	ऽ रे ऽ सा	ग रे ग ग	ऽ ऽ ग प
क ल न प	र त मो हे	घ डी पऽ लऽ	छि न दि न
ग प ग प	प ध प प	नी ध पध पम	ग रे सा सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ज ब से पि	या ऽ सो ऽ	त न ब स ऽ	को ऽ नो ऽ
ग पं ग प	प ऽ नी ध	सां सां सां नी ध	नी रे सां ऽ
र ति या क	ट त ऽ मो हे	ता ऽ ऽ ऽ रे ऽ	गि नं गि नं
नी रे ग रे	सां नी ध ग प	प ध नी ध प ऽ	ग रे सां सां

राग-भूष

इस रागमें रिषभ, गंधार, धैवत यह स्वर तीव्र हैं. मध्यम और निषाद यह स्वर वर्ज्य हैं. रातके प्रथम प्रहरके बाद यह राग गाया जाता हैं. भक्तिस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे ग प ध सा

अवरोह—सां ध प ग रे सा

मुख्य अंग—ग ऽ रे सा प ऽ ग ऽ सां ध सां ऽ

जाती—ओडव ओडव

वादी—गंधार

संवादी—धैवत

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ग ग रे सा	सां रे सा रे	प ऽ ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
ग रे ग प	ध प ग रे	ग ऽ ऽ रे	सा ऽ ऽ ऽ
सां ऽ ध प	ग रे प ग	ध प ग रे	ग रे सां ऽ
सां ऽ ध प	ग रे ग प	ग रे ग प	ध सां सां ऽ
सां ध सां रे	सां ऽ ध प	ग रे सां रे	सां ऽ ध प
सां ध प ग	ध प ग रे	प ग ऽ रे	सां ऽ ऽ ऽ

(१५)

राग-भूप

लक्षणगीत, ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

भूप स्वरोँका भूप है । वादी गंधार, संवादी धैवत । मध्यम निषाद,
वर्ज्य है ॥ धृ० ॥ ओडव ओडव जाती । निशि समयोंके प्रथम प्रहरमें । भक्ति
रससे गावत है १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
भू ऽ प स्व	रों ऽ ऽ का ऽ	भू ऽ ऽ प	है ऽ ऽ ऽ
सा रे ग प	गरे सा सा ऽ	प ऽ ऽ ग	ग ऽ ऽ ऽ
वा ऽ दी ऽ	गं धा ऽ र	सं वा ऽ दी	धै ऽ व त
सा रे सा रे	ग ग ऽ ग	ग प ऽ प	ध ऽ ध ध
म ऽ ध्य म	नि षा ऽ द	व ऽ ऽ र्ज्य	है ऽ ऽ ऽ
म ऽ ग ग	प ध ऽ प	ग ऽ ऽ रे	ग रे सा ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ओ ऽ ड व	ओ ऽ ड व	जा ऽ ती ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प ध सा	ध प ग रे	सा ध सा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि शि स म	यीं ऽ के ऽ	प्र थ म प्र	ह र मे ऽ
ध सा सा	सा ऽ रे ऽ	सा रे ग रे	सा ध प ऽ
ऽ क्ति ऽ	र स से ऽ	गा ऽ व त	है ऽ ऽ ऽ
ऽ ग रे	ग प ध प	ग रे ग प	ग रे सा ऽ

राग—भूप

ताल—एकताल, मात्रा १२, मध्यलय

नर तनु लाम मिला । गये जनमका पुण्य बहोत है । ये जनममें क्या
करले सो करके तनुका सार्थक करले नरा ॥ धृ० ॥ ये घर मेरा, ये धन
तेरा । ऐसा न कर बिचारा । दान, धर्मसे, दाता बनकर । सार्थ जनम हो
तेरा ॥ १ ॥

आस्ताई

धागे त्रक धीं ना

१ २

नर तनु लाऽ भमि
गरे सासा साधु सारे
पु ण्यब होत हैंऽ
ध पप गरे गरे
कर केऽ तनु काऽ
धप गरे गग गरे

धीं धीं धागे त्रक

+ ०

ला ऽ ऽ ऽ
सा ऽ ऽ ऽ
ये ऽज नम में
सा ऽरे रेरे सा
सा र्थक कर लेऽ
ग गरे गप धप

तू ना क ता

४ ०

गये ऽज नम का
गग रेग पप ध
क्याऽ कर लेऽ सोऽ
साध धप धसा साध
ऽ ऽन रा ऽ
ग ऽरे सा ऽ

अंतरा

धीं धीं धागे त्रक

+ ०

येऽ घर मे राऽ
पग पप प साध
चाऽऽऽऽ रा ऽ
सरिसासा ध प ऽ

तू ना क ता

४ ०

येऽ धन तेऽ राऽऽऽ
धसा सासा सारे सारे सासा
दा नध ऽर्म से
ग रेग पप ध

धागे त्रक धीं ना

१ २

रेऽ साऽ नक रवि
साध साध सासा सारे
दा ता बन कर
ध प गरे गरे

सा र्थज नम हो
ग गरे गप ध

ते SS राऽ S
प गरे गरे सा

नर तनु लाऽ भमि
गरे सासा साध सारे

आस्ताईका बिलंपद

धागे त्रक धीं ना
१ २

धीं धीं धागे त्रक
+ ०

तू ना क ता
४ ०

१ नर तनु लाऽ भमि
ध सा ग रे

ला S S S
ग रे सा रे

सा ध सा रे
साध सा S S

२ नर तनु लाऽ भमि
गरे गप ग रे

ला ग रे ग
सा ध सा रे

पग प S S
ग रे सा S

३ नर तनु लाऽ भमि
सा ध पग प

ला S ग रे
ग रे ग रे

प ग ध प
ग रे सा रे

४ नर तनु लाऽ भमि

ला गरेग पंगप धपध

साधसा पध गप गरे

अंतरेका बिलंपद

धीं धीं धागे त्रक
+ ०

तू ना क ता
४ ०

धागे त्रक धीं ना
१ २

५ येऽ घर मे राऽ
येऽ घर मे राऽ

येऽ धन तेऽ राऽऽऽ
साध सारे गरे सारे साध

साध धप पग गरे
पध सासाध पगरे सा

६ येऽ घर मे राऽ
येऽ घर मे राऽ

पपसाध सारे साधसासा पध

पगप गरे ग प
सासा धध पप गरे

७ येऽ घर मे राऽ
साध पग साध रेसा

येऽ धन तेऽ राऽऽऽ
गरे सारे धसा पध पध

साध गरे सारे सा
साध गरे सारे सा

८ येऽ घर मे राऽ
साध पग साध रेसा

गरे सारे धसा पध पध

साध गरे सारे सा

राग-भूप

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

आज मोरे घर आवोजी नंदलाल । हम सब तुमरे बाल गोपाल ॥ धृ० ॥
कृष्णदासकी बिनति मानले । दहि दुध चावल भोजन चखिये । तेरे चरनकी
धूल । येहि प्रसाद आज दीजे नंदलाल ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
आऽ	ऽ ज मो रे	ध ऽ र आऽ	वो जी नं द
सारे	ग रे सा रे	प ऽ ग गप	ध प ग रे
ला ऽ ऽ ल	ह म स व	तु म रेऽ ऽ	बा ऽ ल गो
ग रे सा सा	प ग प प	सां ध धसां ऽ	ध प ग रे
पाऽ ऽ ल आऽ	ऽ ज मो रे	ध ऽ र आऽ	वो जी नं द
सारे प ग सारे	ग रे सा रे	प ऽ ग गप	ध प ग रे

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
कृ ऽ ण्ण दा	ऽ स की ऽ	बि न ति मा	ऽ न लेऽ ऽऽ
ग ऽ रे ग	प प सां ध	सां सां सां सां	ऽ रे सारे सां सां
द हि दू ध	चा ऽ व ल	भो ऽ ज न	च खि ये ऽ
सां ध सां ध	सां रे न रे	सां रे सां सां	ध ध प ऽ
ते रे ऽ च	र न की ऽ	धू ऽ ऽ ल	ये ऽ ही ऽ
ग ग रे रे	ग प सां ध	सां ऽ ध ध	सां ऽ ध ऽ

(१९)

प्र सा ऽ द आ ऽ ऽ ज दी ऽ जे ऽ ऽ ऽ ऽ नं द
 प प ग ग ग ऽ ऽ रे प ग गप ऽ ग ऽ ग रे
 ला ऽ ल आ ऽ ऽ ज मो रे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 ग रे सा सारे ग रे सा रे प ऽ ग गप ध प ग रे

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ४

आ ऽ ऽ ज मो रे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 १ रेग पप गरे गरे सा ल मो रे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 २ सारे गप धसा धप गरे ल मो रे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 ३ सारे गप घसा रेग रैसा धा गरे सारे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 ४ ला ऽ ल आ ऽ ऽ ज मो रे घ ऽ ऽ ऽ र ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
 बो ऽ ऽ जी आ ऽ ऽ ज मो रे घ ऽ र आ ऽ वो जी नं द
 धप गरे सा सारे

५ ला ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ल आ ऽ वो जी नं द
 गरे पग धप साध रैध साप धग पग गरे पग प गप ध प ग रे

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ४
 कृ ऽ ण दा ऽ स की ऽ बि न ति मा ऽ न ले ऽ ऽ
 ६ धप गरे गप गप गरे गप धसा ध बि न ति मा ऽ न ले ऽ

७ कृ ऽ ण्ण दा ऽ ऽ स ऽ की ऽ ऽ बि ऽ न ऽ ति ऽ मा ऽ ऽ न ऽ ले ऽ ऽ
 ग ऽ रे ग प ध सा ध प ध सा रे ग रे सा ध प सा सा ध प ध प ग रे ग रे सा
 कृ ऽ ण्ण दा ऽ स की ऽ बि न ति मा ऽ न ले ऽ ऽ
 ८ सारे ग प ध सा रे ग प प ग रे सा सा ध प ग रे सारे ग प ध सा प ध सा सा ध सा
 ९ सारे ग प ध सा सा ध प ग रे सा सारे ग प ध सा रे रे सा ध प ग रे सा

राग-भूप

लक छब सावरिया की । मोरे मति भई भवरिया दैया ॥ धृ० ॥ मोर
 मुकुट पीतांबर शोमे । कुंडल झलकत कानमें । मोरे मति भई भवरिया
 दैया ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३	ना तीं तीं ना ०
ल क छ ब	सा ऽ व रि	या ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ
सा सा रे ध	सा ऽ ग रे	ग ऽ प ऽ	ग ऽ ऽ रे
मो रे म ति	भ ई ऽ भ	व रि या ऽ	दैं ऽ ऽ या ऽ
ग ग रे रे	सा सा ऽ सा	सा सा रे ऽ	सारे सा सा ध प
ल क छ ब	सा ऽ व रि	या ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ
सा सा रे ध	सा ऽ ग रे	ग ऽ प ऽ	ग ऽ ऽ रे

अंतरा

ना धीं धीं ना १	ना धीं धीं ना +	ना धीं धीं ना ३	ना तीं तीं ना ०
मो ऽ र मु	कु ट पी ऽ	तां ऽ ऽ ब र	शो ऽ भे ऽ
सा ऽ ध प	ग रे ग प	सा ध सा सा ध	सा ऽ सा ऽ

(२१)

कू	ड	ल	झ	ल	क	त	का	ड	ड	ड	न	मे	ड	ड	ड
सा	ध	ध	सा	सा	सा	सा	ध	सा	रे	ड	सा	ध	सा	ध	प
गे	रे	म	ति	भ	ई	ड	भ	व	रि	या	ड	ड	डै	ड	या
सा	ध	प	प	ध	ड	प	ग	रे	ग	प	ध	ग	रे	ग	रे
															सा

राग-भूप

तराणा, ताल—एकताल, मात्रा १२, द्रुतलय
 धलेतन धेलेतन देर्ना । तन तुंद्रे तद्रेदानी तौम्तन । नादेरेतनत तन
 रेना ॥ धृ० ॥ द्रे द्रे दानी द्रेद्रेदानी तनतौम् । दीम् दीम् तननन देरेना ।
 गीरकिट धीरकिट धीरकिटतकू तेलेलन । भास्कर गुरु मानलिया ॥१॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
धे	ले	त	न	धे	ले	त	न	दे	ड	न	ड
ग	रे	सा	सा	प	ग	प	प	प	ध	सा	सा
त	न	तुं	द्रे	त	द्रे	दा	नी	तौं	म्	त	न
सा	रे	सा	ध	प	सा	ध	प	ग	रे	ग	रे
ना	दे	रे	त	न	त	त	न	दे	रे	ना	ड
सा	रे	ग	प	ध	प	ग	रे	ग	रे	सा	ड

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	चा	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
दे	द्रे	दा	नि	द्रे	द्रे	दा	नि	त	न	तौं	म
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	प	सा	ध	सा	ड

दीं	म्	दीं	म्	त	न	न	न	दे	रे	ना	ऽ
सा	रै	ग	प	ग	रै	सा	सा	घ	घ	प	ऽ
धीर	कीट	धीर	कीट	धीर	कीट	त्त	ऽकु	ते	ले	ल	न
पप	गग	धध	पप	सासा	धध	सा	ऽसा	सा	सा	ध	प
भा	ऽ	स्क	र	गु	रु	मा	ऽ	न	लि	या	ऽ
ग	ऽ	ग	ग	प	प	ग	ऽ	रे	सा	सा	ऽ

राग—काफी

इस रागमें रिषभ और धैवत यह स्वर तीव्र हैं। गंधार, मध्यम और निषाद यह स्वर कोमल हैं, तथापि आरोहमें निषाद तीव्र लेनेकी प्रथा है। यह राग संपूर्ण है। प्रातःकाल छोड़कर कभी भी गाते हैं। विशेषतः रातके समय गाने की प्रथा है। शृंगाररस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे ग् म् प ध नि सा

अवरोह—सा नि ध प म् ग् रे सा

मुख्य अंग—सा रे रे ग् ऽ म् ऽ म् प ऽ प म् ग् रे सा

जाती—संपूर्ण

वादी—पंचम

संवादी—रिषभ

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
सा रे रे ग्	ऽ म् ऽ म्	प ऽ ऽ ध	प ध म् प
प सा नि नि	ध ध प ऽ	म् म् प प	सा नि सा ऽ
प नि प ग्	ऽ म् ग् रे	सा ऽ प म्	ग् रे सा ऽ ॥
म् म् प ध	ऽ नि सा ऽ	सा नि ध प	म् ग् रे ऽ
ग् रै सा नि	ध प प ध	सा ऽ नि ध	प म् ग् रे
नि ऽ ध प	म् ग् रे ऽ	प म् ग् रे	म् ग् रे सा ॥

(२५)

राग-काफी

लक्षणगीत, ताल-एकताल, मात्रा १२

गावो सब राग काफी । रिषभ धैवत तीव्र लगत । गंधार मध्यम निषाद
कोमल । कचित् आरोही ग नी तीव्र संपूरन जाती ॥ धृ० ॥ पंचम वादी
संवादी रिषभ । निशिसमयी के द्वितीय प्रहरमें । शृंगारकी रसवंती ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
गा	ऽ	वो	ऽ	स	ब	रा	ऽ	ग	का	ऽ	फी
रे	गू	रे	गू	सा	रे	नि	ऽ	ध	प	ऽ	प
रि	ष	म	धै	व	त	ती	ऽ	ब्र	ल	ग	त
रे	रे	रे	ध	ध	ध	ध	ऽ	ध	ध	ध	ध
गं	धा	र	म	ध्य	म	नि	षा	द	को	म	ल
गू	गू	गू	गू	म्	म्	नि	नि	नि	नि	नि	नि
क	चि	त	आ	रो	ही	ग	ऽ	नी	ती	ऽ	ब्र
म्	म्	प	नी	नी	नी	ग	ऽ	नी	नी	ऽ	नी
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	जा	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ
सी	ऽ	नि	ध	प	प	म्	प	म्	गू	रे	सा

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
पं	च	म	वा	ऽ	दी	सं	वा	दी	रि	ष	भ
प	प	प	प	ऽ	प	प	म्	गू	रे	रे	रे

नि	शि	स	म	यी	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	ग	रे	सा	नि	सा	नि	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ
द्वि	ती	य	प्र	ह	र	में	ऽ	श्रु	ऽ	गा	ऽ
प	ध	नि	सा	नि	ध	प	ऽ	प	ऽ	पध	सा
ऽ	र	की	ऽ	र	स	वं	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ध	प	ऽ	प	ध	म्	प	ग	ऽ	रे	ऽ

राग-काफी

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

लागी उचट मोरि रैन । पिहरवा पास पास, आई । जब तब नाम लेत
सन मोहे ॥ धृ० ॥ तुमरि भिऊनकी, आस पियारे । चैन ना परत मोहे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धी	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
०				१				+					३		
ला	गी	ऽ	उ	च	ट	मो	रि	रै	ऽ	न	पि	ह	र	वा	ऽ
ध	प	ऽ	प	ग	रे	म्	म्	प	ऽ	प	म्	प	ध	ध	नि
पा	ऽ	ऽ	स	पा	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	ज	ब	त	ब
नि	ध	प	प	म्	प	ध	प	ग	ऽ	रे	ऽ	नि	नि	नि	नि
ना	ऽ	ऽ	म	ऽ	त	म	न	मो	ऽ	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ
ध	सा	नि	ध	ध	म्	म्	म्	रे	प	म्	ध	नि	ध	प	म्
ला	गी	ऽ	उ	च	ट	मो	रि	रै	ऽ	न	पि	ह	र	वा	ऽ
ध	प	ऽ	प	ग	रे	म्	म्	प	ऽ	प	म्	प	ध	ध	नि

(२५)

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
तु म रि मि	ल न की ऽ	आऽ ऽ स पि	या ऽ रेऽ ऽ
म म प ध	सां सां सां सां	सां रे ग् रे सां	नि सां नि ध प
चै ऽ न ना	ऽ प र त	मोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	हे ऽ ऽऽ ऽ
सां ऽ रे नि	सां नि ध प	रेप म ध प नि ध सां	नि ध प म प

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
१ ला गी ऽ उ	च ट मो रि	प ऽ ध ध प म्	रे म् प ध म् प
२ ला गी ऽ उ	च ट मो रि	प ध नि सां प ध म् प	रे म् रे म् ध प
३ ला गी ऽ उ	च ट मो रि	सा रे ग् म् प ध नि सां	नि ध प म् ग् रे सा रे
४ ला गी ऽ उ	च ट मो रि	ग रे सां नि ध प म् प	रे सा रे म् प ध म् प
५ ला गी ऽ उ	च ट मो रि	रेऽ ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न ऽ
		सा रे ग् म् प ऽ	ध ऽ म् प
रै ऽ ऽऽ ऽ	नऽ ऽ रैऽ ऽऽ	ऽ ऽ नऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽऽऽ
म् ऽ ग् रे ग्	रे सा रे रे ग् म् प	रे ग् रे सा रे	सा ऽ रे ग् म् प

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
तु म रि मि	ल न की ऽ	प ध नि ध नि सां	नि ध प म् प व सां सां

७ तु म रि मि ल न की ऽ आऽ ऽ स पि याऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ
 सारे गु रे सा सा नि ध प म् रे सा
 ८ तु म रि मि ल न की ऽ आऽ ऽ स पि या ऽ रेऽ ऽऽ
 नि ध प म्
 गुरे सारे गुम् पध नि सा गुम् पध नि सा पध सा नि ध प म् म्प ध प म्प रे सा

राग—काफी

ताल—त्रिताल, मात्रा १६ मध्यलय

तन मन धन तुं पे बारूं । बार बार तेरी सांवरी सूरत । और नैननुवा
 रसीले ॥ धृ० ॥ सांवरी सूरत कदर पियाकी । निरखत है मुं पे बार बार ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
त न म न	ध न तुं पे	बा ऽ ऽ ऽ	रूं ऽ ऽ ऽ
रे गु रे गु	रे सा रे गु	प ऽ म् ध	प ऽ ऽ ऽ
बा ऽ र बा	ऽ र ते री	सा ऽ व ली	सू ऽ र त
नि ऽ ध नि	ऽ ध प प	म् प ध प	म् प गु रे
औ ऽ र नै	ऽ न नु ऽ	बाऽ ऽऽ ऽ र	सीऽ ऽऽ ले ऽ
ग ऽ ग म्	ऽ म् म् ऽ	रेम् पध ऽ प	म्प ध प गु रे

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
सां ऽ व ली	सू ऽ र त	क द र पि	याऽ ऽऽ की ऽ
म् ऽ प ध	नि ऽ सां सां	नि सां नि सां	नि सां नि ध प ऽ

(२७)

नि र ख त है ऽ मुं पे बा ऽ ऽ र बा ऽ ऽ ऽ र
 ध नि ध प प ध प म् प ऽ ऽ ध प ध प म् ग् रे

राग-वागेश्री

इस रागमें गंधार, मध्यम और निषाद यह स्वर कोमल है. रिषभ और धैवत यह स्वर तीव्र है. आरोहमें रिषभ वचित् लगानेकी प्रथा है। और अव-
 रोहमें पंचम लगानेकी प्रथा है, रातके द्वितीय प्रहरमें यह राग गाया जाता हैं.
 शृंगार रस प्रधान यह राग हैं.

आरोह-सा ग् म् ध नि सा
 अवरोह-सा नि ध प म् ग् रे सा

जाती-ओढव संपूर्ण

वादी-मध्यम

संवादी-षड्ज

मुख्य अंग-सा नि ध नि सा म् ग् म् ध नि ध म् ग् रे सा ऽ

सुराबट, ताल-एकताल, मात्रा १२

धीं धीं धागे त्रक	तू ना क ता	धागे त्रक धीं ना
+	०	१ २
ध नि सा ग्	म् ध नि ध	ऽ म् ग् ऽ
रे ऽ म् ग्	ऽ म् ग् रे	सा ऽ ध नि
सा ऽ ध नि	सा ऽ म् ग्	ऽ रे सा ऽ ॥
ग् म् ध नि	सा ऽ सा ऽ	नि सा ऽ रे
सा नि ध ऽ	ग् म् ध नि	सा म् ग् रे
सा ऽ नि ऽ	ध ऽ म् म्	ग् ऽ रे सा ॥

राग—बागेश्री

लक्षणगीत, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

गावत है राग बागेशरी । रिषभ, पंचम वर्ज आरोही । संपूरन स्वर
 अवरोही । षाडव संपूरन जाती ॥ धृ९ ॥ वादी मध्यम सवादी हड़ज । निशि
 समयी के द्वितीय प्रहरमें । शृंगार रसकी माधुरी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
गा ऽ व त	है ऽ रा ऽ	ग बा ऽ ने	ऽ स री ऽ
गू मू गू रे	सा ऽ रे ऽ	सा नि॒ सा नि॒	ध नि॒ सा ऽ
रि ष भ पं	ऽ च ऽ म	व ऽ र्ज आ	रो ऽ ही ऽ
सा सा सा मू	ऽ मू ऽ मू	मू गू रे सा	मू ऽ मू ऽ
सं ऽ पू ऽ	र न स्वर	अ व रो ऽ	ही ऽ ऽ ऽ
ध ऽ ध नि॒	ध प मू गू	मू गू रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
ओ ऽ ड व	सं ऽ पू ऽ	र न जा ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
मू ध नि॒ सा	सा नि॒ ध प	मू गू रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
वा ऽ दी ऽ	म ऽ ध्य म	ष ऽ ड॒ज॒सं॒ऽ	वा ऽ दी ऽ
सा ऽ सा ऽ	मू ऽ मू मू	सा ऽ सा॒सा॒नि॒	ध नि॒ सा ऽ
नि शि स म	यीं ऽ के ऽ	द्वि ती यं प्र	ह र में ऽ
मू मू ध नि॒	ध मू ध नि॒	सा॒सा॒सा॒ मू	गू रे सा ऽ

(२९)

श्रं गा ऽ र र स की ऽ ऽ मा ऽ ऽ धु री ऽ ऽ ऽ
 ध ध ऽ नि ध म ध नि सा म ग् ऽ म् ग् रे सा ऽ

राग-बागेश्री

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

मन नहीं माने मनुवा । कैसी भूल पड़ी देह की । सुध बिसराई रे
 ॥ धृ० ॥ नजर न पहुंचें वह मन पहुंचें । ऐसे मनसैं ईश्वरका ध्यान गान करले
 मनुवा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
म	न न ही ऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ने ऽ म नु
रे	सा नि ध नि	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ म् ग्
वा ऽ ऽ ऽ	कै ऽ सी ऽ	भू ऽ ल प	डी ऽ ऽ ऽ
रे सा ऽ ऽ	ग् म् ध नि	सा ऽ नि नि	ध ऽ धम् म्
दे ऽ ऽ ह	की ऽ ऽ ऽ	सु ध बि स	रा ऽ ई ऽ
म् ऽ ऽ म्	ग् ऽ रे ऽ	ग् म् ग् ग्	रे ऽ सा ऽ
रे ऽ ऽ म	न न ही ही	मा ऽ ऽ ऽ	ने ऽ ऽ ऽ
रे ऽ सा रे	सा नि ध नि	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
न ज र न	प हुं चे ऽ	व ह म न	प हुं चे ऽ
ग् म् ध नि	सा सा सा ऽ	म् ग रै सा	नि सा नि ध

ये ऽ से ऽ म न सेऽ ऽ ई ऽ ख र का ऽ ऽ ऽऽ
 ध नि ध नि ध म धनि सा सा ऽ नि नि ध नि ध पम्
 व्या ऽ ऽ न गाऽऽ ऽ न क र ले ऽ ऽ ऽ म तु
 म् ऽ ग् ग् रे म्गु म् म् म् ग् रे ऽ सा ऽ नि ध
 चा ऽ ऽ म न न ही ऽ मा ऽ ऽ ऽ ने ऽ म तु
 सा ऽ ऽ रे सा नि ध नि सा ऽ ऽ ऽ सा ऽ म् ग्

आस्ताईका विलंपद

ना ती ती ना ०	ना धीं धी ना १	ना धी धी ना +	ना धीं धी ना ३
१ म न न ही ऽ मा ऽ ऽ ऽ	१ सा नि ध नि म् ऽ नि ध	३ सा नि रे ऽ	३ सा नि रे ऽ
२ ने ऽ ऽऽ म न न ही ऽ मा ऽऽ ऽ ऽ	२ सा नि ध नि सा म्गु म् ध	२ सा नि ध नि सा म्गु म् ध	२ सा नि ध नि सा म्गु म् ध
३ रे रे सा म न न ही ऽ मा ऽऽ ऽ ऽ	३ सा नि ध नि सा म्गु म् ध	३ सा नि ध नि सा म्गु म् ध	३ सा नि ध नि सा म्गु म् ध
४ म्गु रे सा म न न ही ऽ मा ऽ ऽ ऽ	४ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ	४ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ	४ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ
५ रे रे सा ऽ नि सा ध नि सा म्गु म तु	५ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ	५ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ	५ सा नि ध नि ध ऽ ऽ ऽ
६ रे सा ऽ म न न ही ऽ मा ऽ ऽ ऽ	६ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ	६ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ	६ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ
७ सा ऽ ऽ म न न ही ऽ मा ऽ ऽ ऽ	७ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ	७ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ	७ सा नि ध नि सा ऽ म् ऽ

(३१)

अंतरेका बिलंपद

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
न ज र न	प हुं चे ऽ	व ह म न	प हुं चे ऽ
६ नि ध नि ध	म् म् गु गु	रे रे सा सा	सा म् गु म् ध
७ रे नि ध म्	सा नि ध म्	नि ध म् गु	म् गु रे सा
८ न ज र न	प हुं चे ऽ	व ह म न	प हुं ऽ चे ऽ
म् गु रे सा	नि नि ध म्	सा नि सा ध	नि ध प ध पम्
९ न ज र न	पहुं ऽ ऽ चे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
	सानि रे सा म् गु रे सा	सा नि ध नि ध प	ध पम् गु रे सा

राग-बागेश्री

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

बन बन बन देखे । सखिरि मन मोहे । कहैया कहि न मिले ॥ धृ०॥

गोकुल हुंढे मथुरा हुंढे । देख सखि जमुना किनारे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ब न ब न	ब न दे ऽ	खे ऽ ऽ स	खि रि म न ऽ
सा नि ध प	ध म् गु रे	म् ऽ ऽ म्	ध नि सा सा रे
गो ऽ ऽ हे क	न्है ऽ या ऽ ऽ	ऽ क हि न	मि ऽ ऽ ले ऽ
सानि ऽ ध म्	नि ध ध नि सा	ऽ गु गु म्	गुम् गुरे सा ऽ

ब न ब न ब न दे ऽ खे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 सा नि ध प ध म् ग् रे म् ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ म् रे सा ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 गो ऽ कु ल हुं ऽ ठे ऽ म थु राऽऽ हुं ऽ ठे ऽ
 ग् म् ध नि सा ऽ सा ऽ नि सा सा रे म् रे सा रे सा ऽ
 दे ऽ ख स खी ऽ ज मु नाऽ ऽ किऽ ना ऽ रेऽ ऽऽ
 नि सा रे नि ध धम् ध नि ध नि सा ग् म् रे सा ग् ध नि
 ब न ब न ब न दे ऽ खे ऽ ऽ स खि रि म नऽ
 सा नि ध प ध म् ग् रे म् ऽ ऽ म् ध नि सा सा रे

आस्ताईकी ताने

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ब न ब न ब न दे ऽ खे ऽ ऽ स खि रि म नऽ
 १ ब न न न ब न दे ऽ ध नि सा ग् म् ध नि ध प म् रे सा नि सा
 २ ब न ब न ब न दे ऽ ध नि सा ग् म् ध नि सा नि ध प म् रे सा
 ३ ब न ब न ब न दे ऽ ग् म् ध नि सा नि ध नि ध प म् रे सा
 ४ ब न ब न ब न दे ऽ ध नि सा ग् म् ध ग् म् ध नि सा नि ध नि सा
 ब न य न ब न दे ऽ खे ऽ ऽ स खि रि म नऽ
 ५ म् रे सा रे सा नि ध नि सा ग् म् ध नि सा नि ध प म् रे सा म् ग् रे सा रे सा

(३३)

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 गो ऽ कु ल हुं ऽ हे ऽ म थु रा ऽ ऽ ऽ हुं ऽ ऽ हे ऽ
 ६ गो ऽ कु ल हुं ऽ हे ऽ सा नि ध प म् ग रे सा ध नि सा ग् म् ध नि सा
 ७ गो ऽ कु ल हुं ऽ हे ऽ ग् म् ध नि सा म् ग् रे सा नि ध प म् ग रे सा
 गो ऽ कु ल हुं ऽ हे ऽ म थु रा ऽ ऽ ऽ हुं ऽ ऽ हे ऽ
 ८ म् ग् रे सा रे सा नि ध प म् ग् रे सा सा नि ध प म् ग् रे सा ग् म् ध नि सा
 ९ ग् म् ध नि सा म् ग् रे सा नि ध प म् ग् रे सा नि ध प म् ग् रे सा ग् म् ध नि सा
 ग् म् ध नि सा नि ध प म् ग् रे सा ग् म् ध नि सा नि ध प म् ग् रे सा ग् म् ध नि सा

राग-बागेश्री

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

चलत चलत मथुरा नगरीमें । श्याम कान्ह जियमें बसेरा । नंदजीका ये
 छेल छबेला ॥ धृ० ॥ वृंदावनमें फूल फूलेरा । गोकुलका ये राजदुलारा ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 च ल त च ल त म थु रा ऽ ऽ ऽ न ग ऽ री मे ऽ
 सा नि नि नि ध म् प ध ध ऽ प म् म् ध प ध ध ऽ
 श्या ऽ म का ऽ न्ह जि य मे ऽ ऽ ब से ऽ रा ऽ
 म् ऽ ग् रे ऽ सा नि सा म् ऽ ऽ प म् ग् म् ऽ
 नं ऽ द जी का ऽ ये ऽ ऽ ऽ छे ल छ वे ऽ ऽ ऽ ला ऽ
 म् ध नि सा नि ध ध नि सा ऽ नि ध नि ध नि ध प म् प ध

रा.सं.(१)३

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 बृं ऽ दा ऽऽ ब न मेऽ ऽ फ ऽ ल फ ले ऽ रा ऽ
 ध नि ध सा नि ध म ध नि सा सा ऽ सा रे सा नि सा ऽ
 गो ऽ कु ल का ऽ ये ऽ रा ऽ ज दु लाऽ ऽ राऽ ऽ
 मू ऽ ग् रे सा ऽ नि ऽ ध नि ध नि ध प म् म्प ध

राग-खमाज

इस रागमें रिषम, गंधार, धैवत यह स्वर तीव्र हैं. और मध्यम यह स्वर कोमल हैं. निषाद यह स्वर आरोहमें तीव्र, और अवरोहमें कोमल हैं. रिषम स्वर आरोहमें वर्ज्य हैं. यह राग रातके दुसरे प्रहरमें गाया जाता हैं. श्रृंगाररस प्रधान यह राग हैं.

आरोह—सा ग म् प ध नी सां

अवरोह—सा नि ध प म् ग रे सा

मुख्य अंग—ग म् प ग म् नि ध ऽ म् ग ऽ रे सा

जाती—षाडव संपूर्ण

वादी—गंधार

संवादी—निषाद

सुरावट, ताल—एकताल, मात्रा १६

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ग ग सा ग म् प ग म् नि ध ऽ म् प ध ऽ म्
 ग ऽ ऽ ध ऽ ना सा ऽ सा नि ध प म् ग रे सा॥
 ग म् प ध नी नी सा ऽ सा नि ध प ग म् ग ऽ
 म् ध नी सा ग रे सा नि ध प प ध ग म् ग ऽ॥

राग—खमाज

लक्षणगीत ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

गुनीजन गावत राग खमाज । आनंदित है सकल समाज । गंधार
 आदी, निषाद संवादी । षाडव संपूरन जाती । आरोही मे स्वर रिषभ वर्ज ॥ ध्रु० ॥
 आरोही निषाद तीव्र । अवरोही निषाद कोमल । गावत है निशि द्वितीय
 प्रहरमें । शृंगार रसका साज ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
गु नी ज न	गा ऽ ऽ व त	रा ऽ ग ख	मा ऽ ऽ ज
ग ग ग म्	ग रेसा ग म्	प ऽ प ध	ग पम् ग ग
आ ऽ नं ऽ	दि त है ऽ	स क ल स	मा ऽ ऽ ज
ग म् प ध	सां नि ध प	प ध प ध	ग पम् ग ग
गं धा ऽ र	वा ऽ दी ऽ	निषा द सं	वा ऽ दी ऽ
ग ग ऽ म्	ग म् प ध	नी नी नी नी	नी नी नी ऽ
षा ऽ ड व	सं ऽ पू ऽ	र न जा ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
ग म् प ध	सां नि ध प	प ध ग पम्	ग ऽ ऽ ऽ
आ ऽ रो ऽ	ही ऽ मे ऽ	स्व र रि ष	भ व ऽ ऽ र्ज
ग म् प ध	नी ऽ सां ऽ	नि ध प ध	प ग पम् ग

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
आ ऽ रो ऽ	ही ऽ ऽ ऽ	नि षा ऽ द ती ऽ ऽ	ब्र
ग म् प ध	नी ऽ ऽ ऽ	नी नी ऽ नी नी ऽ	नी

अ व रो ऽ ही ऽ ऽ ऽ नि षा ऽ द को ऽ
 सा सा नि ध प ऽ ऽ ऽ नि नि ध प ग म् ग ग
 गा ऽ व न है ऽ नि शि द्वि ती य प्र ह र मे ऽ
 ग म् प ध नी ऽ सा सा सा ग रै सा नि ध प ऽ
 शं ऽ गाऽ ऽऽ ऽ र र स का ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ज
 प ऽ पध सा नि ऽ ध प प प ध म् ऽ म् प ग ग

राग-खमाज

ताल-झपताल, मात्रा १०, मध्यलय

अरे मोरे राम राजारे । नैननमे आनबसे । मेरो प्रान ॥ धृ० ॥ केसा मै
 भाग्यहीन । मै तुझको बन बास दिया । पूर्व कर्मका येही फल है । नहीं
 चुकेगा फेरा ॥ १ ॥

आस्ताई

धी	धी	ना	धी	ना	धी	धी	ना	ती	न
१			+		३			०	
अऽ	रेमो	ऽरे	रा	ऽ	ऽम राऽ	जाऽ		रे	ऽऽ
गम्	गसा	ऽसा	ग	ऽ	ऽग	गप	गप	म्	गरे
ऽ	नै	नन	में	ऽ	आऽ	ऽऽ	नऽ	ब	से
ऽ	रे	पप	प	ऽ	पध	सानि	धपध	म्	गरे
ऽ	मे	रोऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	प्राऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽन
ग	म्	पधनीसा	रै	सा	धसा	निध	पनिधप	म्पमग	ऽग
अऽ	रेमो	ऽरे	रा	ऽ	ऽम	राऽ	जाऽ	रे	ऽऽ
गम्	गसा	ऽसा	ग	ऽ	ऽग	गप	गप	म्	गरे

(३७)

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
कैऽ	साऽ	मैऽ	ऽ	ऽ	भाऽ	ऽग्य	ही	ऽ	न
गम्	गम्	पध	सा	ऽ	निध	म्प	नी	सा	सा
मैऽ	तुझ	को	ऽ	बन	बाऽ	स	दि	याऽ	ऽऽ
नीनी	नीनी	सा	ऽ	सारे	निध	प	ध	गप	म्ग
पू	र्वक	ऽर्म	का	ऽ	येऽ	ही	फऽलऽ	हैऽ	ऽ
ग	मग	रेग	सा	ऽ	गम्	प	निऽधप	गम्	ग
नऽहीऽ	ऽचु	के	गाऽऽऽ	फेऽऽऽ	राऽ	ऽ	अऽ	रेमो	ऽरे
गम्पध	सांग	सा	निऽधप	पनिधप	गम्	ग	गम्	गसा	ऽसा
रा	ऽ	ऽम	राऽ	जाऽ	रे	ऽऽ	अऽ	रेमो	ऽरे
ग	ऽ	ऽग	गप	गप	म्	गरे	गम्	गसा	ऽसा

आस्ताईका बिलंपद

धी	धी	ना	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना
१			+		३			०	
१ अऽ	रेमो	ऽरे	रा	ऽ	ऽम	गम्	पग	म्प	गम्
२ अऽ	रेमो	ऽरे	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽम
			गम्	पध	म्प	गम्	गरे	साग	म्प
	अऽ	रेमो	रा	ऽ	ऽम	राऽ	जाऽ	रे	ऽऽ
३ साग	म्प	गम्	नि	धप	गम्	ग	पम्	गरे	सा
४ साग	म्प	गम्	पध	नीसा	पनि	धप	म्प	गम्	ग

(३८)

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
५ कैऽ	साऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ	भाऽ	ऽग्य	हीऽ	ऽऽऽऽ	ऽन
()	()	()			()	()	()	()	()
					निध	गम्	गसा	गम्पध	सांसा
					()	()	()	()	()
६ कैऽ	साऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ	धनि	धप	गम्	पध	गम्
()	()	()			()	()	()	()	()
सा	गम्	पप	गम्	पध	भाऽ	ऽग्य	ही	ऽ	ऽन
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()
					निध	म्प	ग	म्	गग
					()	()	()	()	()
७ कैऽ	साऽ	मैंऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽग्य	ही
()	()	()			()	()	()	()	()
					नि	धप	गम्पध	सांनी	सां
					()	()	()	()	()
न	प्रनीसारे	निध	सांनी	सांसा	भा	ऽग्य	ही	ऽ	ऽन
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()
					नि	धप	म्	प	गग
					()	()	()	()	()

राग-खमाज

ठुमरी, ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

तुम मत जावो मुरारी रे । गोकुल जन हम व्याकुल भये । निर्मल हैं
परजा तेरी रे ॥ धृ० ॥ हुई द्वारका इंद्र पुरीरे । गोकुलकी गत न्यारी रे । कृष्ण-
दासकी मान बिनतिरे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
०				१				+				३			
तु	म	म	त	जा	ऽऽ	वो	मु	रा	ऽ	री	ऽऽ	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ
				()				()				()			
ब	प	म्	प	ग	ऽरे	सा	ग	प	ऽ	म्प	धप	म्	ऽ	गरे	ग
()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()	()

(३९)

गो ऽ कु ल ज न हं म व्या ऽ कु ल ऽ म येऽ ऽ
 ग म् ग म् प प नि ध सा ऽ सा सा ऽ सा नि ध प
 नि ऽ र्म ल हैऽ ऽ प र जा ऽ तेऽ ऽ री ऽ रेऽ ऽ
 नि ऽ नि नि नि ध प प ध प ध म्प धप म् ऽ गरे ग

अंतरा

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 हु ई ऽ द्वा ऽ र का ऽ ई ऽ द्र पुऽ री ऽ रेऽ ऽ
 म् प ऽ ध प ध सा ऽ प नी सां गिरे सा ऽ सां नि धप
 गो ऽ कु ल कीऽ ऽ ग त न्याऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ रे ऽ
 नि ऽ नि नि धसां नि ध प प प ध नि ध प म् प ध नि ध प ऽ
 कृ ऽ ण्ण दा ऽ स की ऽ मा ऽ न बि न तिऽ रेऽ ऽ
 ग ऽ म् ग रे ग सा ऽ म् रे म् प ध सां नि धप म्प
 तु म म त जा ऽ बो मु रा ऽ रीऽ ऽ रे ऽ ऽ
 म् प म् प ग ऽ रे सा ग प ऽ म्प धप म् ऽ गरे ग

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 १ तु म म त जा ऽ बो मु रा ऽ रीऽ ऽ रेऽ ऽ
 २ तु म म त जा ऽ बो मु रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रीऽ रेऽ ऽ
 ३ तु म म त जा ऽ बो मु रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रीऽ रेऽ ऽ

तु म म त जा ऽऽ वो मु रा ऽ रीऽऽऽ रे ऽ ऽऽ ऽ
 ३ साग म्प गम्पध नीसा पनी साग रेसा निध पम् गम् धप निध पम् गम् ग
 ४ तु म म त जा ऽऽ वो मु रा ऽ ऽऽऽऽ ऽऽ ऽऽ रीऽ ऽ
 ऽ सा निधप म्ग पम् गरे सा
 ५ तु म म त जा ऽऽ वो मु राऽ ऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ रीऽ ऽ ऽ
 गम्पध सापधम् पग म्ग ग ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ६हु ई ऽ द्वा ऽ र का ऽ सा निधप म्ग गम् पधनीसा नी सा
 ७हु ई ऽ द्वा ऽ र का ऽ पम् गरे सा निनि धप गम्पध सा
 ८हु ई ऽ द्वा ऽ र का ऽ ई ऽ द्र पुऽ री ऽ रेऽ ऽऽ
 ९साग म्प गम्पध नीसा पनी साग सा निध म् ग सा ऽ गम् प
 ६हु ई ऽ द्वा ऽ र का ऽ ई ऽ द्र पुऽ री ऽ रेऽ ऽऽ
 ९सा निधप म्गरेसा नीसा गम् पध नीसा पनी साग म्ग रेसा निध पम् गरे सा

राग-खमाज

ताल-दादरा, मात्रा ६; मध्यलय

अबतो जीवन हारे ए गोविंद राखो शरन ॥ धृ० ॥ नीर पीवन हेत
 गये सिंधुके किनारे ॥ सिंधु बीच बसत नक्र । चरन धर पछारे ॥ १ ॥

(४१)

आस्ताई

धा	गे	ना	धा	ती	ना	धा	गे	ना	धा	ती	ना
+		३		०		+		३		०	
अ	ब	तोऽ	जी	व	न	हाऽ	ऽऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
ग	ग	पम्	म्	ग	सा	सारे	गम्	ग	प	ऽ	ऽ
एऽ	ऽऽ	ऽ	गो	विं	द	रा	ऽ	खो	शऽ	र	न
गप	धनी	सा	नि	ध	प	प	ध	म्	पम्	ग	सा

अंतरा

धा	गे	ना	धा	ती	ना	धा	गे	ना	धा	ती	ना
+		३		०		+		३		०	
नी	ऽ	र	पी	वऽ	न	हेऽ	ऽ	त	ग	ये	ऽ
प	ऽ	प	प	धनी	नी	धनी	सा	सा	सा	सा	ऽ
सि	ऽ	धु	के	ऽ	कि	नाऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
नी	ऽ	नी	सा	ऽ	रे	धसा	निव	प	ऽ	ऽ	ऽ
सि	ऽ	धु	बी	ऽ	च	व	स	त	न	ऽ	क्र
म्	ऽ	प	नी	ऽ	नी	नी	सा	नी	सा	ऽ	सा
च	रऽ	न	ध	र	प	छा	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	सा	नि	प	प	ध	ग	प	म्	ग	ऽ	ऽ

(४२)

राग-पहाडी

इस रागमें रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद यह स्वर तीव्र हैं। मध्यम और निषाद कोमल लगानेकी प्रथा हैं पहाडी राग-षड्जका मध्यम यह स्वर षड्ज समझके गाया जाता हैं। यह राग कभीभी गाया जाता हैं। किन्तु रातको गानेकी प्रथा हैं। श्रृंगार और भक्तिरस प्रधान यह राग हैं।

आरोह—सा रे ग प ध नी प ध सा

अवरोह—सा नी ध प ऽ म प ग ऽ रे सा ऽ

जाती—वक्र संपूर्ण

वादी—षड्ज

संवादी—पंचम

मुख्य अंग—सा रे ग प ध नी प ऽ ग प ग रे सा ऽ ध ऽ प ऽ

सुरावट, ताल—केरवा, मात्रा ४

धागे नाति

+

सा ऽ

ग रे

प ऽ

सा रे

प ऽ

प प

प ध

म प

ग पम्

नक धींऽ

०

ऽ नी

सा ऽ

प ध

ग प

ग प

ग रे

नी ऽ

ऽ म

रे ऽ

धागे नाति

+

ध नी

ऽ ऽ

सा ध

ग प

ग रे

ग प

प ऽ

ग ऽ

सा ऽ

नक धींऽ

०

प ऽ

ध नी

सा ऽ

ध नी

सा ऽ

ध नी

ऽ ऽ

रे ऽ

ऽ ऽ

(४३)

राग—पहाडी

लक्षणगीत, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

राग पहाडी नाम है । सुरकी कितनी बहार है । वादी षड्ज संवादी
पंचम । वक्र संपूरन जाती है ॥ धृ० ॥ रात दिननमें गावत गुनीजन । भक्ति
और शृंगार रससे खुलता है ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
रा ऽ ग प	हा ऽ डी ऽ	ना ऽ ऽ ऽ म	है ऽ ऽ ऽ
सा ऽ सा नी	ध नी प ऽ	धसा रेग ऽ रे	ग ऽ ऽ ऽ
सू र की ऽ ऽ	कि त नी ऽ	ब हा ऽ र	है ऽ ऽ ऽ
ग ग ग रे सा	सा रे रे सा	सा रे ऽ ग	सा ऽ ऽ ऽ
रा ऽ ग प	हा ऽ डी ऽ		
सा ऽ सा नी	ध नी प ऽ		

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
रा ऽ त दि	न न में ऽ	गा ऽ ब त	गु नी ज न
ग ऽ ग प	प प प ऽ	ग प ध प	ग रे ग ग
भ ऽ क्ति औ	ऽ र शूं ऽ	गा ऽ ऽ र	र स ऽ से ऽ
प ऽ म प	ऽ म ग रे	ग ऽ ऽ प	ग रेसा रे ऽ
खु ल ता ऽ ऽ	है ऽ ऽ ऽ		
ग प ग रे सा	सा ऽ ऽ ऽ		

राग-पहाडी

ताल-कैरबा, मात्रा ४, मध्यलय

चल चालो गोकुल मे । बाट घाट सब उलट पलटके देखे जमुना तीर
रे ॥ धृ० ॥ गोकुल सारा मधुवन तेरा । इधर उधर सब व्यापक रे ॥ १ ॥

धागे	नाति	नक	धीऽ	धागे	नाति	नक	धीऽ
०		०		+		०	
		चल		चाऽऽ	लो	गो	कुल
		धसा		सारेग	रे	सा	नीसा
मेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	बाऽऽऽ	टघा	ऽट	सब
नीध	सान्नी	धप	ऽ	सान्नीधप	पुध	सासा	सासा
उल	टप	लट	के	दे	खेऽ	जमु	नाऽऽऽ
सारे	गरे	सारे	सा	ध	पम	गरे	गमपम
तीऽ	ऽर	रे	चल	चाऽऽऽ	लो	गो	कुल
गरे	गरे	सा	धसा	रेगमग	रे	सा	नीसा

अंतरा

धागे	नाति	नक	धी	धागे	नाति	नक	धीऽ
+		०		+		०	
मेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	गो	कुल	साऽऽऽ	रा
नीध	सान्नी	धप	प	ग	गग	रेगपम	ग

(४५)

मधु ()	बन ()	तेऽऽ ()	रा ()	इध ()	रउ ()	धर ()	सब ()
गप ()	गप ()	गरेसा ()	रे ()	रेप ()	मप ()	गग ()	रेरे ()
व्याऽ ()	पक ()	रेऽऽऽ ()	चल ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
सारे ()	सासा ()	धनीधप ()	धसा ()	सारेग ()	रे ()	सा ()	नीसा ()

आस्ताईकी तानें

धागे ()	नाति ()	नक ()	धींऽ ()	धागे ()	नाति ()	नक ()	धींऽ ()
+		०		+		०	
मेऽ ()	ऽऽ ()	ऽऽ ()	चल ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
१ प ()	म ()	ग ()	रेसा ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
२ सानी ()	धप ()	धसा ()	सारेग ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
३ म ()	प ()	धपमग ()	मगरेसा ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
४ सारेगप ()	धनीप ()	गपगरे ()	रेसा ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
५ धनीधप ()	धसारेग ()	सारेगप ()	ग ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()
६ गपगरे ()	प ()	धनीधप ()	सा ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()

अंतरेकी तानें

धागे ()	नाति ()	नक ()	धींऽ ()	धागे ()	नाति ()	नक ()	धींऽ ()
+		०		+		०	
मेऽ ()	ऽऽ ()	ऽऽ ()	चल ()	चाऽऽ ()	लो ()	गो ()	कुल ()

२	गो	कुल	सा	रा	मधु	बन	तेऽऽऽ	राऽऽ
	प	पप	प	प	पम	पम	गमपम	गरेसा
४	गो	कुल	साऽ	रा	मधु	बन	तेऽऽऽ	रा
	ध	धध	पध	ध	पनी	धप	गपगरे	सा
९	गो	कुल	साऽऽऽ	रा	रेगपध	सानीधप	गपगरे	गरेसा

राग-पहाडी

ताल-त्रिताल, मात्रा १६ मध्यलय

मोहन करत है रार सखिरी । मानत नादी बात वो मोरी ॥ धृ० ॥
कैसी जाऊं घरमे अकेली । संग चलो तुम सखियां सहेली ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
०				१			+				३
मोऽ	ह	न	कऽ	रऽ	त	है	रा	र	स	खि	रीऽ
गम	प	म	प	मग	मग	सा	सा	सा	सा	ग	साग
मा	न	त	नाऽ	ऽऽ	हीं	ऽ	ऽ	बाऽ	त	बोऽ	मोऽ
ग	म	प	नी	धनी	धप	प	ऽ	ऽ	मप	म	पम
											गम
											गरे
											रेग
											मग

अंतरा

ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
०				१			+				३
कै	सी	ऽ	जाऽ	ऽऽ	ऊंऽ	ऽ	घऽ	रऽ	मे	अ	के
प	प	म	मग	रेसा	गम	प	मग	मग	सा	सा	ग
											ऽ
											सा
											ऽ

सं ऽ ग च लोऽ ऽऽ तु म स खि यां सऽ हेऽ ऽऽ लीऽ ऽऽ
 ग म प नी धनी धप प प म प म पम गम गरे रेग मग

राग—भीमपलास

इस रागमें गंधार, मध्यम और निषाद यह स्वर कोमल हैं. रिषभ और धैवत यद् स्वर तीव्र हैं. आरोहमें रिषभ और धैवत वर्ज हैं. दिनके तिसरे प्रहर में यह राग गाया जाता है. शृंगार रस प्रधान यह राग है.

आरोह—सा ग म् प नि सा

अवरोह—सा नि ध प म् ग रे सा

जाती—ओढव संपूर्ण

वादी—मध्यम

संवादी—षड्ज

मुख्य अंग—नि सा म् ग् म् प नि ध प म् प ग् म् ग रे सा ऽ

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	१	०	३
सा नि सा ग्	म् प ग् म्	प नि ध प	म् ग् रे सा
म् ग् ऽ म्	प ग् ऽ म्	प नि सा नि	ध प म् ग्
सा नि प नि	सा ग् म् प	मग् ऽ ऽ म्	ग् रे सा ऽ॥
प म् ऽ प	मग् ऽ म् ऽ	प नि ऽ प	नि ऽ सा ऽ
नि ऽ सा ऽ	ग् ऽ रे ऽ	सा ऽ नि ऽ	प सा नि सा ऽ
सा ऽ नि ध	प ऽ म् प	मग् ऽ ऽ म्	ग् रे सा ऽ॥

राग—भीमपलास

लक्षणगीत, ताल—एकताल, मात्रा १२, मध्यलय

मधुर मधुर भीमपलास । गंधार, मध्यम, निषाद कोमल । रिषभ, धैवत
तीव्र लगत । आरोही री, ध वर्ज । अवरोही स्वर संपूरन ॥ धृ० ॥ मध्यम वादी
संवादी षड्ज । ओडव संपूर्ण जाती । दिनमणि तृतीय प्रहरमें । शृंगार रसे
विलास ॥ १ ॥

आस्ताई

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
म	धु	र	म	धु	र	भी	म	पड	ला	ड	सा
नि	नि	नि	सा	सा	सा	सा	ग	मुग	रे	सा	सा
गं	धा	र	म	ध्य	म	नि	षा	द	को	मड	ल
ग	ग	ग	म्	म्	म्	नि	ध	प	प	मुग	ग
रि	ष	भ	धै	व	त	ती	ड	ब्र	ल	गड	त
ग	म्	ग	ध	प	म्	म्	प	म्	प	मुग	ग
आ	डड	रो	ड	ही	ड	री	ड	ध	व	ड	ज
सा	मुग	म्	प	नि	ड	नि	ध	ध	ध	प	प
अ	व	रो	ही	ख	र	सं	ड	पू	ड	र	न
सा	नि	ध	प	म्	प	ग	म्	ग	रे	सा	सा

अंतरा

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
म	ध्य	म	वा	ड	दी	सं	वाड	दीड	ष	ड	डुज
म्	म्	म्	म्	ड	ग	सा	मुग	मुग	रे	सा	सा

(४९)

ओ ऽऽ ड व	सं ऽ पू ऽऽ	र्ण जा ऽ ती
आ म्पू म् प	गू म् प सांनि	नि सां ऽ सां
दि नऽ म णि	तृ ती य प्र	ह र मे ऽ
सांनि सां गू	रै सां नि सां	नि ध प ऽ
शृं गा ऽ र	र स काऽ ऽ	विऽ ला ऽ स
ध प म् म्	म् प पम् गू	म्पू रे सा सा

राग—भीमपलास

ताल—अपताल, मात्रा १०, मध्यलय

भरन जाती जमुना जल । वीचमें मिलगयो नंद कुंवर ॥ धृ० ॥ जाने
 नहीं देत । रोकत टोकत । फोरी गगरिया । करत रार ॥ १ ॥

आस्ताई

धी १	धी	ना	धी +	ना	धी ३	धी	ना	ती ०	ना
भऽ	रऽ	न	जाऽऽऽ	तीऽऽ	ज	मुऽ	ना	जऽ	लऽ
ग्रे	सान्नि	सा	गम्पसां	निधप	ध	पम्	प	म्पू	रेसा
भऽ	रऽ	न	बीऽ	ऽ	च	मे	ऽ	मि	ल
ग्रे	सान्नि	सा	म्प	सां	सां	सां	ऽ	रै	नि
ग	योऽ	ऽ	नंऽऽऽ	ऽ	द	ऽ	कुंऽ	व	रऽ
सां	निध	प	पनिंसांनि	ध	प	ऽ	पध	म्	म्प
भऽ	रऽ	न	जाऽऽऽ	तीऽ	ज	मु	ना	जऽ	लऽ
ग्रे	सान्नि	सा	गम्पसां	निधप	ध	म्	प	म्पू	रेसा

रा.सं.(१)४

(५०)

अंतरा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धा	धा	ना
+		३			०		१		
जा	ऽ	नेऽ	ऽ	न	ही	ऽऽ	देऽ	ऽ	त
म्	प	मृग	ऽ	म्	प	सान्नि	सान्नि	सा	सा
रो	ऽ	कऽ	ऽ	त	टो	ऽ	क	ऽ	त
प	ऽ	सान्नि	सा	रे	न्नि	सा	न्नि	ध	प
फोऽ	ऽऽ	री	ऽ	ग	ग	रिऽ	याऽ	ऽ	ऽ
पन्नि	सान्नि	ध	प	ध	म्	म्प	मृग	रे	सा
कऽ	र	त	राऽ	ऽऽ	र	ऽ	मऽ	रऽ	न
गुरे	न्नि	सा	गृम्	पन्नि	ध	प	गुरे	सान्नि	सा
भाऽऽऽ	तीऽऽ	ज	मु	ना	जऽ	लऽ	भऽ	रऽ	न
गृम्पसा	निधप	ध	म्	प	मृग	रेसा	गुरे	सान्नि	सा

आस्ताईका बिलंपद

धी	धी	ना	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना
१			+		३			०	
१	भऽ	रऽ	न	प	सान्नि	सा	ग	रे	न्नि
२	भऽ	रऽ	न	सान्नि	सान्नि	सान्नि	प	सान्नि	सा
३	भऽ	रऽ	न	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	तीऽ	ऽऽ
	गुरे	सान्नि	सा	गृसा	मृग	पम्	प	मृग	रे

(५१)

मऽ रऽ न गुरे सान्नि सा	जाऽ ऽऽ मग्ग पम्	ऽऽ ऽऽ तीऽ धप सान्निधप	ऽऽ ऽऽ मग्ग रेसा
अंतरेका बिलंपद			
धी ना + जा ऽ मग्ग पम् प सान्नि प सान्नि जा ऽ पम् धप साग्ग म्प	धी धी ना ३ नेऽ ऽ न प सान्नि सान्नि सा ग् रेसा सा मग्ग पम् नेऽ ऽ न सान्नि सा निध निसा निध पम्	ती ना ० ही ऽऽ प सान्नि निध प धप सान्नि ही ऽऽ प म् गुरे सान्नि	धी धी ना १ देऽ ऽ त सा ऽ ऽ म् गुरेसा सा सा मग्ग देऽ ऽ त ग् रे सा साग्ग रेसान्नि

राग—भीमपलास

ताल—एकताल, मात्रा १२, मध्यलय

क्या हूं मैं धनवान । मेरी किसमतसे अबरहुं रहुं बलवान ॥ धृ० ॥
 क्रोध, मद छोडे । मनकी मैल, उतारे । कृष्ण धरे मनमे अब येक ध्यान
 ॥ १ ॥

आस्ताई

धी धागे त्रक ० ऽऽ हूं ऽ मग्ग म् प	तू ना क ता ४ ० मैं ऽऽ ध न ग् साग्ग म् ग्	धागे त्रक धी ना १ २ वा ऽ ऽ न रे सा ऽ नि
--	---	--

(५२)

मेऽ ऽ रीऽ ऽ
 सांनिऽ सांनिऽ सां
 रऽ ऽऽ हूं रऽ
 पन्निऽ धप म् म्प
 क्याऽ ऽऽ हूं ऽ
 सा म्गु म् प

कि सऽ म त
 प सांनिऽ सां नि
 ऽऽ हूं वऽ लऽ
 धप ग् गुम् पम्
 मै ऽऽ ध न
 ग् सागु म् ग्
 अंतरा

से ऽ अ
 ध प प
 वा ऽ ऽ
 ग् रे सा
 वा ऽ ऽ
 रे सा ऽ

धीं धीं धागेऽ त्रक
 + ०
 का ऽ म क्रोऽ
 म् ऽ प सांनिऽ
 म नऽ कीऽ ऽ
 प सांनिऽ निऽसां रे
 कृऽ ऽ ण्ण धऽ
 धप म् प सांनिऽ
 येऽ ऽऽ क व्याऽ
 पन्निऽ धप म् म्प

तू ना क ता
 ४ ०
 ऽ ध म दऽ
 ऽ निऽ प सांनिऽ
 मै ऽ लऽ उऽ
 निऽ ऽ पन्निऽ सांनिऽ
 रेऽ ऽ म न
 सांनिऽसां निऽ निऽ
 ऽऽ न भऽ गऽ
 धप ग् गुम् पम्

धागेऽ त्रक धीं
 १ २
 छो ऽ डे
 सां ऽ सां
 ता ऽ रे
 ध ऽ प
 मेऽ ऽ अ
 धप ध प
 वा ऽ ऽ
 ग् रे सा

आस्ताईकी तानें

धीं धीं धागेऽ त्रक
 + ०
 १ क्या ऽऽ हूं ऽ
 २ क्या ऽऽ हूं ऽ

तू ना क ता
 ४ ०
 मै ऽ सागु म्प
 सागु म्प निऽसां निऽध

धागेऽ त्रक धीं ना
 १ २
 गुम् गुरे सांनिऽ सां
 पम् गुरे सांनिऽ सां

(५३)

क्या SS झां S	मै S साग् म्प	गम् प ग् रेसा
क्या SS झां S	साग् म्प साग् म्प	साग् म्प गुरे सानि
क्या SS झां S	मै S ध नS	SS वाS SS न
सा म्प म् प	ग् S सा ग्म	पम् गुरे सानि सा

अंतरेकी तानें

धीं धागे त्रक	तू ना क ता	धागे त्रक धीं ना
०	४ ०	१ २
S म क्रोS	S ध म दS	छो S डे S
ग् म्प निसा निध	पम् ग्म पन्नि सा	S प सानि सा
नि सानि धप धप	म्प ग्म गुरे सानि	सा ग् रे सा
ग् म्प रेसा म्प	पम् ग्म पन्नि धप	सानि धप सानि सा
का S म क्रोS	S ध म दS	छो S डे S
ग् म्प निसा गुरे	सानि सानि धप म्प	रेसा साग् म्प ग्म
का S म क्रोS	S ध म दS	छो S डेS SS
म् S प सानि	S नि प सानि	सा S निध पम्
गुरे सानि सा साग्	म्प निसा पन्नि सा	पन्नि सा पन्नि सा

राग-भीमपलास

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

बिरजमे धूम मचाई कान्ह । कैसे सखि जाऊं अपने धाम ॥ धृ० ॥
 सखियां मिल लाज लेत है । अखियन परत गुलाल ॥ १ ॥

(५४)

आस्ताई

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं न
 ० १ + ३
 बि र ज मेऽ ऽ धू ऽ म म चा ऽ ईऽ
 नि ध प म्गु म् प ऽ प प ग् सा ग्म
 का ऽ न्ह ऽ कै से स खि जा ऽ ऽ ऊं अ पऽ ने
 ग् रे सा ऽ रे रे नि सा सां नि ऽ नि प सांनि सां
 धाऽ ऽऽ म बि र ज मेऽ ऽ
 सांनि धप प नि ध प म्गु म्

अंतरा

ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना तीं तीं ना ना धीं धीं न
 + ३ ० १
 स ब स खिऽ या ऽ मि ल ला ऽऽ ज ले ऽ त है
 ग् म् प सांनि नि सां सां सां प सांनि सां ग् रे सां सां
 अ खि यऽ न प रऽ त गु लाऽ ऽ ल बि र ज मेऽ
 प प म्गु म् प सांनि नि सां नि धप प नि ध प म्गु

राग—भीमपलास

तराना, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, द्रुतलय

अततन तानोम तन देरेना । तन देरेना, देरेना देरेना दिरदिर
 दिर देरेना । तौम तन दीमतन देरेतन ननन्न तदियरे तदेर्ना ॥ धृ० ॥
 देर्ना तन तदेर्ना देर्ना । तद्रेदानी द्रेद्रेदानी भास्करका, ये शिष्य कृष्ण,
 तराना ॥ १ ॥

(५५)

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
अ त तऽ न	ताऽ नो म् तऽ	न देऽ ऽ रे	ना ऽ ऽ ऽ
नि सा म्गु म्	सा नि ध प पम्	ग् गुम् प म्	प ऽ ग् ऽ
त न दे रे	ना ऽ ऽ ऽ	दे रे ना ऽ	दे रे ना ऽ
म् ग् रे रे	सा ऽ ऽ ऽ	नि नि नि ऽ	सा सा सा ऽ
दिरदिर दिर दिर	देऽ रे ना ऽ	तो म त न	दीऽ ऽम् त न
सासाग्गु म्प प	म्गु ग् रे सा	सा नि नि नि	पनि सा सा सा
दे रेऽ त न	न न न न	त दीऽ यऽ रेऽ	त देऽ ऽ नी
प सा नि रे नि	सा नि ध प	प सा नि सा नि ध प	ध पम् प ग्

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
दे ऽ नी देऽ	ऽ नी त नऽ	त दे ऽ नी	दे ऽ नी ऽ
म् ऽ प सा नि	ऽ नि प सा नि	सा सा ऽ रे	नि सा सा ऽ
त द्रे दा नी	द्रे द्रे दा नी	भा स्कर का थे	शिष्यकृ ऽ ण्ण बां
ग् ग् रे सा	नि सा नि नि	नि सा नि ध प	ध पम् ऽ प ग्
वेऽ ऽ त रा नाऽ	अ त तऽ न	ताऽ नो म् तऽ	न देऽ ऽ रे
ग्गु पप ग् रे सा	नि सा म्गु म्	सा नि ध प पम्	ग् गुम् प म्

राग-धानी

इस रागमें गंधार, मध्यम और निषाद यह स्वर कोमल है. रिषभ स्वर तीव्र हैं. किन्तु रिषभ स्वर आरोहके तार सप्तमें लेनेकी प्रथा है. धैवत स्वर इस रागमें वर्ज है. दिनके तिसरे प्रहरमें यह राग गाया जासा है. भक्तिरस प्रधान यह राग है.

आरोह—नि सा ग् म् प नि सा

अवरोह—सा नि प म् ग् रे नि सा

जाती—ओडव-षाडव

वादी—गंधार

संवादी—निषाद

मुख्य अंग—ग् म् प नि सा नि प म् ग् ऽ रे नि सा ग् ऽ सा ऽ

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना धीं धी ना १	ना धीं धी ना +	ना धीं धी ना ३	ना तीं तीं ना ०
<u>नि</u> सा	ग् <u>ऽ</u> ग् सा	ग् म् प <u>नि</u>	प <u>नि</u> सा <u>नि</u>
प <u>नि</u> प म्	ग् <u>ऽ</u> <u>ऽ</u> <u>ऽ</u>	ग् म् प <u>नि</u>	प <u>नि</u> प म्
ग् म् प म्	ग् म् ग् रे	प म् ग् रे	सा <u>ऽ</u> सा <u>नि</u>
सा <u>ऽ</u> <u>ऽ</u> <u>ऽ</u> ॥	ग् म् प <u>नि</u>	प <u>नि</u> सा <u>ऽ</u>	सा रे <u>नि</u> <u>ऽ</u>
सा <u>ऽ</u> <u>ऽ</u> <u>ऽ</u>	ग् म् ग् रे	सा <u>नि</u> सा <u>ऽ</u>	प <u>नि</u> प म्
ग् म् प <u>ऽ</u>	प म् प म्	ग् <u>ऽ</u> रे <u>ऽ</u>	ग् रे सा <u>नि</u>
सा <u>ऽ</u> ॥			

राग-धानी

लक्षणगीत, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

मधुर राग धानी गाये । गंधार, मध्यम, निषाद कोमल । अवरोही रिषभ तीव्र । धैवत यह स्वर वर्जित करिये ॥ धृ० ॥ गंधार वादी निषाद संवादी । ओडव षाडव है जाती । गावत दिन मणि तृतीय प्रहरमें । भक्तिरससे मन भाये ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
म धु र रा	ऽ ग धा ऽ	नी ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ये ऽ
गू गू सा गू	मू प गू मू	प नि प मू	गू रे नि सा
गं धा ऽ र	म ऽ ध्य म	नि षा ऽ द	को ऽ म ल
गू गू ऽ गू	मू ऽ मू मू	नि नि ऽ प	प मू गू गू
अ व रो ऽ	ही ऽ ऽ ऽ	ऽ रि ष भ	ती ऽ ऽ व्र
नि नि प मू	नि प मू गू	ऽ रे रे रे	सा नि सासा
धै ऽ व त	य ह ख र	व ऽ जि त	क रि ये ऽ
सा गू गू सा	गू मू मू गू	मू प मू प	गू सा गू ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
गं धा ऽ र	वां ऽ दी ऽ	नि षा द सं	वा ऽ दी ऽ
गू गू ऽ गू	गू मू गू मू	नि नि प प	मू प गूं ऽ
ओ ऽ ड व	षा ऽ ड व	है ऽ जा ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
गू मू प नि	सां नि प मू	गू मू प नि	सां ऽ ऽ ऽ
गा ऽ व त	दि न म णि	तृ ती य प्र	ह र मे ऽ
गू रे सां नि	सां नि प मू	प नि पं नि	प मू गू ऽ
म ऽ क्ति ऽ	र स से ऽ	म न भा ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
मू प मू प	मू प गू ऽ	गू रे सा नि	सा ऽ ऽ ऽ

राग-धानी

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

छोड़ मोहे गगरिया । मेरी लाज हरत, निसदिन घडि घडि रोकत
॥ धृ० ॥ गोप गोपिमें नाचत खेलत । रमत रमत मोहे, मन रिझावत ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	रीऽ ऽऽ याऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
गु ऽ सा गु	म् प गु म्	पनि सा नि प नि पम्	गुम् गुरे सानि सा
छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	रीऽ ऽऽ या ऽ	मे रि छाऽऽ
गु ऽ सा गु	म् प गु म्	पनि सा नि प ऽ	प नि प नि सा
ज ह र त	नि स दि न	घऽ डीऽ घऽ डीऽ	रो ऽ क त
नि सा नि प	गु म् प नि	नि सा सा नि प नि पम्	गु रे नि स
छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	रीऽ ऽऽ याऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
गु ऽ सा गु	म् प गु म्	पनि सा नि प नि पम्	गुम् गुरे सानि सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	ना ऽ च त	खे ऽ छ त
म् ऽ प नि	सा नि सा ऽ	नि रे सा रे	नि ऽ सा सा
र म त र	म त मो हे	मऽ ऽऽ नऽ रि	झा ऽ व त
सा गु सा रे	नि सा नि प	गुम् प नि पम् प	गु रे नि सा

(५९)

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	रीऽ ऽऽ याऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
१ छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	रीऽ ऽऽ प ऽ	गम् पन्नि पम् गुरे
२ छो ऽ ड मो	ऽ हे ग ग	री ऽ गम् पन्नि	सान्नि पम् गुरे निसा
३ छो ऽ ड मो	ऽ हे गम् गम्	पन्नि सान्नि प ऽ	गम् पन्नि पन्नि सा
४ छो ऽ ड मो	ऽ हे गम् गुरे	न्नि सा गम् पन्नि	पम् गुरे नि सा
५ छो ऽ ड मो	ऽ हे गम् पन्नि	सा नि प नि पम्	गू रे सान्नि सा

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	ना ऽ च त	खे ऽ ल त
६ गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	सान्नि पम् गुरे निसा	गू सा गू सा
७ गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	सान्नि पम् गुरे निसा	गम् पन्नि सान्नि सा
गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	ना ऽ च त	खे ऽ ल त
८ पन्नि सान्नि गम् गुरे	न्नि सा पन्नि सान्नि	पन्नि पम् गम् पन्नि	पन्नि सान्नि गुरे नि सा
९ गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	नि ऽ सान्नि सान्नि	पम् गुरे निसा गू सा
गो ऽ प गो	ऽ पि मे ऽ	ना ऽ च त	खे ऽ ल त
सान्नि गम् गुरे सान्नि	पम् पम् गुरे गुरे	सान्नि सान्नि गम् पम्	पन्नि पन्नि सान्नि सान्नि

राग-धानी

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

काननमें तोरि मुरलीकी धुन सुन भनकपडी मोरे ॥ धृ० ॥ मन उलझे

कैसी सुव पाऊ श्यामसुंदर मोरे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
का ऽ न न	मे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	तो रि सु र
गु ऽ गु सा	गु म् प नि	प नि सा रे	सा नि प म्
ली ऽ की ऽ	धु न सु न	भ न क प	डी ऽ ऽ मो रे
गु म् गु म्	प नि प म्	गु म् गु रे	सागु रे सा नि सा
का ऽ न न	मे ऽ ऽ ऽ		
गु ऽ गु सा	गु म् प नि		

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
म न उ ल	झे ऽ कै ऽ	सी ऽ सु ध	पा ऽ ऊं ऽ
म् म् प प	नि प नि ऽ	सा ऽ सा रे	नि ऽ सा ऽ
श्या ऽ म सुं	द र मो रे		
म् ऽ गु सा	नि प म् प		

(६१)

राग-भैरव

इस रागमें रिषभ, मध्यम और धैवत यह स्वर कोमल हैं. गंधार और निषाद स्वर तीव्र है. यह राग संपूर्ण हैं. प्रातःकालके पहिले प्रहरमें यह राग गाया जाता है. गंभीर रस प्रधान यह राग है.

आरोह-सा रे ग म् प ध् नी सा

अवरोह-सा नी ध् प म् ग रे सा

मुख्य अंग-सा ऽ ग म् नीध् ऽ प म् ग म् गुरे ऽ सा ऽ

जाती-संपूर्ण
वादी-धैवत
संवादी-रिषभ

सुरावट, ताल-एकताल, मात्रा १२

धीं धीं धागे त्रक

तू ना क ता

धागे त्रक धीं ना

+

०

४

०

१

२

ग म् प म्

ग म् गुरे सा

नी ध् नी सा

गुरे गुरे सा ऽ

ग म् प म्

ग म् नी ध्

नी सा नी ध्

प ऽ म् प

ग म् गुरे सा ॥

ग म् ग म्

नी ध् नी सा

नी सा नीसा रेसा

नी ध् प ऽ

ग म् गुरे सा

सा नी ध् प

म् प ग म्

पप म्प ग म्

पम् गुरे सा ऽ ॥

राग-भैरव

लक्षणगीत, ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

शिवगण गावत राग भैरव । रिषभ, मध्यम और धैवत कोमल । गंधार, निषाद यह है स्वर तीव्र । संपूरन जातीका भैरव ॥ धृ० ॥ वादी धैवत संवादी रिषभ । प्रात समयमें गुनीजन गावत । गंभीर रस का प्रभाव ॥ १ ॥

(६२)

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
शि व ग णऽ	गाऽ ऽ व त	रा ऽ ऽ गऽ	भै ऽ र व
ग रे ग पम्	गरे ऽ रे सा	सा ऽ ऽ नीध्	सा ऽ सा सा
रिऽ ष भ म	ऽ ध्य ऽ म	धैऽ ऽ व त	को ऽ म ल
गरे रे रे म्	ऽ म् ऽ म्	नीध् ऽ ध् प	प ऽ म् म्
गं धा र नि	षाऽ द य ह	है ऽ स्वर	ती ऽ ऽ ब्र
ग ग ग नी	नीध् ध् प प	प ध् म् प	म् ग ऽ ग
सं ऽ पू ऽ	र न जा ऽ	ती ऽ का ऽऽ	भैऽ ऽ र व
ग म् प ध्	नी सा नी ध्	प म् ग पम्	गरे ऽ रे सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
वा ऽ दी ऽ	धैऽ ऽ व त	सं वा ऽ दी	ऽ रिऽ ष भ
म् म् म् ऽ	नीध् ऽ ध् प	प प ऽ म्	ऽ म्ग रे रे
ग्रा ऽ त सऽ	म य में ऽ	गु नी ज न	गा ऽऽ वऽ त
म् ऽ नी नीध्	नी सा सा ऽ	नी सा रे सा	नी सा नी नीध् प
गं ऽ ऽ भीऽ	ऽऽ र र स	का ऽ ऽऽ ग्रऽ	भाऽ ऽऽ ऽ व
नी सा ऽ नीध्	नीध् प म् प	ग म् गम् पम्	गरे गरे ऽ सा

(६३)

राग-भैरव

ताल-एकताल, मात्रा १२, मध्यल्य

दीन दयाल दया करलीनो । मधुसूदन, धरणीधर, भवसागरमें आन
फसे । ये मनुष मात्रका करो उद्धार ॥ धृ० ॥ परब्रह्म, परमात्मा । बलसागर,
भगवंता । शंख चक्र गदाधारि । कृष्ण करत स्मरण । लेत नाम अपार ॥ १ ॥

आस्ताई

धागे	त्रक	धीं ना	धीं धीं धागे	त्रक	तू ना क ता
१		२	+	०	०
दीऽ	SS	न द	या	S ल द	याऽ S कऽ र
पधु	मू	ग म्	प	S प प	नीधु S नीधु ध्
ली	S	नो S	म	धु सूऽ S	दऽ न धऽ रऽ
प	S	प S	ग	म् गरे रे	गरे रे गरे गम्
णीऽ	S	ध र	भ	व सा S	ग र मेऽ S
गरे	S	सा सा	सा	सा ग म्	प प मू ग म्
आ	S	नऽ फऽ	सेऽ S	ये S	मऽ नु ष मा
प	S	नीधु नीधु	नीधु	सा नी ध्	नीधु ध् ध् प
S	त्र	का S	क	SS रोऽ उ	द्वाऽ S S र
म्	प	म् S	ग	पम् गरे रे	गम् प S प

अंतरा

धीं धीं धागे	त्रक	तू ना क ता	धागे	त्रक	धीं ना
+	०	४ ०	१	२	
प	र S	S ह्य पऽ र	माऽ SS	त्मा S	
म्	म् S	S प नीधु ध्	नीधु	नीसा सा S	

(६४)

ब	ल	सा	ऽ	ग	र	भ	ग	वंऽ	ऽ	ता	ऽ
नी	ध्	नी	सा	रे	सा	नी	सा	नीध्	ऽ	प	ऽ
शंऽ	ऽ	ख	च	ऽ	क्र	ग	दाऽ	ऽ	धा	ऽ	रि
नीध्	ऽ	ध्	प	म्	प	म्	गरे	रे	ग	म्	म्
कृ	ऽ	ष्णऽ	क	र	त	स्म	र	णऽ	ले	ऽ	त
ग	म्	गरे	ग	म्	प	ग	म्	गरे	रे	ऽ	सा
नाऽ	ऽ	म	अ	पाऽ	ऽ	ऽ	र	दीऽ	ऽऽ	न	द
गरे	ऽ	सा	सा	गम्	प	ऽ	प	पध्	म्प	ग	म्
या	ऽ	ल	द	याऽ	ऽ	कऽ	र	ली	ऽ	नो	ऽ
प	ऽ	प	प	नीध्	ऽ	नीध्	ध्	प	ऽ	प	ऽ

आस्ताईका विलंपद

धागे	त्रक	धीं	ना	धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	
१		२		+		०		४		०		
१	दीऽ	ऽऽ	न	द	या	ऽ	ऽ	ल	नी	ध्	सा	नी
	गरे	ऽ	सा	ऽ	नी	ध्	नी	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ
२	दीऽ	ऽऽ	न	द	या	ऽ	ऽ	ल	गरे	ऽ	ऽ	ऽ
	सा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	सा	नी	सा	गरे	ऽ	ऽ	ऽ
	दीऽ	ऽऽ	न	द	या	ऽ	ल	द	याऽ	ऽ	कऽ	र
३	ली	ऽ	नो	ऽ	ग	रे	म्	ग	प	म्	ग	म्
४	दीऽ	ऽऽ	न	द	या	ऽ	ल	गम्	गरे	गम्	नीध्	प

(६५)

अंतरेका विलंपद

धीं धीं धागे त्रक

+ ०

प र ऽ ब्र

ग म् नी ध्

प र ऽ ब्र

म् म् ऽ प

ऽ ऽ ऽ त्माऽ

प ग म् गुरे

प र ऽ ब्र

म् म् ऽ प

त्मा ऽ ऽऽ ऽऽ

सां ऽ नीसा नीसां

प र ऽ ब्र

गम् गुरे पध् म्प

तू ना क ता

४ ०

ऽ ह्य पऽ र

प नीध् ऽ प

ऽ ह्य पऽ र

ऽ प नीध् ध्

ऽऽ ऽ ऽ ऽ

गुरे ग म् नी

ऽ ह्य पऽ र

ऽ प नीध् ध्

ऽऽ ऽ ऽऽ ऽऽ

नीध् प म्प म्प

ऽ ह्य पऽ र

सां नीसां गम् गुरे

धागे त्रक धीं ना

१ २

माऽ ऽऽ त्मा ऽ

म् प ग म्

माऽ ऽ ऽ ऽ

सां नी ध् प म्

ऽ ऽ ऽ ऽ

ध् सां ऽ सां

मा ऽ ऽऽ ऽऽ

सां ऽ गुरे गुरे

ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ

गम् नीध् नीध् सां

माऽ ऽऽ त्मा ऽ

नीसां धुनी पध् म्प

राग-भैरव

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

प्रभू दातारे न करें मन जीवन घडी पल छीन ॥ धृ० ॥ जो तुम छाये

नधन लछमी । दूध पूत बहु तेरा । वाको नाम भज गुरुके नाम ॥ १ ॥

रा.सं.(१)५

(६६)

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
प्रऽ भूऽ	दाऽ ऽ ऽऽ ऽ	ता ऽ ऽऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
मृग मृग	गरे ऽ गरे ऽ	सा ऽ नीसा ऽ	मृ ऽ ऽ ऽ
ऽ ऽ न क	रे ऽ मऽ न	जी ऽ व न	घऽ डी प ल
ऽ ऽ ग ग	मृ ऽ नीध् ध्	नी सा सा सा	नीध् नी ध् प
छी न प्रऽ भूऽ			
प मृ मृग मृग			

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
	जो ऽ तु म	छा ऽ येऽ ऽ	अ न ध न
	मृ ऽ मृ मृ	मृ ऽ नीध् ऽ	सा सा सा सा
छ छ मी ऽ	दूऽ ऽ ध पू	ऽ त ब हु	ते ऽ ऽऽ ऽऽ
सा रे सा ऽ	नीध् ऽ ध् नी	सी सा सा रे	सा ऽ नीसा रेसा
रा ऽ ऽ ऽ	वा कोऽ ऽ ना	ऽ म म ज	गु रु केऽ नाऽ
नीध् ऽ प ऽ	मृ नीध् ऽ ध्	प प मृ प	ग मृ पमृ गरे
ऽ म प्रऽ भूऽ			
ऽ सा मृग मृग			

(६७)

राग-जोगिया

इस रागको रिषभ, मध्यम, धैवत यह स्वर कोमल है, और निषाद यह स्वर तीव्र है। क्वचित् निषाद कोमल और गंधार तीव्र लगानेकी प्रथा है। दिनके पहले प्रहरमे यह राग गाया जाता है। भक्ति और करुण रस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे म् प ध् सा

अवरोह—सा नी ध् प म् ऽ रे ऽ सा

जाती—ओडव षाडव

वादी—मध्यम

संवादी—षड्ज

मुख्य अंग—सा रे म् म् प प ध् ध् सा सा नी ध् प ध् म् ऽ गुरे सा ऽ

सुरावट, ताल—त्रिताल, मात्रा १६

ना धीं धी ना	ना धी धी ना	ना धीं धीं ना	ना ती ती ना
१	+	३	०
सा रे म् प	ध् ऽ ध् ऽ	ध् प म् ऽ	रे म् प ऽ
म् प ध् ऽ	म् प ध् सा	नी ध् प म्	प म् रे सा ॥
ध् ध् प म्	प ध् रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	सा ऽ नी ध्
म् ऽ प ध्	सा रे म् ऽ	रे ऽ सा ऽ	प ध् रे ऽ
सा ऽ नी ध्	म् प ध् ऽ	म् प ध् म्	रे ऽ सा ऽ ॥

राग-जोगिया

लक्षणगीत, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

राग जोगी जोगीसम है। रिषभ, मध्यम और धैवत कोमल। निषाद यह स्वर तीव्र है ॥ धृ० ॥ वादी मध्यम, संवादी षड्ज। दिन समयीके प्रथम प्रहरमें। भक्ति, करुण रससे गाते है ॥ १ ॥

(६८)

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
रा ऽ ऽ ग	जो ऽ ऽ गी ऽ	जो ऽ ऽ गी ऽ	स म है ऽ
म् ऽ ऽ म्	गरे ऽ सा ऽ	रे प म् ऽ	रे रे सा ऽ
रि ष भ म	ध्य म औ र	धै ऽ व त	को ऽ ऽ म ल
रे रे रे म्	म् म् प प	ध् ऽ ध् ध्	धुप म् म् म्
नि षा ऽ द	य ह स्वर	ती ऽ ऽ व्र	है ऽ ऽ ऽ
नी नी ऽ नी	ध् प म् म्	प ऽ ऽ म्	म् ऽ गरे सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
वा ऽ दी ऽ	म ऽ ध्य म	सं वा ऽ ऽ दी	ष ऽ ऽ डज
सा रे सा रे	म् ऽ म् म्	म् म् गरे रे	सा ऽ ऽ सा
दि न स म	यीं ऽ के ऽ	प्र थ म प्र	ह र में ऽ
रे रे म् म्	प ऽ ध् ऽ	सां सां सां रे	सां सां सां ऽ
म ऽ क्ति क	रु ण र स	से ऽ ऽ गा ऽ	ते ऽ ऽ है ऽ
सां ऽ नी ध्	प ध् म् म्	म्प धुप म् ऽ	गरे ऽ सा ऽ

राग-जोगिया

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

सबको अपनाहि धर्म प्यारा । ओ धर्म का तत्त्व समझकर चलनेवाला
 न्यारा ॥ धृ० ॥ धर्म धर्म मे भेद वहोत है । ईश्वर येक अकारा भक्तिमार्ग
 येक धर्म है । देश भक्तिका प्यारा ॥ १ ॥

(६९)

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
स ब को ऽ	अ प नाऽऽऽ	हि ध ऽ म	प्या ऽ रा ऽ
सा रे म् ऽ	म् प म्प ध्प	म् रे सा रे	सा ऽ सा ऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ ध	ऽ म का ऽ	त ऽ त्व स
ऽ रे सा ऽ	म् ऽ ऽ प	ऽ ध् प ऽ	सा ऽ नी ध्
म झ क र	च ल ने ऽ	वाऽऽऽ ला ऽ	न्याऽऽऽ रा ऽ
प ध् प प	ध् ध् ध् ऽ	पध् पम् म् ऽ	म्प ध्प म् रे
स ब को ऽ	अ प नाऽऽऽ	हि ध ऽ म	प्या ऽ रा ऽ
सा रे म् ऽ	म् प म्प ध्प	म् रे सा रे	सा ऽ सा ऽ
स ब को ऽ			

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
घ ऽ म ध	ऽ म मे ऽ	मे ऽ द ब	हो त है ऽ
म् ऽ म् प	ऽ प ध् ऽ	सा ऽ सा रे	सा सा सा ऽ
ई ऽ श्व र	ये ऽ क अ	काऽऽऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ
सा रे सा रे	सा ऽ सा सा	नीधु ऽ ऽ ऽ	प ध् म् ऽ
म ऽ क्ति मा	ऽ गी वो ऽ	येऽ ऽ क ध	ऽ म है ऽ
ध् ऽ ध् प	ऽ ध् म् ऽ	म्प ध् म् रे	सा रे सा ऽ
दे ऽ श म	ऽ क्ति काऽऽ	प्याऽऽऽ रा ऽ	स ब को ऽ
सा ऽ रे म्	ऽ प पध् नि	पध् पम् म् ऽ	सा रे म् ऽ

आस्ताईका विलंपद

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
स ब को ऽ	अ प नाऽऽऽ	हि ध ऽ र्म	प्या ऽ रा ऽ
१ ध् ऽ सा ऽ	रे ऽ म् ऽ	गरे ऽ म् प	ध् म् गरे सा
२ रे ऽ म्प ध्	म् ऽ रे ऽ	रे म् प ध्	म् रे सा रे
३ स ब को ऽ	अ प नाऽऽऽ	हि ध ऽ र्म	प्याऽ ऽ राऽ ऽ
			सारे म् रेम् प
म्प ध् पध् पध्	म् ऽ रे ऽ	सारे म् रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ
स ब को ऽ	अ प नाऽऽऽ	हि ध ऽ र्म	प्या ऽ रा ऽ
४ ध् म् पध् सा	सा रे म् म्	रे म्प पध् नि	ध् म् रे सा

अंतरेका विलंपद और तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
ध ऽ र्म ध	ऽ र्म में ऽ	मे ऽ द ब	हो त है ऽ
५ ध् ऽ म् ऽ	पध् सा नीध् ऽ	म् ऽ पध् रे	सा ऽ ऽ ऽ
६ ध ऽ र्म ध	ऽ र्म में ऽ	पध् रे सा ऽ	सानी ध् ध्प म्
७ ध ऽ र्म ध	ऽ र्म में ऽ	सा ऽ पध् सारे	म् रे सासा ध्
ध ऽ र्म ध	ऽ र्म में ऽ	मे ऽ द ब	हों त है ऽ
८ ध् म् म् सासा	रे रे सा सानी ध्	ध् म् रे रे म्प	ध् म् रे सा
९ ध ऽ र्म ध	ऽ र्म में ऽ	मेऽ ऽऽ द बऽ	होऽ तऽ है ऽ
म् ऽ म् प	ऽ ध् पध् सा	सारे म् रे सानी	ध्प म् म् रे सा

(७१)

ध ऽ र्म ध ऽ र्म में ऽ मे ऽ द ब हो त है ऽ
 १० म् रे रे ध् म् सा सा ध् रे रे सा सा ध् म् रे रे सा सा रे म् प ध् म् रे सा

राग-जोगिया

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

भूलो लोग कहे घर मेरा । लोग कहे घर मेरा ॥ धृ० ॥ या घर मे
 तू डोल फिरत है । ना घर मेरा नुं तेरा रे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना			
३				०				१				+						
भू	ऽ	लो	ऽ	लो	ऽ	ग	क	हे	ऽ	घ	ऽ	र	मे	ऽ	रा	ऽ		
म्	ऽ	ग	रे	ऽ	ध्	ऽ	प	ध्	प	म्	ऽ	ग	रे	रे	म्	ऽ	म्	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लो	ऽ	ग	क	हे	ऽ	घ	ऽ	र	मे	ऽ	रा	ऽ		
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध्	ऽ	प	ध्	प	म्	ऽ	ग	रे	रे	ध्	ऽ	ध्	ऽ	
भू	ऽ	लो	ऽ	लो	ऽ	ग	क	हे	ऽ	घ	ऽ	र	मे	ऽ	रा	ऽ		
म्	ऽ	ग	रे	ऽ	ध्	ऽ	प	ध्	प	म्	ऽ	ग	रे	रे	म्	ऽ	म्	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ															

अंतरा

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना		
३				०				१				+					
				या	ऽ	घ	र	मे	ऽ	तुं	ऽ	डो	ऽ	छ	फि		
				म्	ऽ	म्	म्	मू	ध्	प	म्	प	ध्	सा	सा	रे	
र	ऽ	त	ऽ	है	ऽ	ना	ऽ	घ	र	मे	रा	ऽ	नुं	ते	ऽ	रा	ऽ
सा	रे	सा	नी	ध्	प	ध्	ऽ	ध्	ध्	ध्	प	म्	म्	म्	रे	म्	ऽ

राग-जीवनपुरी

इस रागमें गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल है। रिषभ स्वर तीव्र है। दिनके दूसरे प्रहरमें यह राग गाया जाता है। भक्ति और श्रृंगार रस प्रधान यह राग है।

आरोह—सा रे म् प नि ध् सा

अवरोह—सा नि ध् प म् प म्गु ऽ रे सा

जाती—ओडव-संपूर्ण

वादी—धैवत

संवादी—गंधार

मुख्य अंग—सा रे म् प ध् प नि ध् प म् प ध् म् प म्गु ऽ रे सा

सुरावट, ताल—झपताल, मात्रा १०

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
सा रे	म् प नि	ध् प	म् ऽ प
म्गु ऽ	रे सा रे	प म्	ग् रे सा
नि ध्	सा नि ध्	प म्	प ग् रे ॥
म् ऽ	प नि ध्	सा ऽ	नि सा ऽ
सा ऽ	रे सा रे	ग् रे	सा नि ध् प
रे ऽ	सा ऽ रे	नि सा	नि ध् ऽ प
ध् प	ध् म् प	म्गु ऽ	रे सा ऽ ॥

राग-जीवनपुरी

लक्षणगीत, ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

जीवनपुरी है राग सुंदर। ग, म, ध, नि स्वर है कोमल। रिषभ तीव्र रागमें लागत। ओडव संपूरन जाती ॥ धृ० ॥ वादी धैवत संवादी गंधार। दिन समयोंके द्वितीय प्रहरमें। रस है भक्ति और श्रृंगार ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
जी ऽ व न	पु री है ऽ	राऽ ऽ ऽ ग	हुं ऽ द र
सा ऽ रे रे	म् म् प ऽ	निध् ऽ ऽ ध्	प ऽ प प
ग ऽ म ऽ	धऽ ऽ नि ऽ	स्व र है ऽ	को ऽ म ल
गू रे म् ऽ	पध् नि नि ऽ	ध् प प ध्	म् प गू रे
रि ष भ ती	ऽ व रा ऽ	गऽ मे ऽ ऽ	छा ऽ ग त
रे रे रे म्	प प म् प	पम् गू ऽ ऽ	रे ऽ सा सा
ओ ऽ डऽ व	सं ऽ पू ऽ	र न जा ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
म् प निध् ध्	सां ऽ नि ध्	प प म् प	म् गू रे सा

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
वा ऽ दी ऽ	धैऽ ऽ व त	सं वा ऽ दी	गंऽ धा ऽ र
म् ऽ प ऽ	निध् ऽ ध् ध्	प प ऽ ध्	म्य गू ऽ गू
दि न स म	यी ऽ केऽ ऽ	द्रिऽ ती य प्र	ह र में ऽ
रे रे म् म्	प ऽ निध् ऽ	निध् ध् ध्	सां सां सां ऽ
र स है ऽ	भऽ ऽ क्ति ऽ	औ ऽ र श्च	ऽ गा ऽ र
नि सां रे सां	निध् ऽ प ऽ	ध् ऽ प म्	प गू रे सा

राग-जीवनपुरी

ताल-झपताल, मात्रा १०, मध्यलय

आई रंगीली घर बीच ठाडी । देखत नैना सुध बिसराई ॥ धृ० ॥
चंद्र बदन देख । मोतीयन माला । शृंगार करके मनहर छिनी ॥ १ ॥

आस्ताई

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
आ ऽ	ई ऽ रंऽ	गीऽ ऽ	लीऽ ऽ ऽ
सा रे	म् प निऽ	पम् प	म्ग् रे सा
घ र	बी ऽ च	ठा ऽ	डी ऽ ऽ
ग रे	म् ऽ म्	म् प	प ऽ ऽ
दे ऽ	ख ऽ त	नै ऽ	नाऽ ऽ ऽ
रे ऽ	सा ऽ रे	नि सा	निऽ ऽ प
सु ध	बि ऽ सऽ	राऽ ऽ	ईऽ ऽ ऽ
ध् म्	प ध् निऽ	पम् प	म्ग् रे सा

अंतरा

धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
+	३	०	१
चं ऽ	द्रऽ ऽ ब	द न	दे ऽ ख
म् प	निऽ ऽ ध्	सा सा	सा ऽ सा

मो	ती	यऽ	ऽ	नऽ	मा	ऽ	लाऽ	ऽ	ऽ
ध्	सा	साँ	गँ	रैसाँ	नि	साँ	निध्	ऽ	प
श्रं	ऽ	गा	ऽ	र	क	र	केऽ	ऽ	ऽ
प	रै	साँ	ऽ	रै	नि	साँ	निध्	ऽ	प
म	न	हऽ	ऽ	रऽ	लीऽ	ऽ	नीऽ	ऽ	ऽ
ध्	म्	पध्	नि	धुप	पम्	प	मग्	रे	साः

आस्ताईका विलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	नाः
+		३			०		१		
आ	ऽ	ई	ऽ	रंऽ	गीऽ	ऽ	लीऽ	ऽ	ऽ
१ निध्	सा	रेसा	ग	रे	सा	निसा	निध्	निध्	सा
२ निध्	सा	रेसा	ग	रे	सा	रे	म्	प	मग्
आ	ऽ	ई	ऽ	रंऽ	गीऽ	ऽ	लीऽ	ऽ	ऽ
३ सा	रे	म्	प	निध्	निध्	प	मप	मग्	रे
४ सा	रे	म्	प	निध्	साँ	निध्	प	मग्	रेसा

अंतरेका बिलंपद

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
+		३			०		१		
चं	ऽ	द्रऽ	ऽ	ब	द	न	दे	ऽ	ख
५ म्	प	निध्	ध्	म्	प	निध्	ध्	साँ	साँ
६ नि	ध्	प	म्	प	सा	रे	म्	प	निध्

७ निधु सानि	रैसा ग् रैसा	निधु सा	रै ध् प
चं ऽ	द्रऽ ऽ ब	द न	दे ऽ ख
८ सा रे	म् प निधु	सा रैसा	ग् रैसा सरे
ध् प	म्प सा ध्	प म्प	म्प रे सा

राग-जीवनपुरी

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

पुजा रघुनाथकी बांधी । चंदन चरचा तिलक लगाकर ॥ धृ० ॥ पीत
बसन और फूलन माला । कुंडल झञ्जन, मुकुट धारिये । कृष्ण कहे अब
दर्शन दीजे ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
पु जाऽ ऽ र धु	ना ऽ ऽ थ	की ऽ बांऽ ऽ	
प म्प ऽ रे सा	रे ऽ ऽ रे	सा ऽ निधु ऽ	
धी ऽ ऽ ऽ चं ऽ द न	च र चा ऽ	तिऽ ल क ल	
सा ऽ ऽ ऽ म् ऽ म् म्	प प प ऽ	धुप नि ध् प	
गाऽ क र पु जाऽ ऽ र धु	ना ऽ ऽ थ	की ऽ ऽ ऽ	
म्प ग रे प म्प ऽ रे सा	रे ऽ ऽ रे	सा ऽ ऽ ऽ	

(७७)

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
पी ऽ त वऽ	स न औ र	फूऽ ऽ ल न	मा ऽ लाऽ ऽ
म् ऽ प निध्	सां सां सां सां	सारें ग् रै सां	नि सां निध् प
कुं ऽ ड ल	झ ल कऽ त	मुऽ कु ट धा	ऽ रि येऽ ऽ
प रै सां रै	नि सां निध् प	धुप नि ध् प	म् प म्गु रै
कृ ऽ ष्ण क	हे ऽ अ ब	दऽ ऽ र्श न	दीऽ ऽऽ जे ऽ
सा ऽ रे म्	प ऽ ध् म्	पध् नि ध् प	म्प ध्प ग् ऽ
ऽ ऽ ऽ पु	जाऽ ऽ र घु	ना ऽ ऽ थ	की ऽ बांऽ ऽ
रे म् ऽ प	म्गु ऽ रे सा	रे ऽ ऽ रे	सा ऽ निध् ऽ

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
धी ऽ ऽ पु	जाऽ ऽ र घु	ना ऽ ऽ थ	की ऽ बांऽ ऽ
१ धी ऽ ऽ ऽ	सारे म्पनिध्सांनि	रैरैसांनिध्प म्प	ग् रेसा रे प
ग् ऽ रेसा पु	जाऽ ऽ र घु	ना ऽ ऽ थ	की ऽ बांऽ ऽ
२ धी ऽ ऽ ऽ	म्गु रेसा सारे म्प	निनिध्प म्प निध्	सांनि रैरैसांनि रैरै
३ सांनिध्प म्गु पु	जाऽ ऽ र घु	नाऽ ऽऽ ऽऽ थऽ	कीऽ बांऽ ऽऽ ऽ
		सारे म्पनिनिध्प	म्प म्गु सारे प

(७८)

४ धी ऽ ऽ पु जा ऽ ऽ र धु ना ऽ ऽ ऽ ऽ थ की ऽ बां ऽ ऽ
 गू रेसा ऽ प मूगू ऽ रे सा सारे मूप निधू सा निधू पमू गुरे सारे
 ५ धी ऽ ऽ पु जा ऽ ऽ र धु ना ऽ ऽ थ की ऽ बां ऽ ऽ ऽ
 सा ऽ ऽ रेमपधू मू
 ६ धी ऽ ऽ ऽ ऽ पु जा ऽ ऽ र धु ना ऽ ऽ थ की ऽ ऽ ऽ
 मूपनिधूसा ऽ

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना ना धीं धी ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 ६ पी ऽ त वऽ स न औ र सानिधूप मगू रेसा सारे मूप निधू सा
 ७ पी ऽ त वऽ स न औ र सारे मूगू रेसानिधू पमू गुरे सारे मूप
 ८ पी ऽ त वऽ स न औ र सानिसानिधूपमू पमू गू गू रेसा
 ९ पी ऽ त वऽ स न औ र फूऽ ऽ ल न मा ऽ लाऽ ऽ
 मूगू रेसा निधू पमू रेरेसानि मूगू रेसा निधू पमू गुरे सारे मूप निधूसानि रे

राग—जीवनपुरी

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

कानन कर मुसे रार अबरे । जाकर हूं पुकार लंगर झगरा । गगरिया
 मोहे दीनी डार ॥ धृ० ॥ अंछोरा गहेलो जाय । जशोदासे कहियो जाय । अपने
 लंगर धीटको समाले ॥ १ ॥

(७९)

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
का ऽ न न	क र मुऽ सेऽ	राऽ ऽ ऽ र	अ ब रे ऽ
नि ऽ ध् प	ध् म् पध् म्प	मग् ऽ ऽ रे	सा रे म् प
जा ऽ ऽ ऽ	कऽ र हूं पु	काऽ ऽ र छं	ग र झ ग
सा ऽ ऽ ऽ	सांनि ध् प प	मग् ऽ ग् म्	ग् रे रे रे
रा ऽ ग ग	रि या मो हे	दीऽ ऽ नी ऽ	ढाऽ ऽऽ रऽ ऽ
सा ऽ सा रे	म् म् प प	निध् ध् सा ऽ	निऽसां रेऽसां निध् प

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
अं छो रा ग	हे छो जाऽ य	ज सो दाऽ से	कहि यो जा य
म् म् म् म्	प प निध् ध्	म् प निध् ध्	सांसां सां सां सां
अ प ने छं	ग र धीऽ ऽ	ट को ऽ स	माऽ ऽऽ लेऽ ऽ
म रे रे रे	रे सां सां रे	रे सां ऽ सां	निऽसां रेऽसां निध् प

राग-भैरवी

इस रागमें रिषभ, गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद यह स्वर कोमल है। यह राग संपूर्ण है। दिनके प्रथम और दूसरे प्रहरमें यह राग गाया जाता है। श्रृंगार रस प्रधान यह राग है।

आरोह-सा रे ग् म् प ध् नि सां
 अवरोह-सां नि ध् प म् ग् रे सा
 मुख्य अंग-सा ग् म् प ध् ऽ म् ग् रे ऽ ग् रे सा ऽ

जाती-संपूर्ण
 वादी-धैवत
 संवादी-गंधार

(८०)

सुरावट, ताल-एकताल, मात्रा १२

धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	ता	धागे	त्रक	धीं	ना
+		०		४		०		१		२	
ग्	ऽ	रे	सा	नि	सा	ध्	नि	सा	ऽ	ऽ	ऽ
ग्	ऽ	म्	ग्	ऽ	म्	ग्	रे	सा	नि	सा	ऽ
सा	ग्	म्	प	ग्	म्	ध्	नि	ध्	ऽ	प	ऽ
ध्	ऽ	प	म्	ग्	ऽ	प	म्	ग्	रे	सा	ऽ ॥
ध्	ऽ	प	म्	ग्	म्	ध्	नि	सा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	नि	सा	ग्	रे	ऽ	सा	ऽ	ग्	ऽ	रे	सा
ध्	ऽ	प	ऽ	ग्	म्	ध्	प	म्	ग्	रे	सा ॥

राग-भैरवी

लक्षणगीत, ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

शृंगार रसकी रानी यह भैरवी रागिनी । वादी धैवत संवादी गंधार
संपूर्ण स्वरोंकी रंजनी ॥ धृ० ॥ दिनमणी प्रथम द्वितीय प्रहरमें । सुखकर ऐसी
गायनी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	धीं	धीं	ना	ना	ना	धीं	धीं	ना
३					०			१					+		
	शृ	ऽ		गा	ऽ	ऽ	र	र	स	की	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ
	ग्	ऽ		ग्	ऽ	ऽ	रे	सा	रे	सा	नि	ध्	नि	सा	ऽ
ऽ	ऽ	य	ह	मै	ऽ	र	वी	ऽ	रा	ऽ	गि	नी	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	ग्	ग्	ग्	म्	प	म्	ग्	सा	ऽ	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ

(८१)

वा ऽ दी ऽ	धै ऽ व त	सं वा ऽ दी	गं धा ऽ र
प ऽ प ऽ	ध् ऽ ध् ध्	प प ऽ म्	गू गू ऽ गू
सं ऽ पू ऽ	र्ण स्वरों ऽ	की ऽ ऽ ऽ	रं ऽ ऽ ज
सा रे गू म्	म् म् गू प	म् ऽ ऽ ऽ	गू ऽ ऽ रे
नी ऽ ऽ ऽ			
सा ऽ ऽ ऽ			

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	धीं धीं ना ना	ना धीं धीं ना
३	०	१	+
	दि न म णि	प्र य म ऽ	द्वि ति य प्र
	ध् ध् ध् ध्	ध् म् ध् नि	सां सां सां रे
ह र मे ऽ	सु ख क र	ऐ ऽ सी ऽ ऽ	ऽ गा ऽ य
सां नि सां ऽ	प नि ध् प	म् प म् गू गू	ऽ गू ऽ रे
नी ऽ			
सा ऽ			

राग-भैरवी

ताल-त्रिताल, मात्रा १६, मध्यलय

खेलत है गिरिधारी । रंग उडावत भर पिचकारी ॥ धृ० ॥ फेकत लाल
गुलाल अंगमो । सूरत कैसी बनाई । नहि खेले तो हात पकर कर । लाज लेत
मोहे भारी ॥ १ ॥

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
खे ऽ ल त	है ऽ ऽ गि रि	धा ऽ ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
सा ऽ रे सा	निध् ऽ नि नि	सा ऽ नि सा रे	सा ऽ ऽ ऽ

रा.सं.(१)६

रं	ऽ	ग	उ	डा	ऽ	व	त	भ	र	पि	च	का	ऽ	ऽ	री	ऽ
ग्	ऽ	ग्	ग्	ग्	ऽ	ग्	ग्	ग्	म्	ग्	ग्	गुरे	ऽ	सा	ऽ	
खे	ऽ	ल	त	है	ऽ	गि	रि	धा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	ऽ	रे	सा	निध्	ऽ	नि	नि	सा	ऽ	निसा	रे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	

अंतरा

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	
०				१				+				३				
फे	ऽ	क	त	ला	ऽ	ल	गु	ला	ऽ	ऽ	ल	अं	ऽ	ऽ	ग	मो
प	ऽ	प	ध्	प	ऽ	प	ध्	पम्	ग्	ग्	गुम्	पम्	गुरे	सा	ऽ	
सू	ऽ	र	त	कै	ऽ	सि	ब	ना	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
प	ध्	प	प	प	ऽ	ध्	नि	पध्	निध्	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
न	हि	खे	ऽ	ले	ऽ	तो	ऽ	हा	ऽ	त	प	क	र	क	र	
प	प	ध्	ऽ	म्	ऽ	प	ऽ	ग्	ऽ	म्	प	ग्	म्	ग्	ग्	
छा	ऽ	ज	ले	ऽ	त	मो	हे	भा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	
ग्	ऽ	रे	सा	ऽ	रे	सा	सा	निसा	रे	सारे	ग्	रे	ऽ	सानि	सा	

आस्ताईका बिलंपद

ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	
०				१				+				३				
खे	ऽ	ल	त	है	ऽ	गि	रि	धा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	
१	सा	ऽ	निध्	ऽ	नि	ध्	सा	नि	रे	सा	ग्	रे	सा	रे	सा	ऽ
२	खे	ऽ	ल	त	है	ऽ	गि	रि	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रि
	सा	ऽ	रे	सा	निध्	ऽ	नि	नि	ग्	ऽ	रे	ग्	सा	रे	गूसा	सा

(८३)

३खे ऽ ल त है ऽ ऽ गि रि धुनि धुसा निरे साग् रेग् सा रे सा
 ४खे ऽ ल त है ऽ ऽ गि रि साग् साम् ग्प ग्म् सा ग् रे सा
 खे ऽ ल त है ऽ ऽ गि रि धा ऽ ऽ ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ
 ५साम्ग्धुम्निम्धु ग्म् सारे सा ऽ ग् ऽ म्सा ऽ रे ऽ गुसा ऽ

अंतरेका विलंपद

ना तीं तीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना ना धीं धीं ना
 ० १ + ३
 फे ऽ क त ला ऽ ल गु ला ऽ ऽ ल अं ऽ ऽ ऽ ग ऽ मो ऽ
 ६फे ऽ क त ला ऽ ल गु ला ऽ ऽ ल ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
 प ऽ प ध् प ऽ प ध् पम् ग् ऽ ग् प ग्म् साग् प
 ७फे ऽ क त ला ऽ ल गु ला ऽ ल अं ऽ ऽ ऽ ग ऽ मो ऽ
 ग् ऽ रे सा ध् ऽ प म् ग् ऽ म् ग् ऽ म् रे सा
 ८सा ग् म् ध् नि सा ध् ऽ म् ध् ऽ पम् गुरे ऽ गुरे सा
 ९नि सा ग् म् ध् नि सा ध् ऽ म् सा ग् म् नि ध् प
 ग् म् प ग् म् ध् प म् ग् म् प ग् म् ग् रे सा

राग-भैरवी

ताल—त्रिताल, मात्रा १६, मध्यल्य

बात कान सुनियेजी बिनति हमारी । मानो, मानो, नहि तो तुमारी
 करुंगी बुराई ॥ धृ० ॥ प्रेमकिया हमने तुमरीपर । यद नही हमको मिलनकी ।
 बहोत दिननसे आय बसे । मत जावो सुनो बिनति हमारी ॥ १ ॥

(८४)

आस्ताई

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
बाऽ ऽ त का	ऽ नऽ सुऽ निऽ	ये ऽ जी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
घुनि सा सा ध्	प म्गु म्धु पम्	रे ऽ सा ऽ	सा रे सा ऽ
बि न ति ह	मा ऽ री ऽ	मा ऽ नो मा	ऽ नो न हि
ग् म् प म्	रे ऽ सा ऽ	ग् ऽ म् ध्	ऽ नि सा रे
तो ऽ ऽ तु	मा ऽ री ऽ	क रुं गी बुऽ	राऽ ऽ ईऽ ऽ
नि सा ऽ ग्	रे ऽ सा ऽ	नि सा सा रे सा	निध् प म्गु म्
बाऽ ऽ त का	ऽ नऽ सुऽ निऽ	ये ऽ जी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
घुनि सा सा ध्	प म्गु म्धु पम्	रे ऽ सा ऽ	सा रे सा ऽ

अंतरा

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
प्रे ऽ म कि	या ऽ ह म	ने ऽ ऽ तु	म रि प र
ग् ऽ म् म्	ध् ऽ नि नि	सा ऽ ऽ ग्	रे सा सा सा
या ऽ द न	ही ऽ ह म	कोऽ ऽ ऽ मि	ल न की ऽ
नि ऽ नि नि	सा ऽ रे सा	निध् ऽ ऽ नि	ध् ध् प ऽ
ब हो त दि	न न सेऽ ऽ	आ ऽ य ब	से ऽ ऽ ऽ
प प प ध्	प प पधु नि	प ध् म् प	म् ऽ ऽ ऽ
म त जा ऽ	बो ऽ सु नो	बि न ति ह	माऽ ऽ रीऽ ऽऽ
ग् ग् म् ऽ	ग् म् ध् प	ग् म् प म्	गुरे सा ग्मधुनि

(८५)

आस्ताईकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
१ बाऽ त का	१ नऽ सुऽ निऽ	सागुसान्धुनिसारे	गुरे ग रे सा
२ बाऽ त का	१ नऽ सुऽ निऽ	सा गुम् पध् पम्	गुर म्ग सारे सा
३ बाऽ त का	१ नऽ सुऽ निऽ	सा गुम् धुनि सारे	सान्धुप म्ग रेसा
४ बाऽ त का	१ नऽ सुऽ निऽ	सा गुम् पध् म्प	गुम् सागु प म्
५ बाऽ त का	१ नऽ सुऽ निऽ	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ जीऽ ऽ
		सा ऽ गुम् ध्	गुम् धुनि सान्धु

अंतरेकी तानें

ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना
०	१	+	३
प्रे ऽ म की	या ऽ ह म	ने ऽ ऽ तु	म रि प र
६ सा म्गु म् ध्	नि सा ध् नि	धुनि सारे सान्धु	म्ग रेसा रे सा
७ निसागुम् धुनि सारे	सान्धुप म्ग रेसा	निसा गुम् धुनि सा	नित्र म् रे सा
प्रे ऽ म की	या ऽ इ म	ने ऽ गुम् धुनि	सान्धुनि सारे सा
९ प्रे ऽ म की	या ऽ ह म	सान्धुप म्ग रेसा	निसा गुम् धुनि सा
प्रे ऽ म की	या ऽ ह म	ने ऽ ऽ तु	म रि प र
१० सारेसागुम् पध्	पम् गुरे सा गुम्	पधुनिसा सान्धु	धुप पम् म्ग रेसा

(८६)

राग-भैरवी

ताल-दादरा, मात्रा ६, मध्यम्य

लेगयो री स्खी । कान्हा हंमारे मन ॥ धृ० ॥ मथुरा नगरी । नामः
मुरारी । इतनासा पता मुझे । दे गयोरी स्खी । कान्हा हंमारे मन ॥ १ ॥

आस्ताई

धा	गे	ना	धा	ती	ना	धा	गे	ना	धा	ती	ना
+	३		०			+	३		०		
ले	ऽ	ऽ	ग	यो	ऽ	री	ऽ	ऽ	स	खी	ऽ
प	ऽ	ऽ	ध्	प	ऽ	पध्	निध्	ऽ	प	म्	ऽ
का	ऽ	ऽ	न्हा	ऽ	ह	मा	ऽ	ऽ	म	न	ऽ
ग्	ऽ	ऽ	ग्म	प	म्	ग्म	पम्	ग्	रे	सा	ऽ
ले	ऽ	ऽ	ग	यो	ऽ	री	ऽ	ऽ	स	खी	ऽ
प	ऽ	ऽ	ध्	प	ऽ	पध्	निध्	ऽ	प	म्	ऽ
का	ऽ	ऽ	न्हा	ऽ	ह	मा	ऽ	ऽ	म	न	ऽ
ग्	ऽ	ऽ	म्प	धुप	म्	ग्म	पम्	गुरे	सा	सा	ऽ

अंतरा

धा	गे	ना	धा	ती	ना	धा	गे	ना	धा	ती	ना
+	३		०			+	३		०		
म	धु	रा	ऽ	न	ग	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग्	म्	धुनि	सा	सा	रे	सा	ऽ	ऽ	धुनि	सा	ऽ
ना	ऽ	म	मु	रा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	ऽ	सा	रे	सा	रे	ध	ऽ	ऽ	पम्	प	ऽ

(८७)

इ त ना	S सा S	प ता S	मु शे S
प ध् प	S प S	ध् प S	ध् प S
दे S S	ग यो S	री S S S	स खी S
ध् S S	ध् ध् S	पध्निध् S	प म् S
का S S	न्हा S ह	मा S S रे	म न S
ग् S S	गम् प म्	गम् पम् ग्	रे सा S

राग-भैरवी

तराना, ताल-त्रिताल, मात्रा १६, द्रुतलघ

तान्नतानतन देरेना तदारे दानी । दानी तदानी दिर दिर दिर । तनन
नादिर दिर तन । नतन दृत नतन । तदानी तन नादिर दिर ॥ ध्र० ॥ नादिर
दिर तनन दिर दिर । तदी दी तनननन । दिर दिर तन दिर दिर तन । तन
दिर दिर दिर तनन । ना दिर दिर किट नग धा द्रे । तन तनन नादिर
दिर ॥ १ ॥

आस्ताई

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१
ता S न ता	S न त न	दे रे ना त	दा रे दा नी
ध् S प ध्	S नि ध् प	म् ग् म् प	म् ग् रे सा
दा नी त दा	नी दिर दिर दिर	त न न ना	दिर दिर त न
ध् नि ग् रे	ग् सा सा रे	म् म् म् प	प ध् ध् पं
न त न दृ	त न त न	त दा नी त	न ना दिर दिर
ध् म् प ग्	म् ग् सा रे	म् ग् रे सा	नि सा ग् म्

(८८)

अंतरा

ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
+	३	०	१ नामः
ना दिर दिर त	न न दिर दिर	त दीं दीं त	न न न
धू धू धू धू	धू धू प धू	नि सां सां सां	रूं नि सां सां
दिर दिर त न	दिर दिर त न	त न दिर दिर	दिर त न न
सां गूं रूं सां	सां रूं नि सां	सां नि नि सां	नि धू प धू
ना दिर दिर किठ	नग धा ऽ द्रे	त न त न	न ना दिर दिर
प नि प म	प गूं ऽ म	गूं रूं सा रूं	सा सां गूं मू

मुद्रकः—श्री. स. रा. सरदेसाई, बी.ए., एलएल.बी.,

‘वेद-विद्या मुद्रणालय,’ ४१ बुधवार, पुणे २.

प्रकाशक—मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर,

गणेश भुवन, टिळकवाडी, पुणे २.

सं. क. नि. मास्टर कृष्णरावजीकी प्रकाशित नोटेशनकी किताबें

राग संग्रह भाग १ ला	किं. २ रु.
राग संग्रह भाग २ रा	किं. ३ रु.
राग संग्रह भाग ३ रा	किं. ५ रु.
खानदानी हिंदी चीजोंके नोटेशन आलाप तानोंके सहित	
संगीत मोहनमाळ मराठी नोटेशन	किं. ८ आना
संगीत रुक्मिणी स्वयंवर नोटेशन	किं. १० आना
संगीत कान्होपात्रा नोटेशन	किं. ८ आना
भक्तीचा मळ (मराठी) और माली (हिंदी)	किं. १० आना
अमर संगीत—अभंग, भजन और मौलनके नोटेशन	किं. १ रु.
राष्ट्र-संगीत—समूह गानके लिअे तथा वृंद वादनके लिअे	किं. १ रु.
शालेय-शिशु-संगीत भाग १, २, ३	प्रत्येकी किं. ८ आना
प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओंके अध्ययनके लिअे, बम्बयी सरकारद्वारा मान्य टेक्स बुक	

प्रकाशित होनेवाली किताबें—

खानदानी चिजोका राग-संग्रह भाग ४, ५, ६, ७
(आलाप और तानोंके सहित).

किताबें मिलनेकी ठिकाणें—

- १ भारत गायन समाज, सदाशिव पेठ, पूना नं. २
- २ मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर, ठिळकवाडी, २५३-१० पूना २
- ३ एच्. व्ही. मेहेंदळे अँड सन्स, २४ बुधवार, आप्पावळवंत चौक, पुणे २
- ४ नेलेंकर बुक सेलर्स, बुधवार चौक, पुणे २



